विज्ञप्ति.

॥ श्री जीनवरेंद्रायनमः ॥

श्री जैन धर्ममां रामरस अने ढालसागर ग्रंथ सर्वोत्कृष्ट गणाय छे; जेमां रामरस छपाएल हतो, अने आ ग्रंथ छपाय्यो नहोतो; वली लखेली प्रत कोइ ठेकाणेथी रु० २०–२५ खर्चतां पण मलवी मुश्केल; एटलुंज नहि पण बीजा ग्रंथ करतां आ ग्रंथ सुत्र साथे घणोज मलतो आवे छे; विगेरे जातनी खामीउ दूर करवाना हेतुथी आ ग्रंथ जैन बंधुनी सेवामां मूकुंछुं.

आ ग्रंथमां नव खंडछे. जेमां वसुदेव चरित्र, कृष्णबलदेव चरित्र, बाविसमा तिर्थंकर श्री नेमजीनुं चरित्र, सामप्रद्युमन चरित्र, तथा पांडवाख्यान विगेरे घणी रसीक बाबतोनो समावेश थयेलोछे.

जूदे जूदे ठेकाणेथी प्रतो मेलवी प्रसंगे प्रसंगे नवी ढालो वधारी आ ग्रंथ पंडीतराज पुज्य श्री ५ देवजी स्वामीना शिष्य सर्व गुणालंकृत मुनीराज श्री दिपचंदजी स्वामीना आश्रय तले सुधारी आ ग्रंथ प्रसिद्ध कीधो छे; परंतु केटलाक कारणने लीधे ताकीद थवाथी प्रूफ सुधारवामां द्रष्टीदोष थयो होय तथा टाइप संबंधी कांइ चूक पडी होय तो विद्वजनो सुधारी वांची शेवकने क्षमा करशो, एहवी मारी नम्रता पूर्वक विनंतीछे.

लि० मगनलाल झवेरचंद.

॥ दोहा ॥ श्री जिन आदि जीनेश्वरु, आदि तणो किरतार;
॥ श्रीवितरागायनमः ॥ अथश्री ढालसागर लिख्यते ॥
युगलाधर्म निवारणो, वरतावण व्यवहार ॥१॥ सांति सकल सुखदायकु, सांतिकरण संसार; अरतिअसुखडःखआपदा,
मारी निवारण हार ॥२॥ नेमनाथ मति नीर्मलि, अनमिनमावण देव; बालब्रह्मचारी प्रभु, सुरनरसारे सेव ॥३॥ पार्श्व
पार्श्व सारिखो, सुखसंपति दातार; क्षुद्रउपद्रव्य टालणो, नामे सदा जयकार ॥४॥ विरस्वामी त्रिभुवन तिलो; गुणम
णिनो भंडार; तिर्थंकर चउविसमो, सासणरो सिरदार ॥५॥ कालअतितेजेहुवा, वर्त्तमान जिन ईश; कोडीदोयकेवल
धरा, चरणन मुनिसदीस ॥६॥ गणहर गौतम गुणनिलो, गौतम गुरुयो नाम; गौतमगुरु गुरुमे वडो, गौतम करुं प्रणाम,
॥७॥ कामधेनुं गौ शब्दथी, ततेतरु सुरवृक्ष; ममेयुमाणि चिंतामाणि, गौतमस्वामी प्रतक्ष ॥८॥ देश देसांतर कांइ भमो,
सुरखलोक अयाण; घर बेठां हरीपुरिसो, गौतम केरो ध्यान ॥९॥ ब्रह्माणी ब्रह्मा सुता, सारद मात प्रणाम; करी मागु
मति निर्मली, जीम पामुं कवि नाम ॥१०॥ कविवाणि वारु कही, जस तुठि तुं माय; तुझ तुठ विण बोलणो, मुरख
मांहि कहाय ॥११॥ पढे गुणे मति आगलो, राजसभा सनमान; लहेनिवाजा ताहरा, मोटप मेरु समान ॥१२॥ मात
मया करी सांभलो, सेवकनी अरदास; तिमकर जीम पोहचे सहि, माहरा मननी आस ॥१३॥ गरु नमीइं गुरुताभणि,
गुरुविण गुरुता नाहि; गुरुजनने प्रगटो करे, लोक त्रिलोका मांहि ॥१४॥ गुरु कारीगर सारीखा, टांके वचन प्रहार;
पथ्थरथी प्रतिमा किया, पुजा लहे अपार ॥१५॥ अंधकार अज्ञानता, ज्ञान सलाइ सार; फेरी किया जग देखता, धन्य
गुरुना उपगार ॥१६॥ तिर्थंकर गणधर सहु, सारद सुगुरु सकाम; सहु मलि मुझ आपज्यो, काव्यकला अभिराम ॥

॥१७॥ उतपति श्री हरीवंशनी, हलधर कंस नरेश; नेमी मदन जुग पांमवा, चरित्र जणुं सुविशेष ॥१८॥ यादव कथा सोहामणी, जे सुणशे नरनार; सुरुततणो फल पामशे, नहि संदेह लगार ॥१९॥ ढाल १ ली ॥ वांउ श्री आदि जिणंद कियो जिन धर्म प्रकाश ॥ए देशी॥ नहि संदेह लगार निरोपम, श्रीहरी वंश वखाणुं; उत्तम पुरुषतणा गुण सुणतां, थाइ जन्म प्रमाणुं; जंबुद्वीप प्रसिद्ध प्रमाणे, जोयण लाख कहावे; षटकुलगीरीने खेत्रसातशुं, शोभा अधिक पावे ॥१॥ भरत खेत्र जोयणसें पंच, छवीसकला छोगवे; गीरी वैताढ्य विचाल विशेषके, आधोआध कहावे;सोल हजार सुसारदेशमें, आर्य साढापचविसे; जिहां जिन पंचकल्याणीक होवे, इम जिनमतमां दिसे ॥२॥ कोसंबि नगरी वनवासी, कुवा वाव विशेषी; गढमढ मंदिर पोल पागारके, इंद्रपुरी सम लेखी;राजा राज करंत विशेषे,विद्यावंत सनूरो; हय गय रथ पायक दल पुरित, राय महा रणसूरो ॥३॥ आयो मासवसंत विराजीत, राय सुमुख सरागी; रामतिरंग करेवाकारण, नृपतिनी मति जागी; कोइ अटाले कोइ माले, नारी तमासे लागी; कौतकजोणुं वंसविगोणुं, हुइ घणुं अनुरागी ॥४॥ वीरकोविंदक केरी नारी, वनमाला सुविशाला; नयणे निरखि हरखि राजा; राग धरे ततकाला; रुपे रुभी रंभा सरषी, वंश वरतावे देवा; आइ इहां हुं जाणुं ए मुज, पास करावण सेवा ॥५॥ खेली ख्याल वेहाल प्रणामे, राजा मंदिर आवे; मंत्रीश्वर उपाय करीने वनमाला राय मेलावे; नारी सुसिला पर पुरुषाने, कदिय न आवे पासे; वायतणे बलदेवलनीध्वज हुइअपुठि नासे ॥६॥ शीलसुधारी जे ब्रह्मचारी, नारी देखी नचुके; रामचंद्रजी सुर्पनखा ज्युं, माथे मारी मुके; जुंभजुंभा दोय मीलंता, कोमीत्र कारज किजे; दीरघराजा चुलणिराणी, केरी उपमा दिजे ॥७॥ राजाराणी प्रिततणे वश, भोगवे भोग उदार; विद्युत पाते

मरण लाहि तव, हरीवरपे अवतार; त्रिजे प्रहरे के त्रीजे वासर, त्रण मासे त्रण वरषे; प्रगट जखाणो ए जग जाणुं, पुन्य
पाप फल वरषे ॥७॥ नारी विजोगे विरकोविंदक, गहिलो गर्व गेमारो; रज्योपज्यो विलव्यो विलखाणो, विक्कल थयो
अपारो; तापसरुपी चारीत्रपालि, कष्टताणि करी कोमी, स्वर्गसौधर्मेकील्विपीयामे, देव थयो दिन थोमी ॥८॥ किधांकर्म
न कोइ छुटे, कांइ राव ज्युं राणो; राजा राणि साथे केहिपरे, साले वैर पुराणो; पहिलि ढाल रसाल रागमें, आणंद रंगविलासा;
श्री गुणसागर सुरीपयंपे, सबजुग मिलि आसा ॥१०॥ ॥दोहा॥ सेवकरुपि देवता, कहे तदा सिरनाम; कुण कारण
सुर ऊपना, आप प्रकासो स्वाम ॥१॥ अवधिज्ञान करी देखियो, पुर्वभवंतरताम; राजा राणि पेखिया, युगलपणोअभी
राम ॥२॥ अंगुठाथि ऊपनी, अग्नीज्वाल असराल; कालरुप कोप्यो तिहां, आव्यो सुर ततकाल ॥३॥ मारुतो सुरगति लहे,
खेत्रस्वभावे एह; दुःखफोड्यो फूटे नहि, तो फरी चिंते तेह ॥४॥ नरक तणी गति संचरे, पावे दुःख अपार; एह मतो मनमें
धरी, किधो तव अपहार ॥५॥ साथे लिया सुरतरु तदा, चंपापुरी सुर जाय; वनमें मुकि देवता, मन रलियायत थाय ॥६॥ ढाल
२ जी॥ विसजणासु वाद न किजे ॥ए देशी॥ आदिनाथनो नंदननीको, बाहुबल बलवंतजी; भरतेश्वर भुजबले हरायो,
ए बहुलो विरतंतजी ॥आ० १॥ पुत्र पनोता तेहने प्रगट, तिनलाख गुणधामजी; सोमजसाथी सोमवंसनी, थिरथापन अभी
रामजी ॥आ० २॥ सोमयस्या कुंवर करमेतो, श्री श्रेयांसकुमारजी; आदिनाथने जीमण करायो, इक्षुरसनो आहारजी ॥आ०
३॥ तेहनो नंदन सर्व भोमजी, तेहनो हुवो सुभुमजी; सुघोपराजा तस पाटे, वैरीकुलनो धुमजी ॥आ० ४॥ घोषसुबुर्द्धन
तेहनो नंदन, महानंदसुनंदजी; सुभद्रसुभंकर सोमवंसे, ऊदया पुन्यमचंदजी ॥आ० ५॥ कोमुगतेको सुरगति पामी, एह

वंसना नृपजी; असंख्यातमा पेढीए उपज्यो, किरतिचंद अनुपजी ॥आ० ६॥ निसंतान राजा तव मूवो; दैवतणे संजोग जी; नृपपदवी लायक नहि कोइ, मलिया सघला लोकजी ॥आ० ७॥ पंचादिव्य करी वनमें आया, सुभटने मंत्रीशजी; हरी हरणि युगलपणे देखी, मनमें धरे जगीशजी ॥आ० ८॥ अंबरथी सुरवाणी प्रगटी, सोच करो तुम्ह कांहिजी; चंपा नगरीनो भल नृपति, थाप्यो एह उछाहिजी ॥आ० ९॥ राजाराणिनें तुम्हे देज्यो, मदिरा मांस आहारजी; मारो वचन न मानशोतो, करशुं सहि संहारजी ॥आ० १०॥ सुरवचने चंपापुर नायक, करी थाप्यो सहु तेमजी; वेरी वेरपणुं नवि मुके, अमरख पाल्यो एमजी ॥आ० ११॥ हरिनामे राजा तव हुवो, लोक नम्यां करजोमजी; पायकलायक परीयछ पुरो, हयगयरथनो कोमजी ॥आ० १२॥ एह थापना हरिवंशनी, वसुधामें विख्यातजी; दसमा जीनवरजीने वारे, आगेनी सुणो वातजी ॥आ० १३॥ हरी हरणीथी नंदन उपज्यो, पृथ्वीपती गुणधामजी; महागीरी हिमगिरी वसुगिरी राजा, उत्तम नाम प्रणामजी ॥आ० १४॥ मंत्रिगिरी सुयसानर नायक, ए मोटो राजनजी; श्रीखंभ पृथ्वी मांहि अखंमीत, वरतावी निज आणजी ॥आ० १५॥ एवा हरिवंशी नृप हुवा, संख्यारहित अपारजी; किण सुरगति किण सिवगति साधी, सफल कीया अवतारजी ॥ आ० १६॥ मुनि सुव्रत स्वामि जगतारक, राजग्रही हरिवंशजी; मुनि सुव्रत सुत सुव्रत राजा, वंशतणो अवतंशजी ॥आ० १७॥ भुरी नृपनो अंतर होतां, मथुरापुरीमोझारजी; वसु पुत्र वरवृहत्तकेतु नर, वंश विभुषण सारजी ॥आ० १८॥ केतलाइक कालने अंतर, यदुराजा उपन्नजी; जेहथी जादव नाम कहाया, धन एपुरुष रतनजी ॥आ० १९॥ यदुराजानो सुत सनुरो, सुर सरीखो रायजी; साखा प्रतिसाखा हवे चाली, ते कहेवा

गुणसागर गुणवंत नमंता, सिके सघलां
चित्त चावजी ॥आ० २०॥ बिजी ढाल सुणंता गौरी, दुःख दुरगतिनुं भांजजी; पहेलो सौरी सुलक्षणो, सुविर बिजो होय॥१॥
काजजी ॥आ० २१॥ ॥दोहा॥ सुरवंश सुरजमां, नंदन उपज्या दोय; सौरीराय सोरीपुरी, वास
सौरीकुमर राजा कियो, अपर कियो युवराज; सुरनृप संजम ग्रही, सार्यो आतमकाज ॥२॥ इणपुर कंवल कोइ नलेशी ॥एदेशी
कियो निज वास; लघु भ्राताने आपीयो, मथुरापुरी निवास ॥३॥ ढाल २ जी॥ भोजग विष्णु जगमें जस जीतो॥१॥
सौरीराय नंदन वखाणुं, अंधक विष्णु वमो नृप जाणुं; सुविरराय सुत विश्ववदितो, वास कियो नृपलिल विलासी ॥२॥अंधक
रायसुविर मथुरानो राजा, सुतने दिधो जाणीसकाजा; सिंधुदेश जाइ पुरवासी, सौरीराय हुवासीवगामी॥३॥भोजंगविष्नु
विष्णु कुमर पटथापी, हयगय रथ पायक सहु आपी; सुप्रातिष्ठ मुनिपें व्रत पामी, अंधक विष्णु घरेपटराणी
नरेशर राजा, पाले प्रजाना सारे काजा; उग्रसेन आदिक सुत सूरा, शस्त्र शास्त्रकला गुणपुरा॥४॥ जाया कुंवर दसहि दसार, पुत्रीदोय अति
रुपेरुमी रंभा समाणी; सुभद्रा नामे गुणखाणी, सतियमांहि आदि वखाणी ॥५॥ अक्षोभ २ महारण सुरो, स्तिमित नाम कुंवर गुण पुरो
उत्तम सार; समुद्रविजय गुणनो भंमार, दाता भुक्ता आधिक उदार॥६॥ पुरण पुरो सघली
सागर २ उपमाधारी, हिमतवान सहुने सुखकारी ॥७॥अचल २ संग्रामे लाहि, धरणिधरसम धरण संग्रहि; दसही बंधवनी जोमी, पून्य
वात, धन्य अभिचंद्रतणा अवदात॥८॥श्रीवासुदेव दूगंधक देव, जेहनी सारे सुरीनर सेव; ए मायबापनि भक्ति करता, बाहिन
पसाइं पहुचे कोमी ॥९॥ समआचारी सघला कहिया, महोमांहि सप्रिता लहिया; कुंति रुप कलागुण पात्र,
म आशीसे जयवंता ॥१०॥ बहिन भलि दोइ समसीला, भाग्यवंति अति रुपसुलिला;

माहेंडि महिमावंत सुगात्र ॥११॥ कुंतिकुमरि व्याहण काम, कवि कुरुवंश कहे अभिराम; आदिनाथनो सुत कुरु जाणुं, तेहथी कुरुक्षेत्र कहाणुं ॥१२॥ कुरुसुत हस्तीराय कहायो, हथीणाउरनगर नगर वसायो; हस्ती नृप संतान वखाणुं, विश्व चिर्य नरेश्वर जाणुं ॥१३॥ तदनतर कुरुवंशे वारु, सनंतकुमार चक्रीश्वर वारु; शांतिकुंथु अरजी सुख दाया, दोदो पदवी नाथ कहाया॥१४॥इंद्रकेतु नृप किरति केतु, शुभ विर्य सुविर्य समेतु; रायअनंत विर्यकृतविरज, सुभुम चक्रीश्वर अति धिरज॥१५॥असंख्यात नृप हुवा अनंतर, सांतनुंराय हुवो हथीणाउर; दूखकेदारण साधुउजागर त्रिजीढाल कहे गुणसागर ॥१६॥ ॥दोहा॥ हस्तिनागपुरवर धणी, पाले राज निशंक; पण राजाने एकण, लाग्यो वमो कलंक ॥१॥ आहीमो करतो फीरे, जीवतणो संहार; शीख नमाने केहनी, ए मोटो अविचार॥२॥सायरजल खारो कियो चंद कलंकी कीध; कमलनाल कांटा घणा, दायक वित न दीध ३॥ राजामन अविवेकतां, वाल्हा नरा वियोग; गाम गाम ज्ल्यो घणुं, फिटरे दैव कुलोक ॥४॥ ढाल ४ थी॥ देखी सखी प्रभु कंव विराजे तथा श्री श्री मंदिर साहिब मेरा ॥ए देशी॥ एक दिवस राजा वन जाइ, करी आहेमी रुप हो; लंव कुलंव कुजाति कलेसी, भुंभ नराशुं भुप हो, कुविसन मारग माथे धीग धीग ॥१॥ साच कहे ए लोकहो, इह लोके अपजस अति पामे; अरु विणसे परलोक हो ॥कु० २॥ मृग साथे राजा एकाकी, अटवी मांहि आवंतहो; गंगा तट एक देवल देखी, गाढो सुख पावंतहो ॥ कु०३॥ एटले खेचरनी वर कुमरी, अमरीने अनुहारहो; नयणे निरखी हरखी राजा, चिंतवे चित्त मोझारहो ॥कु०४॥ के इंद्राणी के हरी राणी, के हरनार उदारहो; विद्याधर एक आवी भांखे, सांभल राय विचारहो॥कु०५॥जानु सुता ए

गंगा देवी, गिरि वताढ निवासहो; ए कुंवरी वर पूछ्यो राजा, जंघाचारण पासहो ॥कु० ६॥ सांतनुरायां सीधो वता
यो, गंगातट विवाहहो; देवल कीधो कारज सीधो, स्वामी आणी उछाहहो ॥कु० ७॥ खेचर जइ खेचर गति लायो,
मांड्यो व्याह मंडाणहो; गंगा भाखे तो हुं व्याहुं, जो मानो मुज आणहो ॥ कु० ८ ॥ जीम कहीशुं .म करशो
राजा,वाद कीया रसनाहीहो;काम विमासीने धुर कीजे, अविमास्यो दुख प्राहीहो ॥कु०९॥ काम असोचि कीयोथो
आगे, सूर्यसा नरनाथेहो; इंद्रतणी नाटकणी परणी, अरति करी सहु साथेहो ॥कु० १० कणिक मांही पडे जब
पाणी, थाय तामनी कामहो; वायस बोल्यो कुंन अकारज,लोक वचन अभिरामहो ॥कु० ११॥ पतिव्रता पति साथे
न वाडे, जन्म अकारज जातहो; ढोकी वजाइ हांमी लीजे, अवरतणी शी वातहो ॥कु० १२॥ सघली मानी करी
पटराणी, आव्या मंदिर रायहो; लाडीनी लावनता निरखी, सहु रलियायत थायहो ॥कु० १३॥ गंगा जायो लोक
सुहायो, श्रीगंगेव कुमारहो; राजा नव नवा कीधा उत्सव, जगमांही जयकारहो ॥कु० १४॥ गंगा वर मागंती बोले,
स्वामी आहेडो छोडहो; राय न माने पुत्र लेइसा, पिहर गइ मुहमोडहो ॥कु० १५॥ कुव्यसन वालो वाच न माने,
मुंढ न जाणे मर्महो; नेम न माने प्रेम न माने, नवी माने कुल कर्महो ॥कु० १६ ॥ मात न माने तात न माने,
भ्रात न माने जोरहो; नारी न माने नंद न माने, बोले बोल सजोरहो ॥कु० १७॥ हाथी जेरे हरायो होवे, कीम
सामो थया जायहो; नमीए नहीतो भाजी सकीजे, रुसी गइ सान्यायहो ॥कु० १८॥ मात पिता घर नंदन शिष्यो,
सकल कला गुण वंदहो; चउवीसां वरसानो हुउ, नंदन आनंद कंदहो ॥कु० १९॥ एक दिवस राजा निकलायो,

साथे घणा नर वृंदहो; गंगातटे अति ऊगड़ो मच्यो, श्री गंगेय नरेंदहो ॥ कु० २० ॥ गंगा चिंते दोइ पखाड़ा, ए मुझ आरति ठामहो; पुत्र मरंता नपुत्री प्रीतम, मरंता रांड कुनामहो ॥कु० २१॥ गंगा आवी दो समझावी, पठी गइ ततकालहो; गुणसागर नृप सुत घर आव्या, चोथी ढाल रसालहो ॥२२॥ ॥ दोहा ॥ राजा कुव्यसन नवी तजे, गंगा नावे वार; साहंकारी नारीनी, ए सही नाणी विचार ॥१॥ आदरनो जलो कापड़ो, निरादर स्यो चीर; जली समुहनी रावड़ी; महातम विणासी खीर ॥२॥ वालो सोनुं सामटुं, वाझो,जोग विलास; आदरअजरामरमहा, थोजुं सहु विखास ॥३॥ वेचीकुटी कामाने, लातधबुकाखाय; निःपितामरवाम्ररे, ते कीम मुहुगी थाय ॥ ४ ॥ तेज गानसहेताजणो, त्रियन सहे अपमान; तीम तीम मूल वाधे घणो, शंक धरे राजान ॥ ५ ॥ जाव जीवनुं रुशणुं, गंगादेवी नरेश, एक वचनने कारणे; शह्यो नजाय कलेस ॥६॥ कुंवरे करी नृप सोन्नीड़,कमले करी जीमवार;दिवस करी दिनकारज्यूं,सिलेकरी जीमनार॥७॥जिमुनातट नृप आवीयो,दिठी कुंमरी एक,तनमन लाग्यो तेहस्युं,विसरीगयो विवेक ॥८॥ ॥ढाल ५ मी॥ बंधव बोल मानोहो, ॥ए देशी॥ राजा प्रेम लाग्योहो, लोचन हुवा लालची; लज्यागुण नाग्योहो ॥रा० १॥नयन अन्याइडे खरा, जिहां तिहां लागेहो; सोचन आगल पाढले, जुंझापण आगेहो ॥रा० २॥ कोमी कुहेमा केलवे, ए किकिमां कुवाणीहो;चतुरा चहुटे पारीखो, एमनकी सहिनाणीहो ॥रा० ३॥ स्वर्गमृत्य पाता लनी, सब नारी ढुंटीहो; जातीती ऊंची अंबरे, अधवचथी तूटीहो ॥रा०४॥ एकही अंग वखाणता,कविपार नपावे हो; ब्रह्मा विष्नु महेश्वरु, ए लिला गावेहो ॥रा०५॥ इंद्र चंद्र नर राजवी, वलवंता वलीयाहो;कोको कोको को नहि,

एह माया छलियाहो ॥रा० ६॥ नयन न पाछा आवहि, जाणी बांध्या ताणीहो; नाविक साथे बोलीयो, राय कोमल
वाणीहो ॥रा० ७॥ ए कहे केहनी कुंवरी, कोकर तुं जाणेहो; ए कुंवरी नृप माहरी, राय कर मुख आणेहो ॥रा० ८॥
सत्यवंती नामे भली, सुरतरुनी वेलीहो; पुन्यवंत जे प्राणीया, थाइतसु भेलीहो ॥रा० ९॥ राय प्रधान बोलावीयो,
ए मुझ परणावोहो; ढिल किहां ढीलो पडे, व्याह वेग करावोहो ॥रा० १०॥ नावडीयो माने नहि, एक अरूवीरो
मेहो; पुत्री पुत्रा कारणे, नृप पदवी लोपेहो ॥रा० ११॥ वीलखाणो राजा फरी, निज मंदिर आवेहो; बापडा चिंतो
देखता, कुंवर दुख पावेहो ॥रा० १२॥ भक्ति नहि मावापनी, नवी जाणे पीडाहो; तेतो बेटा जाणवा, पेटना किडाहो
॥रा० १३॥ जाणी वात सुवेगसुं, नाविक समझावेहो; करी दिलासा तेहने, नृप व्याह मनावेहो ॥रा० १४॥ राज
तणे तो कारणे, सुत बापने मारेहो; गांगेवा गुरु आपणो, गुरु कार्य सारेहो ॥रा० १५॥ माहरी धरणीशनो, हुं धणीज
कहेताहो; ऊंचा जाइ अंबरे, बोले गह गहताहो ॥रा० १६॥ करी नहि करशे नहि, को करत न दीठोहो; गुरु गांगेवा
सारीखा, जगमें जस मीठोहो ॥रा० १७॥ नाविककुंवरसुं कहे, एछे नृप कुमरीहो; वेली समां फल नीपजे, एसा
नहि अमरीहो ॥रा० १८॥ सत्यवंती शुं व्याहती, कीधां रंगरोलहो; पंचेंद्रि सुख भोगवे, वर पुन्य कलोलहो ॥रा०
१९॥ सत्यवंती उर ऊपनां, दोनंद सलुणाहो; बाप थकी अधिका हुवा, तेजे करी दुणाहो ॥रा० २०॥ चित्रांगद नामे
भलो, कुवरजीनिकोहो; चित्र विरज ए दुसरो, कुरुवंशी टीकोहो ॥रा० २१॥ राजा आहेडो तजी, शुभ मारग आयो
हो; साधु संगति चालता, जगमें जस पायोहो ॥रा० २२॥ पाप खमावी पाछला, आतम आराधिहो; काल कीयो

धराण धणा, सुरनी गति साधीहो ॥रा० २३॥ चित्रांगद राजा कीयो, सब लोका साखीहो; श्रीगंगेवनरेश्वरे, निज वाचा राखीहो ॥ रा० २४॥ चित्रांगद गांधर्वसुं, चित्रांगदलडीयोहो; कह्यो न मान्यो भाइनो, समरांगण पडीयोहो ॥ रा० २५ ॥ मायरोतीसूत दुःखथी, फीर सोग मीटायोहो; पांचमी ढाले सांतनुं, गुणसुरे गायोहो ॥ रा० २६ ॥

॥ दोहा ॥ सगपण संसारे घणां, भाइ समो नव कोय; लक्ष्मण काजे रामजी, कही केम दीधो रोय ॥१॥ भीम पड्या भाइ भजे, भाइ विराणा भाज; भरतनृप भर रात्रिमें, दोड्यो लक्ष्मण काज ॥ २ ॥ पुरुषोने नारी घणी, नारीथी सुत होय; माजाणा बंधव हुये, अंतर मोटो जोय ॥३॥ भाइ वयरवीशोधवा, श्रीगांगेय कुमार; चित्रांगद रणमें हण्यो, राख्यो कुल व्यवहार ॥ ४ ॥ लघु भ्राता पट थापीयो, वरती आण अखंड; प्रबल प्रताप महाबली, तसअनुज दंड प्रचंड ॥५॥ कासी नृपतिने भली, कन्या तीन प्रधान; अंबा बाली आंबिका, व्याह तणो मंडाण ॥६॥ काशी नृप ते तेडीया, राजा राजकुमार; गजपुर धणीने तेडीयो, जाती हिण अवधार ॥७॥

॥ ढाल ६ ठी ॥

इम जिन पुजीए ॥ ए देशी ॥ आमण डुमण होइ रह्योरे, गजपुर केरोरे राय; गंगासुत पुछयो तदारे, जाबनदेणो जायरे ॥१॥ पडु भलो सहि निपाडिसिदायोरे, पडु नगंजिए, पाडिणि इंडा पायो ॥ प० आंकणी ॥ अरति अतुर वाधी घणीरे, गहवरीयो नृपाल; जाणे धरणी विवर दीएरे, तो जइ ए पायालोरे ॥प० २॥ जाणी निश्चे वातनोरे, भिलसमरुप; मुझ वडगां लघुता हुयेरे, तोमुझ वडो विरुपरे ॥प० ३॥ गंगासुत चाली गयोरे, काशी नृपने पास; कन्या तिने अपहरीरे, मांड्यो जुझ उलासोरे ॥ प० ४॥ नाना लोगा सोचणोरे. बलीया भजड मामः बलीया होड करेजो

केरे, नली शिर ऊपर पागोरे ॥प० ५॥ हत प्रहत भुपति कीयारे, जीत्यो गंगानंद; कन्या लेइ आवीयोरे, गजपुरमें
आणंदोरे ॥प० ६॥ परणावी तीने तदारे, हरख्यो गंजपुर इश; पक्क प्रसादे हुइ सहीरे, सफल सकल जगीसोरे प०॥
७॥ अंबीका ऊरे ऊपनोरे, श्री धृतराष्ट्र कुमार; बाला पांडु जाइलरे, अंबा विडर उदारोरे ॥प० ८॥ रोग वसे आतुर
थीयोरे, बुव्या नृपनां प्राण; एदया गति अनुसारथीरे, प्राण लीया घट आनोरे ॥प० ९॥ पांडु राजा थापीयोरे, थंत्रण
सहु परिवार; पृथ्वी फलदायक महारे, राजा पुन्य प्रकारोरे ॥ प० १० ॥ ढली ढाल सोहामणीरे, गुणसागर उछाह;
नवीक जनो तुमे सांनलोरे, कुंता कुमरी व्याहोरे ॥ प० ११ ॥ ॥ दोहा ॥ श्री पांडु प्रथ्वीपति, मधु ऊळवने
काज; राजी गाजी वनमे गयो, खेलण केरे साज ॥१॥ खेल खेलतां खांतसुं, एक नर आव्यो हेठ; फलक विलो-
कन कीजतो, ऊनो तरुवर हेठ ॥ २ ॥ फलक हाथ राजा लीयो, नारी रुप अपार; सुंदरता नखशीख लगे, जोवे
वारंवार ॥ ३ ॥ ढाल सातमी ॥ ॥सीताजी दीएरे ऊलंनमो ॥ ए देशी ॥ राजा रंज्यो रुपसुं, नयन
रह्यां लोनाय; जोतां त्रपति न ऊपजे, सोना मुख कही न जाय ॥ १ ॥ ए जग मांही मोहनी, मोह्यो सहु
संसार; पशु पंखी नर देवता, वश कीधा इण नार ॥ ए० २ ॥ पहीलो मोह्यो सुरपति, सो लाग्यो इंद्राणी पाय;
इंद्राणी लाते हण्यो, तो तस रोष न थाय ॥ए० ३॥ शंकर स्वांगज छावीयो, राच्यो पार्वती रुप; टेक तजी त्रिया
आगले, नाच्यो धरी विरुप ॥ ए० ४ ॥ राधा रुप रामापति, रमीयो रलियायत होय; रासमंडल रचना कीया, ए
कौतक प्रगट्यो जोय ॥ ए० ५ ॥ राजा पूछे पुरुषने, ए रुप कहे केहनो होय; कुंति रुप सोहामणो, इम नाखे

परदशा साइ ॥ए० ५॥ खेल सहु ए विसस्यो, विसरीयो सहु काज; क्षुधा त्रपा सहु विसर्यो, जाणे मलीए आज
॥ए० ३॥ कुंति कुंति कुंतिको, लाग्यो राजा ध्यान; थोडे जल जीम मांछलो, नृप वेदन असमान ॥ए० ८॥ दीधो
दान अनगल, पंथी सोरीपुर जाय; राजा आगे वर्णवे, गुणवंतो गजपुर राय ॥ए० ९॥ तात गोदे बेठि सूणे, कुंति
नृपना वखाण; रुपकला गुण मन वस्यो, तव कुंवरी करहि निदान ॥ए० १०॥ के परणुं गजपुर धणी, के परणुंपर
जव जाय; अवर पुरुष बंधव समा, ए निश्चे मन लाय ॥ए० ११॥ पंडु नृप घर आवीयो, आहाट दोहट अपार;
करे फिरे उचाटीयो, न जणावे केहने सार ॥ ए० १२ ॥ एक दिवस वनमें गयो, खेचर खील्यो देख; आप चिंता
तजी पर चिंता, आणी मनसु विशेष ॥ ए० १३ ॥ विरला जाणे परगुणा, विरला पाले प्रेम; विरला पर कारज
करा, पर दुखे दुखीया तेम ॥ ए० १४ ॥ उरेपरे अवलोकतां, खांमो दिठो उदार; ऊषध वलिया दोय जडा, एक
घाव रुझावणहार ॥ए० १५॥ पीला काढया अंगथी, ऊषधे कीध निरोग; राजा पुछे ए वझो, कीयो तुझ दुख संजोग
॥ए० १६॥ खेचर कहे सुण मित्रजी, मुझ राणी लीधो को जोय;केम हुवो हुं एकलो, तेह कारण दुख थाय ॥ए०
१७॥ निःकारण उपगारीयो, हुं थारो फीरफीर वलजाउं चाम करावुं खासडा, तोहि उसींगल नवि थाउं ॥ए० १८॥
उषध वालियां ए ग्रहो, ए मुद्रडीलीजे स्वाम; बहु गुणगारी ए मुद्रडी, लेइजाये वंछित गाम ॥ए० १९॥अवसर जाणी
कामनो, चित्तमांहि आणवो देव;इम कही सोइ चालीयो, निज स्थाने ततखेव ॥ए० २०॥मुद्रडी प्रसादथी,मन केरी
पहुचे आश; जयति श्रीसुजगतिमाति, पामे ते पुन्य प्रकास ॥ए० २१॥ ढाल सातमीए कह्यो, मीलवा उपाय अपार;

पामसे, तो नलो मरवो आज॥१॥एम चिंतावि ते नीसरी,गई महावनमांही;गलफांसो मांमी कहे, सुणाकलदवतआाह २
ढाल ॥ ८ मी ॥ गौतम समुद्रकुमार ॥देशी॥ तुं जई केहेजे माय, माहारा मन तणी, पांफु पृथ्वीपति नणीए;
कुंतिकुमरी आज, विरहतुंमारमे; प्राण तज्या विणतुं धणीए ॥१॥ ईम कही गले पास, मांडे जेटले, सानिध हुई
तेटलेए, वर मुंद्रमी प्रनाव; मलवा सुंदरी, राजा आव्यो एटले ए ॥२॥ फलकरुप अनुहार, कुमरी जलखी; पासो
तोमी नांखीयोए, पदमनिने परसंग; आतुरता घणी, नाव हैयानो नांखियोये ॥ ३ ॥ दासी पास मंगावी,
सामग्री सहू, व्याहतणी विधी साचवीए, पूरा मनना कोम; होमा होमसुं, हसीरमीमन राचवीए ॥ ४ ॥ गर्न तणी
उतपत, चित विचारीउ; राय जणावी सादरीए, साहिनाणिने काज; आपी मुंद्रमी, राय गयो घर संचरिए ॥५॥
कुमरी पण घरे आवी, माय जणावीए; दिनकेतेए वातमीए, गूतपणे सूत जायो; जलमें वाहिउ, जई निसरीयो
सुन घमीए ॥६॥ कर्ण कहायो नाम मोटो राजवी, माता कीधी उजालिए; कुमरी केरो व्याह पांफूरायसुं,प्रगट कियो
पुगीरलिए ॥७॥ सुनसुपना अवलोय सुन वेलासहि, युधीष्टर सुतजाईउए; नीम महा बलवंत, कौरव किचक, हंता
नाम धराविउए ॥८॥ अर्जुनअरि कुलकाल, निष्म करणनो; हणणहार कहाईउए, निकुल अने सहदेव; पांफव
पंचए, जगमांहि जसपाइउए ॥९॥ परमारथ आराधी, कराणिनें बले; मातासुं सिव पामशेए, उत्तमगति मतिवास;
लेहसे ते सहि, गरुआनां गुणगायशेए ॥१०॥ ॥दोहो॥ तेणे समे देश गंधारनो, नृप सुबल एणे नाम; आठ ठे

तेहने अंगजा, गंधारी आदे गुणग्राम ॥१॥ गोत्रदेवीना वचनथी, धतराष्ट्रने गेह; सकुनी सुत सुं मोकली, कन्या आवे तेह ॥२॥ सकुनी धृतराष्ट्रने, जगनी परणावी आव; महामोछव मंमाणसुं, सघलो मेली गव ॥३॥ कन्या नामे कौमुदीनी, देवक नृपनीताम; वीदुर पण परण्यो वली, सुधरया सगला काम ॥४॥ ढाल ॥मुलगी॥ श्री धृतराष्ट्र सुगेह, गधारी उरे, कौरव सतहि सुतपणेए; उपजीया अवनूत डुर्योधन आदे, वाधे आनंद अतिघणो ए ॥११॥ मांद्देदि कुमरी व्याही,दमगोषा नणी,सुत सीसुपाल चरी घणीए;संक्षेपे सबंध,ग्रंथ वधतो घणो;जाणी कथा न विस्तरीए ॥१२॥ ढाल आठमी एह, नेह धरी सुणे, तस आगणेग्रफला फलेए गुणसागर गुणगेह, तेह पनोताए, जेह कथा रस सांजलेए ॥ १३ ॥ दोहा ॥ डुर्योधन कपटी महा, कपट केलवे कोम; पांमव सरल सजाविया, न करे तोमा तोम ॥१॥ कौरवनिरवस खोटणी, पांमव जोर विशेष; बालपणाहीथी चढ्यो, मांहो मांहीं अवेष॥२॥ कौरव बांधी नीमने, नांखे पाणी मांही; बंधन तोमी कुदिया, कौरव सोहि ग्रांहि ॥३॥ ढाल ए मी ॥ जुवन हाले ने जुवन चाले ॥ए देशी॥ बलवंतो जाणी खरो, श्री नीम कुमार होलाल; विष दीधो डुर्योधने, आणी द्वेष अपार होलाल ॥ १ ॥ जोजो क्युं न करे अरि, अरिनो शो विश्वास होलाल; कोईम करजो पंमितो, अरिथी विषनास होलाल जो ॥२॥काम परूथा वेटो हूई, काम सरीयां बापहोलाल,दावलहि दूर्जन घणुं, देखावे सहि आपहोला० जो ॥३॥अंतःकरण न मेलवे, मूखे मीठा होय होलाल;सजन लजितांग सबंधथी, समजो नविलोय होला०॥जो४॥ ...खाहहोलाल; कौरवनी गरसणा कला, पांमवजुए राहहोला० ॥जो ५॥ उरथामे

अंतर करे, मुंगाने ए जोईहोलाल; करता राखे जेहने, अरिथी सुं होईहोलाल ॥जो ६॥ विष अमृत [illegible] विणपात्र
वायु सुतने सोईहोलाल; पूर्व पुन्य प्रसादथी, पहुंचे नहि कोई होला० ॥जो ७॥ बिज कुंखेतादानजीव, विणपात्र
विचारहोलाल;वांजणसुं घरवासजी, नीफल ते अवधारहोला० ॥जो८॥कौरवना जप कर्मथी मारण श्री भीमहोलाल;
एक न लागे आकरो, वाजलजीमहीमहोला० ॥ जो ए॥ बम्रोतर सो एकठा, पढवाने काजहोलाल; कृपाचारजजी
भणी, सोंप्या श्री माहाराज होला० ॥जो १०॥ प्रज्ञा बले आगे निसरे, अर्जुनने ए कर्ण होलाल; बुध्धी विशेष
विचारवे, ग्रहे पम्रता वर्णहोला०॥जो ११॥ दिवस अणोजाने सहू, रमवाने जायहोलाल; गेम्री दम्रे अति खेलतां,
रलियायत थायहोला०॥जो १२॥ दम्री कूदी कूवे पम्री, न कढाई जामहोलाल; मांखि जेम महूआलनें, रह्या विंटी
तामहोला०॥जो १३॥ द्रोणाचारज आवीयो, कीधो तव प्रणाम होलाल; बाणकला सुग इंदने, काढी ते अभिराम
होलाल०॥जो १४॥ कृपाजारज पुछियो, भीष्म धरी स्नेहहोलाल; द्रोणाचारीज्य पारखति, मेल्या सुत तेहहोलाल
॥ जो १५ ॥ अस्त्रसस्त्रनीकला, साधे तेसु विशेपहोलाल; कर्ण शशि तारा विषे, रवि अर्जुन देख होलाल ॥जो १६॥
धनुष चहोम्र खेंचवे, नांखेवे ए बाणहोलाल; करवे चोट अचुकजी, हरीनंदसु जाणहोला० ॥जो १७॥ दिन२ तेज
प्रतापसुं, वाधंतो ए वानहोलाल; सघला मांहि सामटो, पामे अति सनमानहोला० ॥जो १८॥ द्रोणाचारज एकदा,
कालिंद्रो स्नानहोलाल;करतांतांताणिए ग्रह्यो,नवि दोम्रया आनहोला० ॥जो२०॥ अर्जुन तव आयो धसी, बोमावणने
हेतहोलाल; हेत घणो गुरु शिष्यने,जेहवा ए युगनेतहोला०॥जो२०॥बाहिर आव्या प्रेमसुं, न प्रसंसो तेहहोलाल;जाण्युं

कौरव कोपशे,गर्वासिवाजि एहहोल॥०जो २१॥ एकांते हरीनंदसुं,गुरु बोल्या एमहोलाल;धनुष्यकला अवरा नाणे, देवा मुकनेमहोला०॥जो २२॥राधावेद कला शिखवी,अर्जुन वाचा लीधहोलाल;दूर्योधनने जीम गदानी,युद्धतणी विधिसाध होला०॥जो २३॥यथा जोग्य जे जाणिया,तेहवीविद्या आपहोलाल;कला देखावण आपणी,वात विशेषे थायहोला०जो २४ एतो नोमी ढाल विशेषे, कुमर विद्या पामहोला; श्री गुणसागर सुरजी, गुरु प्रणम्यो शिरनामहोलाल ॥जो २५॥दोहा॥ निम्न तो नलपण नणी, मंचक संव आरंभ; मंमावी पुत्रा तणो, देखण समरारंभ ॥१॥ वेठा वम वम राजीया, आगल सकल कुमार; कला देखावे आपणी, शस्त्रां तणी अपार ॥ २ ॥ रणरंगे राच्या सहु, विस्मय पाम्या ताम; लोक सकल मन चिंतवे, मतको थाय अकाम ॥३॥दूर्योधनने जीमजी, मांहोमांही क्लेश; करत निवार्या द्रोणसुत, लहि तात आवेश ॥४॥ ॥ ढाल १० मी ॥ तुम्हे पीतांवर पेरो होके मूखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥ एतो गुरु द्रढक प्रेरयाहो, पांमव अर्जुन उदाश; एतो विद्या देखावेहो, पांमव धनुषकीवारु ॥ १ ॥ एतो राधा वेदहो, पांमव निरखी राजानो; एतो सराहण किजेहो, पांमव मेरु समान ॥ २ ॥ एतो कौरव रायहो, पांमव सयनो वताई; एतो करण कराईहो, पांमव चंपापुरी पाई ॥३॥ ए तो सारथ सुतहो, पांमव एतले आयो; ए तो रायके आगेहो,पांमव करणे वेसायो ॥ ४ ॥ ए तो विपरीत वातहो, पांमवराय रिसाणा; ए तो खरखावा आखहो, पांमवकु दिये सयाणा ॥५॥ ए तो अर्जुन जीमहो, पांमव उठिया दोई; ए तो चंपाकि उपावेहो, पांमव कर्णके कोई ॥ ६ ॥ ए तो दोई वमविराहो, पांमव रणरंग मागे; ए तो कौरव करणहो, आइ वजा आगे ॥ ७ ॥ एतो हाकोहाकहो, पांमव रवि रथ वाजी; ए

ए तो रजनी ठमासहो, पांम्व कौरव जाणी; ए तो मनोया प्रातहो,
तो चालीया वेगेहो, पांम्व रजनी विराजी ॥८॥ ए तो कौरव तातेहो, पांम्व सुत बोलाई
पांम्व गुरु दया आणी ॥९॥ ए तो समकीया दोइहो, पांम्व मेट लमाई; ए तो गंगामें
॥१०॥ ए तो पूढीयो वंशहो, पांम्व मुंझा देखाई; ए तो करणजी जाण्योहो, पांम्व पांम्व न्हाई ॥११॥ ए तो सहणामां देख्योहो, पांम्व
आयोहो, पांम्व लीयो कढाई; ए तो कियो मोछवहो, पांम्व खाट वधाई ॥१२॥ ए तो करतल कानेहो, पांम्व दीवा ताम; ए तो
सुरसतेजो; ए तो रविसुत नामहो, पांम्व लहियो सहेजो ॥१३॥ ए तो कौरव नृपहो, पांम्व मच्छर धरंतो; ए तो निज घर आवेहो,
थाप्यो अभिरामहो, पांम्व वर्णजी नाम ॥१४॥ ए तो प्रतक्ष खिजेहो, पांम्व वहे अतिखारो
पांम्व सोच करंतो ॥१५॥ ए तो प्रभुताई पेखेहो, पांम्व जगीमकारो; ए तो पांम्व नृपहो, पांम्व टालवा क्रोधो ॥ १७ ॥ ए तो देश
॥१६॥ एतो मांहोमांहीहो पांम्व उपज्यो विरोधो; ए तो गइकरो शोकहो, पांम्व
विलातहो, पांम्व आपिया जुवा; एतो एवमो पक्षहो, पांम्व जुया जुया हुवा ॥१८॥ ए तो वरतति वारहो, पांम्व वरते अपारो; ए
रंचन आणे; ए तो होनारी वातहो, पांम्व अधिक न ताणे ॥१९॥ ए तो श्रीगुण सागरहो
तो एहथी जाण्योहो, पांम्व श्रीहरी प्यारो ॥२०॥ ए तो कहि दसमीहो, पांम्व ढाल थुणिजे; सुरिपुर राज करे न्हलो,
पांम्व सुजस सुणिजे ॥ २१ ॥ दोहा ॥ अंधक विष्नु दिक्षा ग्रही, पाले जिनवर आण; शिलतणे शणगार
समुद्रविजे राजान ॥ १ ॥ नाम शिवादे न्हामनी, आश्रव तणो परीहार; सुखदाई सहू लोकने, चरित्र
॥२॥ इति वंशावलि संपुर्ण ॥ दोहा ॥ रुप शिरे लक्षण शिरे, कलाशिरे गणधाम; श्रीवसुदेव कुमारनो,

नणुं अभिराम ॥ १ ॥ चारित्र पाली निर्मलो, नंदिखेण अणगार; करी वेयावच साधुनी, पायो सुजश अपार ॥ २ ॥आयु सागर विशनो, जोगवि सुर सुख सार; शेष पुन्यने कारणे, थयो वसुदेव कुमार ॥ ३ ॥ ॥ ॥

॥ ढाल ११ मी ॥ ॥ नणदलनी देशी ॥ श्री वसुदेव कुमारजी, रुप अनुप रसाल हो कुमर; जोग पुरंदर सुंदरु, सोजागी सुकुमाल हो ॥ कु० १ ॥ मोहनवेल कुमारजी ॥ ए आंकणी ॥ अवर अनेरा राजीया, राजा जरत कहेवहो कु; अवर अनेरा कुमारीया, कुंवर तो वसुदेवहो ॥कु०मो २॥ मित्र इंद्र समान छे,सेवक अमर अनुपहो॥ कु; आपण सुरपति साचलो, गजएरावण रुपहो ॥कु० मो ३ ॥ स्वर्ग सरीखो जाणीए, सोरीपुर सुख वासहो ॥कु; सईछा रमत करे, करतो लिल विलासहो ॥कु० मो४॥ देव दूगंदक सारीखो, काम तणो अवतारहो ॥कु; मोही रही अति माननी, लागी होमे लारहो ॥कु०मो ५॥ करे कतोहल कामनी, छांमी घर व्यापारहो॥ कु; फिरे कुवति हरणली, न लहे घरनी सारहो ॥कु०मो६॥ केइ अलुणो रांधति, करे लुण दोवारहो॥कु; आधो पीरसी पिरसणो, जाइ तजी नरतारहो ॥कु० मो ७ ॥ नूषण थानक पालटे, आधो करी सिणगारहो॥कु; टोले टोले सामटि, साथे फिरे सब नारहो ॥कु०मो८॥घर व्यामांहि रहे, थाये अति उजाम्हो॥ कु; साहमली राव ले गयां, बालण पगे कमाम्हो॥कु० मो ९॥राजा जांखे सादरो, केम पधारया साहहो॥ कु; पामी आदर अति घणो, साह वदे सोगाहहो ॥कु०मो १०॥ पुज्य प्रसाद तुमारमे, सुखिया संघला लोकहो ॥ कु; लाज घणो व्यापारमें, अनधन सर्व संजोगहो ॥कु०मो ११ ॥ तो तुमे केम देखाछगो, आरतिवंता आजहो ॥कु; जे जीमछे तिम दाखवो, लाजे विणसे काजहो ॥कु०मो१२॥ वात

सापे ग्रहि ब्लुंदरी, एह परे भ्रम थायहो ॥कु०मो १३॥ दाश न कोइ कहंता संकिए, अण कहियां नर हायहो कु; सापे ग्रहि बलुंदरी, एह परे भ्रम थायहो ॥कु०मो १४॥ कान गया लोचन कुमारनो, निरंकुशी त्रिय जातहो कु; विकल थइ विधुल महा, किशी कराई तातहो ॥कु०मो १५ ॥ तरुणि बुद्धि बालिका, एक गयां, गई लाज विशेषहो कु; कुमर देष्यांत्रियानी, रहिवे इंद्रि शेषहो ॥ कु०मो १५ ॥ साथे फिरे सघली सही, न लिखे घरनी सरीखि होयहो कु; सोवती नांखे सखी, आवंतो प्रनु जोयहो ॥कु०मो १६॥ कुमर न रहे खेलतो, त्रिया न रहे घरमां वातहो कु; यान तणितो पाछली, नोजन विण अकुलातहो ॥कु०मो १७॥ नृपने थइ वीच्यारणा, कुमरश्युं अति हिहो कु; वास अनेरी जायगा, आप आप नृप प्राहिंहो ॥ कु० मो १८ ॥ अर्थ मीत दोई राखणो, एह सयाणो प्रेमहो कु; लोग विण नहीं साहिबि, अब कहो किजे केमहो ॥ कु०मो १९॥ शिख देइ शाह्या नणी, महिलमांहि नर देवहो कामहो कु; विप्रसुता संबंधथी, सोच महा अनिरामहो ॥कु०मो२०॥ नामे शिवा शिव कारणी, षट गुण धारक नारहो कु; आयो आरति जाणके, देवि वदे ततखेवहो ॥कु० मो २१ ॥ एतले कुमर आवीयो, बेगे नृपनी गोदहो कु; राजा कु; नेद लही लोगा तणो, किम ले वात समारहो ॥कु०मो २२॥ प्रिती पोषी परिघल पणे, राय वदे सुविच्यारहो कु; आज काल तो राणी रंजवे, वारु वात विनोदहो ॥कु०मो २३॥ राणी नांखे रायश्युं, आणी अतिशे प्यारहो कु; माह्यरो वचन अति घणो, दुर्बल थयो कुमारहो ॥ कु०मो २४ ॥ फिरे घणुं वन बागमें, तने लागे अति तापहो कु; थयो खरो ही दूबलो, विशेषथी, माने नहींय लिगारहो ॥कु०मो २५॥ नूप नणे वह्न सांनलो, मित्रा केरे संगहो कु; खेल करो मन नावतो, महिल माहरे मन संतापहो ॥कु० मो २६॥

मांहीं मन रंगहो ॥कु० मो २७॥ प्राण थकी प्यारो खरो, जाई पुत्र समानहो कु; तुज सुखीए सुखीया हमे, तुंछे प्रेम निधानहो ॥कु० मो २८॥ ए इग्यारमी ढालमें, मानी वात विशेषहो कु; श्रीगुणसागर सूरजी, अबकीम उपजे द्वेषहो ॥कु० मो २९॥ ॥दोहा॥ महिल मांहिछे बाग वर, तरुवर जात अनेक; व्रक्ष अशोक सोहामणा, कूवा वाव्य विशेक ॥१॥ क्षण घरमें क्षण बागमें, क्षण जाई चित चाव; खेलावे अति खांतशुं, भोजाई भल भाव ॥२॥

ढाल १२ मी ॥ ॥छव गोविंदा छव गोपाल॥ए देशी॥ जूठ न हाले जूठ न चाले, जूठ न आघो थाय होलाल; भेद लही जूठी मायानो कुमर प्रवेशे जायहो ला ॥जू० १॥ बावना चंदन कर कचोली, दिधी दाशी हाथहो ला; एतले कुमरजी चली आयो, मित्रा फेरे साथहो ला ॥जू० २॥ कुमर पूछे रे ए कांई, सा तव बोले गाजहो ला; देवि शीवाए चंदन भेज्यो, राय विलेपन काजहो ला ॥जू० ३॥ थे मुजने ए चंदन चेटी, करु विलेपन आपहो ला; चेडीनापे जील करंता, दीए मुह मांथे थापहो ला ॥जू० ४॥ चंदन लेई विलेपन करी तन, घणुं पोमावे साईंहो ला; माहरा मास्यां थुंव न वाहरु, पहिली न समझी कांईहो ला ॥जू० ५॥ होइ खिसाणी बोले ताणी, चेडी चंचल जातहो ला; तन मन जूठी ने अति रूठी, वाणी वदे अकुलातहो ला ॥जू० ६॥ नमणो खमणो माणस निको, न नमे न खमे जेहहो ला; आका केरां ईंधण सरिखो, लेखविए नर तेहहो ला ॥जू० ७॥ जो एहवां लक्षण छे तारां, तारे पोकास्या लोकहो ला; न्याये पञ्योछे धंधीखाने, कुमर कहे ए रोकहो ला ॥ जू० ८ ॥ चित्तमे चमकी चतूर पणाथी, करी दिलासा तासहो ला; पूछंता तव प्रगट कीधो सहु संबंध प्रकाशहो ला ॥जू० ९॥ साच जठनी करण परिक्षा, पोले आवे तामहो ला; दरयाने

॥जू० १०॥ पाछो फीरी मंदिर आयो, चित्तशुं चिंते एहहो ला; कुकर रोकि तव जाण्यो, साचो संघलो कामहो ला ॥जू० ११॥ धिग मुज जाणपणो ए अधिको, धिग मुज रूप रसालहो ला; दुःखदाई हूउं हुं सहुने, अरु शिर आयो आलहो ला ॥जू० १२॥ अहि मणि कस्तूरि मृग मैंगल, दंत थाकि विप-नाशहो ला; चमरी पूंछ थकी नर रूपे, गुणथी वैरनिवासहो ला ॥जू० १३॥ विण गुणहे ए लोक पोकार्या, राजा मानी वातहो ला; अणख आया माई रीसे, मेंतो दुःख न खमातहो ला ॥ जू० १४ ॥ मान गयो ने मातम मिटीयो, रहिणो नहि एह थानहो ला; नांगी शाखाए विलगेवो, तेतो उपजे हानहो ला ॥जू० १५॥ पुरुषां पाणी इम राखेवो, ज्यौं राखे नालियेरहो ला; गोकल कोतो पैडो न्यारो, साधां सूधो शेरहो ला ॥जू० १६॥ गाम तलाई न तजे बगलो, न तजे मालो कागहो ला; मानसरोवर तजे ततखिण, हंस तणो शो नागहो ला; ॥जू० १७॥ मझम राते अश्व चढीने, अश्व ग्रहीने रहे तुं साथे एक खवासहो ला; निकलियो पुर बाहीरे आयो, मतो करे सोल्हासहो ला ॥ जू० १८ ॥ लाकड लावे चिता अलगो, शेवकशुं दाखंतहो ला; हुं विद्या साधु समसाने, भेद न को भाखंतहो ला ॥जू० १९॥ जंघा चीरी लोही बनावे, मृतक आणी एकहो ला; आभुषण पहिरावी बाले, टालण खोज विवेकहो ला ॥जू० २०॥ पोले चिठी बांधी काढी, ताम लिख्यो ए लेखहो ला; में ए किधी राजा परजा, करज्यो राज विशेखहो ला ॥जू० २१॥ ॥दोहा॥ प्रात चाल्यो, धरी ब्राह्मणनो वेसहो ला; एह बारमी ढाले भांखे, गुणसागर सु विशेषहो ला ॥जू० २२॥ नृप भलीपरे पूछीयो, सेवक आरतिवंतो होय ॥१॥ दूआ प्रभु जागीया, कुमर न दीठो सोय; सुध न लाधी शोधतां

सोइ सुजाण; विवरी वात कही सहु, आनूपण अहिनाण ॥२॥ चिठी दीठी देवजी, खोले वाची जाम; साची सघली जाणता, मुरछाणो नृप ताम ॥ ३ ॥ मुरछाणा नाई अवर, मुर्छाणी नृपनार; वान गुलाम थादे करी, हाहारव संसार ॥४॥ चेतन जई राजा प्रजा, गुणनो करे प्रकास; हा वडनाग कियो किशुं, विलवे राय उदास ॥ ५ ॥

॥ ढाल १३ मी ॥ सारंगीयो गणरुछिवे ॥ ए देशी ॥ कुमरजी एसी किजे केम, समुद्र विजय शीवादेवी विलवे; छेह न दिजे एम ॥कु० १ ॥ हा सोजाग निध्यान निरुपम, जादव वंश वतंस; हा सतवंत महंत गुणाकर, अधिमांहि प्रसंस ॥ कु०२ ॥ हा चंद्रानन पंकज लोचन, हा गुण नरित शरीर; सव विध सुंदर नोग पुरंदर, सायर जेम गंनीर ॥कु०३॥ हा नाई हा वंधु सहोदर,हा वडवीर सधीर;जीवेस्युं चित करि अति गाढो,मांछलाडि विण नीर ॥कु०४॥ पुत्र पनोता पुनरपि होवे,रमणी रूप अनूप;गाम नगर पुर नवि पामिजे,नाईजी नल नूप॥ कु० ५॥ देवरियो विल दरियो देखत, पेखत प्रनुता पूर;नजरे न आवे नर कोइ वीजो; कियो काम करूर ॥कु०६॥ इयुं किजे ए लोगा साथे, सोर मचायो नूर; वात कहंता विचिक्षण शुं, कडी गयो अति दूर ॥कु०७॥ रे कूडा फिरतार फलेशी, सोच नहीं तुज मांहि; साजन मेलि विछोहो करतां, कालज कांपे प्रांहि ॥ कु०८ ॥ इम विलवंता राजा राणि, एक नी मति ताम; वलते छांट सुधारस केरी, वाणि वदे अनिराम॥कु०९॥ कुमर न मूळे जपवंतो, थरति म करजो कोई लाज पणो दिन थोडा मांहि; आवि मिलशे सोई ॥ कु०१० ॥ कांईक ए निमाति वचने, कांईक चित्त विचारी; सुसता हूआ राजा राणि, आशाने अधिकारी ॥ कु०११ ॥ ए तेरमी ढाले राजा, वरते धरतो कोड; श्री गुणसागर

नाई दसनी, बे जग अविहड जोड ॥ कु०१२ ॥ दोहा ॥ चालंतो पश्चिम दिशे, मेलंतो बहू ग्राम; विजय खेडपूर पामियो, ताम ग्रह्यो विसराम ॥१॥ नृप नलो सुग्रीवजी, सुंदरि नामा नार; पुत्र पंच उपरे हूई, पुत्रि दोय सुविज्यार ॥२॥ सोमा नाम सोह्यामणि, सोम सुसेना जाण; पढि गुणि मति आगलि, पुत्रि गुण मणिखाण ॥ढाल १४ मी॥ वीर सुणो मोरी विनति ॥ ए देशी ॥ गुणवंताने गुण चढे, किरति हो किरति वधति जोय; मैंगलनि परे मानवि, मूलेहो मूले मोंघा होय ॥ गु०१ ॥ हीरा लाल पिरोजडा, मोतीहो मोति माणेक मोल; पारखियाथि वाधतो, माणस हो माणस तिम निर मोल ॥ गु०२ ॥ कुमरी कला गुण आगलि, जाणेहो जाणे राग प्रमाण; वेण वजावे चातुरी, रीझेहो रीझे चतुर सुजाण ॥ गु०३ ॥ एह अभिग्रह मन धर्यो, अमने हो अमने जिते जेह; वेणा वजावी वेगशुं, पिउडो हो पिउडो म्हारो तेह ॥ गु०४ ॥ राय जादा रूयडा, राजाहो राजा आवे केई; काज न सरहि कोईनो, जाईहो जाइ करशीर देई ॥ गु०५ ॥ कुमर चाली तिहां आवियो, लिधीहो लिधी विणा हाथ; सुघड पणेरे वजावतो, अचरिज हो अचरिज सघले साथ ॥ गु०६ ॥ के किन्नर के खेचरु, के होके ए सुर अवतार; नूचर नरमाणा घणुं, कुमरीहो कुमरी मोहि अपार ॥ गु०७ ॥ पहिरावी वरमालिका, किधोहो किधो अधिक उछाह; कुमरी दोई शुं नलो, हूउहो हूउ ते विवाह ॥गु०८॥ सुख विलसंता सुंदरु, नंदनहो नाम अंकूर; सोम सुसेना जाईयो, दिन दिनहो दिन चडतो नूर ॥गु०९॥ एक दिवस आगे चल्यो, खबर न हो खबर न जाणि केण; सजला वर्त्त सोह्यामणो, दीठोहो दिठो सरोवर तेण ॥गु०१०॥ सरोवर जलमें झीलतां, आयोहो आयो एक गयंद; गज शिक्षाए वश करी, चढियोहो चढियो ताम

नरेंद ॥गु०११॥ खेलावे अति खांतशुं, उल्लखियोहो उल्लखियो असवार; मेंगल मनमें मोहियो, उलट हो उलटनो अधिकार ॥गु०१२॥ कुमरे उगो देखियो, ईहांहो ईहां नहि निज कोई; जे देखे वन माझरो, सोरीहो सोरीपुर कहि सोई ॥गु०१३॥ आया दोई विद्याधरु, जांखेहो जांखे मीठी वात; नागावर्त्तन पुर जलो, राजाहो राजा विश्वविख्यात ॥गु०१४॥ असनी वेग विराजतो,राणिहो राणि विजया पाम; कुमरी करमपति महा, जाईहो जाई शामा नाम ॥गु०१५॥ कुमरीनो वर पूछतो, निमतिहो निमति जांख्यो सार; जे गजने वश आणशे, थाशेहो थाशे सोई जरतार ॥गु०१६॥ बेशी विमाने हरखशुं, आवेहो आवे पुरमें चाल; राजा राणी रंजीयो, प्रजुनोहो प्रजुनो नूर निहाल॥गु०१७॥ कंचननो मंम्प कियो, मणिनाहो मणिना थंज उदार;पुतलिया मन मोहनी,शोनाहो शोना विविध प्रकार॥गु०१८॥ ढोल दमामा दडवडी,वाजांहो वाजां अधिक उदार; विवाह तणी विधि साचवि;वरत्याहो वरत्या मंगल चार॥गु०१९॥ ए चउदमी ढालमें,सुखमेंहो सुखमें विसरजाय;श्री गुणसागर सूरजी, पूरवहो पूरव पुण्य पसाय ॥गु०२०॥ ॥दोहा॥ शामा मंजुल जाषिणी,सुघडमहा गुणजाण; विणा वजावि एकदा, रंजवियो राजान ॥ १ ॥ रंजीयो राजापणुं, याचिवदे अनूप; माग्य माग्य वर माननी, फिराफिर जांखे जूप ॥ २ ॥ ढाल १५मी॥ आदि जिणंद मया करो ॥ए देशी॥ तव बोले सा सुंदरी, सांजल जादव नाथरे;निसदिन रेहेशुं पाखति,नवि छोडूं तुम साथरे॥त१॥प्रजु जणीशुं मागीयुं,ए लघुता नी वातोरे; पुरुष अबंध सराहियो,बंधक परवश थातोरे॥त०२॥अति सनमानि माननी,नर शिर चढती जायोरे;गंगा देवी शीवतणे,वेगी मांथे आयोरे॥त० ३॥ नारी कहे निज सुखजणि, एतोहुं नवि जांखुरे; कारण जाणि विशेषथी, देव तमासो

खेचर अंगारक आकतो, पापीओ मति पीओरे; ज्ञुचर जाणी जोलवी, ज्ञुज बलशुं मति ज्ञीमेरे ॥त० ५॥ज्ञुप ज्ञलीपेरे ज्ञांखेरे, एबे कवण विचारोरे; रुपाचल दक्षणदिशे, पुरवरबे अति सारोरे॥त० ६॥ कीन्नर उगंगीत एवो, अचिंतमाली राजारे; प्रज्ञावती उरे उपन्या, नंदन दो अति ताजारे ॥त० ७॥ अग्निवेग अति आकरो, अशनी सुवेग सोज्ञागीरे; समरथ जाणी नंदन, राजा थयो वैरागीरे ॥त० ८॥ प्रज्ञपति वर विद्यासुं प्रथमने नृपपद आप्योरे; अवर ज्ञणी युवराजनो, पदतो स्थीर करी स्थाप्योरे ॥त० ९॥ आपण संयम लेइने, मुनीनो मारग साध्योरे; तप जप करणीने बले, आपे आप आराध्योरे ॥त० १०॥ विमला नाम सुलक्षणा, राय घरे पटराणीरे; अंगारक सुत जइयो, कीरति अधिक वखाणीरे ॥त० ११॥ युवराजा घर जाणइ, नामे सुप्रज्ञा नारीरे; तस उरे हुं उपनी, आदि लगे सुविचारीरे ॥त० १२॥रायतणे पद स्थापियो, प्रीति ज्ञणी लघु ज्ञाइरे; विद्यासु निज नंदन, युवराजा पद गइरे ॥त० १३॥ चारित्र लीधो मुनीवरु, मोटम मेरु समाणीरे; आप सरीखा लेखवे, जगमां जे बे प्राणीरे ॥त० १४॥ राय अने युवरायमां, उपज्यो अधिक कलेशरे; ज्ञुजबलने विद्याबले, राय उंमायो देशरे ॥त० १५॥ नागावर्त्तसु नगरीए, राजाजी गयो नासीरे; पंखी पंजरनी पेरे, वासर जाए उदासीरे ॥त० १६॥ एक दिवस नंदन वने, गयो एह नरंदोरे; जंघाचारण ज्ञानीजी, मीलियो एक मुनंदोरे॥त० १७॥पगे लागीने पुछीयो, राज गयो के आ सोरे; पुत्री पतिथी थाशये, तारे लील विलासोरे ॥त० १८॥ पुनरपि ज्ञांखे रायजी, पुत्री पति कोण थाशेरे; सजलावर्त सरोवरे, हाथी सामो धाशेरे ॥त० १९॥गज शीखाइ खेलवी; हाथी वश करशेरे; श्री वसुदेव नरेश्वरु, सामा कुमरी वरशेरे ॥त० २०॥ ते उपर ए खेचरु, जासुसीने हेतोरे; काम

सत्यां प्रभु तुमने, लेइ आव्यो गह गहतोरे ॥त०२१॥ विस्तरथी ए वातजी, खेचर सघली जाणीरे; पिशुनपणे तुम हणवानी, बुद्धीश्च ढे तिही ठाणीरे॥त०२२॥ उ खेचर तुम भुचरु, मतके वीणसे कामोरे; तेहथी हुं वर मागुतं, साथ रही अभीरामोरे ॥ त०२३ ॥ तव वर आपी स्थापियो, गाढो प्रेम अपारोरे; ए पनरमी ढालमां, गुणसागर जयकारोरे ॥ त०२४ ॥ दोहा ॥ निशाचर नीदमे सोवतो, खेचर ते अंगार; लेइ गयो वसुदेवने, थाणी द्वेश अपार ॥१॥ जागी सामा सुंदरी, पीउ न देख्यो जाम; शस्त्र ग्रही पुंठे हुइ, थाणी पहुती ताम ॥२॥ अरी संघाते सामीका, लागी होई विरुप; अरीने सनमुख होवतां, कोप्यो जादव भुप ॥३॥ मुठी प्रहारे मारीयो, खेचर जादवराय; नाखी दीधो आकाशथी, पड्यो सरोवर मांह्य ॥ ४ ॥ समरंतां नवकारने, आल न आयो अंग; जलपयरि तट आवियो, सुततो थयो सुचंग ॥ ५ ॥ ढाल १६ मी ॥ गोरांजी थें मुने गोखे न राख्यो ॥ए देशी॥ धन धन करमे तो नर कहीउ, जीहां जाइ तीहां आदर लहीउ ध ॥ ए टेक ॥ मारग जातां बलदेव केरो, देवल देखी हरख घणेरो; जाणी शुभ स्थान राते तिहां वसियो, कर्म चरि लखी मनमां हसीयो ॥ध०१॥ प्रातः हुयो एक आव्यो पूजारो, देखी कुमर मन हरख अपारो; पुठे प्रभुजी पुज प्रकासो, ए कवण पुरी कोण नृपनो वासो ॥ ध०२ ॥ नगरी चंपा नामे निकी, भु भामनीने सीर टीकी; चारुदत राजा जयवंतो, विशाला क्षित्रीपनो कंतो ॥ध०३॥ श्री गंधर्व सुसेना कुमरी, रुपे रुडी जाणी अमरी; चोसठ नारी कला ते जाणे, राग कलामां अधिकुं ताणे ॥ध०४॥ वेण बजावे ने मुख गावे, आपे रहीठे अधिके दावे. एह कलाए जीते जेही, मुज भरतार करुंहुं तेही ॥ध०५॥ नूपत्तने नृपतिना जाया, पंच

॥ ध० ६ ॥ ग्राम तीन स्वर सात
सया परिमाण कहाया; श्री सुदर्शन गुरुना पास, रात दिवस ए कला अभ्यासे ॥ ध० ७ ॥ पुन्यने
कहीजे, मूर्छना एकविस लहीजे; गुण पंचासश तान वखाणी, जाण कहावे ए विधि जाणि ॥ ध० ८ ॥
दिन मुजरो होवे, एना मों सासुं जोवे; कारज करवा कोई न सुरो, कुमरी हसी कहे अबतो अधूरो ॥ ध० ९ ॥
पुनरपि विद्या अधिकी सिखे, हवे परणीया ए नृपति भांखे; वाणिनावे छे एलेतन मेलत, मास मास एक आघो
वेलत ॥ ध० ए ॥ कुमर गयो आचारज संगे, साचवतो अति सेव सुचंगे; कलाग्रहंता वार न लावे, पण तो
वेण विपरीत बजावे ॥ ध० १०॥ राजकुमार तव करतां हांसो, मुख भांखे एवको तमासो; अवर नही पण ए गुण-
वंतो, थाशे कुमरी केरो कंथो ॥ ध० ११ ॥ तामस आणे यादव जाचो, अवही जाणशे कुमो साचो; कांसो शब्द
करेछे जेही, सोना शब्द करे नहि तेही ॥ध० १२॥ पुनमनो दिन आयो जामो, कुमरी मंरूप आवीतामो;गाइवाइ
वीणा वहेली, साथे घणेरी तास साहेली ॥ ध० १३ ॥ तिलोत्तमा उर्वशी उलासो, सूर्य चन्द्रने पारूण पासो; स्वर्ग
थकी जेम चाली आवी, विश्व मोहनी नाम धरावी ॥ध० १४॥गावे अने बजावे विणा,मोदीरह्या सब लोक प्रवीणा;
कुमरी रुप कला गुण देखी, एही सभामां सुख विषेखी ॥ ध० १५ ॥ नुप तदा नरमाणा नारी, विसरीया
सुघमाइ सारी; आरतियो आचारज होइ, विणा ग्रही कर कुंवर सोइ ॥ध० १६॥ नौतम घाट बनायो रुको, कोइ
वाते नांहिज कुमो; गान बजावणी छे बेउ सरखी, कुमरी घणुं मनमांही हरखी ॥ ध० १७ ॥ कुमरी भांखे वात
भलेरी, एसी विणा आणी अनेरी; विण सुघोषा नामे वारु, जेही रिझायो विष्नु कुमारु ॥ ध० १८ ॥ साविणा

कर साहि प्यारे, अचरज तव हूओ जगसारे; कहे अब केवो गाउ गानो, सोने लागे अमी समानो ॥ ध० १ए ॥ सा नांखे सुण चतुर सिरोमणि, तुं देखाय छे नजो मणि; विष्नु कुमारनो टालण क्रोधो, उपद्रव मेटणने प्रतिबोधो ॥ ध१ २० ॥ हाहा तुंबुरु नारद आयो, जेहि ग्याने रुपिजी रिझायो; जो आवे तो सोहि सुणावो, अवर ग्यान छे मोहि अन्नावो ॥ ध० २१ ॥ जेद संगितहि जाणे सुधो, जेहि ग्याने हरिजी प्रतिबोध्यो; सोहि सुणायो ग्यान सयाणे, नलो नलो कही खलक वखाणे ॥ध० २२॥ रंजी राम अति अजीरामा, पहेरावी वरमाल सकामा; व्याह तणो कीधो मंमाण, ए पण मोटो पुन्य प्रमाण ॥ध० २३॥ वहू वरनी सरखीछे जोमी, पोहोचावे मन केरा कोमी; धर्म विषे पण सरखा दोइ, सुखमांवासर जाता जोइ ॥ध० २४॥ एक दिवस हरी उद्धव हेते, आवे कुमर निज महिलसमे ते; ढाल सोलमी कही सुणावे, श्रीगुणसागरजी गुण गावे ॥ध० २५॥ ॥दोहा॥ विद्याधर आव्या घणा, हरीउद्धवने काज; हसत रमत खेले तिहां, नरनारी शुन्न साज ॥१॥ विद्याधरनी कुमरी, नीलजसानामेण; कुमरी रुपे रंगीली, अमरी जीती नेण ॥२॥ नीजलसा वसुदेवने, द्रष्टि रागनी चूर; उपजी जाणी विशेषथी, चमकी नुधरी नुर ॥३॥ प्रीतम लेइ पाधरी, आवी निज अवास; विद्याधर उद्धव करी, चाली गया आकाश ॥ ४ ॥ ढाल १७ मी॥ हम मगनन्नइ प्रन्नु ध्यानमे तथा जिवा गयुंरे जोवनीयुं वाइने ॥ए देशी॥ कुमरी हूइरे उदासणी, हसत न बोलत मोलत चितमो; कुमर चरण निवासणी, ॥कु० १॥ नोजन त्याग न पिवत पाणी, सोवत निद न आवती; लांबा अति निसासा लेती, यदूपतिने चित्त धावती ॥कु० २॥ प्रेम रागछे तीखीकाती, कालजने अति

॥कु० ३॥ जाणी आरती अपार अनोपम, थाइ कापती; जो सुख चाहे माननी मनमां, परने चित्त मत आपती ॥कु० ३॥ जाणी आरती अपार अनोपम, थाइ कापती; जो सुख चाहे माननी मनमां, परने चित्त मत आपती ॥कु० ४॥ तव सा धाइ प्रते भांखे, श्रीवसुदेव कुमारजी; पुछे वातजी; सुत तणा ठलनीपेरे तुंतो, दिसेछे अकुलातजी ॥कु० ४॥ तव सा धाइ प्रते भांखे, श्रीवसुदेव कुमारजी; अवर न परणुं कोइजी; अण दिठो देव उछव करंतां, चितनो चोरण हारजी ॥ कु० ५ ॥ ए वरपामुं तो परणावो, अवर न परणुं कोइजी; अण दिठो देव उछव करंतां, चितनो चोरण हारजी ॥ कु० ५ ॥ धाइ तणा मुखनी सुणी राजा, एसघलो वृत्तांतजी; संतोकी सरखे पीछमे पद्मनीनो, आवट मरणो होयजी ॥कु० ६॥ सोवंतो कुमर अपहरीयो, करीयो काम अनुपजी; नीजपुर आणी वचने वर कुमरी, चाल्यो आप तुरंतजी ॥कु० ७॥ कुमारी अमरी सरखी सघली, सात सयाँ परिमाणजी; परणावी कुमरने राजाराणी, पुज्यो यादव भुपजी, ॥कु० ८॥ सोर सुणंतो पुछे प्रभुजी, एशो सोर प्रकारजी; प्रतिहारणी भांखे स्वामी, हरखे, किधो अति मंमाणजी ॥कु० ९॥ कुमरी तणी माताशुं भाइ, बोल्योतो ए बोलजी; जो माह्यरे होशे सुत सुंदर, एहनो एह विच्यारजी ॥कु० १०॥ सगपणनो सबंध करेशां, ए हुवो ते न्यायजी; लोक मली ए भगमो भांज्यो, तारे सुता अमूलजी ॥ कु ११ ॥ कमली रमली करतो अति वरते, भोगी भमरो जेमजी; श्री वसुदेव नारी कियो नवी थायजी ॥ कु० १२ ॥ गिरिसिर खेलंत निलकंठसो, आयो होइं मोरजी; निलयशाने कुंवर रमतो, पदमानियांने प्रेमजी ॥ कु० १३ ॥ दक्षिणदिश गीरीतटवर नगरे, सोमा राज कुमारिजि, देवतणे लेइ गयो तव, कांइ न चाल्यो जोरजी ॥ कु० १४ ॥ ए कहेता रायथो सुर आवी, लेइ गयो ततखेवजी; यक्ष तणा वादे जीती प्रभु, परणी रति अवतारीजी ॥ कु० १५ ॥ राक्षस एक तणोछे वासो, पेहेला देवल मांहीजी; देश नगरना देवलमांही मुक्यो, साचवतो अतिसेवजी ॥कु० १६॥

आवान, प्रणम्या कुमर उदारजी ॥कु० १७॥ कन्या पांच सया परीमाणे, परणावी नृपालजी; सुख मानता विविध प्रकारे,पुठयो सालो स्यालजी॥कु०१९॥कुलञ्चणजाणया विक्रम परणावी,कन्या ए सतपंचजी;सालो भाखे स्वामी सांभल,सपत्नीनो एक संचजी॥कु०२०॥निमति वचने यदूनायक, राक्षस जीतण सुरजी;कन्या सकल तणोवरथाशे, वाज्या एज सतुरजी ॥कु०२१॥यादव राजा रायरायाना,जिहांजाइ १ तिहां आपजी; गुणसागरसत्तरमीढाले,पुर्वपुन्य प्रतापजी॥कु०२२॥ ॥दोहा॥ अचलपुरी प्रभु आवीयो, वनमाला सुखकार; पुत्री सारथ वाहनी,परणावी प्रेम अपार ॥१॥ संचरतो सोमापुरी, आइ गयो ते स्वाम,कंपीलरायनी कुंमरी,परणि कपिला नाम॥२॥ विविधपरे सुख मानता, सरोवरमां क्रीलंत; निलकंठ गजरुप धरी, आइ कुमर चढंत ॥ ३ ॥ ढाल १८ मी ॥ ॥ चंदलिनी देसी ॥ हाथी आकाशे चालिठ, विद्याधर विद्या वलिड; जन भांखे कुंवर वलीयोहो ॥ कुंवरजी १ ॥ कुंवरजीरुपे निको, कुंवरजी प्यारो जीको; कुंवर कुमरा सीर टिकोहो ॥ कु० २ ॥ हाथी तो चाल्यो जाये, राख्यो कोइनो न रहाये; कुंवर चित चिंता थायेहो ॥ कु० ३ ॥ तव मुष्टि प्रहारे मार्यो, हाथिनो मद उतार्यो; आ पुण्य कामहि समार्यो ॥ कु० ४ ॥ पमीयो गंगाजल मांही, नवकार भणंतो प्राहि; आंगे दुखाणो नांहिहो ॥ कु० ५ ॥ गंगाजल पयरी जामो, अटविमें पमीयो तामो; आगे आयो एक गामोहो ॥ कु० ६ ॥ सींह गुहा तस नामो, विमल प्रभ नृप गुण धामो; त्रीय श्रीमति अभीरामोहो ॥ कु० ७ ॥ पुत्री पोमांबाइ वारु, अति वेद कला इंचारु; साजीति आणी

आगेकि माते गंणिजेहो ॥ कु०ए ॥ जयपुरना
उदारुहो ॥ कु० ८ ॥ परणीने सुख मणीजे, आ पुण पुधन जाणीजे; आगेकि माते गंणिजेहो ॥ कु०ए ॥ जयपुरना
तो पति साधी, एक कुमरी नीकी लाधी; दिन दिन अति किरति वाधीहो ॥ कु० १० ॥ नदिलपुर चाली आयो,
तिहां राजा पोढ सोहायो; प्रजुजी सौने मन नायोहो ॥कु० ११ ॥ कुमरी धार्यो पुर्व वेसो, तस रुप कला सुविशेसो;
परणे यडुराय नरेशोहो ॥ कु० १२ ॥ पुरुष वेशनो नेवो, तव पुछे श्री वसुदेवो; सा उत्तर दे ततखेवोहो ॥ कु० १३॥
तव एक नीमती राइ, पुछ्यो मुझ वरने ताइ; तीहां नाम लीयो गोसांइंहो ॥ कु० १४ ॥ योग कहो किम मिलशे,
रुमे जइ रुमुं नलशे; ए आरति वेगे टलशेहो ॥ कु०१५ ॥ रुप पुरुषनो गणि, सा राज राखंति जाणि; प्रजुजी मिलसे
वेगो आणिहो ॥ कु० १६ ॥ गुरु गोत्रजने सुपसाइ, ए एकसरीखे दाइ; सातमे वासर जाइहो ॥ कु० १७ ॥
अंगारक क्रोधे नरीयो, तिंहां रुप हंसको करीयो; सुखे सोवंतो अपहरीयोहो ॥ कु० १८ ॥ मुष्टी प्रहार ज्यां दीधो,
चेतनथी अलगो कीधो; गंगामें पडीयो सीधोहो ॥ कु० १ए ॥ पाणि तरी कांठे आवे, अटवि तजी वसती पावे;
इला वर्धन नगर सुहावेहो ॥कु० २०॥ हाटे बेठा वेपारी, ते लक्ष्मीवंता नारी; एक शेठ अछे अधिकारीहो ॥कु० २१॥
कुमर बेठो तस पासे, तिहां मलिया लोक तमासे; ए मोटो शेठ विमासेहो ॥ कु० २२ ॥ तव अन्न वस्त्रने नाणुं,
युहरीयाने करीयाणुं; ते दिन अधीकुं वेचाणुंहो ॥ कु० २३ ॥ लाजतणो नही पारो, तव शेठ करेसुं विच्यारो;
एतो एहनो उपगारोहो ॥ कु० २४ ॥ आदर आधिके घेर आण्यो, नोजनशुं प्रेम परमाण्यो; वखतावर पुरुष
पिछाण्योहो ॥ कु० २५ ॥ कन्या बे रुप रसाली, सारतनवाति सु विशालि; परणावी झाक झमालिहो ॥कु०२६॥

अष्टादशमी ढाले प्रेमो, सुख विलसे सुरपति जेमो; गुणसागर जांखे एमोहो ॥ कु० २७ ॥ दोहा ॥ लाजे लोक वाधे घणो, उदमे अधिको लाज; लाजे सीर जाइ अमे, उंचो तो अती आज ॥ १ ॥ लाज विशेष विचारवे, आगे चाल्यो स्वाम; महापुरी आयो सहि, हरख्यो अचरज पाम ॥ २ ॥ ग्राम गम दिसे घणां, मंदिरनां मंमाण; निश्चे करवा कारणे, पुछ्यो पुरुष प्रधान ॥ ३ ॥ ढाल १९ मी ॥ ॥ हुं वारी तुझ साहिब ॥ कावल मति चालो तथा पांचमी वामे परमेश्वरु ॥ ए देशी ॥ पुरुष कहे प्रभुजी सुणो, ए वातज वारु; अचरजकारी छे घणी, चतुरा चितचारु ॥ १ ॥ सोमदत्त राजा भलो, राणी सुविच्यारी; पुरण भद्रा जाणीए, नृपने सुखकारी ॥ २ ॥ सोम श्री नामे भली, कुंमरी अभीराम; स्वयंवर मंडप तेहनो, ए कीधां धाम ॥३॥ राय घणा चाली आवीया, ए निमनरीखो; वचे हुवो सबंधजी, ते सुणण सरीखो ॥४॥ उपर भोमी एकदा, सा राजकुमारी; देखे लांछन चंद्रनुं, ले' लागी भारी ॥ ५ ॥ रुपि फेवल उछव भणी, सुर जाता देखी; जाति समरण पामीयो, मुरछा सुविशेखी ॥ ६ ॥ चवाभी बेठी करी, करी सीतलताइ; मौन महिने साराहि, कही वात न कांइ ॥७॥ धाय मायने पुछतां, दिए जवाब गरीठो; ज्ञान बले परभव तणो, में प्रितम दीठो ॥८॥ हुं हुती देवांगना, तुं हुतो देवो; भोगवी आयु सुरगति तणो, चवीयो ततखेवो ॥ ९॥ तुं उपज्यो हरीवंशमें, हुं आइ इंहाजी; देवे विछोहो पामीयो, केम कीजे माजी ॥१०॥ जो पति पामुं सुभगो, तोतो परणावो; नहीतर परणावा आखमी, सही संयम लेवो ॥११॥ धात्र जणावी वातमी, राजाने जाइ; लोक विसरजा वेगशुं, मनमां डचिताइ ॥ १२ ॥ तंठे भवर राजवी, माहारो खग नाम; विषम वात आवी बनी, केम सीझे काम

इंद्र उछव देखण भणी, आवशे एहो ॥१४॥ हाथी पास बंधायन,
॥१३॥ एटले एक निमीतीयो, भांखेसु सनेहो; अंते भर आयो; वाहन
परणाशे आपो; एम सुणंता हरखीयो, कुमरीनो बापो ॥ १५ ॥ हरीध्वजने देखण भणी, अबला उपरे आकलो,
विविध प्रकारनां, अति सोर मचायो ॥ १६ ॥ बंधन तोडी जोरशुं, हाथी विफरायो; संवाहण लाग्या ॥१८॥
होइने धायो ॥ १७ ॥ सुभट न आवे आसना, सहु जाइ भाग्या; सहस्त्र ग्रहिने सामटा, अणीकाल गज केसरी,
साचो सुर सीरोमणि, यादवजी जाचो; अटल टल्यो नही गामथी, नरफाफे फाचो ॥१९॥ शरणे सावाल; राख राख
एह सामुं होणुं; निःसत्व नरने दोहिलुं, साहसियाने जोणुं ॥ २० ॥ श्वासभरी आवी धसी, उवारी कुमारीका, जग
प्राणे सजी, कोप्योछे काल ॥ २१ ॥ छलबल केलवी घणो, हाथी वश आण्यो; पुरुषोत्तम प्राहि
जादव जाण्यो ॥ २२ ॥ राय त्रीयाने कुमारी, हरख्यां मनमांहि; ए मोटो उपगारीयो, गुणसुरी कहंतो ॥ २४ ॥
॥ २३ ॥ सूर घणो ने बल घणो, धन्य यौवनवंतो; ए उगणीसमी ढालमां, तेहीवार ॥ १ ॥ कुमरीने
॥दोहा॥ विस्मय उपजावी घणो, सहू भणी सुकुमार; शेठ कुबेरज दत्तने, घर आयो ॥ढाल २० मी॥ व-
शर्णी सहू, निज घर करे प्रवेश; वाट वधी ए अति घणी, उछव कीयो विशेष ॥२॥ करे प्रशंस अपार; वारंवार
गमीयानी तथा सुगण नरनारी रुप नजोय ॥ ए देशी ॥ एह सुणी नृप हरखीयोरे, तुं दूषजलका प्रोहणजी; तुं गुण
वधामणांरे; मलीयो सहु परीवाररे॥ मोहनजी ॥ १ ॥ तुं सूरतिकां सोहनजी, मोहनजी मेरारे मेरा तुजशुं प्याररे; त्रुठ्यो
मयिका रोहणजी, तुं चित्त कजका बोहनजी; तेरारे तेरा धन अवताररे,

त्रुठ्यो मुऊ किरताररे पायोरे पायो जल जरताररे ॥ मो० ॥ ॥ ए आंकणी ॥ व्याह तणी विधी साचवीरे, जेसा चित वित होय; आनंद रंग विनोदमांरे, वासर जाता जोयरे ॥मो० २॥ मानो वेग मनोहरुरे, विद्याधर बलवत; नीशजर सुखे शेयतोरे, आइ गयो मधमंतरे ॥मो० ३॥ सोमश्री कुमरी हरीरे, चाली गयो आकाश; जाग्यो श्री वसुदेवजीरे, देवि न दिठी पासरे ॥ मो० ४ ॥ प्रीया प्रीया पोकारतांरे, सोमश्री आकार; अरी जगनी आवी धसीरे, वेगवति वर नाररे ॥ मो० ५ ॥ जेद न जाएयो जुपतिरे, पुछण लाग्यो तास; किहां गइती वीहीरारे, बोले साचव्हासरे, ॥ मो० ६ ॥ गर्मि हुइ मुजने घणीरे, सीतलताइ जाण; वनीथी हुं वायरेरे, प्रीतम अरतिम आएयरे ॥मो० ७॥ रामा रची रुपसुंरे, नाकीयो कइयो विचार; करी अति खीजमत खरीरे, जोगवे जोग उदाररे ॥ मो ८॥ पोढयो प्रजुजी पालकेरे, पोष्यो पदमनी प्रेम; विमासण विधी साचवीरे, अवसर पामी तेमरे, ॥मो० ए॥ एक दिन सुखे सोयतांरे, खेचरी ए अजीराम; रुप धरीयो मुलगोरे, जागीयो प्रजु तामरे ॥ मो० १० ॥ बाल मुझ शशिकलारे, युवा हास्या दाम; दिवस प्रीजे प्रगटेरे, तिमही एह अकामरे ॥ मो० ११ ॥ पुछी प्रजुजी पद्मनीरे, कोणठो तमे आप; रजुपणे नांखे जलोरे, कोइ न राखे पापरे ॥मो १२॥ रुपा चल दक्षणदिशेरे, स्वर्ण प्रजपुर देख्य; चित वेग विद्याधरुरे, राय रुमो पेख्यरे ॥ मो० १३ ॥ त्रीय अंगारवति कहीरे, मनोवेग तसु नंद; नंदनी तो हुं जलीरे, अबु नयना नदरे ॥मो १४॥ रुप अधिको सांजलीरे, मनोवेग नरेश; सोम श्री लेइ गयो, सीता ज्युरे लंकेशरे ॥ मो १५ ॥ सोमश्री साची सतीरे, जोर न चाल्यो चोर; 'केश मणिने' 'कामनिरे, न लेवाइ जोररे ॥ मो० १६ ॥ हुं

सखीनुं तेहनीरे, प्राणहीथी प्यार; मोकलीनुं तुम्ह कन्हेरे, आणी एह विच्याररे ॥ मो० १७ ॥ मुझ संघाते बे घणोरे, नाथजीको नेह; आकतो होइ खरोरे, मति तजे नीज देहरे ॥मो० १८ ॥ रुपे मोही प्रभुतणेरे, शुधहि नाठी दूर; हणि मनमथ बाणशुंरे, उपज्यो राग सनूररे ॥ मो १९ ॥ रुप धरीने बेहना तणोरे, मानीयो में भोग; स्वारथीयो संसार छेरे, आपवंछो लोगरे ॥मो० २०॥ स्वामी थारी सुंदरीरे, हुं हूइ सुख हेत; छांमी मणि चिंतामणीरे, काच कुण चित देतरे ॥मो २१॥ सोमश्रीं अपहारनिरे, एहनी सुणी वात; हुउ भुप उदासीयोरे, अरतिमें दिन जातरे ॥मो० २२॥ ढाल भली ए विसमीरे, करत भोग विलास; श्री गुणसागर सुरीजीरे, पुन्ये पुरे आशरे ॥मो० २३॥

॥ दोहा ॥ श्री वसंत ऋतु राजीयो, आयो अधिक विराज; फूलफल शोभा खरी, कोयल बोले गाज ॥ १ ॥ मीत्रोना परीवारसुं, खेले वसंत नरेश; सुखे सोवंतो अपहर्यो, मानस वेग विशेष ॥ २ ॥ मुष्टी प्रहारे मारता, शुध्द रही नही कोय; समरतो नवकारने, उर होइ आयो सोय ॥३॥ गंगा तट विद्याधरु, विद्या साधे जाम; आणी पड्यो उपरे प्रभु विद्या सिध्धी ताम ॥४॥ ॥ ढाल २१ मी ॥ आजुको दिहमो मोहे भावे हो नणादी ,तथा हुंवारी धना तुं मुज प्यारोवे ॥ए देशी ॥ आवी एक विद्या धरी हेयादू, लेइ चाली जाम; प्रभुने मेली बागमे हे याड, खबर करी अभीरामहे याड ॥१॥ ऊगम गयो तिहावे, परखंभ परदेशमे हे ज्याड; शोभा अधिकी पावेहे याड ॥ऊ २॥ राजा अमृत द्वारना हे याड, खेचर बंधव तिन; दधि मुख दिलनो सुरछे हेयाड, चतुर शिरे सुप्रावीणहे याड

१ वाघनी मुछनो वाळ. २ नागना माथानो मणि. ३ सती स्त्री.

॥ऊ ३॥ हमसु वेग विराजतो हेयाउ, चंमसुवेग प्रचंम; आया प्रनुनी सामा हेयाउ, माने आएा अखंम हे याउ ॥ऊ० ४॥ पधरावी निज मंदिरे हेयाउ, श्रीवसुदेव नरेश; मदन सुवेगा वेग शुं हेयाउ, परणावी सुविशेष हे याउ ॥ऊ० ५॥ प्रीतम पद्मनी प्रेमशुं हेयाउ, मग्न महा मनमांही; उलट अति घणी मानतो हेयाउ सुखमांही दिन जाइ हेयाउ ॥ऊ० ६॥ उगंतो दिनकारनो हेयाउ, घमीए वधतो तेज; तिम नार्हिद वसुदेवनो हेयाउ, चमतो तेज सहेज हेयाउ॥ ऊ० ७ ॥ वाप डोमावण कारणे हेयाउ, दधि मुख नाखे वात; श्रीनमीवंश विशेषथी हेयाउ, विद्यूत वेग विख्यात हेयाउ ॥ऊ० ८॥ पुत्र पनोता तेहना हेयाउ, एह मति नावियाण; धारा मननी जावती हेयाउ, पुत्री चोथी जाए हेयाउ ॥ऊ० ९॥ निमतिने पुढीयुं हेयाउ, कुमरी कारण कंत; निर्मल माते बोलीयो हेयाउ निमती गुणावंत हेयाउ ॥ऊ० १०॥ चंम सुवेग कुमारने हेयाउ, विद्या साधन जोइ; पमशे खांधा उपरे हेयाउ, पुत्रीनो वर सोइ हेयाउ ॥ ऊ०११ ॥ ते विनथी लघु नाइजी हेयाउ, निश्चय करवा हेत; विद्या साधे वेगशुं हेयाउ, शुनवांढीत फल देत हेयाउ ॥ऊ० १२ ॥ नन्ननुं तिलक सोहामणुं हेयाउ, नगरनी रुपम नाम; श्री त्रिशिखर नरेश्वरु हेयाउ, सर्पक सुत गुण धाम हेयाउ ॥ऊ० १३॥ तेहने अरथे मागता हेयाउ, पुत्रीनापी तात; युध हरावीता तेहने हेयाउ, चाल्यो लेइ आरात हेयाउ ॥ऊ० १४॥ वंधीखाने राखीया हेयाउ, देव हमारो बाप; जोर न चाले माहरो हेयाउ, अरिनो प्रबल प्रताप हेयाउ ॥ऊ० १५॥ पुज्य प्रताप करी खरा हेयाउ, सरसे सघला काज; आज थकी तो आगने हेयाउ, कुम ने सबलि लाज हेयाउ ॥ऊ० १६॥ विद्या साधी सादरी हेयाउ, बंधव तुम प्रसाद; साह्याजे करी स्वामीने हे

॥ऊ० १७॥ दिन वचन सांभली हेयाड, उठ्यो मुछ मरोम; आरति कोइ मराखज्यो
याड, होसिए अहिलाद हेयाड ॥ऊ० १८॥ साला पासे शिखीयो हेयाड, अस्त्र अनेक प्रकार; अग्नि अने ब्रह्मा
हेयाड, करशुं कारज कोम हेयाड ॥ऊ० १९ ॥ वैश्नव वारु नामथी हेयाड, जमदंम अस्त्र विच्यार; स्थंभन
भला हेयाड, श्री महेंद्र उदार हेयाड ॥ ऊ० २० ॥ वंधनमोक्षन जाणीए हेयाड, जंभनने ए सान;
मोहन तोटिका हेयाड, अण रोहण अविधार हेयाड ॥ऊ० २१॥ सर्व सुअस्त्राहि गदना, शल्य
वायव्य छेदन भेदना हेयाड, आरुढ अस्त्र प्रधान हे याड ॥ ऊ० २२ ॥ ॥
निवारण हार; गुणसागर गुण गाजतो हे याड, ढाल एकवीसमी सार हे याड ॥ ऊ० २३ ॥ ॥
दोहा ॥ साहण वाहन सामटो, साथे घणा नरेश; चढीयो आमंबर घणे, अरी उपरे सुविशेष ॥ १ ॥ मंगल
मलियो मलपतो, घोमो दक्षिण हाथ; मंगल गाती गोरमी, सात पांचनो साथ ॥ २ ॥ उदयो भणाती योगिनी,
सामो आव्यो शाह; दक्षिण भयरव कलकली, उपज्यो अति उछाह ॥ ३ ॥ खर देवी मावी भली, बोले होमाहोम;
कुंकर वामे उतरयो, काज समारे कोम ॥ ४ ॥ हरिणमाल अधुरमी, जमणी जाइ प्रांत; सांम चास दक्षिण दिशे,
वामे वायस जात ॥ ५ ॥ मावां लाली बोलीयां, अवर अनेरा सार; शुकन विच्यारी चालीयो, श्री वसुदेव कुमार
॥ ६ ॥ अरीपुण आयो सामुहो, दल वलनो नही अंत; रेणु रही उंची चढो, समझे न कोई पमंत ॥ ७ ॥ ढाल २२
मी ॥ तेतरीयारे भाई तेतरीया ॥ ए देशी ॥ पुन्य वले अधिको यडुराजा, करतो अधिक दवाजारे; खेचर साथे
भ्राणी अमीयो, वाज्या शुभ जश वाजारे ॥पु० १॥ हाथीओथी हाथी साथीओथी साथी, असवारे असवाररे; रथसाथे

रथ नमीया नारी, मच्यो युद्ध अपाररे ॥ पु० २ ॥ नील सुकंठ अंगारक आतुर, सूर्पक मानस वेगोरे; चंम संवेग तणे आगे ए, हार्यो नफूरा तेगोरे ॥ पु० ३ ॥ खेचरने यादवने लमवे, देवो अचरज पायोरे; विविध प्रकार विशेष विशेषे, वाणे अंबर छायोरे ॥ पु० ४ ॥ अग्नि शुं वाणे अग्नि विकुर्वि, हाथी घोमा वालेरे; वारुण वाणे घन वरसावी, एह उपद्रव टालेरे ॥ पु ५० ॥ मोहन वाणे नंदतणे बल, लोक सहु ते सोयरे; बाण प्रबोधे निद निवारी, होंशीआरीमां होयरे ॥ पु० ६ ॥ श्री माहेन्द्र वाणे हणतो, खेचर पमीयो मंदरे; यादवनी जग जीत गवाणी, उपज्यो अति आनंदरे ॥ पु० ७ ॥ सुसरो बंधनथी छोमावी, देइ ददामे घावरे; पामी यश निज नगर जणी ते; आवे सहु परीवाररे ॥ पु० ८ ॥ सुर्पनखा नामे अरी नारी, वैर विशोधन आवीरे; मदन सुवेगा रुप विराजी, प्रभुजीके मन नावीरे ॥ पु० ए ॥ छल पामीने प्रभु सोवंतो, चाली लेइ आकाशरे; मान संवेग नणी प्रभु सोंप्यो, करवा काज विनाशरे ॥ पु० १० ॥ अरी करथी खसी अणु मांही, पमीयो लागी थोमीरे; राज ग्रही नगरी चली आयो, जीती कंचन कोमीरे ॥ पु० ११ ॥ कंचन वाटे देतां बोले, किरति चारण नाटोरे; श्रीवसुदेव पधारया पहिली, जरासंध उचाटोरे ॥ पु० १२ ॥ निमीत्त पुछयोथो राजा, मुजने मारण हाररे; वेग वतावी करु उपकर्मा, केरो कोइ विच्यारे ॥ पु० १३ ॥ जोतिष्य जाण कहे जीतशे, जुया खेली जेहरे; कंचन कोडी तणा वरदाता, गुण मणि केरो गेहरे ॥ पु० १४ ॥ तेनो जायो रुष्ण कुंवर वर, तु मइंता जाणरे; निश्चय वात विशेष विच्यारी, संशय एक न आणरे ॥ पु० १५ ॥ एम सुणी जासु सिकारण, नृपनो लोक फरंतोरे; कंचन जाती त्याग करंता, मलीयो तंते तंतोरे ॥ पु० १६ ॥ चाम तणी नाथामें

॥पु० १७॥ वेगवति राणा साजनाथा, घाली, डुंगरथी नाखंतो रे; गरूतो आवी पड्यो भू ऊपर, परमेष्टि नाखंतोरे ॥पु० १७॥ वेगवति रुवे प्रभु आगे, जब ए श्री नवकारोरे; नाथी खोली देखत दीठो, प्यारो प्राण आधारोरे ॥ पु० १८ ॥ तुम अपहरी श्रेणी दोयमें, शोधी प्रभुजी सुसतो होइरे; नारी निहाली नेह धरीने, पुठी नांखे सोइरे ॥ पु० १९ ॥ सुर्पनखाथी मानस वेगे, लीधो मारण शोध्यो नरतोरे; मदन सुवेगा घरथी तुमने, सुर्पनखा अपहरतोरे ॥पु० २०॥ सुर्पनखाथी मानस वेगे, लीधो मारण हेतोरे; मारी न शक्यो राजग्रहमें, आयो शुन्न संकेतोरे ॥पु० २१ ॥ ढाल बाविसमी हुं धन प्रन्नुजी, जे तुम सेवा लाधीरे; श्रीगुणसागरसुरी नलो जे, जाणे अवसर साधीरे ॥पु० २२॥ दोहा ॥ वेगवति साची सती, आवी पीउने काम; प्रिती विशेष विच्यारवे, अति सनमानि साम ॥१॥ गिरि कांठे उद्यानमें, खेल खेलंता जाम; नागपाश बांधी थकी, दीठी कुमरी ताम ॥२॥ बंधन ठोड्यां हाथशुं, सा नांखे सुविच्यार; विद्या सिध्धी माहरी, ए प्रन्नु तुम उपकार॥३॥

॥ ढाल २३ मी ॥ सुगधासुसनेहि, आसनना योगी, तथा वेधक जग विरला ॥ ए देशी ॥ उपगारी होराजा, थारा अधिक दवाजा हो ॥ उ० ए टेक ॥ दक्षिण श्रेणि नगर निरुपम, नामे गगन प्रिय वारुहो ॥ उ० ॥ विद्युतदंत नरेशरु निको, गुणमणिनो नंमारु हो ॥ उ० १ ॥ तेनो नंदन बाल सुधाकर, हुं बुं तास कुमारी हो ॥ उ० ॥ विद्या साधत वैरीए मुजने, बांधी बंधन नारीहो ॥ उ० २ ॥ बंधन ठोड्यां करुणा आणी, हुं थाइश तमारी राणीहो ॥ उ० ॥ अमृत ठांडी खारो पाणि, कोण पीए सुख जाणीहो ॥ उ० ३ ॥ विद्या आपुं विविध प्रकारे, अंतर न आणुं कोइ ॥ उ०॥ वेगवतिने आप पनोति, नाखे प्रितम सोइहो उ० ४ ॥ प्रभु आदेशे वेगवतिने, लेइ निज घर आवीहो

च....

॥ उ० ॥ विद्या साधन करती वरते, वेगवति सुख पाविहो ॥ उ० ५ ॥ तापस स्थानक पधारयो वनमें, अचरज अधिको पायोहो ॥ उ०॥ नौतम तापस ते सहु दिसे, एक तदावृत लायोहो ॥ उ० ६ ॥ सो नांखे तुं सांजल स्वामी," वात अचंना कारिहो ॥ उ०॥ सावरती नगरीनो नायक, इंद्र तणो अवतारीहो ॥ उ० ७ ॥ एणी पुत्र पवित्र पनोतो, तास सुंदरी नारीहो ॥ उ०॥ कुमरी अमरीने अनुसरती, प्रियंगु सुंदरी प्यारीहो ॥ उ० ८॥ स्वयंवर मंरूप तेहतणे जी, नृप घणा वोलाव्याहो ॥ उ०॥ कुमरीने मन कोइ न मान्यो, ताम घणुं अकलायाहो ॥ उ०९॥ कगमो मच्यो कुमरी पिताशुं, दिए पुत्री परणावीहो ॥ उ०॥ कुमरी हठीली अधिक अमीली, समझे नही समझावीहो ॥उ० १०॥ नृप नणे हम जोरे वरस्यां, कुमरी पिता तव कोप्योहो ॥ उ० ॥ युद्ध करवा कारण कावो, सङ्पणाथी रोप्योहो॥ उ० ११॥कोइ नरपति लडी लनी मुआ, कोइ नाग जुजुआहो ॥उ०॥लाज धरी वनवास ग्रहीने, तापस रुपि हुआहो ॥ उ० १२ ॥ ते कुमरीने देखण केरी, यडपतिनी मति जागीहो ॥ उ ॥ नगरी वनमे चाली आयो, अत्रयतो अनु रागीहो ॥ उ० १३ ॥ देवज्ञ एक नलोठे उत्तम, द्वार जमीत आति वारुहो ॥ उ ॥ पेखी पूछि पुरप प्रनाविक, सो नांखे सुविचारुहो ॥उ० १४॥ सकल सिरोमाणि शेठ प्रसीधो, कामदेव सकामहो ॥उ०॥ ताघर सुंदरी सुंदर नारी, रुपगुण अनीरामहो ॥ उ० १५ ॥ तासपुत्री अठे गुणवंति, वंधुमति सुकुमारीहो ॥उ०॥ जोवन तन जन मोदन गारी, वाली जाकझमालीहो ॥ उ० १६ ॥ शेठे पुछ्यो निमतिक वारु, सुता वर कुण थाइहो ॥उ०॥ द्वारखोलशे देवज्ञ केरो, सोइ वर सुखदाइहो ॥ उ० १७ ॥ एमनी सुणी मन व्याजल लाग्यो, देहुलमांही जायहो ॥ उ० ॥ विस

बार ए अर्गला केरो, द्वार खोल्यो रायहो ॥उ०१८॥ देखी प्रभुने देवलमांही, शेठ आश्चर्य पाइहो ॥उ०॥ परणावी पुत्री निज खांते, ढील न कीधी कांइहो ॥ उ० १९ ॥ ढाल ए त्रेविशमी वरचारु, भोगवे भोग उदारुहो ॥ उ ॥ श्री गुणसागर सूरी पयंपे, यादव यश विस्तारुहो ॥ उ० २० ॥

॥ दोहा ॥ अंते उर परीवारशुं, राजा वनमें जाय; दिठो प्रभु बाजारमें, नयण रह्यां लोभाय ॥१॥ लोभाया लोयण घणुं, देखी कुमरनी शोभ; कुमरीने संभोगनो लाग्यो अधिको लोभ ॥२॥ शोध करंतां सांभल्यो, बंधुमति भरथार; बोलावी पुछे तदा, सखियण सुविचार ॥ ३ ॥

॥ ढाल २४ मी ॥ धन धन जंबुस्वामीने ॥ ए देशी ॥ बहिन भणे बाइ सुणो, ए वसुदेव कुमार; भोग पुरंदर सुंदरुं, कामतणो अवतार ॥१॥ भाग्य प्रबल वसुदेवनो, एतो गुणमणि रयण भंडार; भाग्यवति जे भामनि, एतो पामे भल भरतार ॥भा०२॥ एकांते तव दूतिका, आवी प्रभुजीनी पास; कुमरी काम समारवा, आप करे अरदास ॥३॥ देव पधारो मंदिरे, पुरो कुमरीनी आस; हसी रमी रसरंगमे, कीजीए भोगविलास ॥अ०४॥ जो नवमानो वातए, तो थाशे विपरित; प्राण तजशे कुमरी, अति दुखदाइ बे प्रित ॥ अ० ५ ॥ उत्तर दीधो अवसरे, ज्ञानी दीठो होइ; संतोकी घर मोकली, हरखी कुमरी सोइ ॥अ०६॥ वद्धमाता कुमरीतणी, वितराणि अभिराम; चलण प्रभ सह चारणी, नागश्रीत सुनाम ॥ अ० ७ ॥ सोवंतो भरनिदमें, देवी कीयो अपहार; आवी बेठी बागमें, वाणी वदे सुविच्यार ॥ अ० ८ ॥ आराति काइ मत आणजे, हुं थारी हेतकार; चरी सुणावुं आपणी, आलस निद निवार ॥अ०९॥ अमोघ दर्शन नामथी, चंदनपुरनो राय; चारुमाति पति जाण ए, जो सौने सुखदाय ॥ अ० १० ॥ चारु चंद्रनामे

जन्नो, नंद महा सुखकंद; राज करे रत्नीञ्चामणो, ठे सु कंद निकंद ॥ श्र० ११ ॥ ॥ श्रनंगसेनानी सुता, सा रुप निधान; काम पताका प्रगटी, हवी जामनी जीने वान ॥ श्र० १२ ॥ काम पताका कामनी, ललित मनोहर गात; राजा कीधी रागनी, सुख मांही दिन जात ॥ श्र० १३ ॥ दिन केताने श्रंतरे, राजा तापस थाय; गर्जे कहे वैरागनी, साथ रही सुख पाय ॥ श्र० १४ ॥ तापसी दिन पुरते, प्रसवी पुत्री सार; रुपिदत्ता श्रनिधानथी, वाधे रुप श्रपार ॥ श्र० १५ ॥ ए चोवीशमी ढालमे, श्रावकनां व्रत पंच; श्री गुणसागर श्रादरे, जंग न श्राणे रंच ॥ श्र० १६ ॥ दोहो ॥ सावथी नगरीनो धणी, शीलायुध नरेंद्र; घोमे खांच्यो श्रावीयो, तापस वन श्रानंद ॥ १ ॥ पगे लागतां तापसे, श्रादर दीयो श्रपार; तापस पुत्री साचवे, विनय तणो श्राचार ॥ २ ॥ जोजन जक्ति विशेषथी, करती वरते जाम; या पुन्य मांही उपज्यो, काम राग श्रजिराम ॥ ३ ॥ ढाल २५ मी ॥ हुं तुऊ साथे नही बोलुं रीसन्नजी ते मुऊने विसारीजी ॥ ए देशी ॥ काम राग श्रठे जग मोटो, जेहथी खाइं खोटोजी; एकलमे तीहुं जग हरायो, कुण वमो कुण ठोटोजी ॥ का० १ ॥ राजानी श्रातुरता जाणी, ऋपिपुत्री वृत राखेजी; व्याहतणो विधि साचवी, प्रेमतणो रस चाखेजी ॥ का० २ ॥ राजा बोले कामम मोले, नाम प्रकासे मारोजी; सावरथी नगरीनो नायक, ठे मुऊ प्रितम प्यारोजी ॥ का० ३ ॥ विविध प्रकारे सुख विलसंता, वारु वचन वदेचोजि; जो श्रोधान रहेशे माहरे, तो शो उत्तर देवोजी ॥ का० ४ ॥ राजा नीकली गया पाठे, लोक घणुं श्रकलायोजी; शुद्ध न लाधे तास पुत्री, पुठया उत्तर पायाजी ॥ का० ५ ॥ तापस वन राजा ठेनी सुणी, सामा लोक सिधावेजी; राजा सन्मुख

देखी आवत, परम महा सुख पावेजी ॥ का० ६ ॥ तापस पुत्री मातपिताने, वात जणावी एहोजी; बानी राखत जायो बेटो, रुपकला गुण गेहोजी ॥ का० ७ ॥ रोग सुयाने माता मुइ, सुरगतिनो अवतारोजी; साहू नाग आविंतरणि, नही संदेह लगारोजी ॥ का० ८ ॥ श्री जिनधर्म अछे जग साचो, जो आराधे कोईजी; मोक्षतणा फल आपण हारो, सुर गति सहेजे होइजी ॥का०९॥ ज्ञान बले में देख्यो पाछो, जाग्यो नेह घणोरोजी; मातपिताने सुत संघाते, मोही रह्यो मन मेरोजी ॥ का० १० ॥ चाली आव्यां मातपिताथी, दुखिया दीठा दोइजी; मा पाखे बालक जेम जीवे, करे विमासण सोइजी ॥का० ११॥ बालपणे माता मरी जाइ, तरुण पणे तो नारीजी; वृद्धपणे सुत मरतां नाख्या, ए तिने दुख नारीजी ॥का० १२॥ आप जणावी मातपितानी, आरति अलगी टालीजी; एणीपेरे आप धवरावी, बालक लीधो पालीजी ॥का० १३॥ एणे पुत्र कही बोलाव्यो, तापस सघले तामोजी; एहज नाम प्रसिद्धो चाल्यो, लोक वचन अभिरामोजी ॥का० १४॥ मरण समे निज मातपिताने, जिनमतशुं स्थिर स्थापीजी; अणसणने आराधन बले, सुरवर पदवी आपीजी ॥का० १५॥ तापसणी होइने हुतो, बालक लेइ लारोजी; शिलायुद्ध तणे घर आवी, सुपण बाल कुमारोजी ॥का० १६॥ राजा साथे वदे मृदुवाणी, ए ल्ये थारो नंदोजी; अपुत्रियाने नंदन क्यांथी, नांखे ताम नरंदोजी ॥का० ॥ १७ ॥ मूलथी वात सुणावत जाण्यो, साचो शोअल विच्यारोजी; बालक लीधो कारज सीधो, मान्यो अति उपगारोजी ॥का० १८॥ एणी पुत्र कीयो वभ्रराजा, राय हुवो व्रत धारोजी; नेमि तीर्थंकर तीर्थ एतो, वात तणो विस्तारोजी ॥ का० १९॥ एणी पुत्र तणेवर पुत्री, प्रियंगु सुंदरी बालाजी; रुपकला

गुण सुंदर साची, स्वामी सुख मालाजी ॥ का० २० ॥ तुमशुं राग धरे अधिकेरो, सारो एहनो काजजी; जाणी अदता मात खींचावो, में दीधी ए आजजी ॥ का० २१॥ ए घरमें हुं हरतां फरतां, महारुं कीधुं चालेजी; राजाजी तो एकमनो अति, आण हमारी पालेजी ॥ का० २२ ॥ कामदेवना देवल मांही, प्रित पनोती पोखीजी; करी विवाह विनोद करीने, सुंदरीने संतोखीजी ॥ का० २३ ॥ देवल मांहि देवि जापित, कीधो लीधो लाहोजी; राय लिखी वींतरणी विलसीत, प्रगट कीयो विवाहोजी ॥का० २४॥ ए पचविशमी ढाले नाखी, जिहां तिहां अधिकाइजी; श्रीगुणसागरसुरी कहीजी, पुन्य सदा सुखदाइजी ॥का० २५॥ ॥दोहा॥ एकवार एकलपणे जागी जोवे जाम, काचित् कुमरी आगले, उनी दीठी ताम॥१॥कवण अछो तुम कामनी, कहो आपणो नाम; काम किते आवी अछो; सोइ प्रकाशो काम ॥२॥ ढाल २६ मी ॥ श्री श्री मंदिर साहेब मेरा ॥ ए देशी ॥ स्वामी सुणेने सुंदरी भाखे, संप कोइ न राखेरे; काज करवा कारण आवी, सोइ कारज दाखेरे ॥ स्वा० १ ॥ गिरि वेंताढे नगरी निरोपम, गंध समृध्धि सोहावेरे; गुणानो सागर अधिक उजागर, राय गंधार कहावेरे ॥ स्वा० २ ॥ प्रथवी राणी रंभा जाणी, कुमरी तेहनी जाइरे; नाम प्रसिधि प्रभावतिहुं, सुजनपणे सुखदाइरे ॥ स्वा० ३ ॥ मानस वेग तणे घर गइती, स्वर्णसुप्रभपुर मांहीरे; मात श्रृंगारवति सतीयामें, सती सीरोमणि प्राहिरे ॥ स्वा० ४ ॥ वेगवति निज पुत्री केरी, आश अधिकी आणेरे; में पुछी सा क्यां गइछे, खबर कोइ न जाणेरे ॥ स्वा० ५ ॥ सखियापणे सोमश्री बोली, माहरे काम सिधावीरे; श्री वसुदेव नरेश्वर पासे पण, पापणि फरी नआवीरे ॥ स्वा० ६ ॥ मानस वेग महा मयमंतो, मुजशुं अडीयो आवेरे;

माय दबावे शील सुधर्मणी, पोंहचो वान वीपावेरे ॥स्वा० ७॥ तुं उपगारी सिरोमणि साची; माह्यरो कारज सारेरे; संदेसोसाइ संघाते, कहिता जीव उवारेरे ॥ स्वा० ८ ॥ आश वले में ए दिन लिधा, आगे आशा छूटेरे; झुरी झुरी पंजर हुइ, अब मुझ हइमो फूटेरे ॥ स्वा० ९ ॥ वेगे वा'र कीजीइं माह्यरी, नहीतर ठोमुं प्राणोरे; शीलभंगथी नर्के जाणो, प्राण घणा घट आणोरे ॥ स्वा० १० ॥ जीवन मरण तणुं शुं माह्यरुं, अबला तो धुर नामोरे; पुरुषपणो तेहनो इयो उआजो, जेहथी न सरे कामोरे ॥ स्वा०११॥ दिन वचनमें एही वीनविउ, ज्यम जाणो त्यम कीजेरे; एटलो जाणी जोर अरिनो, क्युंए सुयश न लीजेरे ॥ स्वा० १२ ॥ चालो तो प्रभुने पोंहोहचावुं, सोमश्रीने पासेरे; चाली कहंता चतुरपणाथी, चाली लेइ उल्हासेरे ॥ स्वा० १३ ॥ स्वामी नरखी सुंदरी हरखी, आरति कीधी कोणेरे; नारी रुप धरी प्यारो पेखमो, पद्मनिशुं सुख माणेरे ॥ स्वा० १४ ॥ काम समारी सैह्यर केरो, प्रभावति घर चालीरे; लोकाचार वे'वार विशेके, चितमो पिउने आलीरे ॥ स्वा० १५ ॥ दिन केताने आंतरे मानस, वेगे लखी ए वातोरे; कोपतणे वश कलकलिउ अति, कालो पीलो थातोरे ॥ स्वा० १६ ॥ मांडी समर तणीरे सजाइ, शोचन कीधो कोइरे; सिंहतणीपेरे सुरपणाथी, आणी अडीयो दोइरे ॥ स्वा० १७ ॥ जाणी अन्याइ ठोमे जाइ, जाइ धर्म सहाइरे; खेचर प्रभुनो पक्ष करंता, मची आधिक लमाइरे ॥ स्वा० १८ ॥ तव तो वेगवतिनी माइ, जाणी जमाइ प्यारोरे; दिव्य तीरना तरकस दोई, दीधो धनुष उदारोरे ॥ स्वा० १९ ॥ प्रज्ञापति वर विद्यावारु, प्रभावतिथी पाइरे; विद्या बलने भुज बले वली, बांध्यो त्रीयानो भाइरे ॥ स्वा० २० ॥ सासु सामी आवी मागे, पुत्र भिक्षा मुझ दीजेरे; बंधन ठोमी

साला साथे, परिघल प्रीति कीजेरे ॥ स्वा० २१ ॥ सोमश्रीने प्रभु पहिरावी, साथे हुवो स्वग सोयरे; वेसी विमाने महापुरी आया, सासरीया सुख होयरे ॥ स्वा० २२ ॥ विश अने खटमी ए ढाले, दिन जाता न जणाइरे; श्री गुण सागर सुरी सद्गुणो, साजनीया सुख दाइरे ॥स्वा० २३॥ ॥ दोहा ॥ सुरपक नामे खेचरु, खेचरपणे तिवार; रुप धरी घोडा तणो, कीधो नृप अपहार ॥१॥ ऊंचो जातां अंबरे, दीधो मुष्टि प्रहार; गंगाजल मांही पड्यो, श्री वसुदेव कुमार ॥२॥ गंगाजलथी नीकल्यो, तापस वन आवंत; आदर देखी अति घणो, गाढो सुख पावंत ॥ ३ ॥ ॥ ढाल २७ मी ॥ ॥ देशी वनमालानी ॥ एक दीठी रमणीराइरे, सासु धन जाणे कांइ; विकल रुपणी दीसेरे, सा दांत घणेरु पीसे ॥ १ ॥ वस्त्र विहुणी वालीरे, नर हाड धरया विकराली; ए घेली नाम धरंतीरे, नृप देखीने रंग करंती ॥ २ ॥ तव पुछीयो तापस राजारे, ते उत्तर आपे ताजा; ए जरासंधनी जाइरे, ए केतुमतिरे कहाइ ॥ ३ ॥ जीत शत्रु नरेश राणीरे, ए रुपे रंभा समाणी; ए सर्व सुलक्षणा धारीरे, ए मात पितानी प्यारी ॥ ४ ॥ ए कर्म न छूटे कोइरे, सुंदर दानव मानव होइ; एह अवस्था पामीरे, तव पुनरपि पुछे स्वामी ॥ ५ ॥ ए वाय तणो छे जोरेरे, किणही कीधो कामो दोरो; जे जीम हशे तिम नासेरे, हुं जोशुं एह तमासो ॥ ६ ॥ कोई मंत्रवादियो आयोरे, ते आपुण पेरे खीजायो; ए तेहनां कीधां कामोरे, ए छे राजसुता अभिरामो ॥ ७ ॥ ए परवश हुं जामोरे, धुर फेडीयो तेहनो गामो; ए मारीविकारी देहोरे, तस हाडा साथे सनेहो ॥ ८ ॥ तव करुणानी मति आणीरे, सा कीधी तामसयाणि; श्री नवकार पसाइरे, न वांछित काम सराइ

॥ ए ॥ जम रुपीया जण ध्यायारे, राजाना रोश नराया; उपकार कोई न जाणयोरे, प्रनु राज ग्रहि में आएयो ॥ १० ॥ पुछतां उत्तर नाखेरे, ते काणि न कोइ राखे; ए केतुमतिने बापेरे, वर एक निमतिइं आपे ॥ ११ ॥ ए पुछचोथो पेहलुं वारुरे, जगजीवन आ सहु मारु; मुऊ हता आप्यवता विरेरे, तुं नांख्य नावि नलीपेरे ॥ १२ ॥ तव जाणे नर सहि नाणिरे, कही दासीए आहिनाणि; तुम्ह पुत्री सारी कस्येरे, तस नंदनथी तुम रस्ये ॥१३॥ ते दिनथी नृप आदेशरे, हुशियारीमें सुविशेष; वरतता तुं अब लाधोरे, सुर इष्ट नणी आराधो ॥ १४ ॥ अब वध नुमीका लेइरे, तुज घाव करेस्यां केइ; ए सुंदर काया कापीरे, दिश देवाने बव आपी ॥ १५ ॥ स्वामीनो काम समारीरे, हम वाहला होस्यां नारी; एह सुणंतां वातोरे, प्रनुनो मन अकलातो ॥१६॥ चिंताए चांप्यो जामोरे, एक खेचर आयो तामो; प्रभु लेइ चाल्यो ठोमाइरे, ते सुनट रह्या मोहवाइ ॥१७॥ आकाशे जाता जोइरे, खग साथे पुछे सोइ; तुं कुण अछे सुखकारीरे, कहे वात विशेष विचारी ॥ १८ ॥ हुं प्रनावतिनो बावोरे, माहरो छे अधिक असावो; मुऊ नागीरथी अनीधानोरे, हुं रायानो राजानो ॥१९॥ अब पोतिने परणावारे, वैताढ्य गिरिरे वसावा; तुऊ लेइ जाउंबुं विरारे, था साहसवंत सधीरा ॥२०॥ ए हष्टीरागनो साजोरे, छे प्रनावति शुं ऊाऊो; ए सतावीशमी ढालोरे, गुणसुरी कहे सुविशालो ॥२१॥ ॥ दोहा ॥ नुमंमलने परहरी, गाउ वीशहजार; उंचो जातां अंबरे, दक्षिण श्रेणि उदार ॥१॥ गंधसमृद्ध पुरवरां, आइ गया तत्काल; खबर जणावी सादरी, सहु नणी सुविशाल ॥२॥

॥ ढाल २८ मी ॥ तुं सांनल हो जिनपति, तथा वांसलडी वेरण थइ लागी तुं व्रजनी नारने ॥ ए देशी ॥

जग जाचो हो यडपति, तस माथे दिपति रति; सुर मानवने माटायति, अति किरति गावे वति ॥ ज० १ ॥ साजन
सनमुख आवीयां, ते प्रजुजीने मन जावीयां; पुरमांहि सीधावियां, ते परम महा सुख पावियां ॥ ज० २॥ मुहूर्त्तनो
मंमाणोजी, तव कीजे कोमकल्याणोजी; तव मेल्या जोसी जाणोजी, दिन साध्यो सार प्रधानोजी ॥ ज० ३ ॥
प्रजावातिने प्रजु तणो, तव कीधो व्याह सोहामणो; वर रुमोने रलीआमणो, तव घर घरबार वधामणो ॥ ज० ४ ॥
सुख सागरमांही जीलइ, तव तन मनशुं अति फुलइ; तव नेम सुरति पुलिए, पाठो सयलो हि जुलिइ ॥ ज० ५ ॥
सुपंक आप विगोवतां, तव आणी पोहतो जोवतां; अति नींजावश होवतां, प्रजु लेइ चल्यो सुखे सोवतां ॥ ज० ६ ॥
अंबर जातां जागीयो, तव काठो दोइ लागीयो; गरदनमें गरूदो वागीयो, तव वैरीनो बल जागीयो ॥ ज० ७ ॥
वंमा पाणिमें पड्यो, जल पयरीने कां अड्यो; प्रजु वसति जाणि अति दमवड्यो, तव कुंदनपुरी आवी चड्यो ॥
ज० ८ ॥ राजा राज करे जलो, ते पद्मप्रज ठे निर्मलो; ते गुण आचारे उजलो, ते तेगने त्यागे आगलो ॥ ज०
९ ॥ पद्मश्री नारी सती, तस पुत्री ठे गुणवति; सा चाल्ये चाले मलपती, सा कोमल वाणी जल्पती ॥ ज० १० ॥
मा राग कलाए अति ताणे, अजीमानपणो मनमां आणे; सांजली बुराइ न पीठाणे, जग सयलो हि तृण करी जाणे
॥ ज० ११ ॥ इम सुणी आयो चाली; जीतीने परणी सा बाली; सा नारी मेली जे टाली, लहीए जो जिन आज्ञा
पाली ॥ ज० १२ ॥ रस रंगे रमतो संचरे, तव निलकंठजी अपहरे; तव सीख देतां करगरे, प्रभु पमीयो चंपा सरवरे
॥ ज० १३ ॥ मंत्रिनी पुत्री परणी, सा कंचन वरणी सुख करणी; सा रुपे रंजा मनहरणी, सा इंडाणी उपम धरणी ॥

ज० १४॥ सुपकरी सधरे घणी, जाणे सुख पावुं एहणी; पण जेहनो रखवालो धणी, तिहा कासा चल वार तणी ॥ज० १५ ॥ तव अरि आ खुण जाण्यो कीयो, प्रभु जल क्रिमा करतो लीयो; तव मुष्टिशुं हणतां हियो, ते अंबरथी नाखी दियो ॥ ज० १६ ॥ तव पमीयो गंगाजल मांहि, तव अटविमे फीरतो प्राहि; प्रजुवन राजा उगाहि, नगरीए आण्यो धरीबाहि ॥ ज० १७ ॥ कुमरी जरा परणावतां, तव गीत घणेरा गावतां; तव मंगल च्यार करावतां, तव सुंदरीशुं सुख पावतां ॥ ज० १८ ॥ तव नंदन नीके जाइल, राजाने आणी सुणाइयो; तव दाने दरिदग माइल, तेजरत कुमर मन न्नाइल ॥ ज० १९ ॥ तव अयवंति सुंदरी करी, तव सुर सेन्याशुं वरी; सामा देवी तव आवे खरी, विनति करे करधरी ॥ ज० २० ॥ बेसी विमान प्रन्नू आवे, अशनी वेगने सोहावे; सेन सकल लेइ न्नावे, चाली अरिनोपुर पावे ॥ ज० २१ ॥ अंगारक चढी आयो, सुर्प निलकंव बोलायो; रणथंन्न तीहारो पायो, बहुविध युध्द वणायो ॥ज० २२॥ विद्याधर बहु गग, युध्द करता अति त्राग; जाए अपुग नाग, प्रन्नुजीशुं अति गाग ॥ ज० २३ ॥ अशनी वेगने राज आप्यो, सहु वदीतो स्थिर स्थाप्यो; श्रेणीमांहि मुख्य करी ठाप्यो, सघलो तेहनो डुख काप्यो ॥ज० २४॥ निलयशा आवी धरी, हाथ जोमी विनति करी; ए दोइ विन्यावर सहचरी, ए सह सवहुं तेरे गुणन्नरी ॥ज० २५ ॥ ए ढाल विशने आठमी, शीवपुरी जाशे आतम दमी; ए नारी सहू सरखी समी, श्री गुणसागर मन सारमी ॥ज० २६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ शुध्दि सघली लेइ करी, श्री वसुदेव कुमार; मध्य खंमें आवता, सुणीओ एह विचार॥१॥ श्री अरिष्ट पुर वर न्नलो, श्री हरी व्रह्म नरेश; पटराणी पदमावति, पद्मा वास विशेष ॥ २ ॥ कुमरी नामे रोहिणी,

अमरीनो सुविलास; नख शिखतांइ शोजाति, स्वयंवर मंम्प तास ॥ ३ ॥ जरासंध सुत बांधवा, पांम्व कौरव राय; यादव खेचर नृप अवर, मिल्या एकठा आय ॥४॥ वैठा वम्र वम्र आसणा, वम्रा वम्रा नुपाल; वम्री वम्री शोना करी, दिसे जाकजमाल ॥ ५ ॥ ढाल २ए मी ॥ धन प्रजु रामजी, धन्य परिणामजी ॥ ए देशी ॥ कुंवर आयो श्री वसुदेवये, रुप विरुप करी कोलिको; जाइ न लहे जेवबे ॥ कुं० १ ॥ रोहणि रंजा सरस विराजे, साजी सवरो वेसबे; मंम्प आवी जगत सोहावी, जिन्न करी सुविशेषबे ॥कुं० २॥ प्रतिहाराणि आगे होइ, प्रगट करे नृप नाम बे; जरासंध त्रीखंम नरेश्वर, ए प्रजुजी अजिरामबे ॥कुं० ३॥ अपराजीत वंधन कुंवरजी, कालयवन कुलमांहिबे; दाता जोका दल दरिआको, नाम धरावत आहिबे ॥ कुं० ४ ॥ पांम्व पंच प्रतापवले अति, कौरव सत ए देखबे; कर्ण कहावे कल्प तरु जे, जे ए परतख पेखबे ॥ कुं० ५ ॥ उदधिविजय आदे नव जाइ, अधिकाइमें आणबे; उग्रसेन अलोल करंता, यादव राजा जाणबे ॥कुं०६॥ खेचर खेचर सर्व प्रकारे, आगे एह नीहालबे; कुमरी मोह मचकोम्री चाली, हा आयेर चालबे ॥कुं०७॥ वम्र वम्र राणा वम्र वम्र राजा, परहरीया सव डरबे; चतुरपणाथी चाली आवी, श्री वसुदेव हजुरबे ॥ कुं० ७ ॥ आप वजावे वाजा वारु, सुधम्राइनो संचबे; कुमरी देखे रुप मुलगो, नजर नखंचे रंचबे ॥ कुं० ए ॥ धौ धौ धप पम मुजवर, मादल शब्द करंतबे; धसी वरमाला रलियात रोहणि, कुंवर कंठ धरंत कुं० १० ॥ आप मने कुमरी तो कीधो, एतो सर्व सयाणबे; मर्म आणल हेवे राजा सघला, हुया अधिक अयाण कुं० ११ ॥ उधत कुंवर कालय वनजी ...

प्रवर वरानी नाठी पम्रीथी, ए वर न्याय वरंतबे

॥कुं० १२॥ कुमरी चूली हम नहि चूल्या, ल्यो वरमाल लिनायबे; काग गले कंचननी माला, एतो नली न देखाय
वे ॥ कुं० १३ ॥ चाकर आवी माला मागे, नृप सुत वचन सुणायबे; कुमर कहे क्यम राज करेछे, करता एहवो
न्यायबे ॥ कुं० १४ ॥ कर्महिन तो क्लेश कयांथी, कांइ करन चढायबे; पाणिग्रहणने रजक ए मोटो, आ सरज्यां
न लहायबे ॥ कुं० १५ ॥ निर्लच्छयां ते जरासंधशुं, बोल्यो चटक लगायबे; ए मातंग अबे मयमंतो, हम सरखा शुं
थायबे ॥ कुं० १६ ॥ जरासंध कोपे कलकलीयो, वम वमा सुनट सजायबे; हाथी घोमा रथथी उगे, रेणुं रही नन्न
गायबे ॥ कुं० १७ ॥ श्री हरि ब्रह्म नरेश नाखे, अवसर जाण कहायबे; जोतरी रथ कुंमरी बेसारी, अब तो तुटली
जायबे ॥ कुं० १८॥ कुमर कहे ससराजी एहवो, बोलन फेरी बोलबे; एतो संग लाचार हमारी, था दृढता मम मोलबे
॥ कुं० १९॥ विद्या बलने मन बले वलीयो, बलीया बे नुज दंमबे; त्रण जीम सुनट उभाइ नाख्या, प्रनुजी पवन प्रचंमबे
॥कुं० २०॥ बीजी फोज बनी अति आवी, कुंवर कुलीयो घेरबे; कांइ अधरम करो सुर कहेतां, लाजी चल्या दल फेरबे ॥कुं०
२१॥ संघकेतु नुपाल पधार्यो, दल बल सबलो साजबे; जडपति सिंह उठावणी आगे, मृग जेम चाल्या नाजबे ॥कुं० २२॥
महा बल राजा अति बलवंतो, सन्मुख आयो चालबे; उगंता रवी आगे तम जीम, सो पण गयो मुह टालबे ॥ कुं०
२३॥ उदधि विजय नृप बीमो पायो, ए तुम सरीखो काजबे; जादव जोर विशेष जणावत, आवत करत अवाजबे ॥
कुं० २४॥ आनंद उलनी साहमो आयो, हाको हाक होवंतबे; अचरज पामी अंबरस्वामी, कौतुक अति जोवंतबे ॥
॥कुं० २५॥ आगे पावन गावे कोई, होइ रह्यो ए सोचबे; किंउ न धसे अरि उपर राजा, लोगा ए आलोचबे ॥

कुं० २६॥ सिर लोचनने जुज पण दक्षिण, राजाना फूरक तबे; करत विचारण ए स्थिर स्थापी, कोइक इष्ट मिलंतवे ॥कुं० २७॥ कुमर कहे लक्ष्वो नहि जुगतो, नृप मुज बाप समानवे; साक्षर बाण चलाव्यो आव्यो, नृप आगे अहिनाणवे ॥कुं० २८॥ अक्षर वांच्या लघु जाइना, कीलो प्रजु प्रणामवे; बहुतर सहस ए गुण राणी, जाणी आज सकामवे ॥कुं० २९॥ साजन मेले वसीए सोतो, वास जलो कहेवायवे, साजन मेला पाखे वसवो, जंगल मांही गणायवे ॥कुं० ३०॥ जाइ धाइ सन्मुख आयो, कुमर लाग्यो पायवे; उवाइअल जे अधिकेरे, लीधो कंवे लगायवे ॥कुं० ३१॥ चाम रुधिरने मांस हाडथी, जींजी जीतर जाइवे; पंचहि पुट जेदाणी जारी, गाढी सीतलता इवे ॥कुं० ३२॥ जरासंध नरेश्वर आवे, हरख्या राय अपारवे; धन रोहणी कुमरी करमैत्ति, पायो जल जरधारवे ॥कुं० ३३॥ सो वर साने अंतर आयो, ऋद्धि घणेरी पायवे; विद्या विविध प्रकारे लायो, लब्धि वली वद रायवे ॥ कुं० ३४॥ सघली रमणिशुं प्रजु प्रगट्यो, सो रिपुर आवंतवे; घर घर मंगल च्यार वधाइ, साजन सुख पावंतवे ॥ कुं० ३५॥ साहसहु मलि चरणे लाग्या, प्रजु दीधो सनमानवे; रामचंद्र जेम गुणनो ग्राहक, नाणे मनमे आनवे ॥कुं० ३६॥ गज सायरने चंद सिंघवर, देखी सुपना च्यारवे; शुज वेलाइ रोहणी जायो, श्री वलजद्र कुमारवे ॥ कुं० ३७॥ ए गुण त्रीशमी ढाल रसाल, उपज्यो पुरुष प्रधानवे; गुणसागरे हरि वश तणेछे, दिन दिन चढतो वानवे ॥कुं० ३८॥ ॥चोपाइ॥ खंड खंड रस छे नव नवा, सुणतां मीठा साकर लवा; श्री हरिवंश चरित्र जय जयो, ते प्रथम खंड ए पुरो थयो ॥१॥

॥ इति ढालसागरप्रबंधे हरिवंशनामा प्रथमोऽधिकारः समाप्तः ॥

॥ अथ द्वितियखंडप्रारंजः ॥ ॥ दोहा ॥ श्रीमंधर स्वामी तणा, चरण नमुं चित्त लाय; अब बीजो अधिकार नर, यःजणतां सुख थाय ॥ १ ॥ जोजंग विश्नु नरेंद्रजी, मनमें करे विचार; अब अवसर संयम तणो, तज ए विषय विकार ॥२॥ वय पलट्यावाला पणो, वांछे विविध प्रकार; विटल विगोवे आपने, नहु ले शोच लगार ॥३॥ जयसेन निज पुत्रने, राजजार आपंत; धर्मघोष मुनिवर कने, संयम लीयो तुरंत ॥ ४ ॥ संयम पाल्यो साचशुं, केवल कीधो प्रकाश; जोजंग विभु महा मुनि, साध्यो मोक्ष निवास ॥५॥ मथुरा राज करे जलो, जयसेन राजान; न्याय निति गुण धारणो, शोजा गुण मणि खाण ॥६॥ ॥ढाल २० मी ॥ रामको सुजश घणो ॥ए देशी॥ राजा गुणवंतो न्याय धर्मप्रति पालहो ॥रा० गरुड गोत्र गोवालहो ॥ रा० ए टेक॥ जयसेन राजा जलोहो, पाले राज उदार; प्रजा तणी प्रतिपालणाहो, नहि अनित्य लगारहो ॥रा० १॥ आप आपणो साचवेहो, सहुए कुल आचार; जोर न जास्ती करी सकेहो, को केहनी कण वारहो ॥ रा० २ ॥ नाम प्रणमे धारणीहो, पटराणी सुवि-शाल; पति जक्ति साची सतीहो, गजगति चाल रसालहो ॥ रा० ३ ॥ आनन एहु विराजतोहो, वयण सुधारस सार; मनसा धर्मंज तत्वनीहो, रति देवि आकारहो ॥ रा० ४ ॥ स जेहि परीवारशुंहो, देव गुरुशुं प्रेम; पोसा पडीकमणां करेहो पाले सुधा नेमहो ॥रा० ५॥ प्रीतशुं अति प्रीतमीहो, जीव एक तनुदोय; आनंद रंग विनोद, मेहो, राजा राणी होयहो ॥रा० ६॥ तापस एक निदानशुंहो, राणी उर अवतार; उजापवे ते मोहलाहो, पति काल जनो धारहो ॥ रा० ७ ॥ मंत्रि बुद्धि विशेषथीहो, मोहलो पुरो होइ; जयो जलादि प्रवाहिउहो, जुंभा सगो नहीं

कोइहो ॥रा० ७॥ सौरीपुर विवहारीयोहो, शेठ सुनङ उदार; कांसाथा काढा लाधाए, ... शेठ
ए॥ बालाने बिहामणोहो, कंस स्वन्नावे आप; शंक न माने कोईनीहो, न ठपे तेज प्रतापहो ॥ रा० १० ॥ शेठ
कलेस विचारवेहो, कीधो राय हजुर; श्रीवसुदेव कुमारनेहो, दिधो जाणी सनुरहो ॥रा० ११॥ पासे रहे वसुदेवनेहो
सारे सेव अपार; कुमर न क्षण अलगो करेहो, विनय वश्यो संसारहो ॥रा० १२ ॥ ब्रहद्रथ वारु महाहो, हरिवंशी
राजान; राणी नामे श्रीमतिहो, जायो पुत्र प्रधानहो ॥रा० १३॥ जरासंध वश्य राजविहो, त्रिखंक तणो नृपाल; राज
ग्रहमां राजतोहो, पिशुन नरानो कालहो ॥रा० १४॥ अपराजित आदे करीहो, बंधव केरी जोम; कालयवन आदे
घणाहो, कुमर सुठ मरोमहो ॥रा० १५॥ सिंह रथ राजा बांधीयोहो, राय तणे आदेश; श्री वसुदेव कुमारजीहो,
सुजश लियो सुविशेषहो ॥रा० १६॥ करत जमाइ आपणोहो, हरख्या लोक अशेष; कुमरी जाणी कुलक्षणीहो,
कीधो कंस नरेसहो ॥ रा० १७ ॥ निश्चय लाधो वातनोहो, लोक वचनथी जाम; मास्युं रीस न उपजीहो, ज्ञान
विचारत तामहो ॥ रा० १८ ॥ पतित पिताबे ठोमवोहो, माय न ठोमी जाय; गर्न्न धरेवे पोषवेहो, मा मोटी
कहेवायहो ॥ रा० १९ ॥ मागी कर मेंलावणोहो, मथुरा करण उपाय; बाप दियो कंठ पंजरेहो, वयर विलय न
विजायहो ॥रा० २०॥ अस मंजस देखी घणोहो, श्री अतिमुक्त कुमार; पाले चारीत्र सादरोहो, राग न रोस लगार
हो ॥रा० २१॥ कंसवतं सक सारीखोहो, वरते आण अखंम; मर्दन मान महाबलीहो, पाले राज प्रचंमहो ॥रा०
२२॥ ढाल नली ए त्रिसमीहो, निसुणे जे नरनार; गुणसागर गर्जे महाहो, अन धनने अधीकारहो ॥ रा० २३॥

॥दोहा॥ अनिक जस्याजस आगळो, अनंत सेन वयाल; अजीत सेन सोहामणो, अनाहित रीपु सुकुमाल ॥१॥ देवसेन तो देवता, शत्रुसेन अतिधीर; उपजशे हरी माजरे, सामल वरण शरीर ॥ २ ॥ विरा वरणे सामळा, विरा शोल निधान; विरा सबला सारीखा, विरा पुरुष प्रधान ॥३॥ विरा जोगी जमरला, जोगवशे जल जोग; त्यागी तो त्रिभुवन सीरे, योगवशे वरयोग ॥ ४ ॥ विरा साधु सद्गुणमा, जोतां सहस्र अदार; होशे शिवपद साधणां, साचा संजम धार ॥५॥ ए खटहि विरा तणा, पुर्व जवंतर सार; मुज कहेतां तुमे सांजलो, जविक जनो शुं विचार ॥६॥

॥ ढाल ॥ ३१ मी ॥ परजव वात सुणावेरे स्वामी ॥ ए देशी ॥ पट जाइना पुर्व जवंतर, देवकीनंदन उरे सुहंकर; चरम शरीरी उत्तम प्राणी, नेमजीने सरजीनीए वाणी ॥ प० १ ॥ मथुरा नामे नगरी मोजी, जाणीए इंद्रपुरी समतोली; जानुं नामे शेठ उदार, कंचन कोमी अठेत सुवार ॥प० २ ॥ जमुना नाम निरुपम नारी, साहने साहुणीए अति प्यारी; पुत्र सातनी ते माता, जगमांहि ए अधीक विख्यात॥प० ३॥ सुजानुंने जानु किराति, जानुं खेणए त्रिजो विरति; चोथो मुरजने सुरदेवो, उठो सुरवत कहेवो ॥प० ४ ॥ सुरसेन ए साते जाइ, नारी साते ए परणाइ; कालिंडी तीजकाने कांता, श्री कांता सुंदरी अति साता ॥प० ५॥ द्युति समुद्युति वेसे विशाली, चंद्रशु कांता रुप रसाली; सात सहोदर साते नारी, साता माने विविध प्रकारी ॥ प० ६ ॥ शेठ अने शेठाणी दिक्षा, लेइ पाले सुधी सिक्षा; संथारो करी उोमी प्राणो, ततखीण पाम्या अमर विमानो ॥प० ७॥ पाछे कुंवर कुविसन पडीया, धन उजामीने रमवमीया; आपव चुरथाने अति जाग्या, तब ते चोरी करवा लाग्या ॥ प० ८ ॥ उजेणी नगरी

चली आया, चोरी करवा काज सीधाया; लघु जाइने मूकी मसाणे, बिजा चोरीनी मती गणे ॥ प० ए ॥ तिणे अवसर तिहां राजा निको, वृषध्वज राय रायासिर टिको; कमलाराणी मंगी कुमरी, रुपे रुमी जेहवी अमरी ॥ प० १० ॥ दृढ मुष्टिने सात वळ्याहीं, सासरमे आवीरे उमाहिं; सासु क्रोधणी बहु वमवेति, नीत लमाइ सासु सेति ॥ प० ११ ॥ सासु वहुथा ए वहु आगे, तो वहु सासुने पगे लागे; जो सासु अति आप खेंचावे, तो वहु सासुने वशनावे ॥प० १२॥ पापज प्यारो ने धर्म न प्यारो, घरमे वरते वहुने वारो; नारी नेहनो नाथ्यो पिउमो; माथी दूर त्रियाथी नेयमो ॥प० १३॥ आयो मास वसंत विराजी, खेलण केरो साज सुसाजी; राय जमाइ वनमे आवे, खेल करी रलीयाय तथावे ॥ प० १४ ॥ पापणी पाप विच्यारे गाढो, विसहर मोटो आणी समाढो; घटमें राखी कहे विकराला, वहु लावो कुसमकी माला ॥प० १५॥ विसहरइ उमी साह्यो हाथो, सामुरडाणी मलीयो सहु साथो; मुइ जाणी मसाणे मेली, परम महासुख पामि पेलि ॥ प० १६ ॥ राते घर आयो नरतारो, उचिंतो देखि परिवारो; खबर लहि समसाने आवे, एक रुषि देखी सुख पावे ॥प० १७॥ पगे लागीने उन्नो होइ, नांखे आरतिवंतो सोइ; जो हुं मंगी नारी पाउं, तो तुम चरणे अति चित लाउं ॥ प० १८ ॥ आगे जाता मंगि पामी, साधु समीपे लायो स्वामी; रुषि तनुवाये फरसी जामो, विसहर विस उतरीयो तामो ॥ प० १ए ॥ मंगी मुकी मुनिवर संगे, आपुण घर आयो मन रंगे; लेवा महिला साज सुचंगे, आनूषण वस्त्र बहु नंगे ॥ प० २० ॥ एतले वितक वितो केहवो, ते सांनलिए जे बे जेहवो; सुरसेन मसाणे बेसायो, ते मंगीनी दृष्टि आयो ॥ प० २१॥ रुप घणो ने यौव

वती, तरुणी त्रियानो चित हरंता; मंगा माहि दखा तासा, पति करवानी मांमी आसो ॥ ५० २२ ॥ वनिना
वेळी सरखी साची, पासे लहे तस साथे राचि; ते शुं मंगी पाले जांखो, सुख विलसणानि ठे अनीलायो ॥ ५० २३ ॥
चोर कहे तुझ पतिथी संकु, मंगी मुह किंयुं तव वंकु; पति मारी तुझ साथे आवुं, पण जो धारी वाचा पावं ॥ ५०
२४ ॥ कौतक जोवा वाचा आलि, मंगी पति तव आयो चालि; खांमो मंगीने पकमायो, रुपि पग पुजणने चि
लायो ॥ ५० २५ ॥ मंगी चोट करंति जाणि, मा कहि बोल्यो करुणा थाणि, रंमी चंमीरे कुलनंमी, शुं चाहे नी
पति शीरखंमी ॥ ५० २६ ॥ प्रितम प्रेम वसे हसी जांखे, ए शुं सातव छतर दाखे; जाम्हे मारी मुझ कर कं
ध्यान पमधो हटकी एम जंपे ॥ ५० २७ जुंमाने वपजे अति थाइ, पेली जिम यह्न मुरति लाइ; प्यारि धइ प्रि
मने नमाइ, तिम मंगीए वात वणाइ ॥ ५० २८ ॥ जाइ चोरीनो धन लाया, वाटा साथे लाभ कराया; लघु भ्रा
वाटो नवि इछे, संजम लेवो मनमां वंछे ॥ ५० २९ ॥ जाइ पुछे ए कुण कारण, मंगी चरीत सुणायो तारण, ह
कर्मी वैरागे राता; धन सघलो लेइ वम भ्राता ॥ ५० ३० ॥ घर आवी वहु माने आपी, आपुण संजमनी म
धापी; कारण जाणी वहु ए वैरागी, चवदे माणस हुआ त्यागी ॥ ५० ३१ ॥ दृढ मुष्टिने मंगी मीलिया, सो
माणस सुरगति जळिया; दो सागरने पालि आवो, स्वर्ग सौ धर्म पुन्य प्रजावो ॥ ५० ३२ ॥ जाइ संमे जरत वखा
गिरि वैताढ्य दक्षिण दिसी जाणुं; निल्या लोक नगरनो नामो, चित्र चुम्ह राजा अनीरामो ॥ ५० ३३ ॥ ना
प्रणामे नारि मनोहर, साते सुत वपना तस उदर; एक निमतज मोटो देख्यो, सात हिने वैराग्य विशेख्यो ॥ ५०

३४ ॥ संजम पालि सनतकुमारे, देव थया करणिं अनुसारे; सागर साते आउज हुयो, वम बंधव उपजीयो जुयो ॥ प० ३५ ॥ कुरु जंगल हथीणापुर केरो, गंगदेव बे नृप नलेरो; नंद जस्या राणि मन भावि, खटहि सुत उपजीया आवी ॥ ष० ३६ ॥ गंग गंग दत गंग सुमित्रो, नंद सुनंद नंदिखेण पवित्रो; ए षटहि बंधवनि जोमो, मात पिताना पुरे कोमो ॥ प० ३७ ॥ मात पुत्रा चारीत्र लिधो, माणस जन्म क्रतारथ किधो; अणसण अवसर सुत मुख जोवे, मात मोह तणो वस होवे॥ ष० ३८॥ किधो एह नियाणो माइ, आगें होज्यो एह सगाइ; स्वर्ग सातमे तेह सिधाया, सोले सागर आय लहाया ॥ ष० ३९॥ देश मृगावइ नामे वारु, नगर दसारण सोभे अपारु, देवसेन राजा गुण भरीयो,वहु परिवारे अछे परवरियो॥ष० ४०॥ धन देवि राणी सुखदाइ, नंदयस्या जीव उपजी आइ;देवकि नामे कुमरी जाइ, रुप कला गुणनि अधीकाइ ॥ ष० ४१॥ जे खट बंधव लीए अवतारो, केहि विध तेनी सुणो अधीकारो; ढाल एकत्रिसमी एम भास्ये, श्री गुणसागर पुन्य प्रकासे ॥ष० ४२॥ ॥ दोहा ॥ कंस प्रशंस करी घणी, श्री वसुदेव नरेस; दीधी देवी देवकि; किधो व्याह विशेष ॥ १ ॥ हय गय रथ कंचन रयण, घणा तेम पटकुल; आप्या वरने दायजे, मंणी माणिक बहु मुल ॥ २ ॥ एक सहस गोकल वली, नंद गोकुलि साथ; देवक राय पुत्री भणि, आपे बहुली आथ ॥३॥ कंस नंद साथे ग्रही, श्री वसुदेव नरंद; मथुरा नगरी आविया, मनमां धरी आणंद॥४॥ कंस हवे तिहां कण करे, सहुने जमणवार; विचमें जे वितक हुवो, ते सुणजो सुविचार ॥ ५ ॥ ॥ ढाल ३२ मी ॥ हरीया मन लाग्यो ॥ ए देशी ॥ एक दिन बेवि गोखमें, जीव जस्यावरनाररे; मुगधा मानभरी, नणदि साथ कतोहलि

सरि यनके परीवाररे ॥ मु० १ ॥ करे पवन प्रतिचारणा, आपे केइ मुखवासर ॥ मु० ॥ कइ अमृत जलथी भरी, दासी उन्नी पासरे ॥ मु० २ ॥ केइ विलेपन करी धरी, कुंकुम छांटे केयरे ॥ मु० ॥ केइ उन्नी मुख आगले, आर रसी कर लेयरे ॥ मु० ३ ॥ सुरज रथ खंचि रह्यो, मध्याने आकासरे ॥ मु० ॥ जोवा नृप नारी तणा, रुप रंग ग विलासरे ॥ मु० ४ ॥ ए हवे मुनीवर मलपतो, एमंतो रुपीराजरे ॥ मु० ॥ ऊंच नीच मफम कुले, फरतो आहार काजरे ॥ मु० ५ ॥ मोहो मचकोमो माननी, देखि देवर लाग्यरे ॥ मु० ॥ एहवा रतन ते जनमीयां, धन्य माता त जाग्यरे ॥ मु० ६ ॥ मद ठाकि बोलेइसु, जीव जस्या तजी लाजरे ॥ मु० ॥ जले आव्या रुपिरायजी, उववदिन आजरे ॥ मु० ७ ॥ धन्य घमी धन्य आजुनी, मुफ मन अधीकि प्रीतरे ॥ मु० ॥ आवो देवरजी आपणे, मलीने ग गीतरे ॥ मु० ८ ॥ नि सुणि वचन ते मुनिश्वरु, नरखे ढंचो ते वाररे ॥ मु० ॥ बेठी दिवि गोखमे, वम बंधवनी नाररे ॥ मु० ए ॥ असंमजस देवि थयो, रोषां कुल रुपिरायरे ॥ मु० ॥ आ जो कीमी बापमी, चमी सोनइए जायरे ॥ मु० १० ॥ ज्ञानी तव बोले इस्युं, डर करण ए हंकाररे ॥ मु० ॥ मकर अंजसकारमो, नाजी मुगध गेमाररे ॥ मु० ११ ॥ देखी जोवन धन आपणो, तुं मन फूलेछे एमरे ॥ मु० ॥ पण जेम वितिपातने, कुपल आखर तेमरे ॥ मु० १२ ॥ थोमा दिवसने कारणे, म्हे किस्यो अनिमानरे ॥ मु० ॥ संध्या राग तणि परे, ए सुख जातो जाणरे ॥ मु० १३॥ नग दलनो सुत सातमो, करसे सही संहाररे ॥ मु० ॥ तुफ पाताने कंतनो, नहि संदेह लगाररे ॥ मु० १४ ॥ साधु वचन तव सांजलि, जीव जस्या मद जायरे ॥ मु० ॥ मनमें नय अति उपन्यो, मुफ कोप्यो रुपिरायरे ॥ मु० १५ ॥

आवि कंसने विनवे, साधु कह्यो विरतंतरे ॥मु॥ नीसुणी कंस मनमें धरे; साधु वचन एकंतरे ॥ मु० १६॥ को नवी जाणो ज्यां लगे, ता पहीलो उपायरे ॥मु०॥ साते गरभ देवकी तणा, मागी सहु समझायरे ॥मु० १७॥ माग्याजो मुज नापसे, सात गरभ निज तेहरे ॥मु०॥ तो प्रतिकार बिजो करी, जीमतीम राखीसदेहरे ॥ मु० १८ ॥ इम चिंतवी निज चितमें, महुआजनपरे कंसरे ॥ मु० ॥ आयो घर वसुदेवने, राखेवा नीज वंसरे ॥ मु० १९ ॥डर थकी करजो मने, देखी करतो सेवरे ॥मु०॥ आदर देइ मली करी, एम बोले वसुदेवरे ॥ मु० २० ॥ प्राण थकी मुज वहालो, ताहरे मन शी वातरे ॥मु०॥ कहे तिम तुझ चिंतत करुं, ए मुज वात सोहातरे ॥ मु० २१ ॥ कंस कहे करजोडने, माणस तें मुज किधरे ॥मु०॥ जीव जस्या देवरावीने, सुजन पणे जस लीधरे ॥मु० २२ ॥ तिम हवे देवकी पुत्रनां, सात गरभ यदूरायरे ॥मु०॥ जात्र मात्र देवरावशुं, जीम मुज मन सुख थायरे ॥मु० २३॥ सरल चित्त नृप सांभली, कहे कंसने एमरे ॥मु०॥ अंगीकार किधो अमे, वयण कह्यो ते तेमरे ॥ मु० २४ ॥ कंस वात अणजाणतां, कहे नृप वसु सुविच्यारे ॥मु०॥ मुझ सुत सुत ताहरा, इहां अंतरम विच्यारे ॥मु० २५॥ ते जे अम जोमी करीरे, तेणे तो शुं अति प्यारे ॥मु०॥ तुम न हणो मत हुवे, वालाजी वन आधाररे ॥मु० २६॥ घणो बोल्यो कारमो, लागे कहेद साररे ॥मु०॥ सात गर्भ देवकीतणा, देवरावे सुविच्यारे ॥मु० २७॥ ढालभली बत्रीसमी, निपट रसिली वातरे ॥मु०॥ श्रीगुणसागर एकही, हरीया गीतनी जातरे ॥मु० २८॥ ॥दोहा॥ महापसाउलही करी, मद पर डरंगमाय; प्रिती करी वसुदेवशुं, कंस हवे घर जाय ॥ १ ॥ मुनीनी वात सुणी करी, सोचेहवेदसार; देखो कंसे हुं ठह्यो, वचन

ग्रही अविच्यार ॥२॥ गरन धरे जब देवकी, तव तिहां कंसराय; चोकी राखी पापथी, कपटे खेले दाय ॥ ३ ॥ ढाल २२ मी॥ गोविंदा मजाणे ते गुण विसरा ॥ तथा कोमल वचनेरे कंत प्रत्ये कहे ॥ ए देशी ॥ नावी न मटे नवीयण सांनलो, नाविनो धनजोरोरे; रंचन आघीपाछी होइ सके, सिद करोछो सोरोरे ॥ना० १॥ बांधु कीयारे जरन अनेकजी, आगे नायो कोइरे; बांधव दोइ वावी मुवासही, चंपक ग्रहपति होइरे ॥ना० २॥ गरन धरे रे राणी देवकी, चरम शरीरी जीवोरे; केम मरे ते उछे आयुपे, ए जीन वचन सदिवोरे ॥ना० ३ ॥ नादिल पुरनीरे व्रासण श्राविका, सोलसा एहवो नामोरे; सुर आराध्योरे सुतने कारणे, सुत सहुने अनीरामोरे ॥ना० ४ ॥ सुर नाखेरे पुन्य प्रनाविका, तुं मृत वंझा नारोरे; आणि आपुं हुं तुज पारका, देवकुमर अनुहारोरे ॥ना० ५॥ वलतुं वनिता इणीपरे उचरे, सांनल सुर सुख दायोरे; हुं स्युं जाणुं तुं नावे केहना, ते मुफने न सोहायोरे ॥ना० ६॥ कंसरायेरे मारण मागीया, देवकी तनयानंदोरे; आणी आपीश तुफने माननी, करीदे शुं आणंदोरे ॥ ना० ७ ॥ एक समेरे राणी श्राविका, गर्न धरे ते दोयोरे; सास्यो फेरो सुर शक्ति करी, नावीने वल जोयोरे ॥ ना० ८ ॥ इम बिजो ने त्रिजो चतुरथो, पंचम छठो तेमोरे; सोलसामंदिर होइ वधामणा, पुन्य तणे बल एमोरे ॥ ना० ९ ॥ खट सुतनी जोमी विराजती, मातपिता आणंदोरे; वत्रीस २ नारी सोह्यामणी, परण्या सघला नंदोरे ॥ना० १०॥ दस दस वार आविदायजे, कंचन करी कोमोरे; नेमी वचने वैरागी थायशे, कामनि कंचन छोमोरे ॥ ना० ११ ॥ करणीने बले केवल पामशे, लेहसे मोक्ष्नी वासोरे; एहवा मुनीवर केरा होइए, चरण कमलना दासोरे ॥ना० १२ ॥ मुवा

बालीक कंसे पछाडीया, रिस तणे वस जोयोरे; नेह तणा फल आगे लागशे, ते सुणज्यो सहु कोयोरे ॥ ज्ञा० १३॥ वश वशेरी जगमां नांखए, स्यो जुगे अभीमानोरे; चंद्र तणी तब लगे चांदणी, जब लग न उगे भांणोरे ॥ ज्ञा० १४॥ मीमक मातो मलपतो फीरे, सरप नजरेथी डरोरे; हरण हरिलो हरीने आगले, न सके आइ हजुरोरे ॥ज्ञा० १५॥ ढाल तेत्रीसमी रे होतार्थं होवे, नहोवे बीजो कोइरे; गुणसागर समझावे वरतए, भले भलाइ होइरे ॥ ज्ञा० १६॥ ॥दोहा॥ एक उगे एक आथमे, एक हरखे एक सोग; एक संकुचे एक विकसतां, सहु सरखा नही लोग ॥१॥ जे भाखे बालक छतां, जे भांखे अणगार; जे भांखे वरकामनी, ते निफल न हुवे लगार ॥ २ ॥ दुष्ट दैत निकंदवा, करवा जग उधार; विष्णुदेव सिवमतमें, फिर २ लीए अवतार ॥३॥ ॥ढाल ३४ मी॥ देशी बिंदलीनी ॥ हरीके गुण गाउं, हरि लीला कही यसोद्यायो; हरी रसतें अधीक सुख पायोहो ॥ ह० ॥ हरी योगी मांहि योगी, हरी भोगीमांहि वड भोगीहो ॥ह० १॥ हरी नाना मांहे नाहनो, हरी मोटो गगन समानोहो ॥ह०॥ हरी एकण रुपेही एक, हरी पसरो रुप अनेकहो ॥ ह० २ ॥ हरी आपन बुढो बालो, हरी जगमें लावो चालोहो ॥ह०॥ हरी लोग लगायो लारे, हरी भांजे धर्म समारेहो ॥ह० ३॥ हरी नव नव नाम धरावे, पण गणतां पार न आवेहो ॥ह०॥ हरी सांधा जोमा लावे, हरी मांहोमांहि भीभावेहो ॥ ह० ४॥ हरी हेतु हेत जणावे, अणहेतु सार न पावेहो ॥ह०॥ हरी नौतन वस्तु निपावे, हरी निपजी वेग खपावेहो ॥ ह० ५॥ हरी रुप नरखन काया, हरी घट मांहि समायोहो ॥ह०॥ हरी जीहां जोवुं तिहां तेहवो, पण तेहवानो तेहवोहो ॥ह० ६॥ हरीब्रह्मा व्यास वखाएयो, वेदाहो ॥ ह० ॥ [illegible]

किणही तो अंत न जाण्योहो ॥ह०॥ सो हरी करण उपायां, हरी वसुदेवा घर आयाहो ॥ह० ७॥ हरी उदर देवकी माया, हरी सुपना सात देखायाहो ॥ह०॥ सींहणी सुत सिंह सनुरो, माय देखी प्राक्रम पूरोहो ॥ ह० ८॥ आनंद अंग अपारा, धन धन राणी अवतारहो ॥ह०॥ तेज पुंज रवि रुपो, हेतकार महा नही कुपोहो ॥ह० ९॥ अग्नी सिखा दिपंती, ते मंगल गुण जीपंतीहो ॥ह०॥ गज गाजंतो आवे, राणी मन हरख उपावेहो ॥ह० १०॥ ध्वज गगने अवलंब्यो दिसे, सुभकारी विस्वा विशहो ॥ह०॥ देव विमाने विराजे, तिहां धपमपमादल वाजेहो ॥ह० ११॥ पद्म शरोवर पाणी, भरीयो अति शोभ वखाणीहो ॥ह०॥ ए सुपना देखी माइ, पेठ पासे वधाइ खाइहो ॥ह० १२॥ गर्भ वधंतो जाणी, प्रिय साथे वदे तव राणी हो ॥ह० ॥ तुम मुझ पुत्र मराया, पण में गाढा दुख पायाहो ॥ ह० १३॥ पुत विना जग सुनो, त्रिय जाणे जगत अलुणोहो ॥ ह० ॥ पशु पंखीणी धन कहीए, जे पुत्र तणो सुख लहिए हो ॥ ह० १४ ॥ धारे तो पुत्रा केरी, नही कोइ मणा अनेरीहो ॥ ह० ॥ हुं दुखीयारी झुरुं, विण पुत्र आशा किम पुरुंहो ॥ ह० १५ ॥ जीणे कीधो ए कर्म अपार, तिने फिरी करतां सिवारहो ॥हो०॥ दूधे दाधा जेह नर, छाशे सिलावे तेहहो ॥ ह० १६ ॥ ए वालक किमही उगारो, इहां रहेशे नाम तुमारेहो ॥ह०॥ ए सुपनाने अनुसारे, पिउमा तुं क्युं न विच्यारेहो ॥ ह० १७ ॥ नंदतणि जे नारी, ते नाम जसोदा प्यारीहो ॥ ह० ॥ ते सहियर छे मेरी, नपतिजुं नारी अनेरीहो ॥ह० १८॥ गर्भव ऋद्धि जीम पावे, तिमतिम दोहला उपजावे हो ॥ ह० ॥ सींहा साथे रमीए, माता हस्तीने अति दमिएहो ॥ ह० १९ ॥ खड्गमांहि मुख जोवे, तिम२ रलिया

यत होवेहो ॥ ह० ॥ शत्रुशिरे पाद धरेवा, ए माय मनोरथ करेवाहो ॥ ह० २० ॥ गर्भ सातमो जाणि, नृप कंस तणा आगे वाणिहो ॥ ह० ॥ रखवालि कारण रहिया, तिहां कष्ट महा दुःख सहियाहो ॥ह० २१ ॥ उवेला नवि पामि, जीहां कारज सिझे स्वामिहो ॥ ह० ॥ मिनिना वाछ्या सिकां, नवि तुटे जे छे निकांहो ॥ ह० २२ ॥ रखवाला सघला सुता, निंद्रावसे होए वगुताहो ॥ ह० ॥ कोमाति जलफल करजो, सहु सरजा सुं अनुसरज्योहो ॥ ह० २३ ॥ कंस हणेवा काजे, एहि उतावल साजेहो ॥ ह० ॥ मास घटावे दोइ, तव सात मासनो होइहो ॥ ह० २४ ॥ सुभ्र वेला सुत जायो, तनु तेजे तिमर मिटायोहो ॥ ह० ॥ स्वजन धरे उलासो, दुर्जन घर पड्यियो त्रासोहो ॥ ह० २५ ॥ कोइ न विलंब करायो, तव राणिये राय बोलायो ॥ ह० ॥ छत्र सुरासुर झाल्यो, तव नृप सुत लइ चाल्योहो ॥ ह० २६ ॥ दोइ पासे चामर ढाले, दिपकसुं पंथ दिखलावेहो ॥ ह० ॥ सानिधकारी देवा, हरजीकि सारे सेवाहो ॥ ह० २७ ॥ दिधा छे दरवाजा, ए आराति अधीकि राजाहो ॥ ह० ॥ हरी पाय अंगुठ अड्यीया, तव ताला तो झड पड्यियाहो ॥ ह० ॥ उग्रसेन कहे ए कोइ, तुम वंधन छोडसे सोहिहो ॥ ह० ॥ एह सुणि सुखदाइ, कहे वेगे सधावो नाइहो ॥ ह० २९ ॥ पुर वाहिर चलि आया, जमुनामे मारग पायाहो ॥ ह० ॥ सुत जाइ जसोदा दिधो, मनवंछित कारज सिधोहो ॥ ह० ३०॥ जसोदा जाइ वाला, नृप लेइ आया ततकालाहो ॥ ह० ॥ कर्म जेहनो बलियो, स्यो किजे अमरख अलियोहो ॥ ह० ३१ ॥ नंद घरे आणंदा, तव वाजे मादल छंदाहो ॥ ह० ॥ गोकलनि नारी हरखी, ते हरजीको मुख नरखिहो ॥ ह० ३२ ॥ नाचे नाच रसालि, ते हाथे

वजावे तालिहो ॥ ह० ॥ उवार्णफेर लिजे, ए लाल सदा चिरजीवी जेहो ॥ ह० ३३ ॥ हरी कोमपवामा किधा, ए वालपणे जस लियाहो ॥ ह० ॥ ए चोत्रिसमि ढाल गुणसागर, अधीक रसालहो ॥ ह० ३४ ॥

॥ दोहा ॥ जाग्या हवे ते पोहरु, देखे कन्या तेह; आणि कंसजणी दिइं, सेवक धरी मन नेह ॥ १ ॥ कन्या देखी कंस हवे, धारे मनमां एम; मारण एतो माहरे, थास्ये कन्या केम ॥ २ ॥ मारणजणी ग्रह सातमो, मुनि मुऊ नांख्या जेह; पण जाण्यो इणजाण मति, कुमो हूवो तेह ॥३॥ तो मारु एस्या जणी, इम निज मनशुं जोय नासापुट ठे दीकरी, वहिनजणी दिए सोए ॥ ४ ॥ ढाल ३५ मी ॥ मोरा साहिवहो श्री सितलनाथके हूंतुं सेवक ताहरो ॥ ए देशी ॥ हवे वालक होकालो ते देहके, कृश्ननाम सहू तिण कहे; राखिजेहो देवेनितुं तेहके, वाधे नंद घरे सुख लहे ॥ १ ॥ नेहगेहलिहो गोवालनि नारके, हरी देखि हैअमुं हसे; हाथोहाथेहो संचरतो वालके, नमृज्युं कर कमले वसे ॥ २ ॥ आल्यंगनहो चुंवन लख कोमके, कोइ कमल कंठे ठवे; केइ लावे रमकमा रंगके, मुक्ताफल सीर सोहवे ॥ ३ ॥ हांसीलिहो हरखे लेइ गोद्यके, धवरावे पय पानने; आंखे काजलहो घाले केइ नारके, करे चुंवन मुख कानमें ॥ ४ ॥ सीर लुंखितहो सीहा अनीरामके, नाल विराजीत चंदलो; जग वल्लनहो नंदन तुऊ मातके, लाल अनोपम वंदलो ॥ ५ ॥ हवे पुठेहो मास उहरे मातके; श्री वसुदेव जणी कहे, उत्कंठाहो देखण निज पुत्रके, जाइस गोकुल जिहां रहे ॥ ६ ॥ तव वोलेहो वसुदेव नरंदके, रखे कंस तुऊने नलखे; तिहां आतांहो नितप्रते तुऊ पूत्रके, देखता कारण पखे ॥ ७ ॥ तेणे लेइहो वहू नारी साथके, गाय पुजंति सुजपरे; तुम्ह पहूचोहो

गोवालीएण संचके, देवकि पण तिमहिज करे ॥ ८ ॥ नीलुपलहो दलसम तनु कंठके, हइमे श्रीवछ सोहतो; चक्रादिकहो लक्षण इग हाथके, सहु जनना मन मोहतो ॥ ९ ॥ एहवो निजहो नंदन अभीरामके, गोद जसोदाने रह्यो; देवकिहो देखि नीज नयणके, मनमांहि बहु सुख लह्यो ॥ १० ॥ माता भीमीहो निज हइया साथके, गोद धरयो हरी नानमो; तुज विरहो चित क्षण क्षण मुजके, खटके ज्युं विंछी आंकमो ॥ ११ ॥ संध्या पोढाहो पातिक अति जोरके, मेंकोइक पूर्व भवे; तुज सरीखो हो नंदन गुणवंतके, पण मुज चिंतीत नव हुवे ॥१२॥ पुत्रजहो दीठो तुम देदारके, धन वेला धन आजुनी; निज अंगजहो देखी न भजे रागके, एतो दशा मुनीराजनी ॥१३॥ धवरावीहो निज स्तन पयपानके, पालणीए पोढावीयो; मोह मातिहो कोइ मधुरे सादके, हेत घणो हुलरावीयो ॥ १४ ॥ देशी झरमरीयानी तथा सुधारस मोरली वाजे ॥ ए देशी ॥ धन्नणो राणी देवकीहो, त्रिभुवन सिर टिको, बाइ थारो बालुडो निको; तुजवड वखत यशोमतिहो, थारे एकीको, सुरनरना मन मोहतोहो, प्यारो हमजीको ॥बा० १॥ अद्भूत रुप सोहामणोहो, मदन कीयो फिको; रंग रमावे गोदमेंहो, भायग ताहिको ॥बा० २॥ मान महा मद मारणोहो, देवि केरीको; कुंवर कनइन्न सालसेहो, उपज्यो वयरिको ॥ बा० ३ ॥ आनन चंद विराजतोहो, वालो सब त्रियको; ग्वाल ग्वालणी भावतोहो, दर्शन जग पियको ॥ बा० ४ ॥ सजन जन जननी तणोहो, हार ज्युं गातिको; डरजन जन आ सोहामणोहो, घाव ज्युं कांतीको ॥ बा० ५ ॥ सोना गुण विस्तारणोहो, किराति कांतिको; देवादेवि खेचराहो, रंगे रातिको ॥ बा० ६ ॥ दहिअरु डध खवारजेहो, धेनु मातिको; हमतुम कुल

अजवालणोहो, दिवो वातिको ॥ वा० ७ ॥ नखसीख ताए सलुणमोहो, सुखरोजारागीको; जोतां तृपति न पाइएहो, धन जीवत माजीको ॥ वा० ८ ॥ दरस फरस कुपंथमेहो, नाह इंड्राणिको; सो खेले तुऊ आंगणेहो, सारंग पाणीको ॥ वा० ९ ॥ योग ध्यान ध्यावे अतिहो, यसल्ये वधारीको; पुत कहावे ताहरोहो, अचरजकारीको ॥ वा० १० ॥ नाम यज्ञच्च जग जाणिउहो, गीरवरधारीको; गुणसागर सुख पावहिहो, अमीय आहारीको ॥ वा० ११ ॥ ढाल एहिज ॥ जे लेणोहो सो लिजइं आजके, एह मनमां निश्चे धरे; मन मेलिहो निज सुतने पासके, राणि आवि नीज घरे ॥ १५ ॥ जीण दिनथीहो गोकुल हरी मातके, गोपुजा मस करी गइ; तिण दिनथीहो संगले जगमांहिके, गोपुजायततिथ थइ ॥ १६ ॥ इम करताहो वितो एक वरसके, एहवे एक वितक नयो; सजा सजी हो वेग कंसरायके, एक विवुध तव प्रगट थयो ॥ १७ ॥ देइ आदरहो तेञ्यो निज पास.के, पुछे ऋपि नाखीत सहि सो नाखेहो नवितव्यजेहके, अन्यथा ते होवे नहि ॥ १८ ॥ नृप नाखेहो केम जाणुं तेहके, अनुग्रह करी मुऊने कहो; तुमनेहो मिलसे वहु द्रव्यके, मुऊ अरीनोहोए निग्रहो ॥ १९ ॥ निमित्तकहो बोले तव एमके, पुरो ज्ञान न अभ्यासियो; सहि नाणी हो तुऊ देउं धतायके, जिम तुमने होए विसासियो ॥ २० ॥ तुऊ मासिहो पुतना छे दोयके, निस्यंदता चुसी करे; जिम लुतेहो ग्राहि मक्षिका जाएके, प्राण दोयना तिम हरे ॥ २१ ॥ तुम शत्रुहो जाणोनिः संदेहके, इम कहि विवुध गयो; कंसे तेमीहो कहि वेरीनी वातके, मासी मन उत्कर्ष थयो ॥ २२ ॥ हवे तिहाकणहो निज वापनो वयरके, लेवाने अती उमही; यसुदेवसुहो नवि जाणे जोरके, सवलासुवल को नहीं ॥ २३ ॥ इम चिंतविहो मनमांहि विचारके, सुरपन

खारी दिकरी; मदमातिहो आणे अहंकारके, संकुनी पुतना खेचरी ॥२४॥ कंसे प्रेरीतहो गइ गोकुल मांहीके, बाल कने मारण भणी; गोवालणीहो संताप्ते निज बालके, प्रीती मन आणी घणी ॥२५॥ नंद सदनहो चाली गइ तेहके, विष खरभी स्तनने धरी;थवरावतीहो तव जसोदा देखके,मागे हरीने फोसे करी ॥२६॥ अंश्रु पुरितहो थयी आप्यो जाणके, हरि मनमांहि विचारियो; ए दिसेहो सहि कोइ विपक्षके, एहथी भय अव धारियो ॥२७॥ चुसि लीधोहो रुधिरने उधके,अलि जिम कुसमनी वासना;थइ निश्वासहो फाट्या तस नयणके; हरि गया मातने आसना ॥२८॥ बोलाव्योहो नंदने तेणिवारके, आव्यो अति उतावलो;जसोदाएहो कह्यो सर्व व्रतांतके, निसुणी मनमां खलभल्यो ॥२९॥ हु सुसिलहो सुख कहेतो नंदके, कृष्ण भणी खोले धरि; तिहां जोवेहो हरिनो ते अंगके, वारमवार हेते करि ॥३०॥ निसा समेहो गोवालिया पासके,प्रेत वने सवने धर्यो; नंदसहित आव्या निज गेहके, प्रछनपणे सहुए कर्यो ॥३१॥ एम विजिहो कंत पुतना नामके, सापण थइ तेणाहीजपरे; कंसे जाणीहो मासीनि वातके,प्रेत कार्य तेहनां करे॥३२॥ गोकुलमांहो करे वारमवारके,उदघोसण जाणण भणि; नंदे वरजीतहो न करे कोइ वातके,जिम धुक सुर्य तणी॥३३॥ गोवालियाहो पुछ्यो हवे नंदके, अमे ए मरम न जाणियो; किम मुइहो साइण सम एह के, एह अचंभो आंणियो ॥३४॥ पामोसणाहोइण गीते जाणके, ढाल कहि पांत्रिसमी; सारंगेहो रागे मन लायके, सूरिगुणसागर मनशुं गमी ॥३५॥दोहा॥ गोप कहे हवे नंदने, बाल एकीले एण; खेंचरीया बे मारीया, टाल्यो विघन बलेण॥१॥ एह वात नंद सांभली, दाखे उत्तर तिवार; एहनी खबर मुजने नही, मानो प्रपंचाचार ॥२॥ कंस सोचे निज रुदयमां, अहो २

देव कुलरू; मासा मुइ वरातणा, काइ न थयो प्रतक्ष ॥३॥ मंत्रीने तेमी कहे, शो करवो हवे उपाय; विण उ-
जरुया पोहोचे नही, मारा मननोदाय ॥४ ॥ सचिव कहे तुम वहेनीने, पुत्री हुइ एकंत; ए सर्व प्रत्यक्ष निरखतां,
मुको एहनो तंत ॥५॥ नंद घेर आव्यो धसी, वोलावी निज नार; करी शिखामण एहवी, मत जाजे कोइ वार ॥६॥
कृश्न एकिलो मुकिनें, पमते पण घृत गांम; ते अनत्रन जाइवुं, किणहि विजे काम ॥७॥ कान्ह जणी सुजपरे
रखे, हवे जसोदा माय; तोपण चंचल वल करी, आयो पागो थाय ॥८॥ ता सुध्या नथी विहति, वामणिसु हरी
तेह; वांधी उखलसुं जइ, पाम्होसण रइ गेह ॥९॥ वयर पितामह सांजलि, सुर्प्पक सुत तिहा आय; पठवाम्हे श्री
कृश्नने, जमलार्जुन तरुवाय ॥१०॥ हवे तिणे वेहु तरुविचे, हरीने मारण रुप; नांजी ते तरु हरी सुरा, मारे तेह
विरुप ॥११॥ हरी कुंजपर करवण्या, जमलार्जुन तरु जाण; नंद जसोदा गोपने, मुखथि ए सुणिवाण ॥१२॥ नंद
जसोदा आवीने, चुजसुं जीम्हे वाल; दामोदर तिण दिन थकी, नाम कहे गोपाल ॥१३॥ सिवादेवि सिवकारीया,
सुपना देखी उदार; प्रितम पासे विनवे, स्वामी कहो विच्यार ॥१॥ जुपति जाखे जामनी, होस्ये कुंवर सार; तिन
जोवन खिर सेहरो, सुरनरको आधार ॥१२॥ वाय अनुकुल वाइया, हरखित सहु परिवार; श्रावणसुदी पंचम
दिने, जनम्या नेम कुमार ॥१३॥ ॥ढाल ३६ मी॥ कोइलो परवत धुधलोरे लाल ॥ए देशी॥ सुज वेला
सुत जाइयोरे लाल, वरत्यो जय जय कार; सुख दातारे, सुरनर घराहि वधामणारे ॥ला०॥ हरख्यो सहु संसार ॥सु०
१॥ मेरे मन जनजी वस्यारे ला०॥ श्री श्री नेमकुमार ॥सु०॥ मुरति सुरति मोहनी रे ॥ ला०॥ शोजा गुण जंमार

॥सु० मे ॥२ ॥ आवी छपन कुंवारीकारे ॥ला०॥ निज २ करवा काज ॥ सु० ॥ गावे गीत सोहामणारे ॥ ला० ॥
सफल गणो दिन आज ॥सु० मे ३॥ चउसठ इंद्र पधारीयारे ॥ला०॥ मंदिर गीरीने श्रृंग ॥ सु० ॥ जन्म महोछव
करवा भणीरे ॥ला०॥ आणी अति उछरंग ॥सु० मे ४॥ रुपशुं पंच करे भलांरे ॥ला०॥ सोहम इंद्र उदार ॥सु०॥
हाथे लिया एक रुपशुंरे ॥ला०॥ त्रिभोवन तारणहार ॥सु० मे ५॥ विजे छत्र धरे भलोरे ॥ला०॥ चामर ढाले दोय
पास ॥सु०॥ वज्र लइ आगे चलेरे ॥ला०॥ करतो अरी अण नाश ॥सु० मे ६॥ न्हावण करी विधी साचवीरे ॥
ला०॥ पहिरावे शणगार ॥सु०॥ भावे भक्ति घणी करे ॥ला०॥ नाटीक नृत अपार ॥ सु० मे ७ ॥ धोंधोंधपमपवा
जहिरे ॥ला०॥ मादल नव नव छंद ॥सु०॥ तालर वाव उपांगसुरे ॥ला०॥ होइ रह्यो आनंद ॥ सु० मे ८॥ इंद्राणी
नाचे भलीरे ॥ला०॥ थैथै शब्द उचार ॥सु०॥ प्रभु उपर करे लुंछणारे ॥ ला० ॥ जाइ हरी बलिहार ॥सु० मे ९॥
माता पासे मेलीयारे ॥ला०॥ सुर पोहोता निज ठाम ॥सु०॥ राए मोहोछव मांडीयोरे ॥ ला० ॥ मलीया साजन
आण ॥सु मे १०॥ यादव जलधर उनयोरे ॥ला०॥ वरसे कंचन धार ॥सु०॥ याचक जन संतोखीयारे ॥ ला० ॥
घर २ मंगल च्यार ॥सु० मे ११॥ टोले २ सामटीरे ॥ला०॥ आवे कामनी चाल, ॥सु०॥ धवल दिए नृप आंगणेरे
॥ला०॥ रमती रंग रसाल ॥सु० मे १२॥ बारसमो दिन आइयोरे ॥ला०॥ सुतिक कर्मनी वार ॥सु०॥ नाम दियो
वर नेमजीरे ॥ला०॥ भजण सहु परीवार ॥ सु०मे १३॥ चंदकला जीम वाधतोरे ॥ला०॥देह कला गुण सार ॥सु०॥
रुप करे सुर तेहवारे ॥ला०॥ जेहवा प्रभुने प्यार ॥ सु० मे १४ ॥ राखण चलण हसतथेरे ॥ला०॥ नृत्यन गायन

॥ लाल न लीजां थान ॥सु० मे १५॥ वनाक्रेमाने कारणेरे ॥ला०॥ राजा
ग्यान ॥सु०॥ जलपन जनमन रंजवरे ॥ला०॥ साथे नेम सोहाय ॥ सु० मे १६ ॥ इण अवसर सोहमजीरे
वनमें जाय ॥ सु० ॥ अंते वर परीवारसुंरे ॥ ला० ॥ क्रिमारंग विनोदसुंरे ॥ला० ॥ दिठा श्री नगवान ॥ सु० मे १७ ॥ जे जेहना
॥ ला० ॥ इंद्र अनोपम ज्ञान ॥ सु० ॥ अणरागी असोहामणारे ॥ ला० ॥ हुता पण न कहाय
होय रागीयारे ॥ ला० ॥ तेह तेहनां गुण गाय ॥ सु० ॥ जननी करे तेहिवार ॥ सु० ॥ लालपणे वल आगलोरे ॥ला०॥
॥ सु० मे १८ ॥ इंद्र प्रसंसा आकरीरे ॥ ला० ॥ एक आमी सहु लोकनोरे ॥ला०॥ एक आमी जीनराय ॥सु०॥ तोहि न होवे
नही धीजो संसार ॥सु० मे १९॥ एह वचन सहि नाशक्योरे ॥ला०॥ अमरख आणी
वरावरीरे ॥ला०॥ जिन वल अधीक कहाय ॥सु० मे २०॥ आयो विपनमोझार ॥सु० मे २१॥ काका साथ कुतुहलीरे॥ला०॥
अपार ॥सु०॥ सुर सुरलोकथी ऊतरयोरे॥ला०॥ एकलीए कंव लगाय ॥ सु० मे २२ ॥ एक आंगुलीया लेइ
होइ रह्या निजराय ॥सु०॥ एक खेलावे गोदमेंरे ॥ला०॥ तालि नाव सुणाय ॥ सु० मे २३ ॥ धम
फिरेरे ॥ ला० ॥ एक खेलण खेलाय ॥ सु० ॥ एक नचावे रंगसुरे ॥ला०॥ होइ रह्यो अति ख्याल ॥
धम वाजे घुघरीरे ॥ ला० ॥ ठमक ठमककि चाल ॥ सु० ॥ मेरे ठगन मगनारे ॥ला०॥ वोलायो फिरनावहिरे ॥ ला० ॥
सु० मे २४ ॥ कवहु आंख्य अंजावतोरे ॥ ला० ॥ परहो ठटकि जाय ॥ सु० ॥ टवकि गाल कराय ॥ सु० ॥ विद्याधर
माता पकमे धाय ॥ सु० मे २५ ॥ तव प्रजुजी रहे रिसायनेरे ॥ ला० ॥ मोहन सु मन मेल
सुरमानविरे ॥ ला० ॥ सवहु रहे रीझाय ॥ सु० मे २६ ॥ गगने विलांवि वरांगनारे ॥ ला० ॥

॥ सु० ॥ सुरज रथ थंभी रह्योरे ॥ ला० ॥ देखि कुमरनी केल ॥ सु० मे २७ ॥ तृणाचरां त्रण ढोरीयारे ॥ ला०॥
पंखी चुगन चुगाय ॥ सु० ॥ जंगम जिवजी केतिकेरे ॥ ला० ॥ प्रभु सुं रहे लवलाय ॥सु० मे० २८॥ अवगुणहारा
देवतारे ॥ ला० ॥ गुणातो कोन गहाय ॥ सु० ॥ माषी चंदन नादरे ॥ला०॥ असुचि तिहां चलि जाय ॥ सु० मे०
२९ ॥ अमृत थान लगावतारे ॥ ला० ॥ जोकन दुध पिवाय ॥ सु० ॥ रंगतरसे राचे घणुंरे ॥ ला० ॥ बिजो हेत न
कहाय ॥ सु० मे ३० ॥ सुवा शब्द सोहांमणोरे ॥ला०॥ मानिने न सोहाय ॥ सु० ॥ नाचनिहालि मोरनुंरे ॥ला०॥
पापी पल न तजाय ॥ सु० मे ३१ ॥ निहंकारण वैरी कह्यारे ॥ ला० ॥ मृग मठ मारणहार ॥ सु० ॥ गुन हर्षतां
विण साधुनेरे ॥ ला० ॥ नीच दहंत अपार ॥ सु० मे ३२ ॥ खेल करी प्रभु पालणेरे ॥ ला० ॥ सोबे सोवंता लिध
॥ सु० ॥ गगन चढ्यो ते देवतारे ॥ ला० ॥ जाणो कारज सीध ॥ सु० मे ३३ ॥ अविधी ज्ञानपर जुजीयोरे ॥ला०॥
जाणे भेद दयाल ॥ सु० ॥ लेशमात्र बल फोरव्योरे ॥ ला० सुर चांप्यो पयाल ॥ सु० मे ३४ ॥ सुतो सिंह जगा
वियोरे ॥ ला० ॥ अहि सुख घाले हाथ ॥ सु० ॥ किम सुख पावे बापडोरे ॥ला०॥ जे रोसे जगनाथ ॥ सु० मे ३५॥
एतले सूरपति आवियोरे ॥ ला० ॥ सुर छोड्या वण काज ॥सु०॥ राख राख जग राजीयारे ॥ ला० ॥ तुमहिने सहु
लाज ॥ सु० मे ३६ ॥ छोडाव्यो ते देवतारे ॥ ला० ॥ पामे नीज अपराध ॥ सु० ॥ आगल उभा विनवेरे ॥ला०॥
किधाना फल लाध ॥ सु० मे ३७ ॥ पोढाव्या प्रभु पालणेरे ॥ला०॥ पाखर सुरनी कोड ॥सु०॥ सेवा कारण मुकियारे
॥ ला० ॥ इंद्र नमे करजोड ॥ सु० मे ३८ ॥ खेलि ख्याल घर आवियारे ॥ ला० ॥ बाल गोपाल नरंद ॥ सु० ॥

घर२होवे वधामणारे ॥ ला० ॥ घर२ परमानंद ॥ सु० मे ३९ ॥ श्री हरी वसे विराजीयोरे ॥ ला० ॥ नेमजी नंद दयाल ॥ सु० ॥ प्रवल प्रताप महा वलिरे ॥ ला० ॥ हलधर कृश्न क्रिपाल ॥ सु० मे ४० ॥ ढाल भली ठत्रीसमीरे ॥ ला० ॥ पढत गुणत सुखदाय ॥ लीला नीम जीणंदनीरे ॥ ला० ॥ गुणसागर गुरुराय ॥ सु० मे ४१ ॥ दोहा॥ श्रावण जावण होवतां, रखे लखे के वात; एम जाणि पासे रहे, हलधर नामे भ्रात ॥ १ ॥ अकुरादिक कंसने, नवि छाना सुत एह; मुक्यो कंस अणजाणियो, तेणे रामगुण गेह ॥ २ ॥ दस धनुष ऊंचा वेहू, गोकुल रमे कुमार; काम तजी तिहां ग्वालणी, देखे आवि अपार ॥ ३ ॥ कृश्न ग्रहि सगलि कला, राम पासे सुखकार; धनुष्य कला तिम वलि भणे, क्षात्रिनो आचार ॥ ४ ॥ ढाल ३७ मी ॥ जीहो मथुरा नगरीनो राजीयो ॥ ए देशी ॥ जीहो राम अने हरी मीलि हवे लाला, धरता अधीक सनेह; जीहो एक जीवतनुं जुजुया लाला, जाणीजइन संदेह, चतुर नर हरी रमे रसरंग ॥ १ ॥ जीहो सुंदर रुप सोहामणा लाला, चलतो जाणे अनंग; ॥ च० ॥ ए टेक ॥ जीहो हवे हरी चलता वलदने लाला; पुछ ग्रहे जइ जाम, जीहो कृश्न जोर ते देखीने लाला, अचरज पामे राम ॥ च० २ ॥ जीहो जीम२ हरी वाधे तिहां लाला, तिम२ गोपिरे चित; जीहो काम विकार लहे घणो लाला, धुमे लागी प्रीत ॥ च० ३ ॥ जीहो राधे सुता वृखुजानानि लाला, कंचन कोमल गात; जीहो ख्याल लागी हरी आगले लाला, महि वेचण मीसजात ॥ च० ४ ॥ जीहो रोके तव आमो फिरी लाला, मोहन श्री नंदलाल; जीहो हव नर्रा हरी आगले लाला, वोले राधा वोल ॥ च० ५ ॥ जीहो हम गोपीयनपर दाननी लाला, किण किधोरे आद;

जीहो आपसमे हरी राधीका लाला, करतां झखवखवाद ॥ च० ६ ॥ जीहो आ व्रजमा वसतां थकां लाला,
कदिय न दिधेरे दाण, जीहो कुंवर बावा नंदनालाला; जात नहि व्रखुन्नान ॥ च० ७ ॥ जीहो जावाद्यो हव किम
करो लाला, मुझ वेचण हजी माट; जीहो वेला वनमें वहू थइ लाला, माता जोति हशे वाट ॥ च० ८ ॥ जीहो
नीत२ इम हरी राधीका लाला, करे वचन रस केल; जीहो नेह घेलि आवे तिहां लाला, काज सकल अवहेल
॥ च० ए ॥ जीहो सोलसहस गोवालणि लाला, हरीने रंजन काज; जीहो दाखे नव २ चातुरी लाला, हाव भाव
करी लाज ॥ च० १० ॥ जीहो गोपी हरी पाखल मली लाला, घुमर गावेरे रास; जीहो लुबधा भमरा जीम भमे
लाला, कमल तणे नीतु पास ॥ च० ११ ॥ जीहो हरीने जोती गोपिया लाला, नयण न मिचेरे केम; जीहो कृश्न २
इम बोलवे लाला, हो वनमे लेतेम ॥ च० १२ ॥ जीहो एकसमे गोपि तींहां लाला, गाय डुहे चुपिव; जीहो टलि न
जाणे दोहणा लाला, हरीसुं लागी दिव ॥च० १३॥ जीहो विविध कुसम गुंथिति केला०, माल करी उतकंठ; जीहो
वरमाला पेरे गोपीयाला०, घाले हरीने कंठ ॥च० १४॥ जीहो जिणतीण विध करी हरीभणि लाला, गोपताणि ते नार
जीहो बोलावे फरसे मिले लाला, करति काम विकार ॥च०१ ५॥ जीहो मोरपिंछ माथे धरी लाला, हरी गोवाणि साथ; जीहो
गावे धुनिपुरेति के लाला, झाली हरखे हाथ ॥च०१ ६॥ जीहो निर अथाहे झीलतो ला० हंसपरे हरीजाण, जीहो पंकज गोपी
मांगीया लाला॥ लिलाइं दिए प्राण ॥च० १७॥ जिहो गोवालणीया रामने लाला, भलंने एकवार; जीहो तुंम
बंधव प्रम नेहरे ला०॥ प्रण दिवे वहुवारं ॥च० १८॥ जीहो मधुर बजावे वांसली ला० ॥ गीरीकम्णे आणंद,

जीहो घणुं हुसाने रामने ला०॥ नाचे नव नव छंद ॥च० १९॥ जीहो गोवालणी ला०॥ नाचे कृश्न कुमार, जीहो रंगानार तणी परे ला०॥ ताजविइ सूत्रधार ॥च० २०॥ जीहो इम रमता हरी रामने लाला, पोहत्या वरस इग्यार; जीहो गुण सागरसूरि गुरुही लाला, ढाल साम्भिसमी सार ॥च० २१॥ ॥दोहा॥ कंसराय मथुरांपुरी, सुखमें राज करंत; घछिन तणे घर आवीयो, कन्या देखी हुसंत ॥ १ ॥ घछिने गर्भ जे सातमो, किम मुझ मारण हार; के रुषि नाख्यो अन्यथा, के कोइ नात विचार ॥२॥ निमतियाने पुछीयो, रुषिनर वचन विच्यार; सो नाखे नृप नवी मीटे, होण हार विवहार ॥ ३ ॥ नृप नणे निमति सुणो, हुं किम जाणुं तास; अण जाण्या अणउलख्या, किम करुं तस नास ॥४॥ निमतिए सही नाणीका, राय बतावे ताम; केसी हयखरमेल वृष, एहनो केम्रण वाम ॥५॥ धनुष चोहेमे नुज घले, नाथे कालिनाग; तुम युग हाथी पाटनां, मारी मेलावे माग ॥ ५ ॥ मल अखाडे मलने, काली पलाडे जोर; ते तुम वेरी जाणजो, एह छलावी कोर ॥ ७ ॥ कंस भुप अति खलभल्यो, अरीनो सुणी अधीकार; प्रघन मेल्यो मोकल्यो, पुंठे घणा असवार ॥ ८॥ ॥ढाल २० मी॥ रसीयानी देशी ॥ मत कोइ रमज्यो हो साजन सोगटे ॥ए देशी॥ हवे अवकाले हो कंसनरेंद्रनो, अरीष्टवृषभ बलवंत; चतुरनर वन-रावनमें हो आवे आकरो, करतो कोप अनंत ॥च० १॥ सुणजो साजन अचरजनी कथा॥ ए आंकणी ॥ सिंगे उपाडी पवाडे गायने, नवीयकसयपरेताम ॥च०॥ तीम वली कोप धरी पग पालटे, डोले पृतनां गाम ॥ च० सु २ ॥ राम सहित गोविंद तव सांजलो, कोलाहल अति होय ॥च०॥ लइ हथीयार धसी हरी आवीयो, अरिष्ठ बलदांतिहां

जोय ॥ च० सु ३ ॥ वारे सहु इहां नंदगोवालीया, नहीं गोघृतनो काम ॥ च० ॥ विनवे सहु पण नवी रहे, वलद
बालावे ताम ॥च० सु ४॥ सोपण आयो हो हरीने उपरे, रिस भर्यो विकराल ।।च० ॥ मारे अपुठो हो हरी निज
भुज बले, हरख्या बालगोपाल ॥च० सु ५॥ हरी रमतां वली आयो हो अनदा, केसी कंस किशोर ॥ च० ॥ मही
तलगाजे हो पग खुरतालसुं, हयहिंसार वजोर ॥च० सु ६॥ ग्रहतो हो दंत विचाले लोकने, खुरेहणतो गाय ॥च०॥
देखिहो सोर मच्यो वन गोकुले, गोधन नाठो जाय ॥च० सु ७॥ लोक पोकार सुणी हरी आवीयो, तरीने पासे जाय
॥च०॥ हरीने हो मारण धायो हयवरु, लोक रह्यां अकुलाय ॥ च० सु ८ ॥ नांखीहो फाल केसी जव आवीयो,
दोट करी हरी आप ॥च०॥ मुखशुं हो फाली तामवेदारीयो, टाल्यो सवल संताप ॥च० सु ९॥ कंस तणा खरमेख-
तिमहिज वली, गोकुलमें समकाल ॥च०॥ फरतां वनमें हो हरी इछे परे, नांखे ताम उछाल ॥ च० सु १० ॥
एक दिन जमुना हो जलमें परिसरे, हरि रमे सुविचार ॥च०॥ कंडुक उछलीने तव पड्यो, कालंद्रह मोझार ॥च०
सु ११॥ ते लेवाने हरी द्रहांतर गया, सोधी लीयो गयंद ॥च०॥ पिठे फिरतां तव पेखीयो, आवास तेजनो कंद ॥च०
सु १२॥ जिते दीठी एक गवाक्षिका, कौतुक अधिक पाम ॥च०॥ देइ फलांग माहे गया, निरीक्षण करे काम ॥च०
सु १३॥आगे जाता पल्यंगमें झीलंता, देखे कालीनाग॥च०॥सहस्रफणो सुतो सुख निंदमें,महीधर विखनो वाग ॥च०
सु १४॥ करे तिहां नागणी नागपतालनी,नव रस्नात विनोद॥च०॥पामीअचरज तामहरीभणी,बोलेवचनसरोद च०सु १५
॥ अथ नागदमन ॥ नागणीवाच ॥ कांइ तुं वाट विरासियोरे वाला, कांइ तुं मारग भुलियो; कांइ ते तारो काल

घटियो, जे आणे मारग आवियो ॥ जल कमल छंडि जायरे वाला, साम मोरो जागसे ॥१॥ कानवाच ॥ नहि ते वाट विरासियोरे नागण, नहि ते मारग चुलियो; नहि ते मारो काल घटियो, हुं एणे मारग आवियो ॥ जल० २ ॥ नागणिवाच ॥ किंहां तुमारो वेसणोरे वाला, कुण तुमारो गामरे; कुण रायनां चलण चाले, स्युं छे तुमारो नामरे ॥ ज० ३ ॥ कानवाच ॥ मथुरां हमारो वेसणोरे नागण, गोकल हमारो गामरे; कंसरायना चलण चाले, गोवालीओ हमारुं नामरे ॥ ज० ४ ॥ नागण जगाओ तोरा नाहने, वली केसे जेवेसासीयो; कंसरायथी जुवटे रमतां, नाह तुमारो हारीयोरे ॥ज० ५ ॥ नागणी नाग प्रबोधन वाच॥ चरण चोली अंग मोडी; नागणे नाहो जगावीयो, उवोने बलवंत वेगा थाउ, बालुओ हम घर आवीयोरे ॥ज० ६॥ देशी ढालनी मुलगी ॥ उठ्यो हो महि धर विष जरे लोचने, कोप धरी ततकाल ॥च०॥ आयोहो सनमुख हरीने उपरे, रोस जरयो विकराल ॥च० सु १३॥ नाथ्यो हो काली वेल तणीपरे, पाम्यो अधिकी त्रास ॥ च० ॥ उपरे बेशी हो हयपरे वाहियो, जोरकीसो हरी पास ॥च० सु १४॥ थाको हो नाग तजी अभीमानने, प्रणमे प्रभुना पाय ॥च०॥ हुं तुम पायक लायक साहीबा, मेहेर करो महाराज ॥च० सु १५॥ हवे हुं शेवक आजथी ताहरो, न जजुं अवर भुपाल ॥च०॥लइ सतकार आयो हरी निज घरे, मलीयां वालगोपाल ॥च० सु १६॥ हवे नृपादिक हणीयां सांजली, वयरी जाणण हार ॥ च० ॥ सारंग धनुष्य पुजण थापीयो, प्रपयामें महाराज ॥ च० सु १७ ॥ कंसे करावीहो तिहां उद गोषणा, नामा कुमरी व्याह ॥च०॥ सारंग धनुष चढावे जे भुज वले, परणे तेह उछाह ॥च० सु १८॥ एमनीसुणीहो आवे तिहां कणे अलगाथी

चढ़ावी पण को नवी सके, सारंग जे अनीधान ॥च० सु १९॥ एहवे नंदन श्री वसुदेवनो, राजान ॥ च० ॥ धनुष चढ़ावी पण को नवी सके, सारंग जे अभिधान ॥च० सु १९॥ एहवे नंदन श्री वसुदेवनो, सुर सुभट गुणधीर ॥ च० ॥ उत्ताकि रथ उपर वेसीने, अनाधृष्ट वडवीर ॥ च० सु २० ॥ सारग जाताहो गोकुल गाममें, वास रह्यो सुभटेव॥ च० मथुरां वाट देखाडण तव लिया, साथे हरी बलदेव ॥च०सु २१॥ वक्र वन मेलियो हरी मारग करे, हरख्यो बल माहि राण ॥च०॥ हरी बल देखिहो मन अचरज लह्यो, रथे तेडे राजान ॥च० सु २२ ॥ अनुक्रमे जमुना जल उतरी, पइसे मथुरां मांहि ॥ च० ॥ धनुष सन्नाइहो आया रंगसु, वेगा धरी उछाहि ॥ च० सु २३॥ नामांहो हुइ अति अनुरागणि, निरखि हरीनुं रुप ॥च० ॥ सारंग धनुष्य खेंचण तव उठिया हुंस धरी वर नुप ॥च०सु २४ ॥ निरखि धनुष्यहो, पाछा उसरे, सहिपति मोटा राय ॥च०॥ होइ अपुठाहो नव परणी तपरे, उन्ना मुख उपाय ॥च०सु २५॥ एतले कुमरश्री वसुदेवनो, होइ सनध तनु मोर ॥ च०॥ चढ़वभी चाल्योहो नय मन अवगुण, चाप ग्रही करे जोर ॥ च० सु० २६ ॥ लडथड्यो तामहो होइ अधोमुखे, पडीयो नोमी आय ॥च०॥ हांसो करताहो देखि सन्ना सहु, तव उठ्यो हरी राय ॥च० सु २७॥ मो धर्म फरसेहो जीम निज वज्जने, सा रंगपति पण तेम ॥ च० ॥ चोढ़भी धनुष्यने टंकारव कियो, हरी बल अधीको एम ॥च० सु २८॥ लेइ वरमालहो हरी कंठे धरी, नवल सनेहि नार॥ च० ढाल आठत्रिसमी गुणसागर कहे, घरे आयो मोरार ॥च० सु २९॥दोहा॥
कंसराय हवे एकदा, आखाडे मल युध; करवा कारण तेडिया, राय अनेक विसुध॥१॥ वसुदेवने तेडीया, सगला आपण नाइ; अंकुरादिक पुत्रसुं, कंस हवे चित लाय॥२॥सनमानी बेसारीया, कंसे ते सहु कोय; उंचे मांचे दिपता,

पामे सोना सोय ॥३॥ मल युध हवे सांजलि, रूम रामने एम; कहे मथुरां जाइए, अचरज जोवा जेम ॥ ४ ॥ मानी वचन बलनद्रजी, एम जसोदा पास; न्हावण कर अम्हे जायसां, मथुरां चित्त छलास ॥५॥ देखि जसोदा मातने, हटक कहे बलदेव; कंस हण्यो हरी बंधवा, वात कर सुन टेव ॥ ६॥ पहि लुणो स्युं विसस्यो, तुऊने दासी जाडं; जिण न कियो कारज तुरत, वचन गण्यो अम्ह वाडं ॥ ७ ॥ एह सुणि हरि कोपीयो, उपजी रीस अपार; बोलाव्यो बोले नहि, तव चिंते हलधार ॥८॥ ॥ ढाल ३ए मी ॥ ॥ मोलि माथे मार ॥ ए देशी ॥ हलधर साहि हाथ, बोलावे नरनाथ; जाइ किंम अणमणो ए, वचन दयामणो ए ॥१॥ वादल ढांको चंद, डरबल दिसे मंद; तिम तुम मुख इसो ए, कहो कारण किस्यो ए ॥ २ ॥ एणवाते गुण गेह, त्रुटो दिसे नेह; बंधव तुम तणो ए, साचो मुऊ जणो ए ॥ ३ ॥ हरी जाखे इम वाय, तुं मोटो महाराय; हुं मन जाणतो ए, हव नावि ताणतो ए ॥४॥ पण तुम अधीक गुमान, दिसेछेरे राजन; मुऊ जननी वऊि ए, कही तुम दासमी ए ॥५॥ इण वाते तुम लाज, नवि आवि माहा राज; विणवे धेवहो ए, अणघटतुं कहो ए ॥ ६ ॥ पामी अंतर जेव, हसि बोले बलदेव, नहि तुम जामनि ए, जसोदा स्वामनि ए ॥ ७ ॥ किंतु देवकि माय, देवक सुता सुखदाय; बछ तुम मावमी ए, वसुधा मावमी ए ॥ ८ ॥ नंद सदन सुख हेत, माता धरीय संकेत; मुक्यो तुम जणि ए, आरीति मन घणि ए ॥ए॥ पण न करे तुऊ गोर, कंस तणो जय जोर; तुऊ विरहा तुरीए, रहे मथुरां पुरी ए ॥ १०॥ मास मासने छेह, माता धरि मन नेह; आवे विलखती ए, तुम मुख निरखती ए ॥११॥ नंद जसोदा नार, सखीयपणे सुविच्चार; राखे हेत धरी ए, हेजघणे करीए ॥१२॥

वसुदेव आपणो तात, मुऊ मुक्यो विख्यात; कंस कारण परवे ए, वात न को लखे ए ॥१३॥ बांधव दसे दसार, जा दवनो परिवार; तुऊ सीर राजतो ए, जग जस गाजतो ए ॥१४॥ हुं वम बंधव सार, गुपतपणे सुविच्यार; रहुं मन नेहथी ए, प्रेम विसेषथी ए ॥१५॥ दासी नणी करी रीस, तिण कारण तुम इस; अलेक गुनो कहेए, वलवी रच्यो संहिए ॥१६॥ ढाल नवात्रिसमी सार, पाम्यो नेद मोरार; फरी पुछे एसुंए, गुणसागरकी सुंए ॥१७॥ ॥दोहा॥ हवे पुछे बलनद्रने, किम मुक्यो मुऊ तात; कारण विण इहां कणे, तेम नणो सहु वात ॥१॥ वलतुं बलनद्र कहे, वात सविविस्तार; कंसे तुऊ बांधव हणया, कोप धरी तिण वार ॥२॥ तात मात मथुरां रहे, कंस तणे हव जोर; सोल वरसतो वही गयां कोय न आवे नोर ॥३॥ जरासंधना पक्षथी, चसकी न शके कोय; मोटा साथे बांधवी, घणी विमासण सोय ॥४॥ आज कंस वम राजीयो, पाले राज अखंम; आवीने केइ नम्या, पुहवी पाल प्रचंम ॥५॥ वछ आपण सुत पाषति, वरते ए विरतंत; तो एम जाणी सींघनो, खाज सीयाल नखंत ॥६॥ बांधव मरण सुणी करीं, कोप्यो कृष्ण मोरार; चरीत करे जे आगले ते सुणजो सुविच्यार ॥७॥ ढाल ४० मी ॥ कोइ लो परवत धुंधलोरे लाल ॥ ए देशी ॥ आज पवाम्रो कंसनोरे ला०॥ इम करी पण रीसालरे ॥ सोनागील ॥ हरी हलधर बेहु चालीयारे ला० ॥ साथे घणा गोवालरे ॥सो० आ० १॥ हरी हलधरने कानजीरे ला०॥ बेहु गुणे अमोलरे ॥सो०॥ मथुरां दिसे चालतांरे ला०॥ पामे पुरनी पोलरे ॥सो० आ० २॥ पद्मोतर चंपक नलांरे ला०॥ कंस तणा गज दोयरे ॥सो०॥ पुर प्रवेश करता थकारे ला०॥ साहमा आव्या सोयरे ॥ सो० आ० ३ ॥ दांत उखेमी मारीयारे ला०॥ हरीपदमोतर तेहरे सो०॥ तिम

वलनइ मारीयोरे ला०॥ चंपक गज तिहां जेहरे ॥ सो० आ० ४ ॥ राम कृष्ण बेहु देखीनेरे ला०॥ कहे लोक सहु कोयरे सो०॥ अरीष्ट प्रमुखइणे हणयारे ला॥० नदपुत्र ए दोयरे ॥सो० आ० ५॥ लुटे वजार दयामणीरे ला०॥ गोवालीया तेणीवाररे सो०॥ वस्त्र लुपणने सुखमीरे ला० ॥ कोइ न वर्जनहाररे ॥ सो० आ० ६ ॥ व्यापारी मिली एकवांरे ना०॥ कंस जणी कहे तामरे सो० ॥ गोवालीए पुर लुंटीयोरे ला०॥न राखी कोइनी मामरे ॥सो० आ० ७॥कंस कहे धीरा रहोरे ला०॥ आणयो इण गामरे सो० ॥ कुटी करशुं पाथरारे ला० ॥ पोचाशीस यम धामरे ॥ सो० आ०८॥ निजे पीने कूनमेरे ला०॥कवे धरी वरमालरे सो०॥ मल्ल अखाडे आवियारे ला०॥रामकृष्ण रढियालरे ॥सो० आ० ९॥ कंस निज्या परीवारसुरे ला॥० बेसे हरीहलधाररे सो॥० मोटे एक मांचा थकीरे ला० ॥ सुभट सजन उतारेरे ॥सो० आ० १०॥ राम देखावे कृष्णनेरे ला०॥ कंस जणी तेवाररे सो०॥ समुद्रविजय आदे करीरे ला० ए आपणमो परिवाररे ॥सो० आ० ११॥ हवे तिहां मल्ल झुकतांरे ला०॥ जोवे रांणो रांणरे सो० कंस आदेसे उठियोरे ला०॥ चाणुरमल्ल बलवानरे ॥सो० आ० १२॥ मेहतणी परे गाजतोरे ला०॥ थापोटे निज हाथरे सो०॥ उंचे स्वरे इम बोलतोरे ला० ॥ सकल नरेसर साथरे ॥सो० आ० १३ ॥ विर जननी जे जाइयारे ला० ॥ राजपुत्र मछरालरे सो०॥ आवि अम्हो मुक आगले ला०॥ अहो मोटा भुपालरे सो० आ० १४॥ अणस हेतो हरी उठियोरे ला०॥ न्हानो पण मन मोटरे सो०॥ मांचेथी आयो उतरीरे,ला० भुजा आप थापोटरे सो० आ० १५॥ कृष्ण थापोटे वांहनेरे ला० ॥ गयण वरा कपायरे सो० ॥ दोखि गयण धन उमयोरे ला० ॥ अष्टापद अकुलायरे ॥सो० आ० १६॥

ऊध मुखे ए बालफोरे ला०॥ सेवे सदा वनवासरे सो०॥ तिण वढवो जुगतो नाहिरे ला०॥ एक हाण ने वलि हासरे ॥सो० आ० १७॥ मुलकि दामोदर बोलीयोरे ला०॥ वचन वदे तव गोररे सो०॥ आव्य चारुण उतावलोरे ला०॥ जोउं थारो जोररे॥सो० आ० १८॥ नंद गोपनो पुत्रतुंरे ला०॥ ऊध तणी मुज देहरे सो०॥ तो हुं हरी गजनी परेरे ला०॥ उतारुं वल एहरे ॥सो० आ० १९॥ वचन चातुरी कृष्णनीरे ला०॥ देखी बीजो मलरे सो० कंस आदेसे उठियोरे ला० मौष्टीक नामे मुगलरे ॥ सो० आ० २०॥ उठि बीजा मललनेरे ला० साथे अस्मो हलधाररे सो०॥ थापफी भुज तिम आवियोरे ला०॥ चाणुर हरीनी लाररे ॥ सो० आ० २१॥ राम अने मौष्टीक लफरे ला०॥ तिम हरीने चाणुररे सो०॥ विंध्याचल गजनी परेरे ला०॥ लाग्या रोस आतुररे॥सो० आ० २२॥ कंपे धरा पगला तसुंरे ला०॥ ऊफे रज अतिपुररे सो०॥ उठि सभा अलगी थइरे ला०॥ नरखे उभा ऊररे ॥ सो० आ० २३॥ केसव मुठे चाणुरनेरे ला०॥ नांख्यो धरति उंटरे सो०॥ वज्र जेम सक्रेसनोरे ला० पफीयो ग्रहे कुण चोटरे ॥ सो आ० २४॥ सात धनुष पाछो पफ्योरे ला०, तिण घाते चाणुररे ॥ सो० ॥ सासलहि चाणुर नेरे ला० ॥ कृष्ण हकारे सुररे ॥ सो आ० २५॥ केफ झाली नीज जानसुंरे ला० ॥ वांहे सीस न मायरे ॥ सो० ॥ हयफे हणीयो मुगसुंरे ला०॥ किण हरी जोर खमायरे ॥ सो० २६ आ ॥ मोहफे लोहि नाखतोरे ला० ॥ फाटि देखि आंपरे ॥ सो० ॥ प्रांण छांफ्यां पापीएरे ला० ॥ हरी पण दियो नाख्यरे ॥ सो० २७ आ ॥ ढाल भली चालिसमीरे ला० युध करी बहू भातरे ॥ सो० ॥ गुणसागर हवे कंसनीरे ला० ॥ आगेनीसुणो वातरे ॥ सो० २८ आ ॥ दोहा ॥ कंस हवे भय कोपथी, बोले कंपित देह; आलस तजी गोवालीयो, मारो उभो एह ॥ १ ॥ जेणे,

ए पापि पोसीया, ते पण मारो नंद; ग्रंथ ग्रहो सहू तेहनो, काढो धरनो कंद ॥ २ ॥ नीर करे जो विचको, तेहने राखण काज; ते हणवो मुझ आणथी, नीश्चे सुतजी लाज ॥ ३ ॥ ढाल ४१ मी ॥ ऋक्ष्मणानी तथा नृपति आइ मल्यो ॥ ए देशी ॥ एम सुणी हरी कोपीयोरे, कंस भणी कहे इम; चाणु रमास्यो तुं जीववारे, मुरख वंछे केम ॥ १ ॥ सो अवसर आय मल्यो, रुपिवर भांख्यो जेह ॥ सो० ॥ ए आंकणी ॥ राख्य जीव तुं ताह्यरोरे, जबलगन हणुं तुझ; पछी नंद हणवा जायजेरे, देखी प्राक्रम मुझ ॥ सो० २ ॥ इम कहि कुदि आवियोरे, मांचापर हरीराय; कंस पामी भय आकरोरे; नाठो मुख विलखाय ॥ सो० ३ ॥ सासनरगो आव्यो धसीरे, अंते छरमें चाल; जीव जसारहि बारणेरे, मान भरी मछराळरे ॥ सो० ४ ॥ रामे तव मुष्टीक भाणिरे, पहोंचाम्यो जम पास; लोक नाठा सहू वेगलारे, पामीने अति त्रास ॥ सो० ५ ॥ एटले सुभट कंसनारे, धाया लेइ हथीयार; हरी हलधर हणवा भाणिरे, सुभट मोटा सीरदार ॥ सो० ६ ॥ इंभ एक मांचा तणिरे, राम लेइ नीजदाय; मधुपर मांखिनी परेरे, नासी सुभट सहु जाय ॥ सो० ७ ॥ जिन जस्या आमी फरीरे, बोले छोभी लाज; मांमि अब अलगा रहोरे, मांमो भलवो आज सो० ८ इम कहि तलपि आवियारे, लाते भांगी कमाम; जाणे कंस दरवारमेंरे, पमीऊचिति धाम ॥ सो० ९ ॥ अते उर सहू अवगणिरे, रोस भर्यो हरीराय; केसग्राहि कंसरायनेरे, नांख्यो धरणी आय ॥ सो० १० ॥ मुगट, पम्यो हार पीर गयोरे, तरवा लाग्या नयण; मरणदसा आवि कंसनेरे, कान्ह वदे एम वयण ॥ सो० ११ ॥ जीव तव राखेवा कारणेरे, बालक हणिया जेह; हमणा फल ते पामीयोरे परतख पापी एह, सो० १२ ॥ कंससीर लाते

मारतांरे, वरजेतवदसार; देखि हरी निज तातनेरे गोम्द चल्यो सुविच्यार ॥ सो० १३ ॥ रामकृश्नने नीज रथमांरे,
मारतांरे, वरजेतवदसार; मुके नीज घर आए ॥ सो० १४ ॥ उग्रसेन साथे मलिजी, समुद्र
अनादृष्ठी बेसार; समुद्र विजय आ देसथीरे, जमुनाने तट जाय ॥ सो० १५ कंसानि मात तिम नारीएजी, जलतणी
विजय नरराय; कंसनो प्रेत कारज करेजी, प्रेत कारज नवी कीध ॥सो० १६॥ राम अने कृश्न तणोजी, प्रेत कारज
अंजली दीध; जीवजसा निज पति तणोरे, कोप धरी कहे इम ॥ सो० १७ ॥ एकतालीसमी ढालमेरे प्रगट्यो श्रीहरी
करी तेम; कारज करी सहु नाहनोरे, प्रबल पुन्य प्रताप ॥सो० १८॥ ॥दोहा॥ सतनामा पुत्री जणी, परणावे त्यां
आप; गुणसागर जादव तणोजी, अनी नवरंगा रुप ॥१॥ नित नित नवलां आजणं, नित्य नित्य नवला वेष; नित्य नित्य
नृप; उग्रसेन हरी रायने, करे हरीसु विसेष ॥२॥ सोरिपूर आव्या हवे, जादव सकल विख्यात; श्रोता सांभलजो तुमे, जीव
नवली रतिकला, जस्या हवे जरासंधने गेह, पोहति परतक्ष चालती; अस्त्री रुपे एह ॥४॥ जरासंध
जस्यानी वात ॥३॥ विलखीजीव करी मुझ प्रितम घात ॥५॥ ढाल४२ मी॥सोवन सिंघासण रेवति
पुछे थके, रोति जंपे वात; यादव कुमर हरी हलधरु, ह्येंवरच्यो मन अति वापनो; पुछ्यो१सकल विच्यारे
॥ए देशी॥ आंसुझाने लुह्या निज हाथसुं, चांपी२ हयझाने बाररे बाप तणो करवा जणी, वंधव काली कुमाररे ॥ आ० २ ॥
॥१॥ आवीरे पनोति जरासंधने, कंतनो करीय संहाररे; मोकल्यो शिख दियो तासरे ॥आ० ३॥समुद्र
सोमसुभट तव मोकल्यो, समुद्रवजे नृप पासरे; कंसना मारणहारने, थंभण सहु परीवाररे ॥आ० ४॥ नामतुंसीसके
विजय कहे सोमजी, एहमकुल शणगाररे; रामने कृश्न दो नाहला,

धनुपने, मुम्यतुं मानके वांणरे; धर शीर आणके टोपने, वहाला जोयछे प्राणरे ॥ आ० ५ ॥ पुत्र तो प्रजु नहि स्वामीजी, जो प्रजु तो नहि पुत्ररे; दोइ में एकज होयशे, तिम करो जीम रहे सुतरे ॥आ० ६ ॥ पुत्र तो आपथी उपजे, प्रजु करे आपनो छेदरे; जद चिन्या मालतो सुकशे, थाशे२ वंस विछेद ॥आ० ७॥ एह सुणी हरी कोपीयो छवियो खम्ग संजालरे; सोमनो राहु हुं सांमलो, वेगे दठ आमलो टालरे ॥आ० ८ ॥ नृप नत्रिजशुं विनवे, मार नही अवसिवरे; स्वामीने यले वलियो महा, शेयक होवे अति छिवरे ॥ आ० ९॥ सोम सुनट तव चालीयो, पोहो नृपति संगरे; वात सुणी अति परजल्यो, अग्नी जो घृत प्रसंगरे ॥आ० १०॥ समुद्रविजय सहु तेमिया, किधो कि वात विचाररे हवेरे इहां रहेवो नही, रह्या होवे असुख अपाररे ॥ आ० ११ ॥ कोष्टक एकनीमतियो, पुछयो२ याद नाथरे; किहांरे गया हम उगरा, वगफीठे मोटका साथरे ॥आ० १२॥ सोरे कहे नृप सांजलो, आरति कांइ न गमे नृप हणी निज नुज यले, त्रिखंम धणी होसे स्वांमरे ॥आ० १३॥ नेमने हलधर कृष्णजी, जेहना वंशमां होयरे; जो आप कोपे घणुं, पोंहची शके नही कोयरे ॥ आ० १४ ॥ एह स्थानक तुमे परीहरो, इहां सुख नहि जगाररे; तलाहि जाणके, खाइ२ गारी गेमाररे ॥आ० १५ ॥ पश्चिमदिश तुम्हे शीघ करो, सायर तट अजिरामरे; सतज सुत जनमस्ये, जानु जमरतशुं नामरे ॥आ० १६॥ तिहांरे करज्यो तुमे सादरो, वासतणोरे मंमाणरे; अनथन कपुरस्युं, पामशो कोम कल्याणरे ॥आ० १७॥ अढारेकश कुल कोमस्युं, चालीयो जादवरायरे; मररे व्यापे घणो लो, तेहथी निकल्या जायरे ॥आ० १८॥ जोमीने मत कोइ झूरज्यो, जोमी तजी किमजायरे; जोमी तजी जलजाद

अवरतणी कुण वातरे ॥ आ० १ए ॥ भुप नालिपरे नांखही, कोयडे वावनवीररे; जादव साथेरे लागणी, जे करे साहू सधीररे ॥ आ० २० ॥ काल कुंवर ग्रह्यो विमलो, हुं जाउं यादवालाररे; जिहांरे जाय तिहां केमले, जइ लावुं परीवाररे ॥ आ० २१ ॥ यवन अनुज राजा पांचसे, हय गय पायक तेमरे; काल कोपे करी धम हम्यो, दमवम्यो जादवा केमरे ॥ आ० २२ ॥ जेहनो पुन्य सखाइयो, तेहना वम रखवालरे; तिहांरे न चाले वलदेवनो; केतलो ए कुंवर कालरे ॥ आ० २३ ॥ लगबग आया ए आशना, तव सुरि करेहि विच्याररे; तेम परपंच उगाइयो काल कियो तव काललरे ॥आ० २४॥ यवन कुंवर सहु राजवी, पाछा वली चालीया तेहरे; भुपती सुख ऊख पामीयो, वात सुणी धुरखेहरे ॥आ० २५॥ विर संहारीयो पापणी, लाग्यो २ पाप अपाररे; वलतीरे जिहां जाइ गामरी, तिहा तिहां बालए ए हाररे ॥आ० २६॥ यादव विघन सहुए टल्योरे, सहु टल्यो मर ततखेवरे; दांन ने पुन्य किया घणा, किधी गुरु देवनी शेवरे ॥ आ० २७ ॥ सल्प प्रीयाएम आवीया, सोरठ देशमोझाररे; दूरथी दीठो अति रुयमो, विमल पणे गीरनाररे ॥आ० २८ ॥ सायरने तट आसना, आवीया जादवरायरे; सतनामा सुत जनमीया, तिहां कियो कटक पमावरे ॥ आ० २ए ॥ ढाल नली बेंतालीसमी, नय हरणी अन्नीरामरे; श्रीगुण सागर पुरवे, मन तणा वंछित कामरे ॥आ० ३०॥

॥दोहा॥

उदधी विजय परीवारशुं, करेरे मसलत ताम; विण सुरवर आराधीया, सरे न मोटा कांम ॥ १ ॥ जीहां जंबुक वासो वसे, ते तो बहुला गाम, ते तरुवर जग थोमला; जीहांले गज वीश्राम ॥ २ ॥ तप विन सानिधी नवि करे, देव महा सुखदाय; तप विण लब्धि न उपजे, पाप विलय नवि जाय

॥३॥ दूःकरथि दूःकर महा, जे जग दिसे काम; ते तप करी आराधीए, इम चिंते नृप स्वाम ॥४॥ निमतिए दिन आपियो, स्नान कियो वलि कर्म; सायर पुजा साचवि, साधेवा सुख सर्म ॥५॥ ॥ ढाल ४३ मी ॥ एक दिवस लंकापति ॥ ए देशी ॥ कृश्न करे अपवासजी, त्रण महा उल्लासजी; वासजी वास करेवा कारणे ए, तिजा दिननी जामनि; जाणे के प्रगटि दामनी, स्वामनी जाय ते सुर अवारणे ए ॥१॥ हरीने संख पंचायण, दियो रोहीणि नंदन नंदन संख सु गोप सोहामणो ए, वर वस्त्र पहिरामणि; किधी सायरने धणी, अति घणी भक्ति करी भांखे घणो ए॥२॥ कहे हुं किम आराध्यियो, तप वले आयो साधीयो; मुजने ते दियो कारज आदेशमो ए, हरी भांखे सुर सांभलो; आपो थानक निरमलो, अति भलो थानक अमारो परूपमो ए॥३॥ सुर सुरपति पासे गयो, सुरपति मन हरखित थयो; हरखीत थयो धनदने कारज सोंप्यो सहु ए, धनद समारे अति भली; पुरी श्वारीका मन रलि मन रलि, पुगी आस फलि बहु ए॥४॥ नव जोयण वीस्तारजी, लांबपणे ते बारजी; सारजी सुवर्ण कोट पाइ भलि ए, हाथ अढार उंचापणे; नव धरणी पायो खणे, पोलापणे हाथ बार रंगु चलि ए॥ ५ ॥ रतन तणा वर कांगुरा, देखी मोहे सुरनरा; किधा ए कोठा नवरंग झलकंता ए, एकसो अमरूसव पोलहो; दिसे सरखि उंजहो, उंजहो सात भोमी ध्वज लेहकता ए ॥६॥ वृत त्रंस चउरंसहो, देव करे परसंस हो; किधी मंदिरनि अति मांमणी ए, दस भोमी रत्ने जमा; सहे सवहुं तेरे परवमा, वसुदेवना मोल तणि शोभा घणी ए ॥ ७ ॥ मध एकविसे भोमियो, थंभ हजारे शोभीयो; शोभीयो मणि माणीकज लुसीयो ए, धनद करे हरी हेतथी; नव नव घाट विशेषथी, विशेषथी रंगभुवन करी थापीयो

ए ॥८॥ इंद्राणी अनुहारना, रहे सब त्रीसे नारनां; नारनां मेहेल तणि शोभा घणी ए, बांध्या सोवन घाटहो; मांहि हिंमोला खाटहो, खाटहो विविध प्रकारे कोरणी ए ॥ ए ॥ मेहेल सोल हजारहो, उंची भोमी अढारहो; सारहो दिपे श्री बलदेवना ए, गोल त्रंस चउखुणीया; मोल विविध सोहाविया, सोहाविया दस भोमी दसारना ए ॥ १० ॥ सभा सुधर्मी मन रलि, किधी शोभा झलमलि; झलमलि रामकृष्ण घर आगले ए, वडा श्री गजराजहो; मदझरंत सकाज हो, काजहो हाथी साला पासले ए ॥ ११ ॥ मोटा विवीध भातहो, मोल भोमीया सातहो; सातहो छपनकोम परीवारने ए, राज मार्गने पासहो; सोवन जमीता वासहो, वासहो राय उग्रसेन कारणे ए ॥१२॥ घर घर थोभा साल हो उतम बाग विसालहो; विसालहो कल्पवृक्ष घर बारणे ए, वाविनो विस्तारहो; नीरपुरीत सारहो, सारहो नारी मंजण कारणे ए ॥१३॥ एकथंभा बीथंभा कह्या, त्रिथंभा सतथंभा लह्या; गह गह्या साठ कोभी वस्ती खरी ए, नाम जुजुया धारि ए; रुधी घणी विस्तारीए, विस्तारीए अन धनसुं मेल्या भरी ए ॥१४॥ दिपंती घर उंलहो, बणाति बणाति पोलहो, पोलनहो पोळुं तो उंचि कहिए ए; कलस कांति अपारहो; उगंतो दिनकारहो, कारहो कांतिकिरणेमलरहिए ॥१५॥ हाट तणि वर सोहहो, सोहनो संदोहहो; दोहनहो सोह गुणे धन गाजीयो ए, स्वर्ग मृत पातालहो; तिन लोक रसालहो, रसालहो सार सोधीने आणियो ए ॥१६॥ कुवा वाव्य सरोवरु, वन वाभी अति मनोहरु; हरीपुर २ सरस कहावियो ए, ए सघलो विस्तार ए; गढमढ पोल पगारु ए, वारुहो अहोरात्रि मांहि कियो ए ॥१७॥ पितांबर अति निर्मल, नक्षत्र माला अति भल; कोस्तभहो गरुडध्वज रथ आपियो ए, कौमुदि गदावर; सारंग धनुष्य भला सर,

नंदकह्यो खड्ग मुगट हरिने दियो ए॥१८॥वनमाला मुसल हल, वसनताल ध्वज रथ भल; हलधरह्यो पुजो तुए [illegible]
देइ ए, ग्रीवा आभ्रण वेहिरखा; हारसुं कुंमल नवलखा, जनजीनेहो आये भूपण सुर केइ ए ॥ १९॥ गंग तरंग विरा[illegible]
वसन समुजल राजता, पुनरपीहो रतन तेज हार सुंदरुंए; समुद्रविजयने वस्त्रजी, दिव्य सुररथ शस्त्रजी; पांमुहो [illegible]
ह्राश नामे परुंए, ॥२०॥ यथा योग्य ते जाणीया, ते सहूए सनमानीया; मानीयाहो राजा राज कुमर तदाए, इंद्र[illegible]
आदेसए; ए सयलो विसेसए, कियोह्यो वेव कुवेरे धरी मुदाए ॥ २१ ॥ राम रथे सियारथी, हरीने दारु कस[illegible]
परवारथि वेसी रथ उपर भला ए, पेसारो पुरमां कियो; सहूको मन हरखीत थयो, देखिहो सुंदर नगरी भलाम[illegible]
॥ २२ ॥ सुरपति साथे मलि, करता मोछव मन रलि; मन रलि पधराव्या द्वारामतिए, रत्न कनक धनधा[illegible]
वरसावे मन खांतसुं, खांतसुं त्रण दिवस लगे गतिए ॥ २३॥ नरसुर असुर विद्याधरु धन ददेव अग्रेसरु, अ[illegible]
मंगल चार कियां भला ए; कियो नृपपद अभीपेक, हरी हलधरसुं विवेक; सुविवेक तेज पुज्य गुण आगल। [illegible]
॥ २४ ॥ भुचर खेचर राजीया, सेवकरे अति साजीया; गाजीया नगर द्वारकां यडुपति ए, भोग भोगवे भोग [illegible]
सुपनांतर नहि सोग ए, लोग ए आरति चिंता नहि रति ए ॥२५॥ आप आपणो आचार, सहु पाले सुवि[illegible]
अविच्यारको नसके तिहां करीए, ढाल ए तेंतालिसमी; गुणसागर गुरु मन रमी, मन रमी कमला केल करे ख[illegible]
॥ २६ ॥ दोहा ॥ कमला केल करे खरी, कमला हरी अरधंग; कमला कोम वधामणा, कमला रंग सुरंग । १॥
कमलापति कल्प तरु, कमलापति किरतार; कमलापतीने वारणे, कमलानो विस्तार ॥२॥ कमला हयंवर गयं[illegible]

कमला सदन साज ॥ ठाकुर चाकर सहु विषे, कमला रहि विराज ॥ ३ ॥ कमला ब्राह्मण वाणीया, कमला अवर असेस; कमलापतिना राजमां, कमला तणो विसेष ॥४॥ यादव जगमें झगमगे, यादव जोति अपार; यादवपतिनी साहेबि, चंद कला विस्तार ॥ ५ ॥ ढाल ४४ मी ॥ एक दिवस कोइ मारगध आयो पुरंदर पास ॥ तथा वंछ श्री आदि जीणंद ॥ ए देशी ॥ चंद कला जीम वाधे श्री हरी तेज अपार, कार न लोपे सुरनर मानव एक लगार; श्री हरी वंस वतंस कहंस प्रसंस अनूप, क्रश्न क्रिपाल के सुरीजन डरीजन सालस रुप ॥ १ ॥ सोमकि सीतलताइके तेजे तपत दिणंद, मेरुज्युं धीर गंभिरके गुणे गुरुत गोविंद; सिंह अबिह सुलिहके सुरमें सुरसनुर, इंद्रकि प्रभुता प्रगटित पुरव पुन्य अंकुर ॥ २ ॥ दाता दिल दरीयाको नाम धरंत अनंत, पण ए तिनुं त्याग तणे मननेम वसंत; परनारीने हयो न दिधी वैरीने पूठ, याचकने नाकारो न किधो साहमो उठ ॥ ३ ॥ सब विध सुंदर राज करंत कलेस न कोइ, नामे सुभामा भामनी गुण अभीरामा जोइ; चंदमुखी अडखी सखि सुंदर सोहे, मेलि आण अनुंप के उपमनोरे संदेहे ॥ ४॥ नेह घणेरे धर्मीयो विधीनां घाटसु घाट, अवर सकल त्रिय साथ मथो विधी फोगट माट; रुप सोहागणी रागणी राजा राग असेष, पचंद्रि सुख माणत जाणत जन्म विसेष ॥ ५ ॥ एक दिवस नारायण परखदा पुरी जाम, समुद्रविजय राजादिक राजा वेठा ताम; गगनथी उतरतो दीठो एक सतेज, अग्नी पुंज्यको को कहे सुरज तेज सहेज ॥ ६ ॥ एटले ते अतिआसनो आयो जाण्यो जे वार, तीम रुषिस्वर दिठो के नारद नाम उदार; नारायण पग्ये लाग्यो के मांग्यो भरम अपार, हरी रुषिस्वर आप पुछे सुख वारंवार ॥ ७ ॥ नारद नारायणने पुछे प्रित प्रकार,

तुम्ह पटराणि सुणि में अमरी अवतार; साहुं देखण चाहुं बंधव तुम आदेश, कश्न कहे धन स्थानक जींहां तुम्हे करो परवेश ॥ ८ ॥ मुनि जाण्यो धोनामां नामनि लागशे पाय, नाविने वस रहि फतु उपजी ईहां आय; देव न दुपण दिजे कह्यो नर एक लिगार, होवणहार होवे सहि निश्चे एह विचार ॥ ए ॥ सतनामा तव आगले मांमी दरपण सार, मनगमत्ता रस आण्या तनु पेरे शणगार; प्रिति रुपे मोहि सोहि करे हास विलास, आप सराहण कर्तिके धरति अंग उलास ॥ १० ॥ पाठज ज्यो आइ रह्यो तिहां महा मुनीराय, अंग विभुति जटा शिर रुप विरुप देखाय; मुलकिर सत नामां नाखे मनसु ताम; एक रुप ए एक ए जोजो विधिकां काम ॥ ११ ॥ मेरो तो वदन चंदके जाणी सुधारस वास, ए कोइ मुखको राहके चंदके आयो पास; मों मचकोमी रुपी सुनामा किधी हास, चाल्यो तव पिलताप नारद मन हुत उदाश ॥ १२ ॥ वानरम्रो अति चंचल पियो मदिरा पान, विंछुमे चटकायो के लाग्यो भुत अयान; आगे नारद ने हरी नारी खिजायो जोइ, खिजावणना फंल लागे ते सुणज्यो सोइ ॥ १३ ॥ अणादी वाज्यां जे नर नाचे नाच अपार, वाजां वाजे ते नरके मन नाचणहार; अण छेड्यो हि अनर्थ कारी नारद होय, छेड्यो क्युं क्युं क्युं न करे विमाशी जोय ॥ १४ ॥ नारद चिंते कांहुं आयो इण घर आज, जे घर मान न पाए के तिहां नही जावानो काज; जइ वेगो कैलाशगिरे समुदाय प्रणाम, जोएखुणस न कादुं तो स्यो मुज नारद नाम ॥ १५ ॥ जो अपहार करावुं तो दुख पावे मित, जोरे कलंक चढाउं तो ए चिंता चित; सति शिरोमणी छीज तणे वले साची थाय आगेहि मुज वचन न माने को. हरीराय ॥ १६ ॥ इम चिंतवता

उपजी ए रुषिने मनमांहि, शोक्य तणो दूख गाढो के नारीने अति प्राही; चमालीसमी ढाल भली नारदशुं विलास
श्रीगुणसागर पुन्य तणे वली पुरे आश ॥१७॥ ॥दोहा॥ हुं समन दाव न चुकही, वैरी न तजे वाण; वैरी वाघ
कथी बुरो, अरति उपावे आण ॥ १ ॥ सहु साथे सुख राखीए, सहु साथे समभाव; पुरो पमवो दोहलो, जल
अधविचे नाव ॥२॥ भामा भमें भुली घणुं, मुझ सम नारी न कोय; पण एतो जाण्यो नही, वमा वमेरी होय ॥३॥
नारद ए निश्चे धर्यो, शोक तणो वम साल; नारीने साले घणुं, बिजो सहु जंजाल ॥४॥ढाल ४५ मी॥ राम
रसेरे राची घणुं ॥ए देशी॥ सोक तणो दूख अति घणो, सोक दहे मनमांहिरे; सोक साल साले खरो, जावशुं जीव
हि प्रांहिरे ॥ सो० १ ॥ सोकने सुली सारखी, सुलीकावजुएकोरे सोक काव दिसे घणो, विधे हारू अनेकोरे ॥
सो० २॥ सोक्यने आग्य समी कही, सोक्य तणे अधीकाइरे आग्य वली बुझे सही, सोक्य नसीली थाइरे ॥सो०
३॥ सोकने घाव बराबरी, घाव तो रुझी जाइरे; सोक घाव रुझे नही, खटके कालजामांहिरे ॥सो० ४॥ सोक शस्त्र
सरीखो नही, शस्त्र एक अंग व्यापेरे; सोक्य शस्त्र वहे आकरो, अंगोअंगथी कापे रे ॥ सो० ५ ॥ सोक्य सोहाग्य
विलोकता, सोक्य लहे डख केतोरे; जीभ न एक कही शके, मोटो अंबर जेतोरे ॥सो० ६॥ सोक्य प्रियु सम लेखवे
आधों सुख वटावेरे; नाम न भावे सोक्यनो परतक् केम सोहावेरे ॥ सो० ७ ॥ मुवाही पाछे वली, आणी दहंत
अपाररे; जाणी अशाता आकरी, कंठ वहंति विच्याररे ॥सो० ८॥ करजोमी किरतारने, नारी पोकारी जाइरे; नारी
मकरजे जो करे, मकरे एह सगाइरे ॥सो० ९॥ वर दालीद्र गोरमी, वांझपणे अभीमोरे; वर पंखणी वर टोरमी,

पण नही सोकही नामोरे ॥ सो० १० ॥ ए डुख जाणी सोकनो, नारद निश्चे किधोरे; भामा उपर सोकनो, जाणे के विमो लिधोरे ॥सो० ११॥ अढी द्वीपमांहे फरुं जिहां तिहांथी आणीरे; भामा उपर भामनि; थापुं हरी पटराणीरे ॥सो० १२॥ श्रेणी दोय वइताढ्यनी, सोधि तिहां अभीरामोरे; नारी न निरखी एहवी, जेहवी ए सतभामोरे ॥सो० १३॥ उत्तर दक्षण भरतमां, फिर २ नारी जोइरे; भामा पग अंगुठडे, पहूंची न शके कोइरे ॥सो० १४॥ नंदंनो दिइं देवने, रेपापीशुं किधोरे. रुप हतो जे नारीनो, भमाने सहू दिधोरे ॥सो० १५॥ म्हारा फोडा पेटना, फूटतां न देखायरे; इंम चिंतवतो आवीयो, श्री कुंडनपुरमांयरे ॥सो० १६॥ कुंडनपुरनां पाणीथी, उपजे आठि बालरे; स्वेत सनाये सुंदरी, दिसे भाकझमालरे ॥सो० १७॥ नीपम नुपती परषदा, आयो नारद चालीरे; उंचो आसण मांडीयो किधी भक्ति रसालीरे ॥सो० १८॥ एतले आयो रुखमीयो, कुमर कुल शणगारोरे; रुप कला गुण नरखतां नारद हरख अपारोरे ॥ सो० १९ ॥ नारद पुछे रायने, ए तुम्ह कुण कहावेरे; प्राणथकी अति पीयारडो, नंदन नाम धरावेरे ॥ सो० २० ॥ अंतर हरखि पुछियो, एहने बहिनड कोइरे; पुज्य प्रसाद तुम्हारडे, बहिन भलेरी होइरे ॥ सो० २१ ॥ परणावि के कुंवारीका, राजा उतर दिधोरे; आजलगी तो कुवारीका, रुपिनो कारज सिधोरे ॥सो० २२ ॥ रुपिने लागी चटपटी, अंते उरमें आवेरे; रलियायत में रुखमणी, जुवा आषि वंदावेरे ॥ सो० २३॥ रुपिजी दिधी आसिसका, कृश्न घरे पटराणिरे;होजे भाग्य विशेषथि, जुठ नहि अम वाणीरे॥सो० २४॥ नाम सुणी हरजी तणो, रुखमणिनो मन राच्योरे; गयणागण घन गाजीयो, मोर महितले नाच्योरे ॥सो० २५॥ पिसतालिसमी ढालमे नारद

वंछितफलसेरे, गुणसागर गुरु इम भणे,रुम्हे रुम्हो मलशेरे ॥२६ ॥ ॥दोहा॥ रुखमणिभांखे सुण सुवा,किसी कहे रुप वात कवण क्रश्न नरेशरु, कवण पुरी विख्यात ॥१॥ कवणसुं देसांदेसम्हो, कवण वंस विसाल; कवण रीधी रुपे कवण, कवण तास परीवार ॥२॥ कवण नाम माता पिता, कवण शुं बंधव जोम्ह; बंधवने परसादम्हे, पोंहचे सघला कोम्ह ॥३॥ कवण बहिन सोह्यामणि, विक्रम तणो विच्यार; भुवा भणे रुपिरायजी, कहो सहु विस्तार ॥४॥ नारद बोले गह गह्यो, सुणो वम्हबाइ वात; संभलावुं धुर छेहथी, क्रश्नतणा अवदात ॥५॥ ॥ ढाल ४६ मी ॥ इम्हर आंबा आंबलि रे, इम्हर दाम्हम द्राख ॥ ए देशी ॥ द्वारीकां नगरी अति भलि हो, द्वारीकां क्रश्न नरेश; द्वारीकां सहु मन भावति हो, द्वारीकां पुन्य विशेस; हो हरजी द्वारीकां केरो राय, जेहनां सेवे सुरीनर पाय ॥ हो० १ ॥ देश सोरठ देशम्हो हो, देसांनो शिणगार; रत्न पांच सुं राजतो हो, शोभा अधीक उदार हो ॥ ह० ड० २ ॥ जल तंबोल रेवत भलो हो, द्वारीकां अधीक उदार; वंश श्री हरीवंशजी हो, सहु वंसा शीरदार हो ॥ ह० ड० ३ ॥ वय जोवन जेहनि हो, वंछे जे वर नार; रीधी कुबेर सारखिरे, लाप वसे घरवार हो ॥ ह० ड० ४ ॥ रुप अनुप सोह्यामणो हो, मदन तणो अवतार; दश दशार आदे करी हो, यादवनो परीवार हो ॥ ह० ड० ५ ॥ माता नामे देवकि हो, करमेति कहेवाय; बाप भलो वसुदेवजी हो, महिमा कह्यो न जाय हो ॥ ह० ड० ६ ॥ बंधव श्री बलदेवजी हो, दिसे केइ हजार; बहिन शुभद्रा शोभति हो, अर्जुन तस भरतार हो ॥ ह० ड० ७ ॥ विक्रम सक्र तणो वहे हो, जेनहि केहने मान; रिपु कुल काल कहावियो हो, गण माणि केरो खाण हो ॥ ह० ड० ८ ॥ बालपणे उपामीयो हो,

गोवरधन गोरी तेण; डुष्ट व्यंतरी पुतना हो, नांष्क करी हरी तेण हो ॥ह० ड० ए॥ जमना जलमें जीलतां हो, नाथ्यों कालि नाग; गज जेवि मामो ह्णयो हो, पाम्यो जग सोनाग्य हो ॥ ह० ड० १० ॥ सायर तिरे साधीयो हो, सायर पति सुरराज; धन देवजीए सारिया हो, हरिना सघला काज हो ॥ह० ड० ११॥ लोक त्रिलोका राजीयो हो, नेमनाथ जगदिश; जेहने पासे शोनता हो, अति सयवंत अधीश हो ॥ ह० ड० १२ ॥ एक जीने केम वरणवुं हो, हरिगुण पार न कोय; सुर गुरु आप वखाणता हो, अंत न पामे सोइ हो ॥ह० ड० १३॥ नारद वचन सुणिकरी हो, भुवा नतिजी दोइ; परम माहासुख पाइयो हो, ज्ञानि जाणे सोइ हो ॥ ह० ड० १४ ॥ जुवा नतिजि शुं कहे हो, साचि रुपीनि वाण; किम साची रुखमणि कहे हो, हुं दिथी वर आण हो ॥ ह० ड० १५ ॥ जुवा कहे इमहि कह्यो हो, अथमुं ते रुपिराज; मुज सुणतां वर पुठियो हो, श्री नीखम तुऊ काज हो ॥ ह० ड० १६ ॥ साधु सीरोमणी गुण निलो हो, अयमंतो अणगार; एह वचन नाहि अन्यथा हो, सांसोम कर लिगार हो ॥ ह० ड० १७ ॥ नारद अयमंतो मुनि हो, साचा दोनुं भकार; हुं वर मागी सीसुपालने हो, ए मुऊ सोच अपार हो ॥ ह० ड० १८ ॥ तुं राजा सीसुपालने हो, दिधी वधव देरूय; मातपीत्या दिधी नथीहो, ए ठिंमीसुं विसेस हो ॥ ह० ड० १९ ॥ मातपित्या वेता थकां हो, वंधव किधो न होय; एह वात सहु पाधरी हो, सोच न किजे कोइ हो ॥ ह० ड० २० ॥ जुवातणो तो मानजे हो, साचो वचन विलास; करी कृश्नने कामने हो, पहुचावुं सहु आसहो ॥ह० ड० २१ ॥ मन वचन कमयासुध हो, रुखमणि केरो प्रेम; कृश्न गंर्मी भवरां नरांहो, कवण करावण नेम हो॥ ह० ह० २२॥ कल्पतरु तजी

केरम्हो, हाथ न घाले कोइ; चिंतामणी तजी कांकरो हो, लियो न चाहे लाय हा ॥ ह० ड० २३ ॥ गयंवर तजी कुण गाजतो हो, कुण गहम्रो लेत; कामधेनुं तजी डफाणि हो, कुण गाम्रर चित देतहो ॥ ह० ड० २४ ॥ कण नांखी अति गाजतो हो, कुण गहम्रो लेत; कामधेनुं तजी डफाणि हो, कुण गाम्रर चित देतहो ॥ ह० ड० २५ ॥ आंबो कुण कुसका हो, ग्रहे मुंढ गेमार; सीतल अमृत जल तजि हो, कोण पिये जल खार हो ॥ ह० ड० २५ ॥ आंबो कुण कुसका हो, ग्रहे मुंढ गेमार; सीतल अमृत जल तजि हो, कोण पिये जल खार हो ॥ ह० ड० २६ ॥ कृश्नकंत तजी कुण आंबालि हो, खाइ मुरख लोग; हरख तजी हश्रा तणो हो, कुणसुं वंछे लोगहो ॥ ह० ड० २७॥ रुखमणि तजी रुखमणि हो, किम वंछे सीसुपाल; कृश्न कंधालो केसरि हो, ज सीसुपाल सियाल हो ॥ ह० ड० २८ ॥ ढाल राग मजिव ज्युंहो, कृश्न साथसुं विलास; नारद उपजो जाणके हो, आयो गीरी कैलासहो ॥ ह ड० २८ ॥ ढाल ए छेंतालिसामि हो, प्रिती उपजावण नाम; गुणसागर जे सांभले हो, सरे अचिंता काम हो ॥ ह ड० २९ ॥

॥ दोहा ॥ रुखमणि रुप अलंकियो, नखसिख लगी अभीराम; गुपतपणे पट राखियो, प्रगट न सिझे काम ॥१॥ राजसभा आयो धसी, कृश्न दियो बहू मान; कुसल वात पुछि खरी, नयण वतावि सान ॥ २ ॥ निर्वजन स्थानक जइ, हरी रुखि बेग जाम; पट पसारि देखाड्यो, नारी रुप चित्राम ॥ ३ ॥ रुखमणि रुप विलोकतां, विस्मय पाम्यो नृप; नारदने पुछे तदा, कवण नारीनुं रुप ॥ ४ ॥ आप विध्याता निरमइ, नारी निरोपम प्रांहि; एहवि हूइ न हुंइसे, कृश्न चिंते मनमांहि ॥५॥ ढाल ४७ मी ॥ ताहरा मोहला उपर मेह झबुके विजलिहो लाल झबुके विजालि ॥ ए देशी ॥ गीरधर रुखमणि रुप निहाले फिरी२ होलाल निहाले फरि फरि, ए कुण नवलि नार अपछरा किनरी होलाल अ० ॥ नरखि सुंदर अंग वखाणे तेहनो होला० व० ॥ फूल्याजासुरंग चरण तल एहना होला० च० ॥१॥

मस्तक वेणि शामके जोसि नागणी होला० के० ॥ मुख उदय पुनम चदके रुप सोहामणो हो०॥
सुवान अधर रंग रातडो होला० अ० ॥ नेहके नोडावे वांहके मोह्यो जग वापडो होला० ॥ मो० १॥ कवण कंचुकि
नाग निलांबर खेंचियो होला० नि० ॥ देइ तनु काम आवि जग वंचियो होला० आ० ॥ जेहवुं पोयण पान उदर
तस पातलुं होला० उ० ॥ कडके सोवन वान सोहे जेम मांडलुं होला० ॥ सो० २ ॥ सुंदर कटिनो लाग विराजे
लंकथि होला० वि० ॥ मावे करतल माग नलो मध अंकथि होला० न० ॥ सुडा चांच समान सोहावे नासीका
होला० सो० ॥ मणि दरपण उपमान कपोले नोभीका होला० ॥ क० ४ ॥ काने कुंडल जोड सोहे शणगारथि हो
ला० सो० ॥ रति पतिने घर एहनि न दिठि आकारथि होला० न० ॥ देखि कृष्ण मोरार थयो मद नाकुलो होला०
थ० ॥ वाध्यो विरह विशेष अलेख उपावलो होला० ॥ थ० अहो२ रुप निहाल चतुर गुण धारीका होला० च०॥
शणिठे ए वाल के हजी कुमारीका होला० ह० ॥ कवण अठे ए जात रहे किहां वलि होला० र० ॥ नाम कवण
कुण तात विचारे महा वलि होला० ॥ वि० ६॥ कहे कहे नारद एह सरुप तुं सादरो होला० स०॥ मुजशुं आणि
सनेह मथाइस निरादरो होला० म० ॥ देश कुंडलपुर तणि महिमा गते होला० त० ॥ राय नीषम घर पटराणि
श्रीमति होला० ॥प०७॥तेहनि जाइ नामे रुखमणि गुणवंतिं होला०रु०॥रुपे रंभा समान कहुं उपमा भति होला०
रु० ॥ नामियो नोमी अपार जोहां रवि संचरे होला० जी० ॥ बिजी कोइ न नार जे एहनि सरीकरे होला० ॥ जे०
८ ॥ ए परणी के कुंवारि हो नारद ते कहो होला० ना० ॥ तुरत कुमारी मोरारि ए साचुं सरद होला० ए० ॥

मागी नृप सीसुपालने में ए सुणि खरी होला० मैं० ॥ पण तुम्ह स्या नृपालने योग्य ए कुमरी होला० ॥ यो० ए॥ नारद रढ लगाइ गयो तव संचरि होला० ग० ॥ मोरगायो हरी राय सचेत थयो फरी होला० स० ॥ एहवे कुमरी लेख लखी भेज्यो नले होला० ल० ॥ हेत तणावण काज हरीने आगले होला० ॥ ह० १० ॥ माधवे सकल उदंत चतुरपणे वांचियो होला० च० ॥पद पद अंग अनंत हरख रोमांचितीयो होला० ह०॥ तुम विरहे मुझ काय रहि ए झलवलि होला० र० ॥ भेट देइ महाराय करो हवे सियलि होला० ॥क० ११॥ वांचि इम विरतंत हरी मन विंधीने होला० ह०॥ नेह निबद्धनें तत बेहु मन संधीने होला० वे०॥ हरी लख्युं सुण वाल करो चिंता किसी होला० क०॥ करवा तुम संभाल आवि सहु उलसी होला० ॥आ० १२॥ लागी चटपट चित चंद्रानन उपरे होला० चं० ॥ जीम तनु बुत्यो साल कह्यो इम सुतरे होला०॥ हलधरे जाण्यो इम हरी उदासीयो होला० ह०॥ मरम लहि सुख हेत वचन प्रकाशीयो होला० ॥व० १३॥ रुखमणी लेसुं जाव देसुं सीसुपालने होला० दे०॥हुवोनि सुणि वातके सुख गोपालने होला० के०॥भामा थइ निकाम रुखमणि रुपे करी होला०॥रु तेल न लागे मीठ खाधो जीणे घ्रत वरी होला०खा० १४॥ अणादिवा अनुराग ए उपज्यो अति घणो होला० ए०॥जो जो अति सोभाग के जग रुखमणि तणो होला० के० ॥चिंततो पद्मं निपास वस्यो हरी रायनो होला० व०॥ श्रवण सुणंत उल्हास सयण सुखदायनो होला० ॥ स० १५॥ रुखमणी रुखमणी नाम जपे जीहां जापथी होला० ज०॥ तफफे तन अकुलायके मलवा आपथी होला० के० ॥ ढाल चालीसने सात भली सुरति तिहां होला० भ०॥ गुणसागर वरवाल बेहु मलशे इहां होला० बे० १६ ॥

॥दोहा॥ एह अवसर सिसुपाल नृप, लग्न गणायो जोइ; मनगमता कारज नाणी, दिन कर नहीं कांइ ॥१॥ रुक्मान चाहे सहु, ए जगनो व्यवहार; पण रुके रुमी मले, इहां नही कोइ विच्यार ॥ २ ॥ रुकमणि मनमां खलभली, कहे भुवाशुं जाय; चंदेरी पति ओंकतो, कहांशुं जादवराय ॥ ३ ॥ मुज मन ए निश्चे साहि, वरत्यो देवमोरार; कनक कुसमनी उपमा, मन महरामोझार ॥ ४ ॥ भुवा भतीजी शुं कहे, चिंता मकर लिगार; आपणा इतने आसनो, गरुड तणो असवार ॥ ५ ॥ कुमरी चित चिंता खरी, रखे न आवे स्वाम; नयणे आंसुआ झरे, मोह तणो ए धाम ॥६॥ अथ लेख लखतो॥ तट जमनानोरे अति रलीयामणोरे ॥ ए देशी ॥ रुखमणीना मनमांरे चिंता वोली उपनीरे, हजीए न आव्यो दिनोरे नाथ; आतुर थइ वेगीरे लखवा लेखनेरे, कुमरी मन हुइरे अनाथ ॥१॥ चंद्रगढ घेरोरे वेलेरा पधारजोरे, करो मुज अबलानी सार; हुंतो मांझी वेगीरे आशा तुम उपरेरे, अहो प्रभु प्राणनारे आधार ॥चं० २॥ नरनिद्रामां सुतारे आज मुज मंदीररे, दिठो कांइ सुपनोरे रसाल; जाणुं मे सांजलीयोरे आव्यो मुज प्रणवारे, साथे लेइ बंधवनो परीवार ॥चं० ३॥ चोरी वच्चे बेठारे नाथ माल्हरा एकठारे, हाथे बांधी मींढलनोरे आचार; आमी जनरे ऑंखुरे फरी २ साहिवोरे, परो करी घुंघटपट उदार ॥चं० ४॥ इम झलनामारे आठे पोहोर माहेरारे, जायछे कांइ मलवानी आश पेउजी उवेखिरे अलगा केम रहोरे; नाखी मुने प्रेमने पास ॥ चं० ५ ॥ आज उदयथीरे दिवस सातमेरे, शुक्र अष्टमी भ्रगुवार; जान लेइ जोरे रे दावल राजीयोरे, आवशे कांइ नयरीमो झार ॥ चं० ६ ॥ मुज अंतरनीरे साहिब मारा जाणजोरे, तुझथी कांइ बांध्या ए प्राण; तुम नवि आव्यारे मुज

मरणो सहिरे, नावे एम जाणमजाण ॥चं० ७॥ कुरुणा किजेरे हवे मुझ वालहारे, हे जे धरी लिजेरे हाथ; ते आप
वसुरे किधो जग जोवतांरे, वसनहि तुं केहनेरे नाथ ॥ चं० ८ ॥ आसना अवलंवनरे एति अवधारजोरे, राची हुं
तुम चेरे राग; आपणमी करीनेरे राखो दिलनरीरे, आपी जे मुझ एह सोहाग ॥चं० ए ॥ नाइ रुखमियोरे एहनी
वातमांरे, जाणे जेकां एह जगदीश; माहरा मनथीरे मेंतो एम आदर्योरे, जीम गोरीधर इश ॥ चं० १० ॥
अंतरजामीरे डुर डुख तुं लहेरे, जाणिये आपणी लाज; हवे गोरी किजेरे निज साचापणेरे, किस्युं घणुं गरीवानि
वाज ॥चं० ११॥ कागलीयो तो नीनोरे लखतां आंसुएरे, तेहवोज वींटीने दिध; पुरव लख्यार्थी रे सवंध जे हुयोरे,
वली मुख वचने इम किध ॥ चं० १२ ॥ ॥ दोहा ॥ कुमरी काज समारवा, लेख लखी अन्नीराम; डुत चलाव्यो
द्वारीकां, करह चढावी ताम ॥१॥ ॥ढाल ४८ मी॥ करहला तुं वेगो चालेरे, तुंने चारिश अमृतवेल; क० ॥
तुं जाजे मारग वेल, क०॥ ए आंकणी॥ सुन सुकने प्रेर्यो घणुं, डुत कुसल अनिधान; आयो नगरी द्वारीकां हो,
देख्यो वहु मंमाण ॥क० १॥ अनुक्रमे आयो चालके, देवतणे दरवार; प्रतिहार आगे धरीहो, किधो राय जूहार ॥
क० २॥ राजा पुछे कुणतुं, कहे विदेशी डुत; वेगे नृप आदेशथी हो, चतुराइ अदनुत ॥क० ३॥ रामक्रसने डुतए,
वेगा जइ एकांत; लेख धर्यो आगे मुदा हो वांचे क्रश्न तुरत ॥ क० ४ ॥ कागल मांम्यो वांचवा, वरण न दिसे
कांइ; जिहां तिंहां टवका आंसुमा तणा हो, समजो मनमा मांहि ॥क० ५॥ आंसुमा आदे न लखी सकिरे, मारे
विरहे एम; हुं न गया ए नामनि हो, दिवस निगमले केम ॥ क ६ ॥ मुख वचने कहे डुतजी, सांनल देव विच्यार;

श्रा कुम्नपुर राजाया हा, भापम नाम उदार ॥ क० ७ ॥ पटराणी तस श्रीमति हो, तस उदरे उतपन; सर्व सुल क्षण गुणवति हो, रुकमणि कुमरी रतन ॥ क० ८ ॥ सुरलोका सोधी घणुं, माणस लोकमो फार; पाताला पामि नहि हो, रुखमणिनि अनुहार ॥ क० ए मागी नृप सीसुपालने, बंधव लहि बहु मान ॥ एतले नारद जांखियो हो, वरतो श्री नगवान ॥ क० १० ॥ माघ सुकल अष्टमि दिने, लग्न लियो राजान; कांतो थाउ प्रजु वाहरु हो, कांतो दूटे प्राण ॥ क० ११ ॥ प्रजुने उपानि सोचना, ए मोटो जंजाल; न गया मरणो रुखमणि, गया मरे सीसुपाल ॥क० १२॥ माग न मेले मानविरे, ना नाहीए न्याय; नारी प्रतिज्ञा नवितजेहो, कहो किसीपरे थाय ॥ क० १३ ॥ कुशल कहे तुम्हहि अबो, अंतरजामी आप; सोइ करो जीम एहि मटेहो, रुखमणीनो संताप ॥ क० १४ ॥ लिपे ते तुमहि धकीरे, तुम्ह किहां शिखण जाउ; सोच्यो सल वेसे नहीहो, एक मतो ठहराउ ॥ क० १५ ॥ हलधरने हरी पुठीयोरे, उत कहो शु किध; हरीनो हेत विचारवे हो, हलधर उत्तर दिध ॥ क० १६ ॥ अबला प्राण उगारवा, पुरुष तणो ए धर्म; एम विमासी पुठीयो हो, मलवा केरो मर्म ॥क० १७ ॥ प्रमोद नाम उद्यान मे, कामदेवनो ठाम; वृक्ष अशोक सोहामणो हो, उपर ध्वज अजीराम ॥क० १८॥ ए सहि नाणी कर धरीरे, गमन जाणवा काम; वेग करी पाउ धारजो हो, गुप्तपणे सुण श्याम ॥क० १९॥ चतुर शिरोमणी रुखमणि, पुजानो मिस ठाण; उहि थानक चली आवशे हो, चोरी सकल केकांण ॥ क० २० ॥ जो प्रजु नयणे निरखशे हो, तो होसे सुख प्रित; अण दिठी आतुर थइ हो, करसे अति विप्रीत ॥ क० २१ ॥ हमे जणावी वात ए, कारज तो प्रजु हाथ; देइ दान न विसरजो हो, उत

॥क० २२॥ इत चल्यो ते वेगसुं हो, आयो रुकमणी पास; काज सरयो दुख विसरयो हो, उपन्यो
तदा जगनाथ ॥क० २२॥ हरजी हलधर हरखसुंरे, जोतरीया रथ दोय; सस्त्रतणो करी संग्रहो हो, सनधबंध अति ॥
अति उल्लास ॥क० २३॥ हरजी हलधर हरखसुंरे, जोतरीया रथ दोय; सस्त्रतणो करी संग्रहो हो, सनधबंध अति ॥
होय ॥क० २४॥ नामा नय नारे धरीरे, गुप्तपणे निसी मांही; चाली आया उतावला हो, कुंदनपुर वनमांहि ॥ क०
२५॥ रथ छोडी हय बांधीया, जोवे रुखमणी वाट; फूल्या अंग नमावहि हो, रंचन करे उचाट ॥ क० २६ ॥ ढाल
आठ चालीसमी, हरी आयो त्रिय हेत; गुणसागर गुरु एम भणे हो, सुन वंछीत फल देत ॥क० २७॥ ॥दोहा॥
नारद नाम प्रणामथी, नारद सोचन कोइ; साजो नाजन फोडके, फेर धर्म तो जोइ ॥१॥ अण मिलते मेलो करे,
मिलते करे विकार; ज्ञान विना नवि जाणीये, नारद चरित्र अपार ॥ २ ॥ रुखमणी मन हरी आणीयो, हरी मन
रुखमणी नार; चंदेरी पतिसुं जइ, बोल्यो कवण प्रकार ॥३॥ ढाल ४९ मी॥ ॥देसी नणदलनी ॥ होनारद
चंदेरी पतिसुं कहे, में सुण्यो तुम्ह विवाह हो ना०॥ घर घर रंग वधामणा, तुझ मन अधीक उछाह हो ॥ना० चं०
१॥ कलहकारी जनमारणो, मन वचन योगसपाप हो ना० ॥ सांधा जोडा मेलवे, करे अधिक संताप हो ॥ ना०
चं २॥ हसी बोल्यो सिसुपालजी, स्वामी तुम प्रसाद हो ना०॥ रंग व्यांहहम ए होस्ये विजा व्याह सोवाद हो ॥ना०
चं० ३॥ कवणपुरी किणकी सुता, किस्यो कुमरीको रुप हो ना० ॥ कुंदनपुर भीखम सुता, रुखमणी रूप अनुप हो
॥ना० चं० ४॥ कवण लग्न ते व्याहको, लग्न देखायो राय हो ना०॥ रूपि नांखे उपण घणा, इहां उपद्रव थाय हो
॥ ना० चं० ५ ॥ हम निसप्रही दरसनी, नाहि ग्रह चिंत्या काम हो ना० ॥ प्रिती भणी तुम्हशुं कहुं, हुसीयारीको

काम हो ॥ ना० चं० ६ ॥ एम कही रुखी पांगरयो, रंगमांहि करी जंग हो ना०॥ जगत मांहि अति परगटो, एकु
सेहेजो अंग हो ॥ना० चं० ७॥ सीसुपाल हवे जाननी, करे सजाइ जोर हो ना० ॥ ढंद टकोरा गमगमे, गुहिर नि
साणे घोर हो ॥ ना० चं० ८॥ साथे सबला राजवी, जोर जुगति झूझार हो ना०॥ रथ अस्वार छटरतणां; कहेतां
नावे पार हो ॥ना० चं० ९॥ कोक वाण आगे कियां, तोपारो नहि पार हो ना० जंजाला साथे लिया, साथीमा
सीरदार हो ॥ ना० चं १० ॥ लसकरमलीजं सामटु, पंचक्रोणी परमाण हो ना० ॥ हयदल पेदल गज घणां, मलीपा
आप समान हो ॥ना० चं० ११॥ सलह सनाह सजी करी, हयगय रथ परीवार होना०॥ राजा रुमे रावणे, आयो
होइ हुसीयार हो ॥ ना० चं १२ ॥ कुंमनपुर विंटी रह्यो, तारा जीम गीरमेर हो ना०॥ अहि जीम चंदन तरवरा,
विंटाणा चौफेर हो ॥ना० चं० १३॥ राजाना वेसी गया, दरवाजे दरवान हो ना०॥ आवागमन न होइ सके, कुमरी
दुख असमान हो ॥ना० चं० १४॥ जुवा जलीपरे मेलवे, पुजा तणा प्रकार हो ना०॥ मंगल गीत सुछंदशुं वाजां
नाद अपार हो ॥ना० चं० १५ ॥ पांच सात साहेलीयो, अत्रवेसीया बदार हो ना० ॥ चाली जाये रंगमें, रोकाणी
दरवार हो ॥ ना० चं० १६ ॥ चाकर गार विनवे, कुमरी वनमें जाय हो ना०॥ जाण न पावे इम कहे, चंदेरीनो
राय हो ॥ना० चं० १७॥ जुवा जणे जाइ सुणो, कहो रायने जाय हो ना०॥ तुम्ह तनमन सुख कारणे, एह अनी
ग्रह थाय हो ॥ना० चं० १८॥ चंदेरी पति वरपणे, जइ देसे तुं देव हो ना०॥ लग्न तणे दिन आयके, करस्युं थारी
सेव हो ॥ना० चं०॥ १९ कामदेव मुरति तणी, पुजा करवा जाय हो ना० ॥ अणपुज्या नही परणवो, जइ सुणावो

राय हो ॥ना० चं० २० ॥ कपटतणो बल अति घणो, कपटे वंछीत थायहो ना०॥ विष्नुरुपकोलिक सुत; रायकुमरी वरे जाय हो ॥ ना० चं० २१ ॥ एह वचने राजा कह्यो, काम करो ततकाल हो ना० ॥ प्रबल जोर नावी तणो, किस्युं करे सिसुपाल हो ॥ ना० चं० २२ ॥ नृप आदेस लेइ करि, सेवक लाग्या लार हो ना० ॥ वनद्वारे उभा करी, बाइ कहे सु विच्यार हो ॥ ना० चं० २३ ॥ आपणे सहु इहां रहो, कुमरी वनमें जाय हो ना०॥ एकाकी निज स्वामनी, सेव करे मनमाय हो ॥ ना० चं० २४ ॥ पहेलो वर एह वातनो, बिजो पिउनो मान हो ना०॥ त्रिजो सोकन पराभवे; चोथो पुत्र प्रधांन हो ॥ ना० चं० २५ ॥ नारि मनना वालहा, ए च्यारे वर देष हो ना० ॥ एकांते आराधतां, आपे देव विशेष हो ॥ ना० चं० २६ ॥ जा पुत्रि उतावलि, पुरे मनोरथ कोम हो ना० ॥ सेव घणि नीज स्वामीनि, करजे वे करजोम हो ना० चं० २७ ॥ स्वामी सेव्यो पाइइं, अणसेव्यो अति डुर हो ॥ ना० ॥ एह सिख मनमें धरी, रहेज्ये स्वामी हजुर हो ॥ ना० चं० २८ ॥ एम सुणि वनमें चालि, भय अति हयमा मोझार हो ना० ॥ युथ भ्रष्ट जीम हरणली, जोवे दृष्टि पसार हो ना० चं० २९ ॥ दृढ थाने आवि सति, तरु अंतर नरी नयण हो ना० ॥ निरखंता प्रभु पाइयो, अधीक महा सुख चयन हो ॥ ना० चं० ३० ॥ ए गुण पचासमि ढालमें, मलियो तंतोतंत हो ना० ॥ गुण सागर कुण लखि सके, हरिके चरीत अनंत हो ॥ ना० चं० ३१ ॥

॥ दोहा ॥ रुखमणि वचन प्रकाशियो, हो त्रिभोवनना नाथ; अंतरजामी आसना, आइ ग्रहो मुज हाथ ॥ १ ॥ एटले हरी प्रगट थयो, श्री बलदेव नरेस; लज्या पामी रुखमणी, मनमां हरख विशेस ॥२॥ बांहे धरीसा सुंदरी,

बेसारी रथ मांहि; आप जणावण कारणें, इण बोल्यो हरी प्रांहि ॥ ३ ॥ ढाल ५० मी ॥ ॥ देशी कम्पानि ॥
सुण हो शिसुपाल नृप नीपम सुत रुपमीया, जाणावा वात तुम्हने सुणावा; द्वारिकांनाथ श्री क्रश्न हलधर हमे,
रुपमणि कुवरि लेइ सिधाव्या ॥ सु० १ ॥ अवर जे सुभट अति विकट बल धारक, जोध जे जगतमें रहे तदा वे;
आवियो धावियो वेग करि पाछले, माग थारि हम साथ्य आवे ॥ सु० २ ॥ एम सुणता शिसुपाल नृप परजल्यो,
अग्नी जाणे घृत होम पायो; सेन दल सबल अति प्रबल प्रतापसुं, आप बल प्रबल लेइ धायो ॥ सु० ३ ॥ निपम
राय अति लाज पाम्यो घणुं, रुखमियो कुंवर जीम काल कोप्यो; ऊठियो धसमसी धरणि तव कसमसी, दसमसी
आगले आणि रोप्यो ॥ सु० ४ ॥ गमगमे गयंवर हिंसंता हयं वर, तो रथ शोभ अधकेरि पावे; पाय कलायक काज
सहायक, नायक नव जस काज धावे ॥ सु० ५ ॥ ढाल नेजावरां फरहरे फरहरां, बगतर तोप तव तेज झलके;
आयुधकारका जे छत्रिस सपंवरा, झलहले खग्ग अतिसे चलके ॥ सु० ६ ॥ ढोल निसाण सरणाइ वर काहला, झुझको
राग सिंधु सुणावे, कायर थरहरे जीव आशा धरे, परहरीस्वामिपरह्लापुलावे ॥ सु० ७ ॥ रेणुं छमी घणी गयण
रवि छाइयो, आपणो पर नवि जाय जाण्यो; देव देवी घणी चउसठ जोगणी; अंबरे आप सुख आज मान्यो ॥ सु०
८ ॥ नाचतो नारद फिरत रस रंगमे, अंगमे आनंद अधीक पावे; खिणक शिसुपाल नृप खिणक हरी हलधरा,
बाप म्हारा इम कहि सुणावे ॥ सु० ९ ॥ उदधी किलोल दल पसरीयो चिहुं दिसे, रे रे गोपाल किंहां जाय नाग्यो
नृप शिसुपाल कुंवर वर रुकमीयो, इम कहेतो प्रभु पुंठे लाग्यो ॥ सु० १० ॥ आवतां दल हरि हलधरे रोकिया,

नदियुंना पुर जीम उदधी रोके; फोज बांधी रह्या सुन्नट अति गहगह्या, पण कहो सिंघने कुण रोके ॥सु० ११॥ देखि दल पुर घटि तुर रुकमाणि हुइ, आराति उपाजि ए अपारो; एह घणो रावणो अधीक विहामणो, एह तो वंधव दोइ सारा ॥ सु० १२ ॥ कठिन घन लोह तन लोग माहि नणयो, पण बहु मले जोलीहाला; गालवे लोहनें एह अचरज वमो, एम जाणी थरहरी एहि वाला ॥ सु० १३ ॥ क्रश्न वोले हम कोन तोले अछे, घणी थोमा तणो स्यो पतारो; रातनो संचियो अति घन माचियो, उगते सुर नासे अंधारो ॥ सु० १४ ॥ तोय पण शंक जाइ नहि रुखमणी मुंझ वज्र हरी तामचुरे; करी अति चुन पमी पुन चिपाट करी, साथीयो हाथ मांहेज पुरे सु० १५ ॥ एक बाणे करी विंधीया तव हरी, ताम साते त्रियाने देखावे; तव अति खलनलि एह अतुलि वलि, मारसे सहि मुझ वाप नाइ ॥ सु० १६ ॥ क्रश्न बोल्यो हसी एह चिंत्या कीसी, ताहरो वाप नाइ नवि मारुं; अवगुण सा सहु अवर केति कहुं, बुरो न मनावसुं देवि थारुं ॥सु० १७॥ हलधर इम कहे कुण मुझ बल सहे, पण सिसुपाल मार्यो न जाय; अवरने आगसुं रंग रणमें रमुं,अति दमुं साहमो तुं जेह थाय॥१८॥कहे हरी केसरी खांध उंचो करी,कुंण सिशुपाल सियाल साचो; रण मांहि रोलवुं पवन तृण मोलवं, तो जाणजो पितु उध काचो ॥ सु० १९ ॥ इम रुखमणि मुकि वैरी नणि आविया, दोइ बंधव रण मांहि सनुरा; क्रश्न सीशुपाल असराल क्रोधे चढ्या, नमनम्या आप२ मांहि सुरा॥ सु० २० ॥ श्री बलदेव ततखिण रण रस चढ्यो, वम वमा राय जाइ पुलाणां, सिंघकि दोम गजराज गीर गीर पमे, आंकतां प्राण छोमे खलाणां ॥ सु० २१ ॥ सेन दल नंग गतरंग देखि करी रुकमीये बलप्रति वाण सांध्यो; वज्र

का । भणि बाण लाग्यो नहि नागपासे करां सोइ बांध्यो ॥ सु० २१ ॥ नखशीखे जकडीयो गाढो करी पकडियो, रुकमीयो अंग मिट गयो दावो; आणि रथमे धस्यो वयण इम उचस्यो, कन वहू जाइ मांखि नमावो ॥ सु० २२ ॥ रुक्म सिसुपाल चिरकालरण साचव्यो, अब सखाकरी मांहोमांहि; जितीयो इस जग दिसजग जलपन, पुन्य प्रसादे जय हुइ प्राइं ॥सु० २४ ॥ दोय वद्ध विर अति धीर गंजिरण करी, रुखमणी तणे पास आया; ढाल करूपातणी सुणत सोह्यामणी, तिस अरु विसमी हरप पाया ॥सु० २५ ॥ पिसुन मदमान मर्दन नगवानजी, साधुपरे त्राण ए वरदानिको; श्रीगुणसागर अधीक उजागर, नागर नवलयस सुजस टिको ॥सु० २६॥ ॥ दोहा ॥ रुखमणी रिझी अति घणी, देखी जेत पति काम; एह अदनुत प्राक्रमी, अवर पुरुप स्यो नांम ॥ १ ॥ करजोडीने विनवे, पेवजी करो पसय; बंधव बंध न छोडीए, माहरे मन ए नाव ॥२॥ बंधन छोड्या हाथशुं, कृपा करी जगनाथः सुजन पणे अति राखज्यो प्रिती नाव हम साथ ॥३॥ ढाल ५१ मी ॥ रघुपतिजीत्योरे ॥ए देशी ॥ यद्धपति जीत्योरे जीत्यो २ श्री वसुदेव कुमार यदु० ॥ जीत्यो २ रुखणीनो नरथार य० ॥ जीत्यो जीत्यो वाइ सुनद्रानोविर य० ॥ जीत्यो जीत्यो साहसवंत सधीर य० ॥ जयजयकार करे घणो, आकाशे सुरनार; देइ उदामाजीत काह्नो, चाल्यो देवमोरार ॥य० १॥ श्रीगारनारे आवीया, मनमें अति उगाह; आरण कारण साचवियो हो, कियो रुखमणी व्याह॥ य० २॥ व्याह हुइ जेह थानके, रुखमणी वन तस नाम; संगति मोटा माणसा हो, सवहीपरे अनीराम य० ॥३॥ पवर हुइ द्वारामति, परणी आयो नाथ सजन सुनट जन सामटा हो, आइ मील्यो सहु साथ॥ य० ४ ॥ नगरीनी

हो,हरख्या यादव भुप ॥य० ५॥ कोइ अटाले उरके, कोइआंगणो शोभाकरी,आवी भात अनुप;घरघर द्वार वधामणा
अपार; गोखे चढी कोइगोरडीहो, कोचातुरी चौवीर ॥य० ६॥ कोगलीए कोचोतरे, चाचर ढली कोइ;लाज न सुसरा जेठ
किहो, कौतक मीठो होइ ॥य० ७॥ ऊलट ऊहलणी देखवा,लालच लागी नार; होइ रही वेकूमताहो, तनमन सुधन विसार
॥य० ८॥ अचरज किधां एतलां,चुडावंध उदार; केडे पेहेर्‍यो कटीमेखलाहो, माथेकृत सणगार ॥य० ९॥ कुंकुमला
या लोचनां, काजल दियो कपोल; उघाडे माथे फरेहो, निलज थइ निटोल ॥य० १०॥ पुत परायो लेचली आपरो
वंतोमेल; अलजा लगे आघी धसेहो, एकएकने ठेल ॥य० ११॥ कोइ वधावे फूलडे, कोइ हिरालाल, मणी माणेक
ने मोतीया हो, अक्षत थाल रसाल ॥ य० १२ ॥ कोइ वदे वरकामनी हो, धन रुखमणी अवतार; सव विध सुंदर
सामलो हो, जेह पाम्यो भरतार ॥ य० १३ ॥ अवर अनेरी भामनि हो, भांखे वारंवार; वडवखता श्री कृश्नजी हो,
पामि नार उदार ॥ य० ॥ १४ ॥ विविध विनोद विचारनि, वात सुणतां स्वाम; सोहासण कृत मंगले हो, मंदिर
आया ताम ॥ १५ ॥ धन्य२ माता देवकि, वर वहु लाग्या पाय; दिये आसिस सोहामणि हो, फूलि अंग न माय
॥ य० १६ ॥ मंदिर ऊंचो नव खुणो, अधीक अनोपम सार; रुखमणिने हरि आपियो हो, अन धन भरित अपार
॥ य० १७ ॥ हय गय रथ वर वाहणि, आयुध विविध प्रकार; हरि आभुषण अति घणा हो, ते घर मांहि उदार
॥ य० १८ ॥ दास अने दासि तणो, वहुलो तस परीवार; स्वामी मयाथी सहु हुवे हो ए सुधो ववहार ॥ य० १९ ॥
स्नान अने भोजनपणे आसन सयन विचार; हसन विलोकन भांखणो हो, रुखमणिनो अधीकार ॥ य० २० ॥

काया जाण वाण [illegible] वांध्यो ॥ सु० २२ ॥ नखशीखे जकडीयो गाढो करी पकडियो, आकडीयो अंग मिट गयो दावो; आणि रथमें धर्यो वपण इम उचर्यो, कल वह जाड मांखि डमावो ॥ स० २३ ॥

मनसा ने वाचाये करी, काया केरो तेम; खीर नीर जीम मिलि रह्यो हो, श्री हरी रुखमणि प्रेम ॥ य० २१ ॥ दक्षण श्रेणि जंबुपुरी, जांबु पुत्रि जाण; जंबुवंति रुपि वाम्यथि हो, आणि श्री जगवांन ॥ य० २२ ॥ ततक्षण रोमज राजियो, संघला नायक जोइ; लखमणा नामे कुंवरी हो, परणि श्री हरी सोय ॥ य० २३ ॥ राष्ट्रवर्धन रायजी, सोरठ केरो इस सुसिमां पुत्रि वरि हो, बंधव हणी जगदिश ॥ य० २४ ॥ सिंधु देशनो स्वामीजी, मेरु भुप वम राय; पुत्रि गौरी गुणनरी हो, गीरधरने सुखदाय ॥ य० २५ ॥ हलधरनो मामो जलो, हिरण्य नाज नरेश; पुत्रि तो पद्मावति हो, संवर वरीय विशेस ॥ य० २६ ॥ देश महा गंधारजी, इन्द्रगीरी पति तास; पुत्र मारी पुत्रि वरी हो, गंधारी सोल्हास ॥ य० २७ ॥ ए आठे पटरागनि, ए आठे समतोल; ए आठे सिव गामनि हो, ए आठे निरमोल ॥ य० २८ ॥ ए एकावनमी ढालमें, वंछित फलि जगीश; श्री गुणसागर सुरजी हो, पुन्य करो निशदिश ॥ य० २९ ॥ गाथा चोपाइ ॥ खंम खंम रस ठे नव नवा, सूणतां मीठा साकर जवा; श्री हरी वंश चरित्र जय जयो, विजो खंम ए पुरण थयो ॥ १ ॥

॥ इति ढालसागरप्रबंधे हरिवंशनामा द्वीतियोऽधिकारः समाप्तः ॥

॥ खंड २ जो ॥ ॥ दोहा ॥ अरि हणवे अरीहंतजी, तास करी परिणाम; अव त्रिजा अधीकारनो, उद्यम करुं सकाम ॥ १ ॥ रुखमणि रागे राचियो, सुख माने हरी राय; तिम२ जामा आवटे, ते डख कह्यो न जाय ॥२॥ नारद आवि वोलियो, जामासुं ततखेव; वांको मुख किया तणो, ए फल जोगव देह ॥ ३ ॥ तिम तिम सा गाढि यले, आरति घणि मन मांहि; सोक्य साल हयके चढ्यो, ते उतरे नहि प्रांहि ॥ ४ ॥ वतम वतमता लजे, न करे ताणो ताण; रुखमणि हरिशुं विनवे, जामा आरति जाण ॥ ५ ॥ ढाल ५१ मी ॥ ॥ श्री श्री मंदिर साहिव मेरा ॥ ए देशी ॥ एक दिवस रुखमणि हरि साथे, किधी ए अरदासोरे; जामा घर प्रीतम पाय धारो, सहुने पेठनि आशोरे ॥ ए० १ ॥ कृष्ण कहे ए सा अहंकारणि, तेहथी न लहे मानोरे; ते सोनो शुं करवो सुदरी, जेहथी तूटे कानोरे ॥ ए० २ ॥ रुखमणि वोले अमृत तोले, यद्यपी जो त्रुटे कानोरे; तोपण सोनो कोइ न नाखे, ए प्रगट वखाणोरे ॥ ए० ३ ॥ आ पुण आवरीयुं केम थलगुं, किधुं जाइ कंतोरे; विप थने विषधर डखदाइ, शंकर संग वसंतोरे ॥ ए० ४ ॥ जोगवणो जग खाटुं खारुं, जेतो लाग्युं लारोरे; डजा आगे नहि२ नाखे, शिव शाता दातारो रे ॥ ए० ५ ॥ नोतन हिरो लाल नगीनो नोतन नारी नरखिरे, जोरे पुरातनने परहरीये; तो ए नहि घर सरखीरे ॥ ए० ६ ॥ आग थकि अधिको अति डन्हो, नारीनो निसासोरे; नाहनीपटनी तेह पण त्रिय, तजवी नहीनी रासोरे ॥ ए० ७ ॥ वेगे सिधावो वार मलावो, पोखो परीघल प्रेमोरे; जो न गया तो तुम्हसुं वोलण, आज थकी मुजने मेरे ॥ ए० ८ ॥ रुखमणी वचने राय विच्यारी, वात सकलहि वारुरे निर नरेसरे न्याय

कहाणां, फेरणहारा सासुरे ॥ ए० ए॥ रुषमणि मुखनो सुरची सुगंधो, लेइ तंबोल नरंदोरे; नामा नामनिने घर आयो, नामा मन आणंदोरे ॥ ए० १० ॥ वक्र वचनसुं नामा नाखे, ए तुम्ह गेहन होवेरे; चुलें पधारया प्रथवि पति तुम्हे, रुखमणि मारग जोवेरे ॥ ए० ११ ॥ कृश्न कहे हाउ घर नाहि, पण आयो सो आयोरे; नर्मसु गर्म वचन केलवतां, नामा अति सुख पायोरे ॥ ए० १२ ॥ कृश्न कहे मुझ निंद्रा आवे, एतो मधुर जाणिरे; सोवा कारण हम घर आया, उं नव परणित राणिरे ॥ ए०१३॥ जीम२ आवो नीत२ आवो, सुख निंद्रा प्रभु किजेरे; हमे पुरातन उतो नोतन, नव२ लाहो लिजेरे ॥ ए० १४ ॥ कृश्न कहेरे तुं इम शुं बोले, नवि घणेरी नारीरे; तुं माहरे धुरकी पटराणी, आदि लगे सुं विचारीरे ॥ ए० १५ ॥ कपट निंदमें प्रभुजी पोढया, अंचल गांठ निहालीरे; खोली लियो तंबोल तेवारे, भ्रमे भुली साबालीरे ॥ ए० १६ ॥ उरसीइं मुकी चंदन साथ्ये, घसी लियो सतनामारे; करे विलेपन वदन सरीरे, वशीकरण अनीरांमेरे ॥ए० १७॥ एतले जागी उठ्या जगपति, रेनोली नरमाणीरे; रुखमणी मुख तंबोल शरीरे, तुं दिसे लपटाणीरे ॥ए० १८॥ हांसो कृश्न तणो न समावे, हाथे वजावे तालीरे; होइ षिसाणी हरी पटराणी, बोले उत्तर वालीरे ॥ ए० १ए ॥ थारो सेहज न गयोरे गोवालिया, स्युंवरूराय कहायोरे; प्रीती पनोती काजे आज, ए जाणी बुझ तनलायोरे ॥ए०२०॥ कृश्न कहे हातो तुं साची, पुनरपी नामा नाखेरे; रुखमणी मिलवा तणो उमाह्यो, प्रेउमा जो दिन दाखेरे ॥ए० २१॥ नुप नणे हुं तुझ नपातिजुं, के साची के जुठीरे जुठ कहे जुग नाजाया, जाणीके अधिकी उठीरे ॥ ए० २२ ॥ मुलकत २ ताम मोरारी, माननीनुं मन मोहेरे; ए नव हीथि

॥ खंन्ड ३ जो ॥ ॥ दोहा ॥ अरि हणवे अरीहंतजी, तास करी परिणाम; अव त्रिजा अधीकारनो, उद्यम ते दुख कह्यो न जाय ॥ १ ॥

॥ स्नापति गयो गचियो सख माने हरी राय; तिमश जामा आवटे.

रीस करेवि सुंदरी शुं सति सोहेरे ॥ ए० २३ ॥ सुस करे जो बाबाजीका, कपट न करवो कोइरे; खिरनिर जिम मांहोमांहे मिलस्यां वहेनम्ह दोइरे ॥ ए० २४ ॥ तो हुं तुम्हने रुखमणी मेळुं, जामा कहे एनीकीरे पिसाणी पण हुइ अयाणी, न पिछांणी प्रभुकी किरे ॥ ए० २५ ॥ कृष्ण देव रुखमणी घर आया, जामा पाय लगावारे; कुण उपाय करे करमे तो, लागो चाव सुणावारे ॥ए० २६॥ स्वेत साटीकारक कांचुली, जल चुरण पहिरायोरे; वृक्ष अशोक तले जामा वन, पद्मासन पुरायोरे ॥ए० २७॥ जामा शुं जांखे जल जावनि, सही करी रुखमणी मिलसेरे कृपानाथ कृपा जो करशे, उधे साकर जलसेरे ॥ ए० २७ ॥ आप गुल्ममें गुप्तपणे रही, कौतक जोवे जामोरे सतजामाएकाकीरामा, वनमे आवि तामोरे ॥ ए० २९ ॥ पद्मसीला उपर सांवइवी, दिवी रुप रसालीरे; सतजामा जाणी वनदेवी, लागी तनमन तालीरे ॥ए० ३०॥ के अमरी के किनरी सारदा, रोहीणी रति जगजाचीरे; कंमला नाग तणी वरकुमरी, सुरपति रमणी साचीरे ॥ए० ३१॥ कोइ होज्यो ए देवि परतक्ष, पुन्य जोगे प्रगटाणीरे; सेवा फल देसे इम जांणी, लावी पाती पाणीरे ॥ए० ३२ ॥ पुजी प्रणमीने वर मागे, माधव मोवश आवेरे; मात मया करशो परकिजे, रुखमणीनामनजावेरे ॥ ए० ३३ ॥ नाथ्या बेलतणीपरे चाल्यो, हरी आवे मुझ पासेरे, तो तुम सेवा जाणुं साची, उधी अलगो नासेरे ॥ए० ३४॥ एम कही पगे लागी जामा, करती लालच लाखोरे; अरथी दोस न देखे कोइ, सहुने सुख अजि लाखोरे ॥ए० ३५॥ ए बावनमी ढाले जांख्यो, पगे लागण अधिकारोरे; गुणसागर कहे सोहि सोहागण, जेहने वश जरथारोरे ॥ ए० ३६ ॥ ॥दोहा॥ जामा जरमपम्ही घणुं, जांखे वारंवार; देवि

वरदे वेगशुं, रुखमणी आवणहार ॥ १ ॥ आख जरे आतुर थइ, देविन आपे वाच; एतले हरी प्रगट थयो, माग र वर साच ॥ २ ॥ ढाल ५३ मी ॥ मुदमीथा लाल घमावे ॥ तथा सीयल सरु तरुवर सेविए ॥ ए देशी ॥ माग्य माग्य वर माननी, अवर न एहवी देवि हो; जो चाहे सुख संपदा, सुधी एहने सेवि हो ॥ मा० १ ॥ हरी हरणाक्षी शुं कहे, तजी बिजो जंजाल हो; रुखमणी रागे राचतां, सघली वात रसाल हो ॥मा० २ ॥ उगी ततक्षण तारणी, रुठी मारणहार हो, अवर न देवी एहवी; जेहवी एह वरनार हो ॥मा० ३ ॥ क्रोध न किजे कामनी, क्रोधे होय विणास हो; क्रोध तजी ए धावतां, पुरे मननि आश हो ॥ मा० ४ ॥ नामा नारे नमननं, उगी अति वरमाय हो; रे रे धुरत सिरोमणी, वादे हस्यां शुं थायहो ॥ मा० ५ ॥ ए परदेशण प्राहुणी, सगो न को कहेवाय हो; जो हुं मन खेंची रहुं, फाटी हयो मरी जाय हो ॥मा० ६॥ ते माटे पगे लागिने, में दिधो सनमान हो; नंद नंदन तुं मोहशुं मेलण लाग्यो तान हो ॥मा० ७ ॥ जे नर बाहिर सांमला, मनमां मइला सोइ हो; उमुहा माणस माणसा, मांहि गणे नहि कोइरे ॥ मा० ८ ॥ उदर वस्यो जब मायने, तबहीथी परपंच हो; उपजीयाथी अति घणा आजलगे उसंच हो ॥मा० ९॥ वाध्या जइ घर गोवालने, ग्वालतणा गुण जोम्हो; नाच्योराच्यो रंगशुं करत कतोहल कोम्हो ॥मा० १०॥ रित न जाणी राजनी,जाणी गाय चरायहो किसोप लेखो किजीए, देवां अवलोन्यायहो ॥मा० ११॥ निखमनि ओमि हरि, करि घणा संहार हो; जोगीनि वाहे वहि, लागी तोनटलारहो ॥ मा० १२ ॥ जेति मनमां उपजे, तेति मोहमे मआण हो; लोहिने लमवे करी, चंमालि चित आण हो ॥ मा० १३ ॥ कृश्न कतोहल केलवि,

आयो पुरमोळार हो; लेहणो लाजे आपणो, ए दोइ वम्नार हो ॥ मा० १४ ॥ रुखमणि उठि धसमसि, लागी लामा पाय हो; लामाये लल जावसुं, लिधी कंठ लगाय हो ॥ मा० १५ ॥ कुशल वात पुछि घणि, लामा धरी अति प्रेम हो; थारी देवि कृपा थकि, माहरे निताहि खेम हो ॥ मा० १६ ॥ हसी रमी हेत प्यारसुं, चालि लहिय पसाव हो; आंबो पाक्यो ऊपरे, मांहि न जाय कसाव हो ॥ मा० १७ ॥ अवर अनेरी वातनो, थोमो धरे गुमान हो; लामाने पगे लागणो, साले साल समान हो ॥ मा० १८ ॥ जलण जलंतो जाणिये, जलसुं रहिइ लाग हो, जो जल आपणहि जले, तो किंहां जाय लाग होय ॥ मा० १९ ॥ जो पेठ पाम्हे आंतरो, लोगासुं स्यो रोस हो; लामा मन समजावाणि, कर्म आपणो दोश हो ॥ मा० २० ॥ ए त्रेपनमि ढालमें, रंग विनोद विलास हो; गुण सागर शुल कर्मथी, पोंचे मननि आश हो ॥ मा० २१ ॥ ॥ दोहा ॥ रवि उगे शशी आथमे, शशी उगे रवि तेम; रवि शशी होवे एकवा, एक आकाशे केम ॥ १ ॥ वासुदेव वसुधा विषे, आण मनावे ताम; प्रतिमल मद मारवे, सुजस लहे अजीरांम ॥२॥ ॥ ढाल ५४ मी ॥ ॥ वे वे मुनिवर वोरण पांगर्यारे ॥ ए देशी ॥ होवे हो कृश्न सकल जगनो धणि, जांवो हो नवमां प्रतिमलने हणिरे ॥ ए आकणी ॥ पवनथी पथी आवियारे, वेपारी वम्र नामारे; रल कांवल रुयमारे मुल घणे अजीरामेरे ॥ हो० १ ॥ लाल विच्यारी अति घणोरे, राज ग्रहि आवंतोरे; जीव जसाने आगलेरे, वस्तु लालि लावंतोरे ॥ हो० २ ॥ घटी मोल जव सांम्ल्योरे, विणजारा वोलंतोरे; छोम्ही नगरी द्वारिकांरे, न्याय हम मोलंतोरे ॥ हो० ३ ॥ चमकि जीव जस्या सरीरे, सुणि नवलो अजीधानोरे; कवण देश पुर केवम्होरे,

केहनि वर्ते आण्योरे ॥ हो० ४ ॥ सोरठ देश सोहामणोरे, सायर दत निवासोरे; नव वारी नगरी चलिरे, कृश्न
नरेसर तासो रे ॥ हो० ५ ॥ आदि विगोइ व्यंतरिरे, नाथ्यो कालि नागोरे; गोवर्धन गीरि धारीयोरे, जेहनि अविचल
पागोरे ॥ हो० ६ ॥ दांत उखालण गयंवरारे, मल पछाड़ण हारोरे; कंस कंद निकंदणोरे, उग्रसेन आधारोरे ॥ हो०
७ ॥ चंदेरि पति मद मारणोरे, अरि कुल केरो कालोरे; कृश्न कहावे के हरीरे, नामे उर्जन सालोरे ॥हो० ८॥ विरुद
सुण्यां अति आकरारे, अंगुठाथि झालोरे; उठि आवि मस्तकेरे, आतुर थइ असरालोरे ॥ हो० ९ ॥ हइडंचोहटा
आण केरे, कंत अने चलजाइरे; विरहे विछोहि विल विलेरे, वेदन सहि न जायरे ॥ हो० १०॥ यडुपतिनी पदमणि
रे, पोखे प्रियुसुप्रेमोरे, हुं रंडापो जोगवुंरे; अव मुझ जीवणाने मोरे ॥ हो० ११ ॥ जरासंध पासे जइरे, पापणि
मरणो मागेरे; कंत अने नाइ तणोरे, अरि फिरे मुझ आगेरे ॥ हो० १२ ॥ नृप जणे मत रोवहिरे, रोसे तुझ रिपु
राणिरे; अरी तुं वर तो जीवतोरे, पण में खबर न जाणिरे ॥ हो० १३ ॥ सामी छोहना पातकिरे, रेमंत्रि तुं दिसेरे;
वयरी किम वधवा दियोरे, होव नसे नृप रीसेरे ॥ हो० १४ ॥ अथ कमखो ॥ कोपियो राज आहि पति राजवि,
नि सुणि पुत्रि तणा वोल न्यारी; कहे राज जरासंध सुण पुत्रिका, पुरवुं आज आशा तमारी ॥ को० १ ॥
मुलथी वंस उनमुल शुं यडु तणो, कोपियो मगधेश कहे एम वाणिं; चढतरी वात सेना नणि, आ दिसे मंत्र
विचारीयो पण राय गुमानि ॥ को० २ ॥ थयो परन्यात करी शणगार शोभा धरी, नंनासालेतामनंनावजावे,
राय राणाजीको हाथ जोडो धरे, नाना मोटा कोइ रेण न पावे ॥ को० ३ ॥ निसुणि प्रबल दल सबल सेना हुवा,

केम कशीया तणा देइ तशीया; थापमे कंध एक एक हयवर तणा, मुग वल धाल संग्राम रीसया ॥ को० ४ ॥ रज चढि गयण रणथंन्न जेम ऊपड्यो, पाखरे रोल घमसाण वाजी; स्वांमि तणि वात अक्षियात करवा नणि, सुनटनि नयन ब्रह्माम लागी ॥को० ५॥ सव लंढि चाल सीशुपाल मुगाल तिम, सकल सिमाफिया जुष आया; पुत्र सहदेव आदिक वमा राजवि, सस्त्र ठत्रिस धरी वेग धाया ॥ को० ६ ॥ तेम दुर्योधनादिक वमा राजवि, राण राजा नरा उतर ढालां सहेस गमे तिहां नृपति आवी मल्या, केइ गजरथ तुं रंगम केइ पाला ॥ को० ७ ॥ चढतवेला मुगट सीसथी खीर पम्यो, तूटकी निज हाथशुं हार त्रुट्यो; वाम तसु आंप फूरके घणुं उपरे, लोक संगला कहे पुन खुट्यो ॥ को० ८॥ गृध अंबरे फिरे हिंक आगल करे, वायरो ते प्रतिकुल वाजे; वहुल अपसुकन वारी जतो राजीयो, खिजतो आप णा घोल काजे ॥ को० ए ॥ पारविण पायदल तुरोय गयं वरतणो, कलकलाट शब्दे वधीरलोक थायो; अश्व पुरा आहणी सवल रज सांधणी, ठल नणी जाय आकाश ठायो ॥ को० १० ॥ धमहमे धरणी तलस वलसे नान्नरे, जलथी जल उठले अति जोरे; सलसले पनंग नारे करी संकतो, पलनल्या देंव कटक गणशोरे ॥को० ११ ॥ मगध देसाधी पति मदे नरयो मलपतो, गंध हस्ती चढे गर्व गेहलो; सामहो द्वारकां नगरी सीमा नणी, चाल्यो सेन्या लेइ राय वहेलो ॥ को० १२ ॥ एहवे आवीयो नादर मुनी कौतकी, जरासंधशुं हसी इम नांखे; आज हरी हलधर प्र वल प्रताप धर, नवी चाले एहथी घणुं शुं झांखे ॥ को० १३ ॥ राय सुनट तव कोपी नारद नणी, देइ चपेटा चरण लात कुट्यो; फोमी कमंमल कोपिन खेंचो घणो, हाहा नाहि २ एम करी मांमखुट्यो ॥को० १४॥ राग आशा

अने सिंधुए ए सुणी, जरा सिंधु चढतरी वार ए गमे; जात कम्रखे कही ढाल लावण्य न्नणि, सुणतां सुरमा सुर पामे ॥को० १५॥ ॥ढाल मुलगी॥ नंना वजावी ततखीणेरे, किधो राय प्रियाणोरे; वेलापुगी आण केरे, डर गयो सयाणोरे, ॥हो० १६॥ साहण वाहण सामटोरे, साथे सहु राजानोरे; धसमस धाया आवहीरे, दलबलने प्रमाणोरे ॥हो० १७॥ ए चोपनमी ढालमेरे, न्नवी लीधे जातोरे; गुणसागर न्नवी शुंकरेरे, होवे होनारी वातोरे ॥हो० १८॥ ॥दोहा॥ सेन लेइ जरासंध ते, आयो रणनी सीम; चक्र व्युह आकारमें, संप साजथी न्नीम ॥ १ ॥ आरा सहस्त्र कियां न्नलां, लशकर मेली थाट; एक आरे राय सहस्त्रबे, रोके आमा घाट ॥२॥ रथ बेसहम्रा मांहे न्नला, गज एक सहस्त्र वखाण; पांच सहस्त्र तेजी तपे, पायक सोल प्रमांण ॥३॥ आठ सहस्त्र जोधा न्नला, सुरामें सीरदार; चक्र मुखे कौरव घणा, कहेतांनावे पार ॥ ४ ॥ मध्य न्नग पोते रहे, आरा सहस्त्रने मांहि; वल अरि चाली नवी सके, अतुली वलबे त्यांही ॥ ५ ॥ नारद मुनि कोपे चढ्यो, अवगुणीयो मुझ आज; गुमानी माने चम्रयो, राखी नही मुज लाज॥६॥उत्पत्यो अंबर मारगे,कलुष न्नर्यो रुखी ताम;आयो नगरी द्वारीकां; हरीने जणावण कांम ॥ ७॥ तव नारद क्रश्नने कहे, आव्यो नृप जरासंध; क्रश्ने नंना वजामीने, करी कटकनो बंध ॥८॥ढाल ५५ मी॥ देशी आख्याननी हरी सुतो थइ सुधीर, आव्यो जरा सिंधु न्नम्रवीर; मुझ दीठे सही करी मानो, कीम अरी अणराखस्ये ठानो ॥१॥ ॥ ढाल ॥ ॥थारा मोहोला उपर मेह झबुके वीजली हो लाल झबु० ॥ ए देशी ॥ मिल्या तिहां दशे दशार, जाणे डर्धर केशरि हो लाल डधर० ॥ समुद्रविजय अति सुर, समुद्र जीत्यो तनुजे करि हो लाल॥जीत्यो० ॥१॥ माहानेमी

सत्यनेमी इढ नेमीसुं नेमी लह्यो हो ला० नेमी०॥ रथनेमी श्री अरिष्ट नेमी, जिनवर जग गुरु ते जयो हो ला०जग० ॥२॥माहा जयने जय शेन, गौतम चित्रा स्थठे गुणि हो ला० चित्रा०॥ सुकल्क तेजशेन, सुरा मांहि जे शिरोमणि हो ला० जे० ॥३॥ जय मेघ अने सिवनंद, विस्वकसेनाविवलेपुराहो ला० दिव० ॥समुद्रविजयनां ए पुत्र, एकरथी ठे अधीरु सुरा हो ला० ठे अधिक० ॥४॥ विजो दशार अक्षोभ, आठ पुत्र तेहनां जाणिए हो ला० तेह० ॥ उधव अक्षुनीत, वांमदेव इढ व्रत वखाणिए हो ला० इढ० ॥५॥ महो अंभोजलने भागल्ये, निधी शब्द जिहांरे जोमिए हो ला० जिहां० ॥ होजी थाए तिहांरे त्रिणे ताम, सुभ्रने किम अवखोमीए हो सा० किम० ॥ ६ ॥ स्तिमित त्रिजो दशार, पांचते पुत्र तेहने अठे हो ला० तेह० ॥ श्रुर्मिमांनने वसुमान, विरपाटल स्थीर सुधे गेठे हो ला० सु० ॥ ७ ॥ सागर चोथो दसार, पट पुत्र तेहना वाल्हेसरि हो ला० वा० ॥ कंपन निःकंप लक्ष्मिवान, श्रीमान युगांतने केशरि हो ला० युगा० ॥८॥ पांचमो दशारहेमवान, त्रण पुत्र तेहनां जाणजो तुमे हो ला० जाण० ॥ विद्युत प्रजने माल्य वान गंधमाद न गणयां अमे हो ला० नग० ॥९॥ अचल ठठो दशार, सात पुत्र तेहनां सम किलिया हो ला० तेहन ॥ मांहेवमलय माहा गिरी शैल, नग वले कुल निर्मल किया हो ला० कुल० ॥ १० ॥ धरण नामे सातमो दशार, पंच पुत्र तेहनां प्रठयो हो ला० तेहना० ॥ विश्वरुप धन जय कर्कट, स्वेत मुख वासुकिइ थयो हो ला वासु० ॥ ११ ॥ पुरण नामे आठमो दशार, सुत चार तेहने सुंदरुं हो ला० तेह० ॥ कर्मुख कर्कर कःपुरः कर्धर महा वज्र नाधरु हो ला० महा० ॥ १२ ॥ नवमो दशार अनींचंद पट पुत्र तेहनां जाणो खरा हो ला० तेहना० ॥ शशि चंद्र चंद्रान

शशांक, शोम अमृत प्रभ सुंदरा हो ला० ॥प्रभ० १३॥ दशमो दशार वसुदेव, तेहने तो पुत्र छे घणा हो ला० ॥
पुत्र०॥ कुर अंकुर ज्वल न प्रज्ञ; अशनी वेग वायु वेग नही मणा हो ला० ॥ वायु० १४ ॥ मांहे ज्गती सिधार्थ,
अमित गती वली शदरथो हो ला० वली ॥ सुदारु कदारुक अनाधृष्टी, रेंममुष्टीशिलायुध करचो हो ला० ॥ सिला
१५॥ जरा कुमारने वाह्लीक, गंधार पिंगल आदे गणा हो ला० गल॥ रामने विडुरने शारणं, रोहीणीना पुत्र त्रिण्ये
ए हो ला० ॥पुत्र० १६॥ देवकीनो पुत्र श्रीकृष्ण, जग विख्यात जाणो जेह हो ला० जाणो॥ सुरवीर कोटीर, अधीक
तेजे जाणजो हो ला० ॥तेजे० १७॥ राम पुत्र नीरुध उल्सुक पीठ, मारुदत जकदमणो हो ला० शक्र॥ कृष्नो पुत्र
एक जानु जमर आगे सुणो हो ला० ॥ आगे० १८ ॥ धीर गंभीर गौतम, शौधर्मा उदधी वली हो ला०उद॥धर्म
प्रशेन जिन सुर्य, चंद्र मारु कृष्णक जाता मीली हो ला० ॥भ्रा० १९॥ उग्रसेन आदे नरेस, यादव वंशी नागण्या
हो ला० वंशी॥अंग जात्र जांणो अनेक, ज्ञानी वीण न जाए गण्यां हो ला० ॥नजा० २०॥ मामाइ फइयाइ अनेक
स्वसुर पक्षनां जांणजो हो ला० पक्ष॥ एतो ढाल रसाल, उदय करी मनमां आंणजो हो ला० ॥मन० २१॥ ॥दोहा॥
कोष्टुकेकथी तसु मुहुरते, गुरु मध्वजरथारुढ; कृष्ण थया तव दारुके, अश्व ते जोड्या पोढ ॥ १ ॥ चतुरंगी सेना
सजी, सजा सहु जादव साथ; शुभ सुकने इशान दिशामां, चाले श्रीयदुनाथ ॥ २ ॥ जादवने पांडव तणां, कटक
तणो नहीं पार; चालंता अचला चले, कुला चल चल्या तीणीवार ॥ ३ ॥ पस्तालीस जोजन अरहा, आवी करचो
पभाव; शत्रिपलि गामनि सिमसमां, वहु विध करि वनाव ॥ ४ ॥ एहवे तिहां कृष्ण सैन्यमां, वैताढ वाशि अनेक;

विद्याधर आवि नमे, समुद्रविजयने विवेक ॥५॥ कहे स्वामि तुंज बांधवे, वसुदेवे धरि नेह; सेवक करि अम थापियां उपगार किया अछेह ॥६॥ युध समय जाणि करि; आव्योतुं तुम पास; सेवक अमने लेखवि, कांय बतावो खाश ॥ ७॥ वचन सुणिने हरखियां, समुद्रविजय राजांन; तेह नजरे निरखि तदा, आपे अति सनमान ॥ ८ ॥ वसुदेवे पण तव तिहां, पेचरने बहु प्रेम; अति सनमानि राखियां, पुछि कुशलने खेम ॥९॥ विद्याधर कहे रायजि, रामकृश्न सम जात; जगमां कोइ लाजे नहि, जरासिंध कुण मात ॥ १० ॥ वलि खेचर हरिने कहे, अमने द्यो आदेश; वैताढ्य वाशि विद्याधरा, अन्य अछेसु विशेष ॥११॥ जरासिंधना पक्षथी, तुमने न माने जेह, तेहने जीतवा कारणे, जाइए अमें गुण गेह ॥१२॥ ढाल मूलगी ॥ सुणी नारद वयण वेधाला, वाजे गुहीर त्रंबालु गुंजाला; सिंहनाद हरी तव मुके, सज यादव थइने घुके ॥ २ ॥ दस सेनेदसारथ चाल्या, जुजुआ नवी रहे पाल्या; तव कोरू पुत्र परवरीया, पहीरी सनाह खग वेगे धरीया ॥ ३ ॥ उग्रसेन कटक पोतानो, लेइ चाल्यो देइने तानो; महसेन राजा युध्द रागी, वलतेगचीहुखुटवागी ॥ ४ ॥ मांहे पांच पांडव वड योध, रण करतां नआवे बोध; तीम ससरा साला बहु मिलीया, कायराचीत मांही खलभलीया ॥५॥ सर्वे कटक मिलु शुभ शुकने, कुण चुके ए जाणी तकने रण वाजंत्रनंना वाजे, रथ बेठा श्रीकृश्न विराजे ॥ ६ ॥ वली निपट कुमर सीरदार, धर्‍यो महानेमी सेननो भार; आवी खेंच्या रणने तीर, फेरा देइने जतराधीर ॥७॥ गरूड व्युह आकारे कहीए, चंचु अग्रे बलभद्र लहीए; एहवे इंद्रपुरीमें बेठो, अवधे सो धर्मं इंद्रे दीठो ॥ ८ ॥ प्रभु युध्द कारण परवरीया, बालपणे कौतक रस भरीया; मुक्यो

सारथी मातुल सार, रथ पोतानो करीने तैयार ॥९॥ बहु बत्रीस आयुध धरांया, भट मुकीने मंचरीया; कवच सनाह पहेरी सयणे, चाल्यो सारथी नेमने वयणे ॥१०॥ प्रभु बेशी रथ सोभाव्यो, सवी जोतां सेन्यमे लाव्यो; केइ सुरसूभट सज थावे, अष्टापद ज्युं उपमा पावे ॥११॥ मांहे भीम गदानो रसियो परसेन देखीने हासियो; एम सुभटनी कोझा कोझी, रण करवाने होझाहोझी ॥ १२ ॥ समपाधर जोइने चोखाल्युं, सेन आप आपणुं वाल्युं; रणथंभ तीहां आ रोप्यो, धज झझे करी बहु भप्यो॥१३॥ वीर विद्याधर बहु मलीया, सगवटे सहु आवी भलीया; कोइ कौतक जोवा आवे भझ देखीने भय पावे ॥१४॥ गजसुंझे सांकलनां खलकां, मोरचाबांधी करे वलकां; हयवर पाखरीया पलाणे, भाथा वलगाझ्या भरी बांणे ॥ १५ ॥ वीर रसें चढ्या रजपुत, रणखेत मच्यो अदभूत; दलपसारीयाचीहुं उर, कालीखांम घटा घनघोर॥१६॥ बरछीए बरछीए करत जुहारा, वीजली जेम वहे खगधारा; मंझीया अति जोध अखाझा, शीर वीन्या धझ करे रमाझा ॥ १७ ॥ आव्यो सुरसहोअसिधारी, जो होय होस अपछरा नारी; बोले बोल सुभट एम हाझा, एक कायर धरे हाथ आझा॥१८॥ जादव सुभट चढ्या रसपुर, करे सिंधु सेन्या चकचुर; दल भंग देखीने राय, आव्या धसमसता अति धाय ॥१९॥ प्रियंगद धुमकेतु नरंद, जादव सेनने पाझतां मंद; वही एक धारी करपाण, हरी कट कसां पझ्युं भंगाण ॥ २० ॥ उठ्यो महानेमीतोणीवार, अनाद्दष्टी निषट कुमार; चाल्या रथ बेशी गुणवंत, आवंता रीपू दल रोकंत ॥ २१ ॥ रोसे भर्यो रुखमीयोराय, दुर्योधन साथे सहाय; साते नृप आव्या रणखेत, एक एकने पाछल लेत ॥ २२ ॥ समकाले साते नृप होझे, भरमुगी अने सर छोझे; महानेमी सुभटने आगे, रुखमीया साथे

अमया मध्य नाग ॥२३॥ [illegible] बहे अति वेगे, वागे खमेमाट सुजनतेंगे; खलके लोही वहे जीम [illegible]
पमीया हय गय पाय पसारी ॥२४॥ योगणी पत्र पुरेरे असंखी, अपत हुआं घणा ग्रध पंखी; महानेमी तए [illegible]
तूटे रुखमीया रथनी सांध वतुटे ॥२५॥ रुखमीयो ने डुर्योधन नुपाल, कोपे चढीया आ असराल; वेणुदाली [illegible]
सरोखी, पटराय आव्या वल पोखी ॥ २६ ॥ महानेमी तणो रथ घेरी, आवे राय रह्या चहुंफेरी; नाइ संन [illegible]
तुम्हारो, आज आव्यो सही जमवारो ॥ २७ ॥ रेरे सोर करे स्योगेमार, आव्य सनमुख था हुसीयार; [illegible]
त्रोमे सरधार, धनुप आवे तणा तिणीवार ॥२८॥ सक्ति पुरण दाव अरिने, मुके रुकमइयो रीस नरीने; त [illegible]
नाद फरंत जोर, देखी सुनट करे अति सोर ॥ २९ ॥ नांखे सस्त्र घणा सुरचंगा, जाणे अग्नी मांहि वले [illegible]
ए हवे अरिष्ठ नेमी सरस्वामी; सुर मातली कहे शिरनामी ॥ ३० ॥ वली इंद्र थकी एणो पामी, एह शक्ति [illegible]
कामी; पामी प्रनुतणोरे आ वेश, सुर सानीध करे शुं विशेष ॥ ३१ ॥ तिणे वजसरे अति त्रामी, जेइ शक्ति [illegible]
भुंग पामी; जेजेकार करे नरदेव, जादव विधन टल्यो ततखेव ॥ ३२ ॥ हुइ सांजने विरयो संग्राम, आव्या [illegible]
आपणे मुकाम; गुणसागर कहे अनीराम, ढाल पंचावनमी गुणधाम ॥ ३३ ॥ ॥ दोहा ॥ नित्य प्रते [illegible]
घणा, कहेतां नावे पार; जरा मुकीए हवे, ते सुणजो अधीकार ॥ १ ॥ नालय चुके नयनथी, रजमें ढांय [illegible]
सुरा रणमें आथमे, रथ जुत्या केकाण ॥२॥ तसलीमुकरतां थका, एक श्ने ग्रही बांह; कहे जस जगमें क [illegible]
करशे जगनाह ॥३॥ सुकुलीनी माता तणा, धाव्या हशे जे ढूध; ते पग पाग नही दिए, घणा कियाहे युध [illegible]

इम हुकाहुक करी रह्यां, जाणे हनुमंत विर; जइ अफारणं थंजने, वफा वफारण धीर ॥५॥ वाणधार वरशे घणी, धरणी नथरे धीर; कायर नर ठाना ठपे, साहसीक साम सधीर ॥६॥ युधारंज्र थयो घणो, नवीको हारे तास; ए हवे सनानी सिंधु तणो, हिरण नाम्नी अजीराम ॥ ७ ॥ कहे एम नीज स्वामी ज्रणी, कुणासो जादव रंक; द्यो आदेश संग्रामनो, टालु एहनो वंक ॥८॥ राय पसाय लेइ करी, रथ वेशी तिणीवार; चमीयो आमंवर घणे, दल वलनो नही पार ॥ ए ॥ ढाल ५६ मी ॥ श्रेणीकराय हुरे अनाथी निग्रंथ ॥ ए देशी ॥ सेनानी रोसे ज्रस्यो, आवेहि दल ठेल; गसरथो दल सिंधु तणो, जीम साअरनि वेल ॥१॥ रंगीला राय आवी मल्या रणखेत, कांइ पाठी रे पुंठ न देत ॥रं० ॥ए आंकणी॥ अरजुन सेनानी तणो, आवंता ठेदे तिर; ए हवे जीम जुजावली, उपाडी गदारे आयो अमीर ॥रं० २॥ सेनानी रथ उपरे, मेली गदा बलपुर; सेनानी पाठो खस्यो, रथ जांगीरे हुवो चकचुर ॥ रं० ३॥ आव्यो केसरी जेम गाजतो, जीम उपर धरी ठाग; तिक्षण वाण वरसावतो, कोइ नवी पामेरे रेहवालाग ॥रं ४॥ जयसेन कुमर माहा बलि, समुद्रवजेनो नंद; आवि आफो आंतरयो, खेंचि धनुष उज्रो सोनंद ॥रं० ५॥ राय हसी इम बोलिउ, तुं कामरे जाणेज; इंम केहेता तस सारथी, हणियोरे जयसेन सहेज ॥ रं० ६ ॥ खेंचि वाण अति आकरो, सेन्यानी सरदार; तस सारथी जेदी करी, कांइ मारयोरे जयसेन कुमार ॥रं० ७ ॥ महा जय ध्यायो वेगसुं, वंधव मारयो देख; ते पण मारयो सेनानीइं, देखि कोप्योरे अनाद्रष्टी विशेप ॥ रं० ८ ॥ हिरण नाम्नी राजा तणो, ठेदे धनुष मनरंग; जीम अर्युन यादव अवर, कांइ झुफेरे वीजा नृप संग ॥ रं० ए ॥ अनाद्रष्टीने मारवा, रथथि

छतरीउ नेग; होठ पीसे रोरो नरुणो, हिरण नानीरे आण्यो पछी तेग ॥ ढा० १० ॥ [illegible]
ले तरवार; श्राको रोसो रेडने, फाड़ रोरने तणु मसूगार ॥ ढा० ११ ॥ [illegible]
हिरणनानीने हलि करी, फाइ नाख्योरे शिश छनाल ॥ ढा० १२ ॥ [illegible]
नीम श्रर्जुन करी श्राकरी, वेरिरे राग झुगोनि शोग ॥ ढा० १३ ॥ [illegible]
चित चिंतवी; तिणे श्रवसर कुन वेरि श्रनीगार ॥ ढा० १४ ॥ [illegible]
श्रठारो रणमें मिल्यो, फाइ रारोरे कुननि लाज ॥ ढा० १५ ॥ [illegible]
कुर्णि श्रति पणि, जाणे प्रगळ्योरे श्रग्नानक नेन ॥ ढा० १६ ॥ [illegible]
निगाले मुकिने गइ वेरिरे श्रंबर ततकाल ॥ ढा० १७ ॥ [illegible]
हत्नधर लिया, शेष जरासंघ नष्ठु भाग ॥ ढा० १८ ॥ [illegible]
किम थायशे, उगनीरे गुरि तणां गतणात ॥ ढा० १९ ॥ [illegible]
विष्णु श्रापणे, तो फाइ पाणेरे हार श्रपार ॥ ढा० २० ॥ [illegible]
परंपरा ते नलि, श्रोसेरे त्रिरांमा शीश फाज ॥ ढा० २१ ॥ [illegible]
दर्शीमां जीम नालक्ि, फाड़ तरतिरे लिसे तिर ॥ ढा० २२ ॥ [illegible]
गयो, जिम सिंह वेगिरे श्रजाना गंत ॥ ढा० २३ [illegible]

साहमों, हुश धरीरे जोवे सेवे सहु कोय ॥ रं० २४॥हरी आरति देखि करी, मातुलि कहे इम वात; प्रभु नवण जल छांटता, कांइ रेहेशेरे वक्रनो उपघात ॥ रं० २५ ॥ प्रभु पुजी प्रणामी करी, नवण छांटे तिणीवार; जरा नाठि छोटि जविया, कांइ सुरारे सुभट शिरदार ॥ रं० २६ ॥ प्रभु रथ रेणु फरसी जेहने, अंगे अमे तिल मात; तेहना उपद्रव्य सर्वे टले, अकथ कथानि छे गात ॥ रं० २७ ॥ ढाल ए पट पंचासमी, प्रभु महिमानि वात; ब्रह्मचारी जीन बाविसमो, गुणसागर गुण गात ॥ रं० २८ ॥ ॥ दोहा ॥ हवे जरासिंधु आपणा, मंत्रि तेह्या ताम; नामे हांसोहिं शके, उभा करी प्रणाम ॥ १ ॥ यादव सेन जिहांयछे, जइ आवो करी गुझ; सेना साहमा आवजो, वहिला करजो झुझ; ॥ २ ॥ नृप जुना जाणे सहि, पुरण प्राक्रम मोय; समुद्रायने विनति, वृधपणनो राखे तोय ॥ ३ ॥ पशु टोले गोवालियो, आपे मुजने आज; हलधर जुग पांमव वलि, आप्यां सरसे काज ॥४॥ हांसो आव्यो तिंहां थकि, प्रणमे समुद्रना पाय; विनंति स्वामी भक्तनी, करवा मांमी गाय ॥ ५ ॥ समुद्रविजय त्रटकि कहे, रे सांभल मंत्रिश; मागवा क्रश्न तुं आवियों, हिन बुधी तुंझ इश ॥ ६ ॥ हरी जे कंसने मारीयो, करतो कुलमें उतपात; उग्रसेनने पांचसें, मारतो कसा घात ॥ ७ ॥ इमनि सुणि पाछो वल्यो, वीनव्यो निज नरेश; अब केटलवो भलो, जादव जोर विसेस ॥ ८ ॥ थयो प्रभात उग्यो तपत, करण राजा तेणीवार; सेनापतीने तेमीने, भांखे वात विचार ॥ए॥ सेना सज करो सहु जासु जादव लार; संग्राम करवा कारणे, मत लगावो वार॥१०॥इम सुणी सेनापती, कीधुं कटक तैयार; हय गयरथ पायक घणां, ते केतां नावेपार ॥११॥ ढाल ॥ चीत्रोमा राजानी ॥ ए देशी ॥ करण सज थयो हवे जास,

वढवाने छती अत्रीराम; आयो राजा संधुने आगे, पाए लागीने अनुमत मागे॥१॥प्रभु करणा करो तुमे नाथ, आज जइ देखाडुं हाथ; एम बोले मधुरी वाणी, जरासंध कहे गुणखाणी ॥२॥ जायो वेगे मलायो वार, रणमांहे रेजो हुंशीयार; एम सुणी राजी थयो मनमां, पेर्यो सनाहक ढोटो तनमां ॥ ३ ॥ करण करण समठे तेज, जग देखतां उपजे हेज; रथे बेठो करवा काज, हाथ मुदगल लई माहाराज ॥४॥ नाग ससरो सांनीधकारी, आवीरथे बेठो अधी कारी; वरी देव घणा तरवार, करण आव्यो थै हुशीयार ॥ ५ ॥ गंगे वगरुवो गुणखाणी, करण रण चम्यो एम जाणी; आवी नेरो थयो उमाइ, मुसंम्री सल हाथमां साई ॥ ६ ॥ रणथंन आवीने रोप्यो, करण जादव उपर कोप्यो; देखे करण केरी अधीकारी, नाठा सुभट हता जे न्यारी ॥ ७ ॥ त्रास पामी आव्या हरी पासे, पाए लागीने वचन प्रकाशे; आव्या करणाने नीपम दोए, प्रभु अमथी तो कांये नहोए ॥ ८ ॥ नेम गदा लइने सनुर, अरजण उभो बाणावरी सुर; सज थया रण रमवाने काज, तव वरजे जुदीष्टर माहाराज ॥९॥ नीपम पित्याने करणढे जाइ, एणथी वढतां नहोए वडाइ; मारीए मरीए तो नरगे जाइए, ते माटे सामा नव थाइए ॥१०॥ तव वसुदेव चढीया आप, दसार हाथ ग्रही रणथाप; उग्रसेन केरी अधीकारी, चाल्या वढवाने दसे न्याइ ॥ ११ ॥ हलधर तव हेतज जाणी, कहे तात प्रते एम वाणी; लेयो गदा अमारी पास, इणथी वेरी पामशे त्रास ॥१२॥ गदा लेइ प्रभु रणआवे देखी करण प्रते बोलावे; आवो सामा सुरजनानंद, आपणे लडशुं दोए आनंद ॥ १३ ॥ वसुदेव करण ए दोए, वढे हुंश न राखे कोए; एकबीजाने करे प्रहार, वदे कोप चम्यां असराल ॥ १४ ॥ उग्रसेन गंगेवज साथ, जुझे

एकबीजाने मारण धशीयां ॥ १५ ॥ जीषम जडमोडे अति जार,
विजा घणा नरनाथ; जमाया अति रण रसीया, एकबीजाने मारण धशीयां ॥ १५ ॥ जीषम जडमोडे अति जार,
करे चोट हुइ हुशीयार; जीषम विद्या धरीनो वेटो, जीषम जग्रसेन रायने जेटो ॥ १६ ॥ जग्रसेन तणुं दल मोडे,
वली धनुषरायेनां तोडे; रिसे करे मुसंदी प्रहार, राय मुरछी पडो तेणीवार ॥ १७ ॥ जीषम वृधपणे पण नानो,
जीषम रणमां न रहे छानो; जीषम जारे हाक वजावे, जीषम सुर सूजट न वीसारे ॥ १८ ॥ सारथी जोवे नजर
पसारी राय मुरछी पडो डखकारी; हाहा जीषमे अनरथ कीधो, रायेने प्रहारज दीधो ॥१९॥ रथवारी बाहेर लीधो,
वली जलसें चावत कीधो; एम कीधां घणां उपचार, राये सुसता थया तेणीवार॥२०॥ करण वसुदेव संग्राम जारी
जोवा देव आव्या तेणीवार; जोवो माणस पण देव जोवां, सावढतां दीठां तेवां ॥२१॥ करण कोप करी करसाइ,
ग्रेही मुदगर मुके धाइ; बाणावरी अधीके जोरे, मुके श्रीवसुदेवनी कोरे ॥२२॥ मुदगर आवंतो दीठो जाम, हलधरे
गदा दीधी ते ताम; गदा जपाडी ते ताडे, मुदगरने ते जुंए पाडे ॥२३॥ वसुदेव कहे सुणराए, कर्णं जजोरे पग
गए; अगन बाण थकी तुजने वारुं, सेन सघलीनुं कारज सारुं ॥२४॥ डुंगर जपर देवथी पामी, हाथ लीधुं वसुदेव
स्वामी; मुके करण राजानी लार, अगन जार वहे असराल ॥२५॥ अगन देखीने देवज खशीयां, सहु आघा पाछां
धशीयां; नाग जेरा हता जे देव, सुर नाशी गया ततखेव ॥ २६ ॥ बाण देखीने अतिशे जारे, नाग सामो आव्यो
तसलारे; जल लइने अगन ओलावे, बाण देव ते नाशी जावे॥२७॥ करण बाणावरी केवाए, एथी जोध जीत्यो
नवि जाए; वली नाग साए जो पामी, वढतां कांये न राषेखामी ॥ २८ ॥ वसुदेव तणां जड जेह, ते तो नासी

गीया ततखेव; देखी हइमे रया विचारी, करण मोटो इ अधिकारी ॥ २ए ॥ वसुदेव विचारे मन, करण मोटो इ राजन; तेज प्रताप करीए पुरो, जोध लमवामां अति सूरो॥३०॥जोधे जीत्यो इनवीजाइ, वरी पाछुं पण न खसाए सापे गृही छछुंदर तेह, जुठखाणुं मलीज एह ॥ ३१ ॥ एटले नारदरुषीसर आवे, वासुदेव प्रते बोलावे; शुं राय ऊंचाणोठो आज, आव्या रण रमवाने काज ॥३२॥ वसुदेव कहे रुषीदेव, पाए लागीने करी शेव; में नवी दीठो जगतमां कोए, जेवो करण लमेठे सोरा ॥३३॥ नारद कहे मत वमासो, करण रथे बेठो देव खासो; बाण लमतणा सरवे जागे; करणरायने एक नवि लागे ॥ ३४ ॥ हवे एहनो उपाये करशुं, राए चिंत्या सघली हरशुं; एम करीने रवि सर जाए, प्रभु देखीने बहु सुख पाए ॥३५॥ मातोली प्रते कहे रुषीराज,चालो संग्राम देखण काज; देवमां पण एवो न देखो, वसुदेव करण लमे ते पेखो ॥३६॥ एम कहीने रुषी तेमी आवे, वसुदेव तणे रथ ठावे; नाग देखत त्रासो मन, खमजमीउं अति घणुं तन ॥३७॥ इतो अंडतणो देव मोटो, केदीए नवी थाए खोटो; जो जीवत राखवी आशी,तो एथी जावुं नाशी॥३८॥देव नाशी गयो निज जवन,सुर आथम्यो तम;दोए राजारथ वाली वरीयां, सजन जनमां सहु मलीयां॥३ए॥इतो ढाल जली रसाल; पुने फले मनोरथ माल गुणसागर केइसार; सतावनमी राग रसाल॥४०॥ ढाल ५७ मी॥ शियल मुदरमी खरीरे प्यारी, जे पाले नर नारजी॥ ए देशी॥ एहवे राज ग्रहि पति आगे, निजा मेहता संगजी; वचन कहे इम हांसो मेहतो, करी आलोच अजंगजी ॥ ए० १ ॥ पहिलुं पण अविमासुं कीधुं, कंस मुगो खकालजी; विण आलोच कीया उख थाय, निश्चे उतर कालजी ॥ए० २॥ अरि सबलो निबलो)

जो एहवो, जेवो जेहनो गुरुजी; ए सबलो गोपाल बले करी, तेशुं इणशुं झुरुजी ॥ ए० ३॥ सयंवरा मंडप रोहिणी, श्री वसुदेव दसारजी; तुझ नृपति संघला नांज्या, ए आगे तिणवारजी ॥ ए० ४॥ जुवटे जीति कोडी इणे तुझ, सुता जीवाडी नावीजी; इण अहिनाणे मराव्यो न मुवो, ए वसुदेव सनाविजी ॥ ए० ५॥ जीणथी हुं आराम अने हरी, नंदन अति बलवंतजी; जीयाने काजे धनदे किधी, पुरी द्वारकां कंतजी ॥ ए० ६॥ ए बेहु सबला जाणीने, पांडव सेवा काजजी; गरव तजी गुण मनमें आणी, जोरावर शीर ताजजी ॥ ए० ७॥ जाणे बीजा हरीने हलधर, सहा नेमीनी खट कुमारजी; अथवा जमने जोर नयंकर, नीम अर्जुन अवतारजी ॥ ए० ८॥ किस्युं अनेरा शुनट वखाणे, एकलो नेम कुमारजी; लीलाइ करी करे भुजाबली, धरणि छत्राकारजी ॥ ए० ए॥ दमगोष अंगज रुकमी यो बेउ, तुझ कटकमें बल धीरजी; एण बल दिठो बलनड रणमें, रुखमणीने अपहारजी ॥ ए० १०॥ दुर्योधनने सकुन नरेसर, आपणे कटके एहजी; न गणे केइ सुनटइ यारी, सुरवीरमे रेहजी ॥ ए० ११॥ अंगाधीपती तिम करण कहीजे, आपणे कटके छवजी; तेतो कृश्न कटक सागर विच, जेणे सोतु मुवजी ॥ ए० १२॥ जेहनि अच्युता दिक संघला, सेव करे सुरनाथजी; जुध नणी कहो कुण सजाइ, श्री नेमीसर साथजी ॥ ए० १३॥ दिसे गीरधर कटक सनुरो, जोता संघली वातजी; इणे उणे कटक घणो गणो अंतर, जाणे दिनने रातजी ॥ ए० १४॥ कृश्नपक्ष आदरीने देवी, मारयो तुझ सुतकालजी; तिणे मरवे प्रतिकुल दिहाडो, दिसे तुझ नृपालजी ॥ ए० १५॥ तृणां ताणि परे तुझने गणाता, जोरावर असमानजी; मथुरा छांडी, गया द्वारापुरी, दे सुरपति सनमानजी ॥ ए० १६॥ गीरी

कंदर मांहे ते सुतो, कोइ जगावे सींहजी; उछलतो वलवंत हवे केम, गणशे ताहरी लीहजी ॥ ए० १७ ॥ सांभली
वचन कोप्यो नृप वोले, जरासींधु धरी खेदजी; सहि सुध तुं यादव फेरवो. तिणे देखावे भेदजी ॥ ए० १८ ॥ शत्रु
तणा गुण कहि कहि मोंने, विहाके इण वारजी; पणरे डुरमति सींह अभ्यासुं, स्याल तणो फेकारजी ॥ए०१९॥
फिटतोंने जे रणथी वारे, आव्या रण अधीकारजी; वालगोपाल गोवाल तियाने, उमाधीश करी ठारजी ॥ए० २० ॥
हवे वोले मंजक मंत्रिसर, गमतो नृपने एमजी; अवसर आव्या रणनो कारज, ठांके क्षत्री केमजी ॥ए० २१॥ सामे
पाइ रणामें नमतां, मरण तिको जस कामजी; नाग्या रोजीवत अकारथ, होय न आदर ठामजी ॥ ए०
२२॥ चक्र व्युह करी निज कटके, हणस्युं ए शत्रु निकजी; भलो कह्यो मंत्रिसर मुकनें, तुं मंत्रि नीरभीकजी ॥ ए०
२३॥ एहवे हंसक मंजक वेहु मेंहतां, विजा हिरा जानजी; चक्रव्युह करे नृपने वचनें, रीपु पण असमानजी ॥ ए०
२४ ॥ सहस आरानें ठामे सेहस नृप, तेहनो वहु परीवारजी; एकण राजाने केकें, सहेस पांच असवारजी ॥ ए०
२५ ॥ दोय सहस रथ तिम सोगे वर, पायक सोल हजारजी; सवा सेहस व तकट भुपति, रहे चक्र नीरधारजी
॥ ए० २६ ॥ पांच सहेस मारगने माथे, तुवि विचे मगधेशजी; रहे तिंहां कौरव सो वंधव, नृपने दक्षण देशजी ॥
ए० २७ ॥ सकुनजने सिंधव नृपनो वल, पुंठे रहे गज गाहजी; मगधेश नृप वामे जागे, आगल गण नर नाहजी ॥
ए० २८ ॥ सांधी सांधी रहे तिंहां नरपति, कटक व्युह पंचासजी; विच विचमें रह्यां बीजाहि पण, पुरेया मननी
आशजी ॥ ए० २९ ॥ जरासींधुइं तव थाप्यो, सेनानीने ठामजी; दावल राजा दल वले वलियो, सीसुपाल

सुणतां मिवी गोमी रागे, ए सतावनमी ढालजी; गुणसागर इणि परेंपन्नणे,
इण नामजी ॥ ए० ३० ॥ सुणतां मिवी गोमी रागे, ए सतावनमी ढालजी; गुणासागर इणि परेंपन्नणे,
वेधक वचन रसालजी ॥ ए० ३१ ॥ ॥ दोहा ॥ युध करवा वलि सज थयां, पांमवादिक परीवार; यादव
कुमर चढिया नला, सेन विद्याधर सार ॥ १ ॥ रथ चुरे मुष्टे करी, हय नांखे परतिम; गज उछाले गयणमें,
नांजे सुन्नटां नीम ॥ २ ॥ उ करतां थाके नाहि, चाल्या आगे ताम; मेरा उपर जइ अम्या, जरासिंधुने
गाम ॥ ३ ॥ सीसुपाल नाठो हवे, थयो कोलाहल जोर; देखीने जरासिंधुनो, कंप्यो कालज कोर ॥ ४ ॥
॥ ढाल ५८ मी ॥ ॥ चेतन ग्यांन अजुवालिइं ॥ ए देशी ॥ रोसे करी अति रातमो, राणो जरासिंध
तामरे; हुंकारव करी उठियो, मेरुपरे अनीरामरे ॥ १ ॥ राजंद आयो जरासिंधुजी, वाजे नंन्नारण तुररे;
जेह विवादल नियन घटा, चाले गगने पुररे ॥ रा० २ ॥ मेघाडंबर शिर ऊलकंतो, पाखरे जमीया हेमरे; पवन प
ताका ते फरहरे, उमे बग पंक्ति जे मरे ॥रा० ३॥ शीरपर मुगट धर्यो वांकमो, आंकमे नीमो सनाहरे; केमे कटारो
रतन जम्यो आवी बेठो रथे उछाहरे ॥ रा० ४ ॥ हय साजे करी साजतो, पाखरीया घमरोलरे; अपराजीत आदे
करी, सुरा सुन्नटनी कोमरे ॥ रा० ५ ॥ सिंहनाद अति मुकतो, घुकतो आयो रणाशिमरे; जादव पग पाछा खसे, अ
धिक देखी बलइ मरे ॥ रा० ६ ॥ मगधन रंद इम उचरे, इणे कटक उजमालरे; कहे हंसक मुम आगले, कुण सुन्नट
भुजालरे ॥ रा० ७ ॥ एहवे हंसक कर उंचो करी, देखामे सुण भुपालरे; कमेत घोमा जे रथ तणा, ए अना हष्टी
रसालरे ॥रा० ८॥ निला अश्वरथी जे हुवे, ए धर्म पुत्र पिछाणरे; धवल अश्वे अर्जुनजी, धनुर विद्यानो जाणरे ॥

रा० ए ॥ निलुतपल अश्व ए नीमना, छत्रा कोपे विकरालरे; सोवनवर्णे अश्व ए सहि, समुद्रविजय दयालरे ॥रा०
१०॥ हंसले घोमे उन्नो कटकमां गरुमध्वजे गोविंदरे; दाहीण पाखे तिम रामजी, ताल ध्वजे नट चंदरे ॥रा० ११॥
इम देखावे सुभटने, पार विगर अनेकरे; मगधेश सुणी धनुष आफले, कोप धरी अविवेकरे ॥ रा० १२ ॥ जुवनः
मगधनरंदनो, जवन नामे कहायरे; वसुदेव सुत अंकुरादिक नणी, हणण काजे ध्यायरे ॥ रा० १३ ॥ अपराजीत
अने हलधर लमे, विंध्याचल गज जेमरे; अनाद्दष्ठि सिशुपालजी, सत्यने अर्जुन ते मरे ॥ रा० १४ ॥ रथ सः
रथ आथमे, गज साथे गजराजरे; पेहेदल पेहेदल झुंलमे, अश्व अश्वे करी साजरे ॥रा० १५ ॥ बाण धारा वहे इः
करी, मेघपरे असरालरे; महिधर धीर धरे नहि, मोलियादिगपालरे ॥ रा० १६ ॥ नाचंतो नारद इम कहे, रे जः
सिंधु भुपालरे; वाहजो अने वेरी एकणो, डःकर मलवो हगालरे ॥रा०१७॥ अंकुरादिक हणतां थका, राम सुतः
कुमालरे; सार्णो रथ दोमावियो, जवन साथे ततकालरे ॥ रा० १८ ॥ बाण वहे अति आकरा, जवन कोप्यो तेणः
वाररे; जांजीयो रथ सारणतणो, मुकी गदा परहाररे ॥ रा० १९ ॥ बेशी सारण रथ उत्तरे, शेस नरयो असरालः
खांचि बाणने आहण्यो, जवन नृपनो नालरे ॥ रा० २० ॥ आवदसार आदिक अवर, यादव नृप नमनीचरे; विर
नृप बहु आहणी, डर नसावे ढिचरे ॥रा० २१॥ एहवे जरासिंधुना राजवी, नाशीया विलखे वयणरे; जरासिंधुने
ततखिण शरण गया सुख लयणरे ॥ रा० २२ ॥ पुत्र मरण देखी करी, दोमीयो तरत रिसालरे; आनंदादिक सुत
रामना, दस राखीया रणकालरे ॥रा० २३॥ पुत्र वध देखी हरी, फोज नांगी राणरे; मगधे सध्यायो सिंघनीपरे, गाय

केम जीम जाणरे ॥ रा० २४ ॥ सेनानी सिसुपाल हवे, हसतो जंपे वाणरे; गोकुल न हुवे कान्हए, क्षत्रिनो रण
जाणरे ॥रा० २५॥ कृष्ण कहे हवे नाशतुं, नाश पडे अयाणरे; रुकमीने रण तुं मल्यो, चिंता नावे प्राणरे ॥ रा०
२६॥ मरम वचन सर विंधीयो, धनुष ताणी शिसुपालरे; सर छेदे हरी रायनो, ते हवे श्री गोपालरे॥रा० २७॥ धनुष
तेम सनाहरथ, छेदे हरी ततकालरे; खड्ग काढीने आहण्यो, मुगट सहित शिसुपालरे ॥रा० २८ ॥ एह वेग मगधे
सराजवी, नाम जरा सिंधु तामरे; वध देखी शिसुपालनो, कोपीयो रिपुने कामरे ॥ रा० २९ ॥ निज नरपति सुतशुं
मीली; मांझे सबलो झुझरे; ऊंचे स्वरे कहे यादवा, कांइ मरोरे अबुझरे ॥रा०३०॥हजी लगे कांइ नवी गयो, आपो
वेहु गोवालरे; सुखे रहो इम सांभली, यादव कोपे करालरे ॥रा० ३१॥ हणो२ करता धाइया, झोमतां बहु तिररे;
ते हवे मगधनो महिपति, जुध घोर करे रणधीररे ॥रा०३२॥ मागधेश सैनदि सोदिशे, भांजीयो इणप्रतिकुंजरे,तिम
रही नवी शक्यो कोइ मुखे;वाय मुखे जीम तुलरे,॥रा०३३॥जरासिंधु सुत रामने,रोके तिहा अठ्यावीसरे; गुणहतरीसुत
हिमली, कृष्णनणी शुंजगीशरे ॥रा० ३४॥ घोर झुझ थयो तिहां,रामदले हवे खंचीरे; अठ्यावीस ए कुमारने पिसे मुस
लसींचरे रा० ३५॥ मगधेश कहे गोवालीया, तुमारे मुझनंदरे; इम कहीने मारी गदा,रामपासे आक्रंदरे ॥ रा०३६ ॥
गदाघाते लोही वहे, यादव कटके तामरे; हाहारव सुरा करे, कहेतां मुख श्रीरामरे ॥रा०३७॥ ते हवे देखी रामने, कोपीयो
श्री गोपालरे; गुणह तरीसु कुमारने, हणे सबल ततकालरे ॥ रा० ३८ ॥ जरासिंधु चित चिंतवे, मरसे वलि इण
घायरे; अर्जुन मार्यो शुं होवे, कृष्ण हणुं इम धायरे ॥ रा० ३९ ॥ कृष्ण हण्यो एम कटकमें, पसरि सघले वातरे;

रा० ए ॥ निलुतपल्ल अश्व ए नीमना, उना कोपे विकरालरे; सोवनवर्णे अश्व ए सहि, समुद्रविजय दयालरे ॥रा०
१०॥ हंसले घोमे उनो कटकमां गरुमध्वजे गोविंदरे; दाहीण पाखे तिम रामजी, ताल ध्वजे नट चंदरे ॥रा० ११
इम देखाचे सुनटने, पार विगर अनेकरे; मगधेश सुणी धनुप आफले, कोप धरी अविवेकरे ॥ रा० १२ ॥ जुव-
मगधनरंदनो, जवन नामे कहायरे; वसुदेव सुत अंकुरादिक नणी, हणाण काजे ध्यायरे ॥ रा० १३ ॥ मपराज
अने हलधर लमे, विंध्याचल गज जेमरे; अनादृष्टि सिशुपालजी, सत्यने अर्जुन ते मरे ॥ रा० १४ ॥ रथ ह
रथ आथमे, गज साथे गजराजरे; पेहेदल पेहेदल शुंलमे, अश्व अश्वे फरी साजरे ॥रा० १५ ॥ वाण धारा वहे :.
करी, मेघपरे अशरालरे; महिधर धीर धरे नहि, मोलियादिगपालरे ॥ रा० १६ ॥ नाचंतो नारद इम कहे, रेज·
सिंधु भुपालरे; वाहलो अने वेरी एकठो, डःकर मलवो हगालरे ॥रा०१७॥ अंकुरादिक हणतां थका, राम सुत
कुमालरे; सार्यो रथ दोमावियो, जवन साथे ततकालरे ॥ रा० १८ ॥ वाण वहे अति आकरा, जवन कोप्यो तेए
वाररे; नांजीयो रथ सारणतणो, मुकी गदा परहाररे ॥ रा० १ए ॥ वेशी सारण रथ उसरे, रोस नरयो असराल·
खांचि वाणने आहण्यो, जवन नृपनो नासरे ॥ रा० २० ॥ आवदसार आदिक अवर, यादव नृप नमनीचरे; वि·
नृप बहु आहणी, डर नसावे ढिचरे ॥रा० २१॥ एहवे जरासिंधुना राजवी, नाशीया चिलखे वयणरे; जरासिंधु:
ततखिण शरण गया सुख नयणरे ॥ रा० २२ ॥ पुत्र मरण देखी करी, दोमीयो तरत रिसालरे; आनंदादिक सुत
रामना, दस राखीया रणकालरे ॥रा० २३॥ पुत्र वध देखी हरी, फोज नांगी ... साथे सध्यायो सिंधनीपरे, गाद

खरी ए, इंम मरमनी वाणी ए; हरी मुखथी सहु जाणी ए, सर ताणी ए बहु मुके अती रोसे करी ए ॥ ५ ॥ बेहु मली सर गोझे ए, रणने होम्मा होझे ए; तिम त्रोझे ए तिर धनुपएक एकनां ए, बेहु सबल बिहावे ए; जल रासि खोभावे ए, कंपावे ए गीरा अने खेंचर नामना ए ॥६॥ देव व्यंतर बल लेवा ए, उभा आकाशे बलदेवा ए; गयणे देवा ए, जोवा मीलिया कौतकी ए; हरीइं तव संभारी ए, जूझ मच्यो अति भारी ए; आज अटारीए देखी नावा जो तकी ए ॥ ७ ॥ बेहु सामा रथ फेरे ए, फेरंता ब्लन हेरे ए; बहु तेरे ए शस्त्र जुझ करे सहि ए, नृप मागधीने काजे ए; सबलपणे हरी राजे ए, शीर ताजे ए कीयो शस्त्र मन उमंइ ए ॥८॥ मन विलखो अती थाइं ए, जरा सींधु रीसाइं ए; सवाइ ए चक्र संभारे एहवे ए, चक्र हाथे आवे ए; मगधेश मन भावे ए, सभावे ए वचन कहे इम तेहवे ए ॥९॥ मथुरां मांहि जारक ए, रहेतो करी घणो वारक ए; कंसमारकए आव्योतुं इंहां एकलो ए, वैर पुर्वनुं मातो ए; तिणे घणी मुझ वातो ए, रखे जातो ए मार्ग जाणी वेखलो ए ॥१०॥ हवे नमुं कुलारो ए, करसा टिपणो तारो ए; कहेवुं सारो ए रण साधेझे थइने भलो ए, इम घणुं ललकारी ए; चक्र भमाडी भारी ए, नभचारी ए नांखे राखी आमलो ए ॥ ११ ॥ खेंचर देखि त्रासे ए, सैना जन सहु नासे ए; तसु पासे ए सुरा पग मांडी रह्यो ए, चक्र उपद्रव टाले ए; पांडव उभा निहाले ए, तसु खाले ए शस्त्र तणी धारा वहे ए ॥१२॥ गयणा गण गाजे ए, चक्र तणे अवाजे ए; विराजे ए आवी उभो हरी आगले ए, बंधव परे सोहावे ए; देखि हरी मन भावे ए, लेइ वधावे ए चक्र भणि मुक्ताफले ए ॥१३॥ यादव कटक ते वारो ए, हरख्यो सहु संसारो ए; नरनारो ए मिलियोठव

तेहवे मातलिने मने, विनति करे विख्यातरे ॥ रा० ४० ॥ सहाज आपो प्रभु एहने, हरीनो संपव जायरे; स्वछ करे यादव चमुरे, धरणी गगन पुजायरे; ॥ रा० ४१ ॥ सुरी गुणसागर एकहि, वांछ अगवनमी ढालरे; हवे नवी तुम्हे सांजलो, प्रभु लीला गुण मालरे ॥ रा० ४२ ॥ ॥ दोहा ॥ नेम कथने मातुलि हवे, रथ फेरे रण मांहि; लिर याह सवलि करे, सामी सहेजउ गह ॥ १ ॥ एकले पण सामीइं, नांज्या लाख नरंद; जरासिंधुने नवि हण्यो, हणशे तसु गोविंद ॥ २ ॥ क्रम हणे प्रति क्रश्नने, राखे प्रजुने मान; रथ स्युं रोस्यां स्वामीइं; शत्रु तणा राजान ॥ ३॥ ताम ढगोहा लुटिया, यादव नृप जय गेह; अनुज हणियो पांमवे, लफतां रणमें जेह ॥ ४ ॥ सुस्त थयो वलदेव पुण, वपाम्पी निज रीस; जंग करते ज्रा हणो, रणधोरी रीपु इस ॥ ५ ॥ ढाल ५ए मी ॥ ॥ देवी डरगंध डरथी, मोह मचकोफ़े माणरे ॥ ए देशी ॥ हवे मगधेश नरंदो ए, कहे सुण गोविंदोए; आनंदो ए ताहरी मायाइं घणो ए, हणियो कंस नुजालो ए; हणियो तिमज कलो ए, ए जाणो ए संगलोठे माया तणो ए ॥ १ ॥ शिखीयो रण नाहि ए, ठने सुर कहाहि ए, हवे याहिए जो ज्यो हम खत्रि तणो ए, तुफ प्राण सेंति ए;ठे माया जेति ए सवि तेति ए, तिने मेलुं तुं धणी ए ॥२॥ पुत्री तणी वाचा ए, पुराठ मन साचा ए; ते काचा ए जाण्या; मानु गोवालिया ए, हशी माधव इम वोलेए; सुं नुपति तुं वोले ए, किण तोले ए साचा वोल संनालिया ए ॥३॥ हुंतो माया जाणो ए, नहि कुफ़ो नुपालो ए; संनाओ एथें तो रजवट आपणी ए, आपणमि अधीकाइ ए; ते परने न कहाइ ए, पण नाइ ए तुं जोजे वमाइ हमतणी ए ॥ ४ ॥ तुफ आगल फ़ंपानुं ए, तो हुं कान कहानुं ए; सराहुं ए तुम पुत्री वात

खरी ए, इंम मरमनी वाणी ए; हरी मुखथी सहु जाणी ए, सर ताणी ए बहु मुके अती रोसे करी ए ॥ ५ ॥ बेहु मली सर छोडे ए, रणने होडा होडे ए; तिम त्रोडे ए तिर धनुषएक एकनां ए, बेहु सबल बिहावे ए; जल रासि खोभावे ए, कंपावे ए गीरा अने खेंचर नामना ए ॥६॥ देव व्यंतर बल लेवा ए, उभा आकाशे वलदेवा ए; गयणे देवा ए, जोवा मीलिया कौतकी ए; हरीइं तव संभारी ए, झूझ मच्यो अति भारी ए; आज अटारीए देखी नावा जो तकी ए ॥ ७ ॥ बेहु सामा रथ फेरे ए, फेरंता छल हेरे ए; बहु तेरे ए शस्त्रे झुझ करे सहि ए, नृप मागधीने काजे ए; सबलपणे हरी राजे ए, शीर ताजे ए कीयो शस्त्र मन उमइ ए ॥८॥ मन विलखो अती थाइं ए, जरा सींधु रीसाइं ए; सवाइ ए चक्र संभारे एहवे ए, चक्र हाथे आवे ए; मगधेश मन भावे ए, सभावे ए वचन कहे इम तेहवे ए ॥९॥ मथुरां मांहि जारक ए, रहेतो करी घणा गारक ए; कंसमारकए आव्योलुं इंहां एकलो ए, वैर पुर्वनुं मातो ए; तिणे घणी मुझ वातो ए, रखे जातो ए मार्ग जाणी वेखलो ए ॥१०॥ हवे नमुं कुलारो ए, करमा टिपणो तारो ए; कहेवुं सारो ए रण साधेछे थइने भलो ए, इम घणुं ललकारी ए; चक्र भमाडी भारी ए, भलचारी ए नांखे राखी आमलो ए ॥ ११ ॥ खेंचर देखि त्रासे ए, सैना जन सहु नासे ए; तसु पासे ए सुरा पग मांडी रह्यो ए, चक्र उपद्रव टाले ए; पांडव उभा निहाले ए, तसु खाले ए शस्त्र तणी धारा वहे ए ॥१२॥ गयणा गण गाजे ए, चक्र तणे अवाजे ए; विराजे ए आवी उभो हरी आगले ए, बंधव परे सोहावे ए; देखि हरी मन भावे ए, लेइ वधावे ए चक्र भाणि मुक्ताफले ए ॥१३॥ यादव कटक ते वारो ए, हरख्यो सहु संसारो ए; नरनारो ए मिलियोछव

१५॥ बंधु मतीने रेवतीरे, सीता सुंदर शोज न० ॥ वर राजीव सुलोचनारे, पति शेव्यानो लोज ॥ न० १६ ॥ ए ज्यारे आदे करीरे, रमणी रुप अपार न०॥ श्री बलनद्रजी तणीरे, नारी आठे हजार ॥ न० १७ ॥ इंद्र तणा सुख नोगवेरे, पुरव पुन्य प्रकार न०॥ आनंद रंग विनोदमांरे, पाले राज मोरार ॥न० १८॥ डुर्जोधन नामे नृपरे, कुरु जंगलनो राय न०॥ डुत तेहनो आवीयोरे, लाग्यो हरीजी पाय न० १९॥ कागल डुर्योधन तणारे मांहे एह विच्यार न०॥ म्हारे तुम ठाकुर धणीरे, थाशु प्रेम अपार ॥न० २०॥ प्रेम वधावण कारणेरे, मुजने उपजी एह न०॥ ठोरुना सबंधथीरे, निश्चे किजे नेह ॥न० २१॥ थारे पटराणी तणोरे, पुत पनोतो होय न ॥ मुऊ नारी कुमरी जणेरे, व्याह करेवो सोय ॥ न० २२ ॥ देव जोगे एहवो हुवेरे, मुऊ त्रिय जणे कुमार न०॥ तुम्ह नारीने पुत्रीकारे, तोपण व्याह विच्यार ॥न० २३॥ हरी हरखी बोल्यो सहिरे, ए वारु विधी वात न०॥ दोय घरा वधामणारे, आनंदमे दिन जात ॥ न० २४ ॥ ए सातमी ढालमेंरे, श्रीहरीजी सुख राज न०॥ श्रीगुणसागर सुरजीरे सबही विधी सुन्न साज ॥न० २५॥ ॥दोहा॥ डुगोदक सुर निपरे, विलसे नोग विलास; रुखमणी उरे उपजे, श्री परजुन कुमार ॥१॥ नामाने मन नावतो, भानु नलो गुण जाण; एहनो पण सबंधवर, सांनलवो धरी कान ॥ २ ॥ नामाने आरत घणी, नामा करे उपाव; अमरख आपणमें पमे, ए जग प्रगट कहेवाय ॥३॥ ढाल ६१ मी ॥ देशी हमीरानी ॥ माहराने ताहरा करेहला, चरता एकण शिम हमीरा ॥ ए देशी ॥ नामा बल ताके घणा, रुपमणी नानी सदिश हो ॥नामा॥ वाल न वांको करी शके, जो सबलो जगदीश हो ॥ ना० ना० १ ॥ डुर्योधननी वातनो, नामा नेद लहाय हो ना०॥

रुखमणी डुख देवा भणी, जाण्यो एह उपाय हो ॥ भा० भा० २ ॥ जेहनो कुवर प्रणाशे, सोक्य तणा शिर केश हो भा० ॥ तेहना पग तले मांभवा, ए डुख ठाम विशेष हो ॥ भा० भा० ३ ॥ वये करी तनु करी हुं वभी, माहरे होशे नंद हो भा० ॥ रुखमणीने होशे नहि, आनंदे आनंद हो ॥ भा० भा० ४ ॥ इम जाणी रुखमणी कन्हे, वेगे मोकली दास हो भा० ॥ वात जणावी रुखमणी, दीधी अति सावाश हो ॥ भा० भा० ५॥ मे अनुमाने विचारीयो, भामा भोली प्राहि हो भा० ॥ खल खावानो मोहलो, शाह सुंदर नाम हों ॥ भा० भा० ६ ॥ उंचा उंची वांछना, नीचा नीची जाण हो भा०॥ उंचा नीची मति भजे, तो होइ उचिंति हाणहो ॥भा० भा० ७॥ सुकना मांहि शीरोमणी, वाणी सुकन सोहाय हो भा० ॥ सुख डुखना अनुसारथी, वाणी उपजे आय हो ॥ भा० भा० ८ ॥ हाम अछे जो होभनी, कानवी पामे उर हो भा० ॥ कानल खेपिक स्वर भणी, आंबा केरो मोर हो ॥ भा० भा० ए ॥ केहशे ते सेहशे सही, आपा अलगी एह हो भा० ॥ रुखमणी तो रस रंगमे, वचन वदे ससनेह हो ॥ भा० भा० १० ॥ माहरे तो भामा वभी, भामा जेह सोहाय हो भा० ॥ सोमे करवो सहि करी, कहे भामा शुं जाय हो ॥ भा० भा० ११ ॥ हरी हलधर साखी दिया, सोकां पामी होभ हो भा० ॥ दीन न पिछाण्यो आपणो, किहुं पोंचे मन कोभ हो ॥ भा० भा० १२ ॥ कोमल सेजे सोवतां, रजनीने अवसान हो भा० ॥ रुखमणी सुपन विलोकीयो, पेहेले देव विमान हो ॥ भा० भा० १३ ॥ बिजे कुंजर इंद्रनो, देखी सुपन ए सार हो भा० ॥ आनंदी मन आपणे, विनवियो भरतार हो ॥ भा० भा० १४ ॥ कृश्न कहे कामनी सुणो, सुपन तणे प्रमाण हो भा० ॥ होशे कुवर कुल तिलो,

कोटि कला गुण जाण हो ॥ ना० ना० १५ ॥ मुक्ताफल सुक्ता विश, आइ उपज जम हो ना० ॥ ...मदेव माता उदरे, आणी उपनो तेह हो ॥ ना० ना० १६ ॥ मधु नृपतिनो जीव जे, जणणिने सुखकार हो ना० ॥ स्वर्ग बारमां थीचवी आवी लीयो अवतार हो ॥ ना० ना० १७॥ जामाइ सुपना जला, देख्या पुन्य प्रकार हो ना० ॥ नृपतिने जाइ कह्यो, नृपति कह्यो सुविच्यार हो ॥ ना० ना० १८ ॥ स्वर्ग थकी चवी आवीयो, ए पण जीव उदार हो ना०॥ होम जितवा कारणे, आशा धरे अपार हो ॥ ना० ना० १९ ॥ पुन्य प्रमाणे मोहला, गुरु वंदे पोशाल हो ना० ॥ दान शीयल तप जावना, चउविह धर्म रसाल हो ॥ ना० ना० २० ॥ श्री जीन सेवा साचवे, संवर साधे प्रित हो ना० ॥ आश्रवां अलगी रहे, एतो मोटी रीत हो ॥ ना० ना० २१ ॥ उदर वसंता गर्भए, रुखमणी मन उल्हास हो ना० ॥ आरीसा प्रतीबिंब ज्युं, पेट न पीडा तास हो ॥ ना० ना० २२ ॥ गर्भ वधे दीन२ प्रत्ये, उदर न वाधे रंच हो ना० ॥ नवालि पेटे विलोकतां, लोक लख्यो परपंच हो ॥ ना० ना० २३ ॥ एहे जुग पट पटा, नहि; गर्भ अहि नाण हो ना० ॥ पण तो मायो मुंमता, जास सयल सयाण हो ॥ ना० ना० २४ ॥ साचाने सोच नहि, जुग सोच अनेक हो ना० ॥ साचा सरल सजावीया, सोच न व्यापे एक हो ॥ना० ना० २५॥ दिन पुरे सुत जनमीयो शुज वेला शुज वार हो ना० ॥ रुखमणी अती सुख पाइया, परीयण हरख अपार हो ॥ना० ना० २६॥ पुरुष वधाइ आविया, नृपति पासे जाम हो ना०॥ प्रजुजी पोढ्यो पेखियो, पग तले वेगा ताम हो ॥ ना० ना० २७॥ जामाना पण आविया. मोटा पुरुष प्रधान हो ना०॥ शीराणे ते जइ कीयो, वइसणनो मंमाण हो ॥ ना० ना० २८ ॥ जेहना ठाकुर

जेहवा, तेहवा चाकर होय हो ना०॥जोनपति जो मानवी, एतो परतक्ष जोय हो॥ना०ना० २९॥एटले जगपति जागीयो, नवि वेगो होय हो ना० ॥ चिरंजीवो कहि बोलिया, रुखमणीना नर सोय हो ॥ ना० ना० ३० ॥ देव वधाइं पाइये, रुखमणी जायो नंद हो ना०॥ नंदन निरखण सारीखो, दरशण परमाणंद हो ॥ ना० ना० ३१ ॥ राज चिन्ह ढांकी करी, अवर अनोपम वस्तु हो ना०॥ पुत्र वधाउआं नणी, आपी राय समस्तु हो ॥ ना० ना० ३२ ॥ जाणी संचल पाछले, वांकि ग्रीवे जोय हो ना० ॥ नामा सुत जाया तणी, लीये वधाइ सोइ हो ॥ना०ना० ३३॥ एतो एकसवमी, नली ढाल नलेरी होय हो ना०॥कहे गुणसागर दोय घरां, आनंद वरत्यो जोय हो ना०॥ ना० ३४॥ ॥दोहा॥ कृष्ण नरेशर इम नणे, शेवक सुणो विचार; मंत्रीसर बोलाइ ल्यो, वेगे मलावो वार ॥ १ ॥ मंत्रीसर आया सहु, नरपति दिये आदेश; पुत्र महोछव पुर तणी, शोना करो सुविशेष ॥२॥ ॥ ढाल ६२ मी ॥ राजा दसर्थ दिपतो ॥ एदेशी ॥ पुत्र महोछव किजीए, मलीयो सहु परीवारोरे; रुखमणी सतनामा तणे, मंदीर हर्ख अपारोरे ॥ पु० १॥ याचक जन जुगतशुं, दिजे वंछीत दानोरे; करुणा नावे कृष्णजी, मुक्या बंधीवानोरे ॥ पु० २ ॥ तोरणनी रचना नली, उपर कलस उदारोरे; लहशति ध्वज अति घणी; दिसे घर२ बारोरे ॥ पु० ३ ॥ टोळे रचना केलनी, नारी नणे गुण गाथोरे; आरण कारण साचवे, कुंकुमनां दिए हाथोरे ॥ पु० ४ ॥ गुहीर स्वरे तव गोरमी, गावे मंगल च्यारोरे; धवल दिए तस आंगणे, वरते जय२ कारोरे ॥पु० ५॥ सही सुहागण सामटी, नारी आख्याणो लावेरे; दोय घरां अति पुरतो, ते तो आदर पावेरे ॥ पु० ६ ॥ ढोल डदामा दमवके, शरणाइ सुख कारोरे; वाजां वाजे

कोटि कला गुण जाण हो ॥ ना० ना० १५ ॥ मुक्ताफल सुक्ता विशे, आइ उपजे जेम हो ना० ॥ कामदेव माता उदरे, आणी उपनो तेह हो ॥ ना० ना० १६ ॥ मधु नृपतिनो जीव जे, जणणिने सुखकार हो ना० ॥ स्वर्ग बारमां थीचवी आवी लीयो अवतार हो ॥ ना० ना० १७॥ नामाइं सुपना नला, देख्या पुन्य प्रकार हो ना० ॥ नृपतिने जाइ कह्यो, नृपति कह्यो सुविच्यार हो ॥ ना० ना० १८ ॥ स्वर्ग थकी चवी आवीयो, ए पण जीव उदार हो ना०॥ होम जितवा कारणे, आशा धरे अपार हो ॥ ना० ना० १९ ॥ पुन्य प्रमाणे मोहला, गुरु वंदे पोशाल हो ना० ॥ दान शीयल तप नावना, चउविह धर्म रसाल हो ॥ ना० ना० २० ॥ श्री जीन सेवा साचवे, संवर साथे प्रित हो ना० ॥ आश्रवां अलगी रहे, एतो मोटी रीत हो ॥ ना० ना० २१ ॥ उदर वसंता गर्नए, रुखमणी मन उल्हास हो ना० ॥ आरीसा प्रतीबिंब ज्युं, पेट न पीम्ना तास हो ॥ ना० ना० २२ ॥ गर्न वधे दीन२ प्रत्ये, उदर न वाधे रंच हो ना० ॥ नवाले पेटे विलोकतां, सोक लख्यो परपंच हो ॥ ना० ना० २३ ॥ एठे जुग [illegible] पटा, नहिं; गर्न अहि नाण हो ना० ॥ पण तो माथो मुंम्नता, जास सयल सयाण हो ॥ ना० ना० २४ ॥ साचाने सोच नहि, जुग सोच अनेक हो ना० ॥ साचा सरल सनावीया, सोच न व्यापे एक हो ॥ना० ना० २५॥ दिन पुरे सुत जनमीयो शुन वेला शुन वार हो ना० ॥ रुखमणी अती सुख पाइया, परीयण हरख अपार हो ॥ना० ना० २६॥ पुरुष वधाउ आविया, नृपति पासे जाम हो ना०॥ प्रनुजी पोढ्यो पेखियो, पग तले वेठा ताम हो ॥ ना० ना० २७॥ नामाना पण आविया. मोटा पुरुष प्रधान हो ना०॥ शीराणे ते जइ कीयो, वडपणनो मंमाण हो ॥ ना० ना० २८ ॥ जेहना गकुर

जेहवा, तेहवा चाकर होय हो भा०॥ जोनपति जो मानवी, एतो परतक्ष जोय हो ॥भा०भा० २९॥ एटले जगपति जागीयो, उवि बेठो होय हो भा० ॥ चिरंजीवो कहि बोलिया, रुखमणीना नर सोय हो ॥ भा० भा० ३० ॥ देव वधाइं पाइये, रुखमणी जायो नंद हो भा०॥ नंदन निरखण सारीखो, दरशण परमाणंद हो ॥ भा० भा० ३१ ॥ राज चिन्ह छांभी करी, अवर अनोपम वस्तु हो भा०॥ पुत्र वधावआं भणी, आपी राय समस्तु हो ॥ भा० भा० ३२ ॥ जाणी संचल पाछले, वांकि ग्रीवे जोय हो भा० ॥ भामा सुत जाया तणी, लीये वधाइ सोइ हो ॥भा०भा० ३३॥ एतो एकसलमी, भली ढाल भलेरी होय हो भा०॥ कहे गुणसागर दोय घरां, आनंद वरत्यो जोय हो भा०॥ भा० ३४॥ ॥दोहा॥ कृष्ण नरेशर इम भणे, शेवक सुणो विचार; मंत्रीसर बोलाइ ल्यो, वेगे मलावो वार ॥ १ ॥ मंत्रीसर आया सहु, नरपति दिये आदेश; पुत्र महोछव पुर तणी, शोभा करो सुविशेष ॥२॥ ॥ ढाल ६२ मी ॥ राजा दसर्थ दिपतो ॥ एदेशी ॥ पुत्र महोछव किजीए, मलीयो सहु परीवारोरे; रुखमणी सतभामा तणे, मंदीर हर्ष अपारोरे ॥ पु० १॥ याचक जन जुगतशुं, दिजे वंछित दानोरे; करुणा भावे कृष्णजी, मुक्या बंधीवानोरे ॥ पु० २ ॥ तोरणनी रचना भली, उपर कलस उदारोरे; लहशति ध्वज अति घणी; दिसे घर२ बारोरे ॥ पु० ३ ॥ टोले रचना केलनी, नारी मली गुण गाथोरे; आरण कारण साचवे, कुंकुमनां दिए हाथोरे ॥ पु० ४ ॥ गुहीर स्वरे तव गोरमी, गावे मंगल च्यारोरे; भगल दिए तस आंगणे, वरते जय२ कारोरे ॥पु० ५॥ सही सुहागण सामटी, नारी आख्याणो लावेरे; वेष धरी अति पुरतो, ते तो आदर पावेरे ॥ पु० ६ ॥ ढोल दमामा दमवमे, शरणाइ सुख कारोरे; वाजां वाजे देहार ॥..

आत घणा, नाच पात्र अपारोर ॥पु० ७ ॥ दिजे सोना सावटुं, वा गावेस विशेसोरे; दिजे हयंवर हाथीया, मां
मांहि श्रदेखोरे ॥ पु० ८ ॥ जुया नतीजी नाणेजी, वेटो वहुने वोलावेरे; रितीशुं नातशुं प्रितशुं, आप आप
पायेरे ॥पु० ए॥ सजन सहु संतोखीया, संतोख्या सहु नाइरे; यथा योग्य जे जाणीया, दिधी तास वधाइरे ॥ पु०
१०॥ पुज्य पुरुष ते पुजीया, सह गुरु शेवा साधीरे; साहमी साहामण मानीया, कुल देवी आराधीरे ॥पु० ११ ॥
हुं समनावी अति घणी, खांति न राखे कोइरे; पण ती देवां नपहस्थां, कोण सके नर होइरे ॥ पु० १२ ॥ एवे
विनोदमा, करतां कोमी प्रकारोरे; पांच दिहामा वोरीया, ढवीनो अधीकारोरे ॥पु०१३॥ एतो वासठमी नजी ढा
कहावे सारोरे; गुणसागर कहे सांजलो, केम होवे अपहारोरे ॥पु० १४॥ ॥दोहा॥ रुखमणी नंदन अपह
महा वमो डख जाण; सुर आप आथमी गयो, पसरथो जगतम याण ॥ १ ॥ नजी रीत ए पारको, डख देर
नवी जाय; होइ तो नजपण करे, नहीतर अलगो थाय ॥२॥ ॥ ढाल ६३ मी ॥ कहीए मिलशेरे मुनि
एहवा ॥ए देशी॥ करमां आगे वलीयो कोइ नही, राव रंक एक साथेरे; रुखमणी सुतशुं सुख निंद्रा नजे, वि
करे जगनाथोरे ॥क० १॥ रमणी रंगे राती जगावही, गावे गित उदारोरे; वाजे मादल धोंधोकारशुं, नाचे पात्र आ
रोरे ॥क० २॥ सुजट घणां घर पासे मुक्या, रखवालीने काजोरे; विविध प्रकारे आयुध धारणां, सुर रह्या स
साजोरे ॥ क० ३॥ करी हुशीयारी कृष्ण नरेस्वरु, सुख निंद्रा वसेयाइरे; अन्य कथांतर एतले वितीयो, रुखमण
डख दाइरे ॥क० ४॥ हेम रथ राजा आगे जे हुतो, इंड प्रजात सराणीरे; मधु राजाइ जोर करी घणुं, साराणी

आणीरे ॥क० ५ ॥ मोह वसे सो हेमरथ राजीयो तापसना व्रत धारीरे; सुगति पदवी लाधी रुयमी, करणी तो फल कारीरे ॥क० ६॥ वेशी विमाने सो सुर एकदा, निज लीलाइ जायोरे; रुखमणी मंदीर उपर आवीयो, एतले यांनख लायोरे ॥क० ७॥ देव विशेषे चिंत्यातुर थयो, किम मुझ गतीनो ज्ञंगोरे; कांकोहे ठेरे डखीयो जीवडाबे; केको शत्रु विरंगोरे ॥क० ८॥ केको मित्रजु कष्ट पुरीयो, चरम शरीरी देहोरे; मोटा मुनीवर सुरगती ज्ञंगनो, कारण जांख्या एहोरे ॥क० ९॥ ज्ञान करी तव देखे देवला, मधुराजानो जीवोरे; रुखमणी पासे बालक पेखीयो, जाग्यो धेख अति वोरे ॥क० १०॥ इण पापीमे मदमाते घणुं, मुझशुं किधो जोरोरे; एहने ते फल आज देखाडशुं, किधा पाप अघोरोरे ॥ क० ११ ॥ तब तो ए नृप हुतो समर्थ, हुं असमर्थ ते वारोरे; अब तो हुंबुं समर्थ अति घणुं, ए असमर्थ अपारोरे ॥क० १२॥ एम जाणीने दैते दोषशुं, लिधो बाल कुमारोरे; रुखमणीनी गती आगेथी; किण हिन जाणी सारोरे ॥क० १३॥ किउं किजेरे साजन सुज्ञटशुं, आडंबर उगाहोरे; सहु तारायण अंब देखतां, चंद्रयशी जे राहुरे॥ क० १४॥ आशा कोकेहनी मति करो, आशा प्रजुने हाथोरे; रुखमणी सुति कुण मनोरथे, जाग्या आथन साथोरे ॥क० १५॥ सुर आकाशे जाइ चिंतवे, कुण २ जाणस्ये मारुंरे; चरम शरीरी पुरो आउखो, ए जीन वचने वारुंरे ॥ क० १६॥ तक्षक पर्वत खदीरा अटवीमें, आयो ते ततकालोरे; बावन हथ्थी मोटी शीला तले, सुर चांप्यो ते बालोरे ॥क० १७॥ निज कृत कर्मनो फल ज्ञोगवे, एम कही गयो तेहोरे; पुन्य विशेषे नखशिख लगे सहि, आलन आवी देहोरे ॥क० १८॥ एतो त्रेसठमी ढाले जाणी यो, मदन हरण अधीकारोरे; श्री गुणसागर ए उपदेश अबे, पुन्य वडो

ससारार ॥ क० १९ ॥ ॥ दोहा ॥ पुन्य सखाइ जेहनो, तेहनो पुरो आव; वाल न वंको करी शके, जइ रुसे जमराय ॥ १ ॥ नावे कोनभ पण ग्रहो, ग्रहो बुरापण कोय; सरजाना अनुसारथी, भलो बुरो जग होय ॥ २ ॥ जात मात जलवाहिया, कंस कर्ण नीज माय; पण ते शुभ कर्मा थकी, हुवा वभेरा राय ॥३॥ जीवाडे तो सिला तले, मारे प्रभु ते जोय; मदन सगरना नंद ज्युं, करता करे सो होय ॥४॥ रुपाचल दक्षण दिशे, मेघकुट पुर नाम जम संवर राजा भलो, राज करे गुण धाम ॥ ५ ॥ तेहने घर भल भामनी, कनकमाला सुकमाल; बेसी विमाने दंपपति, आय गया ततकाल ॥६॥ बालक मुखने वायरे, उंची नीची थाय; पोंढि शिला ते परगमी, ताम विलोकी राय ॥ ७ ॥ उपाडी अलगी करी, दीठो देव कुमार; सब विध सुंदर मनोहरुं, करतो हास अपार ॥ ८ ॥ ढाल ६४ मी ॥ ॥ सियल सरुतरुवर वरसे विइं, तथा पवडीयाकी ढाल ॥ ए देशी ॥ मोमन मोह्यो मोहना, मोहन रुप रसाल हो; खेंचर खेंचरणीस्युं कहे, लाल सवे विधी खास हो ॥ मो० १॥ कोमल कुतल वांकडा, शाम महासु कुमाल हो; आठमी कोसो चंदलो, नाल भलो सुविसाल हो ॥ मो० २ ॥ भुह भमरकी उपमा, कर्ण सुवर्णा कार हो; नयन कमल दल पापडी, सुक नाशा सुविच्यार हो ॥ मो० ३ ॥ मुख जाणे पुरो शशी, आठे लाल कपोल हो; दांत कुली दाडम तणी, अधर प्रवाल अमोल हो ॥ मो० ४ ॥ ग्रीवा कंबु सारखी, उनत अंस उदार हो; कमल नालाठि निहारडे, वांह तणो विस्तार हो ॥ मो० ५ ॥ उदर अनोपम शोभतो, कटि केहरीको लंक हो; जंघा गयंवर सुं मडी, तनमें कोन कलंक हो ॥ मो० ६ ॥ सोवन वान सोह्यामणो, चंचल पाणी सुं पाय हो; कामदेव ए

उपज्यो, शोना कहि न जाय हो ॥ मो० ७ ॥ राता सात सुलक्षणा, कर पग लोचन अंत हो; अधर होठ नख तालुउ जीहां एतो ए कंत हो ॥ मो० ८ ॥ उनत ए खट बे सहि, कक्षा कुख ललाट हो; खांध नाक उंचो हियो, धर्मीयो दैव सु घाट हो ॥ मो० ए ॥ दिर्घ पंचे देखीइं, नयणा सरनें वांह हो; नास्या थमाने हम्रवची, जांवि न नमे वांह हो ॥ मो० १० ॥ सोक्ष्म पंच प्रशांसीइं, पर्वांतरने केश हो; नह देह दशन वली, सोक्रम मृड शुं विशेष हो ॥ मो ११ ॥ लघु ग्रीवा जंघा नलि, लघुहि पुरुपाकार हो; स्वर गंनी रस राहीइं, नानी सत्व सुखकार हो ॥ १२ ॥ नाल विशाल वखाणियो, पोहले माथे इश हो; पोहलि गाती बे घणी, लक्षण ए बत्रिस हो ॥ मो० १३ ॥ सर्व गुणाकर साचलो, सर्वांहि शोन नीध्यान हो; देत्य महा रीपुजी तणो, दर्शण अमृत पान हो ॥ मो० १४॥ हेज घणे उगाइयो, लीधो कंठ लगाय हो; मुह अने शीर चुंबता, राजा अति सुख थाय हो ॥ मो० १५॥ राजा राणीसुं कहे, तुऊ तुठो कीरतार हो; सर्व सुलक्षण गुण निलो, दीधो एह कुमार हो ॥ मो० १६ ॥ राणी राजासुं कहे, थारे वहुला पुत हो; सघला में ए नान्हमो, किसो वधे घरसुत हो ॥मो०१७॥ राजा मुख तंबोलशुं, तिलक कीयो शिर तास हो; युवराजा पद थापियो, राणी जाणी उलास हो ॥ मो० १८ ॥ डर्जन रुगो स्युं करे, जेहना शुन अंकुर हो; मइंगल जींहां जींहां संचरे, तिंहां२ वाधे नुर हो ॥ मो० १ए ॥ राणी बालक ऊीलीयो, जाणी जाचो रयण हो; प्राण थकी,प्यारो खरो, पामी अधीको चयन हो ॥ मो० २० ॥ राजा मंदिर आवीयो, मलियो सहु परीवार हो; राणी नंदन जाइयो, वरत्यो जयशकार हो ॥मो०२१॥ महा महोछव मांमीयो, वाजे ढोल निसांणा हो; मंगल गावे गोरमी, दीजे वंछित दान

हो ॥मो० २२॥ कीधी शोभा पुर तणी, मिलीया सहु साज हो; वंदीखाना मोकलां, कीधां सीध्यां काज हो॥मो०२३॥ वारसमे दीन थापियो, राजा नाम उदार हो; पर दमवाने कारणे, श्रीपरद्यू मन कुमार हो॥मो०२४॥जीम२वाधे वये करी तिम २ वाधे उर हो; हयंवर गयंवर साहेवी, कण कंचन भरपुर हो ॥ मो० २५ ॥ कमल २ जीम संचरे, भमरो भोगी नाम हो; हाथोहाथे संचरे, तिम ए कुंवर काम हो ॥ मो० २६ ॥ स्वघर आदर पामीए, एतो सुधी वात हो; पण जेपर घर सादरो, ए अधीकी अखीयात हो ॥मो० २७॥ ढाल भली चोसठमी, खेचर घर उल्हास हो; गुणसागर दिपक जीहां, तिहां २ करे प्रकाश हो ॥मो० २८॥ ॥दोहा॥ श्री परद्युमन हरया पछे, वितक वित्यो जेह; संक्षेपे तुमे सांभलो, मुझ कहेतां भावि तेह ॥१॥ ततक्षण जागी रुखमणी, बाल न देखे पास; हइडे झाल उठी घणी, आवी मुर्छा तास ॥ २ ॥ सचेतन किधी साति, फिरी २ मुरछाय कुमर न सोध्यो पाइयो करुणापणो विल जाय ॥३॥ ॥ढाल ६५ मी॥ हरी विण राधा किम रहे ॥ए देशी॥ हाथाशुं हयडो हणे, कुरलेसा असराल दिन वचन भांखे घणां, किधुं कस्युंरे दयाल ॥ वि० १ ॥ विलवे राणी रुखमणी, रेशुं दरसु कमाल; किहां गयो मुझने तजी, ए डुख झालकराल ॥वि०२॥उभी उठे कुर करी, वेद न सहि न जाय; जाया तुझ सम कोनही, जे देख्यां सुख थाय ॥वि० ३॥ गुनथी मीठी खांड ए, खांडा साकर जोय; साकरथी अमृत भलो, पुत न पुगे कोइ ॥वि०४ पुत पनोतीमां गणे, पुति सपुति नाम एमेरे अगतणी भुतणी; विण पुताए काम ॥वि०५॥ दिश सुनी विण बांधवा, घर सुनो विण पुत; पुत पनोता वाहीरो, कुण राखे घर सुत ॥वि०६॥ वहुले मिलीए साजने, होत घणां गुण ग्राम;

पुत पनोता वाहीरो, कुण लेवावे नाम ॥वि० ७॥ नली सपुती पंखणी, इंमां पालणहार; चुगन लावे रनी चांचमी, उंलीए मुख पसार ॥ वि० ८ ॥ हुंकां सरजी मनुषणी, रे कुमा किरतार; गर्भ मांहि गाली नही, आपी आरती अपार ॥वि० ९॥ जन्म समे मुइ नही, फोली न पमी तुट; रोग तणो कारण लही, न मुंइ हइमा फूट ॥ वि० १०॥ बाल रंगना ख्यालमें, पाती लेवा जात; हुं कानमंशी एह रुयें; मरी जाती विललात ॥ वि० ११ ॥ तो कांहुं आवी हरी घरे, कां पाम्यो बहु मान; सोक सालथी सहेजहि, बूटी जातां प्राण ॥वि० १२॥ तो कां सुपना देखिया, कां जायो वरनंद; नंद तो आनंद करी गयो, किशुं करुं मतिमंद ॥वि० १३ ॥ कांहुं अधीकी बजबजी, कांमें पामी होम; मुक्त डखियारीनां सखी, कोइ न पुगी कोम ॥वि० १४॥ चहूमी तो गीरवरां, नाखि तोरे पयाल आंबो वावि आंगणे, तवही लियो उजाल ॥वि० १५॥ रे पापिष्ट अनिष्टतुं, रे डष्टनिगोर; दैव दया नहि तुझकने, रांक साथे शो जोर ॥वि० १६॥ हुं जाणुंथी साहरे, सहु वातां सुविसाल; खार धरी बेदी सही, देव मनोरथ माल ॥ वि० १७ ॥ पुढवी बेदन नेदनां, में किधी बहुवार; सर फोम्यां डह सोसव्यां, अणगल निर अपार ॥वि० १८॥ आग्य जल्हावी निरशुं, दव दीधां वनमांहि; वाय कराव्या विंजणे, मंमाव्या सढ प्रांही ॥ वि० १९ ॥ फूलण मसली पावशुं, चांप्या नव अंकुर; फलमो लेवा कारणे, बेठी होइ सुर ॥ वि० २० ॥ बेरंडीना वध किया, मारी जुने लिंख किमी नगरां वाहियां, ते मुक्त लागी शिख ॥वि० २१॥ ढाणे विंढी चांपीया, लोक वताया साप; माला तोम्या चरकलां, लाग्या मोटा पाप ॥ वि० २२ ॥ पशु पंखणी मनुष्यणी, बाल विछोहो दिध; उन्हो जलदर पुरीयां, प्रोढा पातिक

किध ॥वि० २३॥ माछी जाल पसारीयां, हरण पाम्या पास; कर्म कसाइनां कियां, गोवाकरां विणास ॥ वि० २४ ॥ मोसामर्म प्रकाशीयां, नांख्या कुम्रा अपराध; परने मोझ्या करकमा, ते में एफललाध ॥ वि० २५ ॥ चोरी किधी परतणी, लीधा हिरालाल; लाल निरोपम निगम्यो, होइ रही वेहाल ॥ वि० २६ ॥ साच न राख्यो शिलशुं, जेहथी लहीए लील; जगमांहि अपजस लियो, शेवी २ कुशील ॥ वि० २७ ॥ क्षिण लोटे लटेजइ, क्षिणमें चढे चोधार; कहीए देखुं सुज नान्हमो, प्यारो प्राण आधार ॥ वि० २८ ॥ रुखमणीने डखे सहु डखी, कृष्ण सुण्यो तव सोर; धशी आव्यो डतावलो, यहो२ सुत चोर ॥वि०२९॥ कृष्ण हिये डख संवरी, त्रियशुं कहेशुं विच्यार; नंदन मीलशे ताहरो, करशुं सोइ प्रकार ॥वि० ३०॥ जे पांखरीयां परगमा, शोधन काजे सोय; मोकलीया फीरी आवीया, काज न सरीयो कोइ ॥वि० ३१ ॥ सुसति किधी सुंदरी, वारु बचन कही वाण; एतले चाली आवीयो, नारद पुन्य प्र मांण ॥वि० ३२॥ ढाल एतो पांसठमी, विजो गणी ए नाम; गुणसागर सुन कर्मथी, सरसे सघला कांम ॥ वि० ३३॥ ॥दोहा॥ नारद नांखे सुण सुता अरतीम कर लीगार; तेहने आरती शुं करे, जेहनो हरी नरतार ॥ १ ॥ जे तुझ कुखे उपज्यो, जेहनो माधव तात; न मरे उंठे आपणे, ए निश्चे विधी वात ॥२॥ पुर्व नवंतर वेरीए, किधोछे अपहार; दिन थोडे शोधी करी, मेलुं आणी कुमार ॥ ३ ॥ जो ए कारज नवी करुं, तोशुं माहरो नाम; नामानाम न नावतां, जाणे सर्यां सब काम ॥ ४ ॥ ज्ञांन विन्या निश्चे नही, झलफलीयां शुं थाय; श्री मंधीर स्वामी कने, चाली गयो रुषीराय ॥ ५ ॥ देइ प्रदक्षणा विधी करी, प्रभुना प्रणमी पाय; नीम जाणी मांणस तणी, रह्यो तखत

चक्री चतुराइ करी, पुछे कसल विच्यार ॥७॥ ढाल ६६
तेले जाय ॥६॥ लघु काया करमें करी, जाणीने आकार; स्वामी कहे सुण राजीयारे; च
मी॥ बेहनी जेहनो जेहशुं रंग ॥ए देशी ॥ श्रीमंधरि कहोने एह विच्यार, भरत खेत्रथी आवीयोरे, कांइक
रित तणो नही पार ॥श्री १॥ शील शिरोमणी गुण निलोरे, नारद नाम उदार; शोल तणो सहवास ॥
पुरुण हार ॥श्री २॥ द्वारामती नगरी भलीरे, क्रश्न नरेशर तास; पटराणी वर रुखमणीरे, ए जगनो ववहार ॥श्री० ४ ॥ गाम नगर
श्री० ३॥ तेहनो नंदन अपहरयोरे, बगी रातीमोझार; वेरी वेर न विसरेरे, निश्चे करवा कारणेरे,
गीरी कंदरारे, सोधाव्या ते राय; सुध न लाधी तेहनीरे, अति उख आणे माय ॥ श्री० ५॥ पट पंम नायक विनवेरे, स्वामी
ए रुपी आव्यो जोइ; पक्ष करे जे जेहनोरे, तेही उखे उखियो होइ ॥ श्री ६ ॥ कालकेतले आवशेरे, कुंवर कुल शीणगार
प्रकासो एह; कुण वैरी जेह अप हरयोरे, वाल किहांछे तेह ॥श्री० ७ ॥ मात कन्हेथी वालुमोरे, दैते लियो जाम; तक्षक पर्वत
मात पित्या मन भावसेरे, निसुणे परखदावार ॥ श्री० ८ ॥ अरि त्रिय मित्रहि
शीला तलेरे, पाम्यो खेचर ताम ॥ श्री० ए ॥ दिन२ वाधे वये करीरे, चंद कला जीम जोय; मलशे मायवापनेरे, वरस
बतीयांरे, साल सरीषो सोय ॥श्री० १०॥ पोमस लाभ लही भलारे, वारु विद्या दोइ; उपजशे अति प्यार
सोलमे सोय ॥श्री० ११ ॥ मलणातणी सहि नाणकारे, जणावीए सार; पान्हो चमशे पदमनीरे, भ्रमर करे गुंजार ॥ श्री० १३ ॥
॥श्री० १२॥ होस्ये सुकि वावमीरे, जलशुं भरीत अपार; विकशीत पंकज पांखमीरे, तरुवर अवर अपार ॥ श्री० १४ ॥
सुका वृक्ष अशोकजीरे. फलस्ये विवीध प्रकार; रतु विण फल फूले भरयारे,

कोइ ललनाट हुरु मारे, मोरा केरा नाच; थाशे विविध वधामणारे, सुंदर मेली साच ॥ श्री० १५॥ सुणी वचन
सहेरे, यांका सरला होय; अंधा लहेस्ये आंखमीरे, रुपकरुपा जोय ॥ श्री० १६ ॥ इण लक्षणे माजाणसेरे,
आगम वात; सांभल नृप सुलक्षणारे, वपरीना अवदात ॥ श्री० १७ ॥ देशशु मगध सोहामणोरे, सालीसु
प्रधान; सोमदत्त नामे जलोरे, ब्राह्मण गुणनो जाण ॥श्री० १८॥ तसअमेली कामनीरे, नंदनवर अनीधान;
भुती गुण आगलोरे, वायु जुती मुजाण ॥ श्री० १९ ॥ श्री नदी वर्धनगुरु जलारे, आया विपनमोझार; करवा
पधारीयारे, वंधव दोय ते वार ॥ श्री० २० ॥ विच मल्यो मुनी सत्यकीरे, नांखे वचन विलास; विप्र किहां तु
जीयारे, करवा वाद उल्हास ॥श्री० २१॥ होम किसी हारया तणीरे, विप्र कहे स्युं दिष्य; थाप्यो वाद विशेष
विप्र न माने शीख, ॥ श्री० २२ ॥ मुनी नांखे पुछो तुम्हेरे, संशय होवे जेह; हमने संसय कोइनहीरे, तुम्हे
संदेह ॥श्री० २३॥ तुम्हे किहांथी आवीयारे, नांखो विप्र विच्यार; हम आया निज घर थकीरे ए स्यो प्रश्न
॥श्री० २४॥ ए आगम पुछुं नहीरे, पुछु परजव वात; परजव कुण कही सकेरे,, होइ माणस मात ॥ श्री० २
विप्र सुणो परजव तणोरे, नांखुं एह विच्यार; इणही ग्रामे विप्र हुतोरे, नामे प्रवर उदार ॥ श्री० २६ ॥
करतो घणीरे, हल खेमवा जाय; आयो जलहर उमहिरे, शो घर मुखो थाय ॥श्री० २७॥ सात दिहाडा वरशे
जलहल धार अखंड; उवराम्यो दिन आगमेरे, व्यापी जुख प्रचंड ॥ श्री० २८ ॥ जंबुक युग तिहां
यारे, पायो नाडी तोड; पेट आफरीउ ढोल ज्युंरे, चाल्या दशाहि ठोड ॥ श्री० २९ ॥ सो जंबुक तुम्ह

नहि संदेह लगार; प्रत्यय कारण सांभल्योरे, आगेएह अधीकार ॥ श्री० ३० ॥ खेत धणी तिंहां आवीयोरे, खीज्यो देखी जाम; जंबुकनी करी भाथमीरे, मेली उपर वान ॥ श्री० ३१ ॥ जोनपाति जो ब्राह्मणोरे, जाइ देखो सोय; लोक गया तिंहां देखवारे, वीप्र खीसाणो होय ॥ श्री० ३२॥ ए गासठमी ढालमेंरे, निर्छांटण मीथ्यात; गुणसागर आगे कहेरे, एतो वारु वात ॥ श्री० ३३ ॥ ॥ दोहा ॥ मुनी भांखे भवियण सुणो, धरी परतीत अपार; प्रवर विप्रनी आगलें, चरित कहुं सुविच्यार ॥ १ ॥ हिंस्या कर्म समाचरी, काल कियो तिहि वार; मोह वशे आवी लियो, नंदन घर अवतार ॥२॥ देखी मंदीर मालिया, जाति समर्ण लाध; पुत्र पिता जननि वहु, केम कहुं अपराध ॥ ३ ॥ एम जाणी मुन रह्यो, लोगा मुंगो नाम; मुनि भाषित साचुं वदे, आगे उभो ताम ॥ ४ ॥ ढाल ६७ मी ॥

॥ सुग्रीव नगरी सोहामणीजी ॥ ए देशी ॥ चक्री भांखे देवशुंजी, तेह मुनीवर केम; बोलाव्यो भांप्या भलीजी, सुणवा लाग्यो प्रेम ॥ १ ॥ जिनेश्वर धन २ थारो ज्ञांन, संशय तिमर निवारवाजी, जाणे उग्यो भाण ॥जी० २॥ मुंगाशु मुनिवर कहेजी, ए जगनो ववहार; माता थाये दीकरीजी, पुत्र पिता अवतार ॥ जी० ३ ॥ वहिन फीरी होय सोकमीजी, बंधव वैरी थाय; विज्ञ लहे मुर्खपणोजी, मुरख विज्ञ कहाय ॥ जी० ४ ॥ गकर ते चाकर होवेजी, चाकर गकर होय; निर्धन ते धने आगलाजी, सधन निर्धन होय ॥ जी० ५ ॥ ए ववहारे वरततांजी, दोष न एक लगार; मुगो भाषा बोलियोजी, लीधो संजम भार ॥ जी० ६ ॥ हारया वाद विशेषथीजी, होइ खीसाणां दोय; घर आव्या पिय मायजी, अति खीजाव्या सोइ ॥ जी० ७ ॥ साधु उपद्रव्य कारणोजी, राति आव्या चाल; यक्ष

उपद्रव टालियोजी, थंभ्या ते ततकाल ॥जी०८॥ करुणा आणी अति घणीजी, गेमाव्या ते राय; दोइ बंधव माय बापसुंजी, हर्ष्या समकित पाय ॥ जी० ९ ॥ माय बाप ते भुलगेजी, मारग लाग्या जाण; देश व्रति होइ बांधवाजी, आराधन प्रमाण ॥जी०१०॥ पेहेले स्वर्ग सुलक्षणाजी, पंच पल्यो पम आव; दोइ बंधव देवताजी, विलशे पुन्य प्रभाव ॥ जी० ११ ॥ नाम अयोध्या छे भलीजी, नगरी अति अभीराम; सत्रुजय नामे भलोजी, राजा गुणनों धाम ॥जी० १२॥ शेठ सहु मांहे वडोजी, सागर दत सुजाण; नारी नामे धारणीजी, पाले अरिहंत आण ॥जी० १३॥ देव चविने उपनाजी, शेठ घरे संतान; माणिभद्र मनोहरुजी, पुरण भद्र प्रधांन ॥ जी० १४ ॥ प्रज्ञा वले पढिया घणाजी, जोवननि वय पाय; परणी सुंदर सुंदरीजी, सुखमें दीन जाय ॥जी० १५॥ श्री महेंद्र मुनी स्वरुजी, वनमें आया जाण; राजा सेठ सधावियाजी, सुणवा श्री गुरु वाण ॥ जी० १६ ॥ वाणी सुणी वैरागीयाजी, हुया संजम धार; श्रावकना व्रत आदरेजी, तव ते शेठ कुमार ॥जी०१७॥ काल केतले आवीयाजी, साधु दया प्रतीपाल; वंदन जातां वाटमेंजी, मलियो एक चंडाल ॥ जी० १८ ॥ तेहने साथे कुंवरीजी, दोइ साध्ये प्रेम; उच जाती शुं उपजी जी, हेत जणाव्यो केम; ॥ जी० १९ ॥ शुनि अने चंडालनेजी, हेज हिइं न समाय; नयण जणावे नेहलोजी, अचरज कह्यो न जाय ॥जी०२०॥ त्यारे आयां चालकेजी, श्री मुनिवरके पास; संशय हरवा मुनि कहेजी, पुर्व भवं तर तास ॥ जी० २१ ॥ एह थकि भवति सरेजी, मात पिता तुम्ह जेह; समकित धर्म वाराधीयोजी, तेहनो फल छे एह ॥जी०२२॥ ब्राह्मण भव पहिले हुवोजी, जीत शत्रु राय उदार; ब्राह्मणी होइ रुखमणीजी, राजा कीधो प्यार

॥जी० २३॥ वरस सहस सुख भोगवीजी, नरगे पोहतो भुप; मृग हुइ मानस हुवोजी, थिउ गजराज अनूप ॥ जी० २४ ॥ जाति समर्ण ज्ञानसुंजी, अणसण दिवस अढार; सुरगतिना सुख भोगवेजी, एह चंमाल विचार ॥ जी० २५॥ समकीत धर्म ब्राह्मणी भव भमी स्वाननिजी, पामी गती विपरीत; पुरवला संबंधथीजी, मांहो मांहे प्रीत ॥जी० २६॥ पहिले सुरलोके ग्रहावियोजी, श्रावकना व्रत बार; अणसण मास जु एकनोजी, आराधी अती सार ॥ जी० २७ ॥ श्रुनि पण दिन सातनोजी, गयोजी, ते चंमाल ते वार; पंच पल्योपम आउखोजी, नित्य जिंहां जय कार ॥जी० २८॥ सयंवर मंमप मांमीयोजी, अणसण पाल्यो जोय; काल करी नृप कुंवरीजी, तिणहि नगरी होय ॥ जी० २९ ॥ चारित्र पाली नीरमलोजी, पाम्या सुर आया राय अनेक; देव करे समजावणीजी, कुमरी लहे विवेक ॥जी० ३०॥ ए जीव दोइ थायस्येजी, वटपुर केरा नाथ; कंचन अवतार; एह प्रसंगे भांखीयोजी, काम भणी विस्तार॥जी० ३१॥ अणसण आराधी खरोजी, बंधव दोइ सुजाण; स्वर्ग सुधर्मे रथने चंढाभाजी, राजा राणी साथ ॥ जी० ३२ ॥ ए सणसवमी ढालमेंजी, समकीत सुधी देख; गुणसागर आराधीयाजी, देवताजी, पांच पल्योपम मान ॥जी० ३३॥ पामे फल शुं विशेष ॥जी० ३४॥

॥ दोहा ॥

कुशल घणोछे कोसला, नगरी अति मंमाण; पद्मनाभ जगपर गमो; राज करे राजान ॥ १ ॥ नाम प्रणामें धारणि, तास धारणि नार; शिलवंति साची सती, सत्यवंति संसार ॥ २ ॥ सुरलोके सुख भोगवी, बंधव दोइ उदार; राणी उरे उपना, युगलपणे अवतार ॥ ३ ॥ वमा तणो मधु नाम वर, लघुनो कैटभ नाम; थापियो महा मोहोछवे, कुमर दोइ सकाम॥४॥परणावि यौवन पणे, मधुने दीधो राज; युवराज

पदवि लघु जाणि, नृप साथ्या निज काज ॥ ५ ॥ ढाल ६७ मी॥ ॥ शांति जिणंद सोभागी, हुंतो थयो [illegible] गुण रागी ॥ ए देशी ॥ राजा राज करंत, युवराजा जयवंत; सुरी चंदनी जोम, पुरे मन केरा कोम ॥१॥ सारे पर[illegible] काज, जगमांहि जस गाज, सत्रु कंद कुदाल, मोटा जेह चुपाल ॥२॥ एक दिन सुण्यो कोलाहल, नृप पुछे ए [illegible] कल १; प्रतिहारीयो जासे, स्वामी देश विणाशे ॥३॥ जीमसुं नामे भुपाल, दुर्ग वले सुविसाल; पशु माणस [illegible] जाय, उजड देश ए थाय ॥ ४ ॥ चुपति लाग्यो जइ चाहे, दुर्ग तणो वल साहे; फोज फीरी तव आवे, पावो [illegible] मचावे ॥ ५ ॥ पुर बाहीरथी जे पावे, तेतो लेइ सिधावे, तेथी ए सहु लोक, पामेठे प्रजु पोक ॥ ६ ॥ एम सु[illegible] ते राव, देइ दमामे घाव; हयंवर गयंवर गाजी, दलवल अति घणो साजी ॥७॥ चढीयो वार न लाइ, रेणु रही [illegible] ढाजी; वाटे सुर. वधाइ, कायर धुजणी थाए ॥ ८ ॥ आया वदपुर चाली, जावी सके कुण टाली; हेम रथ [illegible] आयो, राय तणे मन जायो ॥९॥ हेम रथ हाथशुं पोंखे, आपे आप विगोवे; नृपने मंदिर लावे, जाणे नारी [illegible] ॥१०॥ आदर अति घणा किधा, जमवा वेसण दिधा; छुद्र प्रजापट नारी, साथे कहे अविच्यारी ॥ ११ ॥ [illegible] जाजग फलीयो, आज दिहाडो ए वलीयो; आपुण पिरसणो ए किजे, राय तणो मन रिझे ॥१२॥ कामनी [illegible] बोले, नृपतुं कां झमझोले चुप चुजंगम कालो, तेहथी दिजे टालो ॥ १३ ॥ जटकी बोलीयो इस, मन आणी [illegible] रीस; एवडो स्यो अजीमान, तुंतो दासी समान ॥१४॥ राणी पीरसवा आवी, रायतणे मन जावी; राजा री[illegible] जाणी, उलखीयो मन राणी ॥ १५ ॥ राजा उगी सीधायो, ततक्षण मंत्री बोलायो ; ए राणी घर लावो, [illegible]

जुपती नीमशुं अमीयो, सुर महार्ण लमीयो प्रेम मीलावो ॥ १६ ॥ मंत्री राय संकेत, चाल्या कटक समेत; ॥ १७ ॥ झगमो अति घणो लाग्यो, भुपती नीमजी नाग्यो; बांधीने जव लीधो, कारज रायनो सीधो ॥ १८ ॥ लमा राजा पाछो ए वलीयो, मन मथ भुते ए छलीयो; तन मन रागस्युं ए राच्यो, राणी शुं मन माच्यो ॥१९ ॥ ए अणसठमी ढाल जीती पयाणे ए आवे, वटपुर वाट जुलावे; मंत्री मंत्र उपायो, राय आयो ध्याये आयो ॥२०॥ राय अयोध्या आवीयो, मनमें अति उचाट आयो जुपाल; श्रीगुणसागर राय, राजाजी वयर वसाय ॥२१॥ दोहा॥ सोवाताकी वात ए, जो खीजी कहे केम भुलीयो, वटपुर केरी वाट ॥१॥ वाचा पालतुं आपणी, अहो मोटा प्रधांन; चाहे मझ प्रांण ॥२॥ कलीमल अरती असुख अती, सुता निंदम जोय; अन्नन पाणी नावही, सोक्यो जाइलोय ॥३॥ रायकुमरी नवयौवनी, साथे नमन राजान; इंड प्रजा राणीहीए, साले साल समान ॥४॥ सस्नेहांतो डखलहे निस्नेहा सुख होय; तिल सरसव जग पिलीए, रेतन पीले कोय ॥ ५ ॥ रागे वाह्यो उकले, वैरागी समनाय; चोल मजीठ रस लीए, बाकसन विमसलाय ॥ ६ ॥ ढाल ६ए मी॥ नेमीस्वर विनती मानीएजी ॥ए देशी॥ राजेशर कहीयो मानीएजी, कहे मंत्री ससुजाण ॥रा० ॥ ए टेक ॥ कुविसन केरो संग न किजे, कुविसन डख दातार; तिण मांही ए अति मोटो, परत्रीया केरो प्यार ॥ रा० १॥ विण दोरे ए बंधन कहीए, विण व्याधे असमाध; विण काजल ए कालीम कहावे, विण मांदरा असमाध ॥रा० २॥ आंखउं निंदो निंद तणोछय, छिण २ दाझे देह; तेहने नित्य चंद्र बारमोरे, जेहनो परघर नेह ॥रा० ३ ॥ वरस सात साढानो नांख्यो, थावरनो अति लाग; जाव

जीव लगे ए अति पीडे, पर रमणीना राग ॥रा० ४॥ जगमांहे अपजसनो पमहो, आपदनोरे संकेत; शिवपुर धारक पाट कहावे, पर रमणीनो हेत ॥रा० ५॥ परनारी मुख जोतां पलटे, पलक२ जेतीवार; ते तोहि वर्ष पचेवो, कुंत्री नरकमोझार ॥ रा० ६ ॥ पररामा शुं राग करंता, देवा द्रव्य विणास; साभृसा सातमो ठामी अनेरो, ठामन दिसे तास ॥ रा० ७ ॥ राजा नांखे सुण मंत्रिस्वर, ए सब साची वात; पण माहरे मन तो रढ लागी, कॅल्प समा दिन जात ॥ रा० ८॥ पंखि पतिने दिवसे न सुझे, राते न सुझे काग; मुझने तो दिन रात न सुझे, केहेण तणो नहि लाग ॥ रा० ९ ॥ ढोल वजावे ढोलियांरे, पण वाहरे नवि जाय; हेतवंता तो हेत वतावे, जोर न कोइ थाय ॥रा० १०॥ एतले रतु राजा चलि आयो, नामे वसंत वसंत; वनराजी फल फूल वीराजी, लोक हसंत रमंत॥ रा० ११ ॥ गाम२ ना राय बोलाया, खेलण कोमीस गाण; इंड अन्नाशुं राजा तेड्यो, हेम रथ प्रीत प्रमांण ॥रा० १२॥ रमणीइं राजा समझाव्यो, ए मुझ उपर पेल; मधु नृप मांमघो मुरख प्रितमा, मकर २ मन मेल ॥ रा० १३ ॥ रावण पर त्रिया वोप न जाण्यो, राम हेम मृग जेम; जुवा द्रपण राय युधीष्टर, जाणी शक्यो नहि तेम ॥ रा० १४ ॥ वात अनेक कहि समझावे, राय न माने एक; होण हार साथे कुण वलियो, ए नर आण ववेक ॥ रा० १५ ॥ राणी लेइ आयो राजा, मधु राजा सुख पाय; खेलि वसंत ज्युं लोक विसर्ज्या, राणी राखी राय ॥ रा० १६ ॥ पटराणी करी थापी सुंदरी, मधु राजा मन रंग; सुख माने ते विविध प्रकारे, इंद्र इंद्राणी संग ॥ रा० १७॥ हेमरथ राजा वात सुणी जव, विव्हल थयो अपार; बलिया साथे जोर न चाले, अइ अइ कर्म विचार ॥ रा० १८॥ खिण रोवे खिण जोवे दह दिश,

खिण आगण खिण सेज; खिण गोखे चच वारे देखे, फाटे हइमो हेज ॥ रा० १९ ॥ वस्त्र विहुणो विकल रुपे, धुले धुसरी अंग; प्रीयार मुप अधीक पोकारे, सवहि वात विरंग ॥ रा० २० ॥ पुरी अज्योध्या चालि आयो, न्नर्म पड्यो नुपाल; नारी निरखणनो अभीलाषी, साथे फरे वहु वाल ॥ रा० २१ ॥ सोर सुणतां गोखे चढिने, नारी निहाल्यो नाथ; ध्याय मोकली लीयो वोलाइ, डुर करी सव साथ ॥ रा० २२ ॥ कां तुं एहवो पुठे पदमनी, पुरव प्रेम प्रकार; नारी विछोहो महा डुखदाइ, कवण अछे तुझ नार ॥ रा० २३ ॥ तुं प्यारी हुं प्रितम थारो, राखले माहरा प्राण; पहिलि शीख न मानी पापी जल वहि गयो मुलतान ॥रा० २४॥ जारे जाके जाण लहिने,राजा करशे न्नांम; न्नांम पुरुपनुं कोइ न थाशी, न्नांम थइ तुं रांम ॥ रा० २५ ॥ कोहि रावने मांहि कंसारी, पमिया निपट निकाम; वेयर जातिने वाहिर हींमी, न लहे एकहि दाम ॥ रा० २६ ॥ चितमा नींतर चिणगट लागी, साल सरिखो बोल; साचो शिल सखुणो जाएयो, विपीया विप समतोल ॥ रा० २७॥ मधु राजा माननी शुं मोह्यो, माने मेरु समान; आपणा पोज एतले, आयो मोह तणो अवसान ॥रा० २८॥ परनारी लंपट द्द्ढ वांध्यो, आएयो राजा पास; राजा न्नांखे वेग विणास्यो, इहां नहीं अरदास ॥रा० २९॥ राणी पुछे कामा रिजे, स्वामी ए नर आज; राजा वोले एणे किधो मोटो आज अकाज ॥ रा० ३० ॥ ए कामी ए सतरे पातिक, ताजुं वाली जोय; एकामी परनारी गमननो; पातिक भारी होय, ॥रा० ३१॥ परनारीना डुखण ए तो, आप तुम्हे शुं किध; हुं परनारी किधी प्यारी, जगमें अपजस लिध ॥रा० ३२॥ कहेणी तो जगमांही वहुली, करणी विरला जोइ; मोटा न्नांमा ठेतन लागे, रांक हएया शुं होइ

॥रा० ३३ ॥ एह वचने राजा वैराग्यो, मनमे करे विच्यार; कुलने एह कलंक चढायो, धीग२ मुझ अवतार ॥ रा० ३४॥ नवजोवनमें वाध्यो जे नर, नृप ठेमावे ताम; उहरो तेमी शीखज आपी, ए हम करजे काम ॥रा० ३५॥ इण अवसर मुनीराज पधारया, वोहोरण केरे काज, नृप आहार सुजतो, दिधो सफल गण्यो दिन आज॥रा०३६॥ जेष्ट पुत्र तव पदवी थाप्यो, मधु कैटभ नृप सोइ; संजम लेइ स्वर्ग वारमे, देव हुया ते दोइ ॥रा० ३७॥ इंदु प्रभा विक्षा व्रत पाली, राजा साथे सहाय; कनक माला ए आइ उपनी, नेह ठप्यो नरहाय ॥ रा० ३८ ॥ एगुणतेरमी ढाल भलेरी, पुर्व भवतर भेद, गुणसागर जीनवरने रचने, टलीयो सघलो खेद ॥रा० ३९ ॥ ॥दोहा॥ मधु भुपतीनो जीव जे, चारीत्रने संकेत; स्वर्ग तणा सुख भोगवी, सुखे पुन्यने हेत ॥१॥ श्री परजुन कुमारजी, रुखमणी उदरउत्पन्न क्रश्न घरे हरी वंशमें, साचो पुत्र रतन ॥२॥ कैटभ सुर सुख भोगवी, लेस्ये वर अवतार; जाम्बुवती उदरे सही, होस्ये साब कुमार ॥३॥ राय हेमरथ नारीनी, आणी अरति अपार; काल करी भवमें भमी, कोप तणे प्रकार ॥ ४ ॥ धुम केतु नामे हुवो, असुरां केरो राय; जे ए वालक अपहरयो, वयर विलय नवी जाय ॥५॥ ढाल ७० मी॥ राधा लोचनरगमो ए देशी ॥ जीनवाणी श्रवणे सुणी, भवि पाम्या प्रतिबोध ललना; करे आपणमें खामणा, टाले वेर विरोध ललना ॥ १ ॥ धन श्रीमधीर स्वांमीजी, जे भांजे संदेह ललना; धन चक्रीजीणे पुछीयो पुर्वभवंतर एह ललना ॥ध० २॥ नादर रुपी करकोसथी, नीकलीयो तेहीवार ल०॥ अलजयो आतुर थयो, देखणवाल कुमार ल० ॥ ध० ३ ॥ गीरी वैताढे आवीयो, यम संवर घर जाय ल० ॥ कनक मालानी भक्तीथी, रुपी रखीआत थाय ॥ ल०

ध० ४॥ गुढ गज्ञेणा तु सुणा जाया सुदर नद ल०॥ रुपीजी तुम्ह प्रसादथी, नंदन आनंद कंद ॥ ल० ध० ५ ॥ देषु थारो नानस्रो, परखुं लक्षण सार ल०॥ रुपी आगे लोटावीयो, दिए आशीश तेवार ॥ ल० ध० ६ ॥ चिरंजोवि चिरनंदजे, पुरे मातनी आश ल०॥ रुपी आदेशे उगाइने, हयमे धर्यो उल्हास ॥ल० ध० ७ ॥ मात मुखो अरि सन मुखो, लक्षण गुण गरीठ ल०॥ सब विध सुंदर देखतां, लोचन अमीय पइठ ॥ल० ध० ८॥ नारद आव्या द्वारीकां, हरी रुखमणीके पास ल०॥ जिनवर वचन सुणावीया, धुरबे हाल गेतास ॥ल० ध० ९॥ हीरा चुनी लालमा, मोती माणीक जोइ ल०॥ जिहां जाइ तिहां सादरा, तिम करमे नो होइ ॥ल० ध० १०॥ हरी रुखमणी आनंदीयां, सुणी सुतना अवदात ल०॥ परम महा सुख पामीयो, आनंदमें दिन जात ॥ ल० ध० ११ ॥ आशा सब जग वालही, आशा अमर अपार ल०॥ धर्म कर्म आशा भली, आसम गांमी लगार ॥ ल० ध० १२ ॥ आशाए धन संपजे; आशाए संतान ल०॥ आशाए रणजीतिइ, आशाए सनमांन ॥ल० ध० १३॥ एक न हुती पाधरी, नंदीषेणानी नार ल०॥ सहे सवहु तेरे परगटी, आशाने अधीकार ॥ल० ध० १४ ॥ आशाए हरी चंद्रजी, उग्रसेन नृप देख ल० ॥ आपद काढी आकरी, पुनरपी राय विशेष ॥ल० ध० १५॥ रावण सिता अपहरी, पम्यीयो राम विछोह ल० ॥ साजी वि आशा थकी, फरी पामी अति सोह ॥ ल० ध० १६ ॥ पवनराय घेरे अंजना, पतिनो अति अपमान ल० ॥ आशाए देवावीयो, आदर मेरु समान ॥ ल० ध० १७ ॥ रामचंद्र नल पांमवा, आशा तणे बल जोय ल०॥ फिरी वहोमावि आपणी, आश करे सोहाय ॥ल० ध० १८॥ वरस जाशे आशा वसी, फलशे मननी आश ल०॥ आश बले

॥रा० ३३ ॥ एह वचने [illegible]

रुखमणी तणो, होशे लिल विलास ॥ल० ध० १९॥ मंदिर संवर कालने, वाधे वाल कुमार ल०॥ हाथोहाथे संचरे, उपजावे श्रति प्यार ॥ल० ध० २० ॥ जीम२ वाधे वए करी, तिम२ वाधे एह ल० ॥ रुधी वृधी सुख संपदा, श्ररु वाधे धन नेह ॥ल० ध० २१ ॥ प्राणथको प्यारो घणो, माताजीने सोइ ल० ॥ पिता परम सुख दायकुं, परीश्रण प्रितो जोइ ॥ ल० ध० २२ ॥ पढोगुणो पंडित थयो, निर्मल बुधी उदार ल०॥ शस्त्र शास्त्र श्रादेकला, वहु तेरना जणनार ॥ल० ध० २३॥ वालपणे वोली करी, योवननी वय पाय ल० ॥ थिर विरने साहासिक सुर शीरे कहेवाय ॥ल० ध० २४ ॥ हयगय रथ पायक तणी, सेना सजी श्रपार ल० ॥ सीमाडा सहु साथीया, साध्या जेह झुझार ॥ल० ध० २५॥ देश जीती घर श्रावीयो, लावीयो वर वस्तु ल० ॥ नृपवर खेचर मानवी, माने श्राणासमस्तु ॥ ल० ध० २६॥ ए शीतेरमी ढालमें, भन मनभावण नाम ल०॥ गुणसागर गुरु श्रापणो, प्रगट थयो जग काम ॥ ल० ध० २७ ॥ ॥ चोपाइ ॥ खंड खंड रसठे नवनवा, सुणतां मिठां साकर लवा; श्रीहरी वंश चरित्र जय जयो, त्रिजो खंड ए पुर्ण थयो ॥१॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७

॥ इति ढालसागरप्रबंधे हरिवंशनामा तृतियोऽधिकारः समाप्तः ॥

॥ खंम ४ थो ॥ ॥ दोहा ॥ कर्म हणां कवल लह्यो, मुगति पहोता स्वांम; त्रिविध २ त्रिहु कालनां, सिध
नमुं शिर नाम ॥ १ ॥ अव चोथा अधीकारनां, नविनी सुणो सुविच्यार; गुणवंतानां गुण ए, सांभलतां सुख थाय
॥२॥ मात पिता सुख पामियां, देखी कुमरनां काम; लोक प्रसिधो आपियो, युवराज पद ताम ॥ ३ ॥ प्रभु रवि
तनु व्यय करी, संतोख्यो संसार; याचक जन मुख उचरे, मदन शुं यश विस्तार ॥४॥ नृपतिने नज नामनी, पांच
सयां परीवार; नंदन पण तस तेतला, महा कला गुण जांण ॥ ५ ॥ प्रभुता पेखी कामनी, कमनी पमी कमात;
आप आपणा पुत्रशुं, एह जणाची वात ॥ ६ ॥ सिंहणी एकज सुत जणी, निर्भय थाइ अपार; खरी खरी दश
पुत्रणी, वहे गारको नार ॥ ७ ॥ मदन वलि महिमा निलो, तुम्हतो सघला रंक; दिन थोमामां देखज्यो, राजा हुउ
निसंक ॥ ८ ॥ ढाल ७१ मी ॥ रसोयी ढाल, आज जोईज्ये घरमें हांमी ॥ तथा इण पुर कंबल कोइ नलेशी
॥ ए देशी ॥ वचन सुणी निज माता केरां, कोपे चम्यां ने पुत्र घणेरा; मारा मदनने वार न लावा, तो तुम्ह आगे
हम फिरी आवा ॥१॥ मदन शुं मांके प्रिति अपार; माहरे तुं नकोर आधार; कुम केलवे कपटि केतां, सांभलजो
मुक कहेतां तेतां ॥ २ ॥ नोजन आसन शयनमो कारी, खान पानमें दिइ विष नारी; अमृत होइ प्रणमे सोइ,
पहुंची शके उपावन कोइ ॥३॥ माकणी शाकणी न शके लागी, भुत पिसाचाणी जाए नागी; वांको ते फरो सुधो
थाय, दिन दिन महिमा अधीक दिवाय॥४॥गीरी वेताढ्य गयां एकवार, सहेस शीखरनो नवन उदार; सहुको आवी
बेगं जाम, वात कहे आपसमें ताम ॥ ५ ॥ गीरि शिखरे एक गोपुर देखि, वज्ज मुखे तव वात विशेखी; जो जाय

कोइ गोपुर मांहिं, मन वंछित फल पावे ग्रांहिं ॥ ६ ॥ मदन गयो तिंहां हाली चाली, जाग्यो देव वजावी ताली; मदन साथे कियो संग्राम, हारि दियो सिंघाशण ताम ॥७॥ मंत्र तणो गण दियो वारु, अवर दीयो नंमार अपारु; मुकट दियो रला कोनिको; आभ्रणा सहित शुं दीधो टीको ॥८॥ गुफा डुसरी मांहि सीधावे, छत्र जलो युग चामर पावे; खमग मनोहर वस्त्र विशालु, कुसूम वाश न अधीक रसालु ॥ ९ ॥ गुफा तिसरि मांहि आवे, नाग सेज वर वेण लहावे; पाय पिढ सिंघाशणा कोमल, वस्त्र विभुषण पावे सोज्जल ॥ १० ॥ मंदिर कारी विद्या विधि, सेन तणी रखवाली सीधी; ए दोए विद्या आपी देवा, करजोमीने मांगे सेवा ॥११॥ चउथी वारे सो अवगाहे, जल वावीने पमीयो हलावे; मकरध्वज वर वारु लहियो, मकरकेतु सो नाम कहियो ॥१२॥ अग्नीकुंम मांहे पग ठावे, वार पंचमी सो शोजा पावे, कनक वस्त्र अग्ने धोवाए, युग्म लह्यां ते पुन्य पसाए ॥१३॥ मेपाकारे पर्वत दोइ, छविवार गयो तिंहां सोइ; मिलतां कोपर साथे खंमे, कुंमल युग्म लहि अती तंमे ॥ १४ ॥ वार सातमीए सहकार, उपर चढियो मदन कुमार; ऊंफोमी फल पामी नांखे, वानर रुप तदा सुर नांखे ॥ १५ ॥ आप जणावी चरणे लागी, बोल्यो देव प्रजु वम्जागी; गगन गतिनी पावमी विशाला, आपे मुकट सुधारस माला ॥१६॥ वार आठमी कपीठ तणे वन, चाल्यो मदन महा निर्नय मन; तरु उपर चढियो ततकाल, गज रुपि सुर अती विकराल ॥१७॥ युध करी प्रभु वश होइ, मनगमतो वर आपे सोइ; गज रुपी सुर हुं बुं स्वामी, समे समरवो अवसर पामी ॥ १८॥ नवमी वारे परवत उपर, चाल्यो कामदेव साहस धर; जुजंगा सुरमे लात वजाइ, उवियो करी संग्राम सजाइ ॥ १९ ॥ जाती नणी दीधो हय

रत्न, कावो कवच जीवनो यत्न; मुंद्रीका मनमोहन आपी, चाल्यो तास तिहां थीर थापी ॥२०॥ दशमी वार सराव
मुखे गीरी, हरी अंगज आयो जिम निज घरी, अंगद कंठीका वर लाधी, कंदोरो लायो सूर साधी ॥२१॥ एकादशमी
वार मनोन्नच, वराह तणे आकारी गयो तव; धनुष पुष्प नय पाम्यो पुरो, जय नामां वर संख सनुरो ॥२२॥ वारसमी
वारे बलवंतो, पंकज वनमें जाय रमंतो; विद्याधर वांध्यो छोडावे, कन्या काम जणि परणावे ॥ २३ ॥ विद्या दोइ
अनेरी दिधी, इंद्र शुं जाल करी प्रसीधी; हार हरख शुं आप्यो रुडो, मान्यो गुण नवि ए कुडो ॥ २४ ॥ तेरशमि
वारे अति तंमन, काल वने आयो कुल मंडन; जीत्यो देत न लागी वार, आप्यो कुसम धनुष उदार ॥२५॥ मदन
मोहन ताय न सोपण कर, उन्मादन ए पांच बाण वर; जन मोहन युवति उन्मादन, मदन नाम तिहांथी हरीनंदन
॥ २६ ॥ चउदशमी वारे सो पचारे, जीम गुफा मांहि पाव धारे, वस्त्र पुष्पको फूलकि सेज, आपे असुर धरी अती
हेज ॥ २७ ॥ जाइ मरवा कारण मेले, आपणमें चतुराइ खेले; पुण्य बले रुखमणीको जायो, तिम तिम वधतो जाय
सवायो ॥ २८ ॥ वने रणे अरीधे रणमांहि, अग्नी नीर सागरमें ग्राही; सोवत जागत विच विचालो; पुन्य एक मोटो
रखवालो॥ २९ ॥ एकोतेरमी ढाल वखाणी, वक्ता श्रोताने मन मानी; श्री गुणसागर पुन्य करीजे, मदन कथा मन
मांहि धरीजे ॥ ३० ॥ ॥ दोहा ॥ लाज देखी नवरु परे, आणे रीस अपार; जोर न चाले जवरशुं, पण न तजे
अविचार ॥ १ ॥ खेदि काढे नित्यको, सुरज जग हेतकार; तिमर न व्याप्या विण रहे, ए दुर्जन अविचार ॥ २ ॥
॥ढाल ७२ मी॥ निमजी नान वरसानी ॥ए देशी ॥ वर्जमुखो कहे जाइजी मन मोहना; तुम्हसम अवर न कोइ

लाल मन मोहना, जीहां २ जाइ संचरे म०॥ लाल घणेरो होय ॥ला० १॥ पनरसमी वारे हवे म०॥ विपुल वन पाउधार ला॥० गज जीम आयो गाजतो म०॥ तव ते विपनमोझार ॥ला० २॥ नाग जयंतकछे तिहां म०॥ वाहनी एक विसाल ला०॥ तेहने कांठे तरु तले म०॥ पद्म शिला सुवीशाल ॥ ला० ३॥ रुपशुं योवन गुणवंती म० ॥ पद्मासन आकार ला०॥ स्फाटीक तणी जप मालीका म०॥ ध्यावे ध्यान अपार ॥ला० ४॥ स्वेत वसन विराजतां म०॥ मस्तक बुटां केस ला०॥ शोभा पोखे सुंदरी म०॥ वर्णे गौर विशेष ॥ला० ५॥ चंद्रमुखी मृगालोचनी म०॥ वांकाभ्रमुहक माण ला०॥ तिन लोकनी नारीनो म०॥ वेगीले इ गुमान ला०॥ ६॥ सर्व अवेवां सोहनी म० ॥ रमणी रुप रसाल ला०॥ मदन तणे मनमोहनी म०॥ लागीए ततकाल ॥ला० ७॥ पांच बाण लाग्यां खरां म० ॥ मदन थयो वेफोम ला०॥ हम न जावा पावही म०॥ जेसुजीनकीरहम ॥ ला० ८ ॥ विबुधवंत शक आवीयो म०॥ भनो करीय जुहार ला०॥ कुंवर पुछे देवशुं म०॥ कुमरीनो शु विचार ॥ ला० ए ॥ देव भणे कुमर सुणो म०॥ खेचर प्रभजन नाम ला०॥ वाग देवि दीपती भली म०॥ जाइ कुमरी सकाम ॥ ला० १० ॥ रती नामे गुण आगली म०॥ नवयोवनमें एह ला॥० कुंअर कहे कष्ठे करी म०॥ कांखीजावे देह ॥ला० ११ ॥ रायतणे घर आवीयो म०॥ योगी लेणने आहार ला०॥ कुमरी वर पुछीयो म०॥ भांख्यो मदन कुमार ॥ला० १२॥ योग मिले तेहनो किहां म०॥ इणही वन अभीरांम ला०॥ ते माटे तप ध्यानशुं म०॥ ए वंछे वरकाम ॥ला० १३ ॥ लक्षण गुण आकारशुं म०॥ सो प्रभु तुही सकाज ला०॥ क्रीपा करी कन्या तणा म०॥ पुरो मनोरथ आज ॥ला० १४॥

पाणी ग्रहण करावीयो म०॥ पुण्या मनना कोड ला०॥ कामदेव रती कामनी म०॥ ए दोइ अवीहड जोड ॥ला० १५ ॥ लाज सोलमो तीणेवने म०॥ सकटा सुरथी होइ ला० ॥ कामधेनु पांमी नजी म० ॥ पुष्प तणो रथ जोइ ॥ ला० १६ ॥ एवंसोलह लाजशुं म०॥ मदन महा मयमंत ला०॥ पामी शोन्ना पुन्यथी म०॥ पुन्य वडो एकंत ॥ला० १७ ॥ जोतरी रथ पुष्प तणो म०॥ काम अने रतीनार ला०॥ बेशी आवे लिलशुं म०॥ माथे छत्र सुधार ॥ला० १८॥ चामर ढोले खेचरी म० ॥ आगे बहु परीवार ला० ॥ दिनमुखा जाइ सहु म०॥ शेवकरुपी अपार ॥ला० १९॥ सोले लाजे शोन्नतो म०॥ आवे कामकुमार ला० ॥ नगरी तणी शोन्ना करी म० ॥ मुख२ जय जय कार ॥ला० २०॥ कामनी कौतकने मिली म०॥ तरुणी बुढी बाल ला०॥ रती२ पतीने देखवा म० ॥ करे कतुहल ख्याल ॥ला० २१ ॥ खबर नही अंबर तणी म० ॥ थानवीपर्यय थाय ला०॥ तुट्यो हार न जाणही म० ॥ मोती खीर खीर जाय ॥ला० २२॥ कंकण काने पहेरीयो म०॥ गले कटी सुत्र उदार ला० ॥ माथे पहेरी मेखला म० ॥ कटी पेहेरयो वरहार ॥ला० २३॥ आंखे कुंकुम आंजीयो म०॥ काजल लायो गाल ला० ॥ आरूनरी अलते करी म०॥ आइ तमासे चाल ॥ला० २४॥ एक नणे भल नामनी म०॥ ए कर्मे तो कंत ला० ॥ पामी परतक्ष पद्मनी म०॥ रती राणी गुणवंत ॥ला० २५॥ एक वदे वनीतावली म० ॥ ए धन नारी उदार ला० ॥ सर्व सुलक्षण गुण निलो म०॥ पामी नल नरतार ॥ला० २६॥ हयंवर गयंवर वाहनी म०॥ लोक तणो नही पार ला०॥ दानेजलहल वरसतो म०॥ आया राजडवार ॥ला० २७॥ राय तणे पाय प्रणमीयो म० ॥ राय दियो बहु मान ला० ॥ प्रभुता

॥ मामलवाने अजजीयो म० ॥ आवी लाग्यो पाय ला०॥
पेखी पुत्रनी म०॥ जाएयो जन्म प्रमाए ॥ ला० २७ ॥ विनय करी विधीशुं तदा म० ॥ आगे बेठो काम ला० ॥
उठाइ उंचो लीयो म०॥ चुंव्यो कंठ लगाय ॥ला० २८॥ क्रश्न स्वेतने रातमा म०॥ लोयए निजा धाम ला० ॥
वारंवार अवलो कही म०॥ रुप अनोपम ताम ॥ला० ३०॥ दंत पंक्ति मुक्तामणि म० राति जीहां जास ला०॥
कंबु कंठ शुं कोमलुं म० ॥ चंद्र वदन अभीराम ॥ ला० ३१ ॥ कोमल कुंतल शामला म० जाणी जंघा जाए
नाक शिखा दिवा तणी म० ॥ अधर प्रवाला तास ॥ ला० ३२ ॥ वक्ष स्थल बनतो महा म० ॥ मेरु
ला० ॥ भुजा ललित लांबि घणी म० ॥ पोहला पाव वखाए ॥ ला० ३३ ॥ माता देखी मनोहरुं म० ॥
जीत आकार ला० ॥ मृगपतिनी कटि उपमा म० वर्णे सुवर्ण अपार ॥ ला० ३४ ॥ भेदी मनमथ बाणशुं
सुतनी सुंदर शोभ ला० ॥ रमण हसण संभोगनो म० ॥ लाग्यो मनमें लोभ ॥ ला० ३५ ॥ हाथ कपोला
म० ॥ दीन मुखी ततकाल ला० ॥ पाले मारी पोयणी म० ॥ तेहवी थइ शा बाल ॥ ला० ३६ ॥ एह
थापियो म० ॥ आतुर अधीक उदाश ला० ॥ मसकश रोवे खरी म ॥ लांबा लिये निसास ॥ ला० ३७ ॥
विधी देखी खेचरी म० ॥ उठि चल्यो मयण ला० ॥ आव्यो मंदिर आपणे म० ॥ मनमांहे सुख चयन ॥ ला० ३८ ॥
ए बोतेरमी ढालमें म० ॥ रति साथे घरवास ला० ॥ गुणसागर कही को शके म० ॥ कोम पवामा तास ॥ ला० ॥
३९ ॥ दोहा ॥ मदन गयो मंदीर चली, माननी मनहि मोझार; अरति हिलुर वाधी महा, सो जाणे किरतार
॥ १ ॥ रुप नहि ए पासठे, हिए विमासी जोइ; दिवे पमे पतंगीयो, शोच करे नहि कोइ ॥ २ ॥ ढाल ७३ मी ॥

चंद कुफेइं घर आवे हो ॥ तथा आज आनंद वधामणा, दिवा रूपम जिणंद; एकवार घर आवे हो मोहना ॥ [illegible]
देशी ॥ मोहन नावे जब लगे, तब लग चयन न होय; उन्हालाकी वेलुं ज्युं हो, सुकी जाये सोइ ॥ मो० १॥ [illegible]
न आवे नींदमी, लेता सास उसास; दिवस न लागे भुखमी हो, नां पाणीकी प्यास ॥ मो० २ ॥ सुणि न [illegible]
वातमी, आपणपे न कहाय; ऊंची नजरे आलोकवो हो, माथे सोर न थाय ॥ मो० ३ ॥ ए असहणी वेदना [illegible]
किम सहेणी जाय; सर्व शरीरे साल ज्युं हो, आज घणो अकुलाय ॥ मो० ४॥ लाज गइ निर्लज थइ, विविध [illegible]
विकार; वर वक्षोज विलोकहि हो, नहि जंजाइ पार ॥ मो० ५ ॥ आभुषण उतारीया, उचाटे न सोहाय; [illegible]
अहरु काटणा हो, सो दुख मांहि गणाय ॥ मो० ६ ॥ कां सरजी हुं कामनी, कां सरज्यो वर रुप; रुप [illegible]
हमारमो हो, विण रति कंत अनुप ॥ मो० ७ ॥ मदन ताप तपें खरी, कदली केरो वाय; बावन चंदन [illegible]
हो, शितलता न लहाय ॥ ८ ॥ चंद्र तणे कीरणे करी, हार अने घन सार; तनकी तपति मिटे नहि [illegible]
विण श्री काम कुमार ॥ ९ ॥ वैद विचिक्षण आवियो, देखे नाडी जाम; हाथ न आवे रोगहि [illegible]
नृप चिंता तुर ताम ॥ मो० १० ॥ एक दिवस कुंवर जाणि, बोले खेचर राय; माय दुहेलि ताहरी हो, [illegible]
व मासी जाय ॥ मो० ११ ॥ तुं सुखमें रमतो फिरे, न लहे मानि सार; ढोरुंनि होवे घणी हो, माने आश [illegible]
॥ मो० १२ ॥ कुमर कहे सुण तातजी, हुं नवि जाणुं एह; रोग असाध्य जे उपनो हो, माताजीने देह ॥ [illegible]
१३ ॥ माता तीरथ सारखी, माता मोटी होय; गर्भ धरे वे पोखवे हो, मा सरखी नहि कोय ॥ मो० १४ ॥ [illegible]

तीर्थ जे किया, तेतीसे सुर कोम; सहस अठ्यासी मानिया हो, मा मान्या करजोम ॥मो॰ १५॥ आयो मदन वतावलो, माताजीनी पास; देखी माजीम सांभली हो, आरती मांही उदास ॥मो॰ १६॥ उपर पमीयो अमवमी, माय माय पोकार; देदेवां उलंभमो हो, करे किशुं किरतार ॥ मो॰ १७ ॥ महारे एदो आंखमी, म्हारे अवर न कोइ; एम जाणी विधीसो करे हो, माय समाधी होइ ॥मो॰ १८॥ माहापणे नामी ग्रहे, वैदक सहुनो जाण; विविध प्रकारे विचारही हो, रोग तणो प्रमाण ॥मो॰ १९॥ ताव नही सिसको नही, नही त्रिदोषो दोष; काटी नही२ कुरु करी हो, कवण रोगनो पोख ॥ मो॰ २० ॥ रोग न जाण्यो जाय ए, वेद न तो असराल; माय उखे उखीयो महा हो, कामदेव नुपाल ॥मो॰ २१॥ एतो तिहुंतेरमी कही, ढाले सघन सनेह; गुणसागर सुरी जोयज्यो हो, विषय विमंबन एह ॥मो॰ २२॥ ॥दोहा॥ लोग सहु अलगां कियां, अलगां कियां गुलाम; बंमी ठोकरी ढांमके; अलगां राख्यां ताम ॥ १ ॥ लाज खोली लालच नणी, विकला इनि वात; करवा लागी कामनी, नाम धरावी मात ॥ २ ॥ फिट फीट फीटकार तुं, फिटकारो सो वार; विषिया माथे ताहरे, ए तुफ चरीत्र अपार ॥३॥ ढाल ७४ मी ॥ ॥ नाथ तेरे साथ चलुंगीरे ॥ ए देशी ॥ लालन लिल करुंगीरे, आगे नेह धरुंगीरे; तेरे संग रहुंगीरे ॥ ला॰ १ ॥ पूर्व नवंतर केरो प्यारो, नयणे नेह जणायो; योवन मद मदिरा मतवाली, मन हाथी विफरायो ॥ ला॰ २ ॥ न आले देवाले माले, लारे चित लगायो; रोम रोमथी काली सलगी, युहिम तरु न रहायो ॥ ला॰ ३ ॥ कांइ सुधी न बुधी विबुझे, आंधाहिथी आंधी; भुह कमान गुमान घणेरे, रहि नयणा सर सांधी ॥ ला॰ ४ ॥ वाप न नांइ बेटो जाणे, विरह

करालि वालि; आप विगुति जुंमणी, चहुटे चभी चंमालि ॥ ला० ५ ॥ नकं टाले आते मुके, पास पड्या ज पावे; वनिता वेलि वलगी आवे, वेगे वार न लावे ॥ ला० ६ ॥ निर तणी गति नीची जेहवी, तेहवी ए जग नारी; काम अकाम करंत न लाजे, आदि लगे अविच्यारी ॥ ला० ७ ॥ पंकजणी नारी दो सरखी, अंतर नहिय लगार; हंस चमरने सम करी जाणे, नाणे किंपि विच्यार ॥ ला० ८ ॥ अवर रमे अवरासुं नासे, अवरा साहसुं जोवे; चिंते अवर अवर शीर डपण, देइ आप विगोवे ॥ ला० ९ ॥ दिने मर आणे दोरे दिवे, राति अहि फण मोमे; डंवर अमवमती अणीआले, मूंगर चढवो डोमे ॥ ला० १० ॥ डंदरथी मर माने अधीको, केसरी काने साहे; नारी चरीत्र लिखे ब्रह्माजो नांखे घणेक माहे ॥ ला० ११ ॥ चुलनि स्तलनि कुविस न वाटे, सुरि कंता साची; उतो सुत छतो पति हणेवा, परतक्ष थइ पे साचि ॥ ला० १२॥ काम कटकमें नारी नायका, ए वल पुंठे लाग्या; मारी लीया जे साह्मा आया, लुब्धा जे नर नाग्या ॥ ला० १३ ॥ हुंतो सुंदरी सामा साची, तुं योवन मदमातो; वय विलसि जे लाहो लिजे, फीरी नावे दीन जातो ॥ ला० १४ ॥ वुढो वयल ने वुढो घोमो, वुढो हाथी हासो, वुढो मानव मान न पावे, तरुणी साथे तमासो ॥ ला० १५ ॥ माथो धुणे कर कंपावे, मोहढे लाल स्वरंति; अति असोहावो नाह अजावो, नारी नेह धरंती ॥ ला० १६ ॥ विण सर दहण वखाण करेवो, देवि हाथ गहेवि; वुढापणे तरुणी परणवी, ए पर काज कहावे ॥ला० १७॥ मो मन हाथी इछा चारि, फीरे मह्रा मतवालो; होइ महावत जोग अंकुसे, वहतो पाछो वालो ॥ला० १८॥ मुंदि कान मिचि युग लोचन, मोहमे धीगश जाशे; रे पापणी शुं पाप प्रकाशे, तुम

पापे जग नासे ॥ ला० १९॥ हुं तुझ नंद तुं मुझ माता, इम किम कहेता आवे; यद्यपि मांस भखे नर लंपट, हाम गले नर हावे ॥ ला० २० ॥ खेंचरी भांखे तुं नहि नंदन, हुं नहि थारी माता; पमीयो पाम्यो लेइ उछेर्यो, हम तुम्ह विचे विध्याता ॥ ला० २१ ॥ आपण वावियो व्रक्ष विशेषे, को फल तास न खाय; राखी निवाण आपे जल पितां, कहो शुं डुषण थाय ॥ ला० २२ ॥ बोमी विच्यार २ शिरोमणी, कथनी दीसे कोमी; मान बोल मुझके तुझ माथे, जास्युं काया बोमी ॥ ला० २३ ॥ वात विरुध सो सुध विहुणी, एतो परवश भांखे; पुरुष पनोता काज अकारज, जाणी आपुं राखे ॥ ला० २४॥ उत्तर आपे मात मयाकर, इम मुझथी किम बुझे; निंद्यकथी अति निंद्यक काम ए, कुलवंतां नवी सुझे ॥ ला० २५ ॥ हाथी बारो वाटे फिरतो, अंकुशथी फिरी आवे; पीहर सासरा केरी लाजे, नारी आपरराखे ॥ला० २६॥ वारु वार विच्यार विशेषे, माताजी समझावी; वात न माने मयणाराय तव, वनमें बेगो आवी ॥ला० २७॥ढाल चमोतेरमांही खरी ए, खेचरणी खलखाती; श्रीगुणसागर मदन उवारी, विण पाणी वही जाती ॥ला० २८ ॥

॥ दोहा ॥

बेठो एकाकी आवीयो, साथे शील सुलतान; कुमर कदर्थन देखीने; मन धरतो सुभ ध्यान ॥१॥ बाग नगरने बाहीरे, सुतो धरी मन धीर; कनक माताए शुं कह्युं, चित चिंते वमवीर ॥२॥

॥ढाल ७५ मी॥ मुनीश्वर माहरे अतशुं काम ॥ ए देशी ॥

एकाकी उदाशीयोजी, मदन नरेश्वर जाम; दिठा मुनीवर पांच तीजी, जाइ करे परणाम ॥ १ ॥ मुनीवर भांखे एह विच्यार, माताने केम उपजीजी; सुतशुं काम विकार ॥ मु० २ ॥ चरीत्र सुणावी पाछलाजी, ज्ञान तणे बल जोय; इंद्र प्रभानो जीवमोजी, कनक मालाए होय

फरालि वालि; आप ।वगुति जंमणी, चहुटे यकी चंमालि ॥ ला० ५ ॥ नकं टाले आले मुके, पासे पड्यो जे
पावे; वनिता वेलि वलगी आवे, वेगे वार न लावे ॥ ला० ६ ॥ निर तणी गति नीची जेहवी, तेहवी ए जग नारी;
काम [illegible] ॥ —
॥मु० ३॥ काम रागनी व्यापनाजी पोसाणीथी भूर; तेही अभ्यासे उपनीजी, ए तुक साथे चुर ॥ मु० ४ ॥ काम
कहे करुणा करोजी, गुण मणीना संदोह; जणणीए किम पामीयोजी, मुजशुं एह विछोह ॥ मु० ५ ॥ जंबुधीए जा
णीएजी, खेत भरत गुण धाम; मगधदेश मांहे जलोजी, लक्ष्मीपुर अनीराम ॥ मु० ६ ॥ सोम शर्मा नामे वसेजी,
ब्राह्मण विद्या पात्र; कमला२ सारखीजी, नारी मनोहर गात्र ॥ मु० ७ ॥ पुत्री तो लक्ष्मी वतीजी, लाअहंकारणी
सोइ; एक दिवस रुपी आवीयाजी, वोहोरण काजे जोय ॥ मु० ८ ॥ रुप निहाले आपणोजी, आरी सामे जाम;
पाछो रुपी उनो हुवोजी, किधी निंदातास ॥मु०९॥ मुनी निंदाना दोषथीजी, लही कोढनो रोग; पामी सादीन सातमे
जी, मरण तणो संजोग ॥ मु० १० ॥ खरी२ ऊखणी थइजी, मरीशुं करी होय; कोटवाले वाये हणीजी, समी
कुंकरी जोय ॥मु० ११॥ अग्नी झालमांहे वलीजी, तवथी वरणी थाय; पुर्व पाप प्रजावथीजी, वेही घणुं गंधाय ॥मु०
१२॥ गंगा पासे कुटीकाजी, रहे स्वजनथी उर; वनफल नखी नीरुंर पिएजी, करे उदर भरपुर ॥ मु० १३ ॥ शित
काले फरतो थकोजी, सोइ रुपीसर जाण; ध्यान योग्यने ध्यावतोजी, दिवो पुन्य प्रमांण ॥ मु० १४ ॥ साम्प्रतीशे
वासावयेजी, सुन कर्मने योग; पुरव जव सुजावीयोजी, ज्ञांन तणे उपयोग ॥ मु० १५ ॥ पश्चाताप करे घणोजी,
मुनी निंदाना पाप; आलोइ सुन जावशुंजी, सुध कियो घट आप ॥मु० १६॥ समकीत धर्म समाचर्योजी, श्रावकना
व्रतधार; आवी नगरी कोसलाजी, आतमने हेतकार ॥ मु० १७ ॥ साधवीयां पासे रहेजी, तप नाना विध किध;
राज यही आव्या वहीजी, उत्तम संगतिलीध ॥ मु०१८ ॥ गफा मांही साधवीजी, वार रही सावाल; विछुरी चाये

घणुंजी, प्रांण तजा ततकाल ॥मु० १ए॥ पहीले सुर लोक उपना..., ...
राय घरे पट नार ॥मु० २०॥ रामत मिसे हाथे लियांजी, मोरली इंमा जोय;धर्मी सोलने आंतरजा, आदरा... ...
सोय॥मु० २१॥ विमल मती गुरुणी कन्हेजो, राणी संजम लीध; अणसण उत्तम मासनोजी,विणआलोयण किध
॥मु० २२॥ स्वर्ग बारमे सासतीजी, सुरपदना सुख पाय; हुइ राणी रुखमणीजी, कामदेव तुम्ह माय ॥ मु० २३ ॥
किधा कर्म न बुटीएजी, वरस सोल लगी देख; विरह तुम्हारो पामीयोजी, माताएशुं विसेप ॥मु० २४॥ माता पासे
जाइनेजी, लहु विद्या दोइ; प्रज्ञापतीने रोहीणीजी, अती वरदाइ सोइ ॥ मु० २५॥ सीषरुपी पंच्योतेरमीजी, ढाल
भली कहेवाय; गुणसागर रुखमणी तणोजी, चरीत्र महा सुखदाय ॥ मु० २६ ॥ ॥दोहा॥ मदन कुमर फीरी
आवीयो, खेचरणीने संग; विण प्रणाम बेगो सही, साची ते मन रंग ॥१॥ रुप नाथने नाथीयो, ए आयो हम पास;
वचन विशेषे मानशे, दिसेछे उल्हास ॥ २ ॥ ढाल ७६ मी ॥ ॥ मन भमरानी देशी ॥ तव बोले शा सुंदरी,
सुण भोग पुरंदर; मान वचन मुज आज, सुण२ भोग पुरंदर; विविध प्रकारे ताहरा सु०॥ सारुं वंछित काज ॥ सु०
१ ॥ प्रज्ञापतिने रोहिणी सु० ॥ मोटी विद्या एह सु० ॥ प्रित रीतशु रिझवी सु० ॥ आपुं आणी सनेह ॥ सु०
२॥ धुतो धुतेवा भणी सु० ॥ वोले मीठा बोल सु० ॥ आज लगी लोप्या नहि सु० ॥ थारा बोल अमोल ॥सु० ३॥
हुं बुं किंकर ताहरो सु० ॥ आज्ञाकारी जोय सु० ॥ दो विद्या परमेश्वरी सु० ॥ जेते भांखी दोय ॥ सु० ४ ॥ विषिया
वश आतुर थइ सु० ॥ धोलो जाण्यो डुध सु० ॥ दीधी विद्या वीधी कही सु० ॥ होइ गइ अति शुध ॥ सु० ५ ॥

मतवालीथी अती घणी सु० ॥ मतवाली ए जोय सु० ॥ जतो धन नवि दाखवे सु० ॥ ए रही विद्या खोय ॥सु०६॥ विद्या साधी सज करी सु० ॥ पायो बहु संतोष सु० ॥ खेंचरणी शुं खरखरा सु० ॥ बोले वचन सरोष ॥ सु० ७ ॥ मे नवि दीवो तातजी सु० ॥ नवि दिठि निज मात सु०॥ तात मात तुहि सहि सु० ॥ म कहे बीजी वात ॥ सु० ८॥ वाचा पाली विशेषथी सु० ॥ जगमें वाचा सार सु० ॥ वाचा विचली जेहनी सु० ॥ वादी गयो अवतार ॥ सु० ए ॥ कहे रामजी जरत शुं सु०॥ बोल न बोलं आए सु० ॥ हिन प्रतिज्ञानो धणी सु०॥ तजवो जेम मसाण ॥ सु० १०॥ किंवा को निंदा करे सु०॥ कोइ करे गुण ग्यान सु० ॥ लक्ष्मी जाउ फीरि आउ सु० ॥ न तज्यु न्याय निधान ॥ सु० ११ ॥ पहिलि लो तुं मायजी सु० ॥ पालवानेकाज सु० ॥ विद्या दान तणि दाता सु० ॥ गुरुणि हुइ आज ॥ सु० १२ ॥ वज्रपात समानसा सु० ॥ सांजलि वचन विचार सु० ॥ जलिवापणी वलगवा सु० ॥ चाल्यो करीय जुहार ॥ सु० १३ ॥ हाथ घसे कुटे हियो सु० ॥ शोच करंत अपार सु० ॥ ठग न ठग्यो ठगे हुं ठगी सु० ॥ विद्या पोइ सार ॥ सु० १४ ॥ कोइ उपाय केलवि सु० ॥ लाउं शिख जे वार सु० ॥ छुख ज्वाला शिलि करुं सु० ॥ पामुं चयन ते वार ॥ सु० १५ ॥ आप विलुरि तन घणुं सु०॥ मांमे आति तोफान सु० ॥ रोति न रहे राखतां सु० ॥ पुछे तव राजांन ॥ सु० १६ ॥ विलचिवा घणी वलवले सु० ॥ ए तुम्ह सुतना काम सु० ॥ होय वटाउ आपणा सु०॥ तो घरनो स्यो नांम ॥ सु० १७ ॥ जे निज ते निज जाणीए सु० ॥ जे पर ते पर होइ सु० ॥ मंदिर वसे न प्राहुणे सु० ॥ एम जाखे सहु कोइ सु० १८ ॥ प्रजुजी तुम्ह प्रसादथी सु० ॥ गोत्रजदेव पसाय सु० ॥ शील न जांग्यो मुजथी सु० ॥ पण न

जो परन्नव पोचाडं सु० ॥ तो तो जिववो सहि सु०॥ नाहितर
रह्यो तनुमें कांइ ॥ सु० १ए॥ ज्ञीवा लुम्न कुलंवने सु० ॥ सोक्यांना ऊगमा विषे सु० ॥
काव धखाड ॥ सु० २० ॥ भ्रात तपे भ्राति आकरी सु० ॥ भ्राति विन्या न तपाय सु०॥ मारो
माता जुगी थाय ॥ सु० २१ ॥ राजा रीसे परजल्यो सु० ॥ न लह्यो मर्म लगार सु० ॥ पुत्राने तेम्नी कहे सु०॥ दाव
मदन कुमार ॥ सु० २२ ॥ जन अपवाद निवारवा सु० ॥ गुपत पणे ए काज सु० ॥ करवो ए उतावलो सु० ॥ विद्या न्नेद जणावियो
लह्यो हम आज ॥ सु० २३ ॥ मदन कुमर आगे करी सु० ॥ स्नान करवा जाय सु० ॥ व्रद्ध चाम्नि म्नाकी
सु० ॥ बीजो रुप धराय ॥ सु० २४ ॥ आपण अलगो जइ रह्यो सु० ॥ पोते करे सुकुमार सु० ॥ उर्द्ध पाव
पम्न सु० ॥ फूले वाविमोझार ॥ सु० २५ ॥ शिलाविक्रुविमोटकी सु० ॥ वावि तणे परीमाण सु ॥ साहण
अधोमुखे ॥ सु०॥ दाव्या तेहि अयाण ॥ सु० २६॥ एक न खिल्यो ते गयो सु०॥ राजा पासे पोकार सु० ॥ साहमो काम कुमार सु० ॥
वाहण सामटे सु० ॥ राय चढ्यो तेहिवार ॥ सु० २७ ॥ चतुरंगी सेन्या सजी सु० ॥ दुर्जय मदन विचारीयो सु० ॥ विद्या मागे राय
आयो आम्नंबर घणे सु० ॥ न्नाग्यो न्नरम अपार ॥ सु० ॥ २७ ॥ ए नारी विन्नीचारणि सु० ॥ चरीत करे लख
सु० ॥ नारि कहे लेइ गयो सु० ॥ राजा तव पिछताय ॥ सु० २ए ॥ जनक जीति जस वंछीइ सु० ॥
कोम्न सु० ॥ फिरी आयो रण न्नोमीका सु० ॥ पुत्र नम्यो करजोम्न ॥ सु० ३० ॥ व्रद्ध विशेष वाधीयो, सु० ॥
सो अपजस अवधार सु०॥ तिर्थ मांहे मानीयो सु०॥ जनक वम्नो संसार ॥सु० ३१॥ एह विवेक विच्यारवे
नवो न्नेदे आकाश सु०॥ यद्यपी ऊंची नाशीका स०॥ तोहो पण शोर तले वास ॥ सु० ३२ ॥

सु० ॥ कामे तज्यो अनीमान सु०॥ तावेता कंचन तणो सु० ॥ वेवे वये घनवांन ॥सु० ३३ ॥ ज्वार सालने तरु फल्यो सु०॥ चउथो साजन देख सु०॥सहेजे हिनमणा हुवा सु०॥ मदन तो जाण विशेष ॥सु० ३४ ॥ बंधव बंधन छोडीया सु०॥ मलीयो बहु परीवार सु०॥ घर घर रंग वधामणा सु०॥वरत्यो जय जयकार ॥सु० ३५॥ विनय करीने विनवे सु०॥तात करो शुविच्यार सु०॥ तेग फिरे किम तेहनी सु०॥ जेहनो हिण आचार ॥सु०३६॥ सात अने वली सोलमी सु०॥ ढाले शिल वखाण सु०॥ गुणसागर उपदेशीयो सु०॥ शिल शुधर्म प्रधान ॥सु०३७ ॥दोहा॥ नारदरुपी अवलो कियो, पुत्र प्राक्रम कोड; चाली आयो आशनो, मदन नम्यो करजोड ॥१॥ मदन कहे सुण वापजी, माहरे जग नही कोइ; माय वाप वैयरी थया, कहो किशी गती होइ ॥२॥ तुझसम अवर सोभागीयो, को नही जगतमोझार; वाप क्रश्न मा रुखमणी, यादवनो परीवार ॥ ३ ॥ हुं आयो तुझ तेडवा, चाल मलावीश वार, अवसरनो आगम भलो, जीम जगमें जलधार ॥४॥ अवसर आयो पवनसुत, सत्य वंती उछरंग; वैसला पण अवसरे, फरसे लक्ष्मण अंग ॥५॥ अवसरथी सुग्रीवनां, रामें समार्‍या कांम; रावण बंधव पामीयो, लंक पतीनो नाम ॥ ६ ॥ अवसर पांडु पधारीया, कुंतीका पण फंद; अवसर पांडव प्रगटीया, करवा कौरव मंद ॥ ७ ॥ अवसर यादव देखीए, भलो कियो उपगार; अवसर चुक्या मानवी, सोच करे अपार ॥ ८ ॥ चलु न पाणी पाइयो, जीवतडाने जोय; घडा सो रेड्या उपरे, मुआ पछी शुं होय ॥९॥ भामा शुतना व्याहमें, तुझ माता शिर केस; लियासा जीवे नही, तुझ मन धाय कलेश ॥१०॥ ढाल १७ मी ॥ आठे जाल ए देशी॥ बोले मदन कुमार, सुण नारदशुं विच्यार ॥

आवे०॥ माय बापने बुझी इं, ते तो गमन कराय; अणपुछया न जवाय आ० ॥ आगल पाछल सुझीइ ॥ १ ॥ मात पित्याना पाय, प्रणमे बहु लेनाय आ०॥ कोमल वचन प्रकासतो ए, तातखमो अवराह; में दिधो डुख दाह आ०॥ दिनपणो अति नासतो ए ॥ २ ॥ माता सुण अरदास, हुंतुं थारो दास आ०॥ आश हमारी पुरवी ए, पमीयो पथर मांही; ऊगायो ऊगाही आ०॥ आरती चिंताचुरवी ए ॥३॥ वैरी केरे वास, तुम्ह पसाइ आश आ०॥ पुगी माह्हरा मन तणी ए, नाइ नाया यान; करता हरता प्रांण आ०॥ पहुंची न शक्यो तुम्ह नणी ए ॥ ४ ॥ हुंतो दिन अनाथ म्हारो कोइ न नाथ आ०॥ गगन पमतो झिलीयो ए, थारा किधा काज; ए सघला शुन साज आ०॥ पाप पराजव पिलीयो ए ॥५॥ जेहने पोढा पाप, प्रगटे आवीयो आप आ०॥ माय विछोहो तेहमें ए, नुमा मांही एह; नलपण केरी रेह आ०॥ तुम्हशी जणाणी जेहने ए ॥६॥ विसारे मती मोय, माय विनवुं तोय आ०॥ हइमा नींतर राखवो ए, मुझने बालक जाण; चुंबी मुह शीर पाण आ०॥ प्रेम अमीरस चाखवो ए ॥ ७ ॥ ग्राती फाटे माय, पिता पण इम थाय आ०॥ चलधारा आंसु वहे ए, विसार्‍यो नवी जाय; राख्यो पण न रहाय आ०॥ जेह लेहणो सोइ लहे ए ॥८॥ अवर माताने शीश, नामी लेइ आशीश आ० ॥ कोमी वरस चिरंनंदजे ए, नाइ तणो परीवार स्वाम मदन कुमार आ०॥ नाइ नणे आनंद जे ए, ॥ ए ॥ सुण मोटा मंत्रीश, खामुविशवावीश ॥ आ०॥ जे मेरो सधरावीयो ए, सुनट सहु करजोम; आपनमे मन मोम आ०॥ खमज्यो जोर करावीयो ए ॥१०॥ नेतावान गुलाम, तेहने पण सलाम आ०॥ डंरण हुइने हालीयो ए, नान्हा मोटा साथ; घाली गलामां वाथ आ०॥

[४]
चित्त चोरीने चालीयो ए ॥ ११ ॥ मस्तक विण जम देह, नाक विना मुख एह आ० ॥ तारा विण जीम लोयणा ए, पान विना जीम वेल; जल विण सरोवर मेल आ०॥ लुण विणा जीम जोयणा ए ॥१२॥ विद्या विण जीम देवि, हरी विण दरिये कहेवी आ० ॥ देवा विण जीम देहरो ए, विण श्री काम कुमार; सुना घर दरबार आ० ॥ लाजन घर शिर सेहरो ए ॥ १३ ॥ बेसी विमाने ताम, नारदशुं अभीराम आ० ॥ सुझो जीम झमी गयो ए, हेज हइए न समाय; हिंसे जीम वठ गाय आ० ॥ मा मिलवाने अलजीयो ए ॥१४॥ नारद कृत शुं विमान, तोझे लात प्रमाण आ० ॥ हाशा हिए न समावही ए, बावाजीशुं ताम; बोले कुमर काम आ० ॥ कामे शुं न सोहावहि ए ॥१५॥ हुंतो बुढो देख, तुं तरुणो शुं विशेष आ० किंउ न करे मन भावतो ए, रचे विमान रसाल; सबहि विधी सु विशाल आ० रविमंडल जीम आवतो ए ॥ १६ ॥ चाले थोमी चाल, कहे नारद ततकाल आ० ॥ किंउ न चले वेगो वहि ए, नारद वदन तुरंत; तूटेपो परदंत आ०॥ वेगे चलायो तिम सहि ए ॥१७॥ रुपाचल गीरि सोइ, उलंघीया ते दोइ आ० ॥ प्रथवी उपरे आवीया ए, खदिरा अटवि जेह; तक्षक परवत तेह आ० ॥ शिला थान देखाविया ए ॥ १८ ॥ जुमंझलना ख्याल, गीरी सरीता सुविशाल आ० ॥ विविध प्रकारे देखतां ए, मध्य देशमें देव; आइ गया ततखेव आ० ॥ वारु वस्तु विशेषता ए ॥१९॥ नारद लायो लाल, एतो ढाल रसाल आ० ॥ भांखी सत्योतेरमी ए, श्री गुणसागर एम; बोले बोल सप्रेम आ०॥ मदन कथा मुझ मन रमी ए ॥२०॥ ॥ दोहा ॥ सेना दिठि सामटी, हय गयनो नाहि पार; राज कुमार राजा घणा, वाजे वाजां सार ॥ १ ॥ मदन कहे रुपि ए किंहां, जाइ दल

वळ पुर; खेंचरामें नांवे पखाया, एहवा लोग सनुर ॥२॥ रुपी नांखे गजपुर धणी, डर्योधन नृपाल; चतुरंगी सेन्या नली, तेहनि ए सुविशाल ॥३॥ होम्ह पम्नी जीही कारणे, रुखमंणी नामा मांहे; उदधी नामे शा कुम्रारी, परणवा चालि उबाह ॥ ४ ॥ नामा धरे दिन बारमे; सुतनो थाप्यो नाम; नानु विशेषे नानुने, तेह स्युं व्याहण काम ॥ ॥ ५ ॥ ढाल १७ मी ॥ ॥ नणदलनी देशी ॥ कुंवर कहे सुण तातजी, नारद ए मुझ वात ॥ कुंमर० ॥ कौतुक करतो नहि रहुं, राखे शुं आखियात ॥ कुं० कौ० १ ॥ रुप धर्‍यो तव भिलनों, विरलो वदन विशाल कुं० ॥ मोटा दांत बिहामणा, प्रौढ वणायो भाल ॥ कुं० कौ० २ ॥ जंघा कुआ सारिखा, गाल मरावण हार कुं० ॥ भिले वली अति लील्हरी, पिला केश अपार ॥ कुं० कौ० ३ ॥ लोचन दिसे रातमां, दिसे मोटी काय कुं० ॥ ढोटा कर अति डबला, मोटो पेट कह य ॥ कुं० कौ० ४ ॥ जाभी जांघ सल घणा, रुपे रुप करुप कुं० ॥ वेठि चिपटी नाशिका कान विराजे सुप ॥ कुं० कौ ५ ॥ अंकुश अति आकरां, नांगी केम देखाय कुं०॥ भृगुटी नाले नमनमे, भीलां केरो राय ॥ कुं० कौ० ६ ॥ हाथे तीरनो कामठो, थोथां बाण वेच्यार कुं० ॥ गाति वालि अवसुं, वचन वदे आविच्यार ॥ कुं० कौ० ७ ॥ मारग रोकीने रह्यो, कोइ न सके जाय कुं० ॥ कौरव केलवणी करे, आगे जना आय ॥कुं० कौ० ८॥ रे नाइ तुं स्युं कहे, कोरे कीजे माग कुं० ॥ सो नांखे तुम्ह सांभलो, दाण तणो मझ लाग ॥कुं० कौ० ९॥ कौरव बोले भीलमा, बोल विमासी बोल कुं० ॥ स्युं हम नाला वाणीयां, आपे दमभा खोल ॥ कुं० कौ० १० ॥ कंस कह्यो छे मुझ भणी; म्हारा देशमोझार कुं० ॥ वस्तु भलि ते ताहरी, हुं तुं कंस कुंमार ॥ कुं० कौ० ११ ॥ तुम्ह सरीखा छे केटला,

ऋश्भ तणे घर नंद कुं० ॥ मुझ सरीखो तो हुंज तुं, ऋश्भ तणे कुल चंद ॥कुं० कौ० १२॥ तुं साचोरे तुं साचो, माता जायो रत्न कुं० ॥ रत्न अछुं चिंतामणी, क्युं न करो तम्ह यत्न ॥ कुं० कौ० १३ ॥ यत्न करे सा अति घणुं, पुजे स्या तुझ पाय कुं० ॥ ए आवी हाथ विहथमें, जीत्न किया स्युं थाय ॥ कुं० कौ० १४॥ तो हुं जायो ऋश्भनो, मारुं थारो मान कुं०॥ ठाकुर करम्रा चाहीए, ए गोएह मेदान ॥कुं० कौ० १५॥ तां लगे तेमनी व्यापना, ज्यां लगे न वगे तुर कुं०॥ नाचे कुदे रहण लो, नायो सिंघ हजुर ॥कुं० कौ० १६॥ कौरव तुम्ह कपटी घणा, कपटतणे बल जोइ कुं०॥ जुमी हम्रावी पांम्वा, रीस घणी मुज सोइ ॥कुं० कौ० १७॥ उधीनपोधी नथाहरी, जुगे करो गुमान कुं०॥ वम्रमाता विनचारणी, थारा एह व खाण॥कुं० कौ० १८॥ आंधे जाया आंधला, होइ फिरो तुम्ह आप कुं० ॥झीतुदीगठे घणा, मिल्योन कालो साप ॥कुं० कौ० १९॥ यद्यपी वादल ढांकीयो, तेज जणावे नाण कुं०॥ विणसी जाणी गोठमी, विच करे प्रधान ॥कुं० २०॥लेयोम्रो ले हाथीयो, जे थारे मन जाय कुं०॥ जेहनी जेहने सुंपतां, रोस किसो तुम्ह राय ॥कुं० २१॥ घोम्रा हाथी शुं करुं लेशुं आठी वस्तु कुं०॥ माहरा मनमें जावती, देसी वस्तु समस्त ॥कुं० २२॥ आठीमें आठी घणी, आठी कुंमरी जोय कुं०॥ सोइ आपो मुझ जणी, हरी रलीयायत होय ॥ कुं० २३ ॥ थारे तो ए हासछे, पण माहरे ए सात्त्व कुं०॥ तो हुं जायो बापनो, पालुं बोली वाच ॥ कुं० २४ ॥ जीम२ हठ पोखीयो, पातसाहकेपास कुं०॥ तिम हठ पोखु हुं घणो, तो देज्यो साबाश ॥कुं० २५॥ ढाल जली अगेतेरमी, कौरव शुं संवाद कुं०॥ गुणसागर जस पावशे, पुरव पुन्य प्रसाद ॥कुं० २६॥ ॥ दोहा ॥ रे रे निर्लज ढीठतुं, नांखे किस्युं गेमार; सोम्र देखी धुर आपणी,

किजे पाळपसार ॥१॥ नान्हे मुहमे मोटीका, बोले बोल न कोइ; बोले तो पावे सही, गाल चपेटा सोइ ॥२॥ हुश करी जे तेतली, जे तो पुन्य प्रकाश; आंबो अंबर जइ रह्यो, वामन शिफल आश ॥ ३ ॥ ॥ ढाल ७एमी॥ नेम आयो सावन मास हो ॥ ए देशी ॥ वामन शीफल आश हो, कौरव नांखे तास हो; तास नहो नांखे कौरव राजवी ए, नैरव झंपापात हो; करी निज आत्मघात हो, घात नहो पावे नारी अनी नवी ए ॥ १ ॥ एशुं स्यो ऊखवाद हो, वाद सहु निस्वाद हो; स्वाद न हो स्वाद न लागे कोनलो ए, साही नाखो डर हो, चालो ए हने चुर हो; चुरनहो चुरी चल्यो कोम तिटलो ए ॥२॥ एकथो दरवेस हो, मनोरथ शुं विशेस हो; सोसनहो लाते फूव्यो खापरो ए, हुवे नागो गेह हो; तेहवो दिसे एह हो, एह नहो मारी किजे पाधरो ए ॥३॥ दल चाल्यां अनी राम हो, दल रोकीयां ताम हो; तामनहो ताम रोक्यां ए दल सहु ए, सुनट मारण काज हो; धाइया सजी साज हो, साजन हो साज सजे ते बहु ए॥४॥ कुकुल सुणी कान हो, सबर मलीया आण हो; आणनहो शबर मिलीया अति घणां ए, विविध आयुधवंत हो; युध्धमें बलवंत हो, वंतनहो मान मोम्हे परतणा ए ॥ ५ ॥ नुमीने गीरी श्रृंग हो, वृक्ष उपरी रंगीन हो रंगीन हो रंगी रमतां देखीए ए; कृष्ण अंगज कोमी हो, नम्र शरीरोमणी जोम्ही हो, जोम्हीनहो होम्ह को न विशेखीए ए ॥ ६ ॥ सुनट नाठा जाइ हो, को न साहमा थाइ हो; थायनहो सिंघ साहमां हरणीला ए, उदधी कुमरी लिध हो; नीला कारज शिध हो, सिधनहो काज अती वाधी कला ए ॥७॥ देखीयो रुषी राय हो, ए न लीधो जाय हो; जायनहो ए न लीधो सुरनरां ए, लावीयो ततकाल हो; साधु पासे बाल हो, बाल नहो

किधो रुप पुरंदरु ए ॥ ८ ॥ इरथी देखंत हो, पुछही गुणवंत हो; वंतनहो कवण ए सुख कारीका ए, कहे नारद ताम हो; सुणही कुंवर काम हो, कामनहो एवर नगरी द्वारीकां ए ॥९॥ स्वर्ग खंम समान हो, उपमानो थान हो; थाननहो एहवो विजो को नही ए, कृश्नराय निवास हो, महा साल आवास हो, वासनहो वास रुमोठे सही ए ॥१०॥ हेम में पागर हो, तुगन ह्राय अढार हो; गारनहो रत्न मणीमें कांगुरा ए, देव निर्मीत काम हो; स्वर्गपुरी समवाम हो, वामनहो पुरीयो वमवमा नरा ए ॥ ११ ॥ वावी को विस्तार हो, नीर पुरीत सार हो; सारनहो नारी मंजन कारणे ए; वमा श्री गजराज हो, मद झरंत सकाज हो; काजनहो मदजले रज वारणे ए ॥१२ ॥ महोल तणी वरउसी हो, बणातीश पोली हो; पोलीनहो पोली तो उंची कही ए, सकल कांती अपार हो; उगंतो दिनकार हो, कारनहो कांति किरणे मीली रही ए ॥ १३ ॥ हाट घर वरसोह हो, सोहनो संदोह हो; दोहनहो सोह गुणे धन जाणीयो ए, स्वर्ग मर्त पाताल हो; तिन लोक रसाल हो, सालनहो सार शोधीने आणीयो ए ॥१४॥ पुरी देखण जाय हो, साधु आमो थाय हो; थायनहो थाए आमो सादरो ए, यादवनो अति जोर हो; थारो चित्त चकोर हो; कोरनहो सोर माचे सोपरो ए ॥ १५ ॥ शहेर मांहि जाय हो, मिलस्युं तुम्हने आय हो; आयनहो आवे शुं वलावसो ए, पुरीसुं शंकेत हो, माय मिलवाने हेत हो; हेतनहो चितमें उमाहलो ए ॥१६॥ जाति कौरव काल हो, आवीयो सुकुमाल हो; मालनहो ढाल ए एगुणएशीमी ए, मदन महिमा माल हो; सुरन्नीनें सुविशाल हो, सालन हो गुणसागर मन सारमी ए ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ मदन कुमर मन रंगशुं, थंभी गगन विमान; आवे नगरी

द्वारिकां, गुप्तपणे गुण जाण ॥१॥ धुर आयो चोजगानमें, बंधव नयणे दिठ; सुंदरता अविलोकतां, लोयण अमीय पइठ ॥ २ ॥ पुछे विद्या सो कहे, भानुं २ सम देख; भामा सुत आनंदमें, पुन्य प्रताप विशेष ॥ ३ ॥ घोमा खेलावे घणां, घोमा शुं अति प्रेम; आप जणावुं एहने, मासुख पामे जेम ॥ ४ ॥ ढाल ८० मी ॥ मेरे परम सलुणो आतमा, तथा विछियानी देशी ॥ कौतुक केलवे घणुं, तव श्री काम कुमाररे भाइ; चरित तणो नाहिं पार ए, कोइ न जाणे साररे ॥ भाइ कौ० १ ॥ लंबोदर काया वमी, चंचल गति विस्ताररे भाइ; सर्व अवेवां शोभतो, सर्व सु लक्षण धाररे भा० ॥ कौ० २ ॥ ते उंचेस्वर सारिखो, अश्व अनोपम वानरें भा० ॥ विविध प्रकारे शृंगारीयो, सोना केरो पलाणरे भा० कौ० ३ ॥ एहवो घोमो कर धरी, सो सोदागर थायरे भा० ॥ पाणि पाव शिर कंपणी, जाकी बुढि कायरे भा० ॥ कौ० ४ ॥ थल २ करतो आवीयो, भानुं कुमरनी पासरे भा०॥ अश्व रत्न अविलोकतां, पायो अति उल्हासरे भा० ॥ कौ०५॥ पुछे पंथी कुण तुं, हुं परदेशी स्वामीरे भा०॥ हय वर आण्यो हिंसतो; देव तुम्हारे कामरे भा० ॥ कौ० ६ ॥ कहे मोल मतिवंत तुं, कंचन केरी कोमरे भा० ॥ परखी आपे आपजो, को नवी जाणे खोमरे भा० ॥ कौ० ७ ॥ आप कुदि घोमे चड्यो, चावष लीधो हाथरे भा० ॥ वाहे घोमो वेगशुं, अचरज सघले साथरे भा०॥ कौ० ८॥ सुरज रथ थंभी रह्यो, करे विचारण प्रांहिरे भा० ॥ के एहनो के माहरो, भलो किस्यो दोइ मांहिरे भा० ॥ कौ० ९॥ वक्र अने सम भावशुं, नाचे कुदे सोइरे भा०॥ कुमर न संवाह्यो पमे, ताम विमासण होइरे भा० ॥ कौ० १० ॥ उपरणीने पाधमी, ढटकी पमी ए दोइरे भा० ॥ पाठे पमियो आपहि, लोगा हांसो होइरे भा०

किधो रुप पुरंदरु ए ॥ ८ ॥ इरथी देखंत हो, पढही गुणवंत हो; वंतनहो कवण ए सवु कारीका ए कहे न
॥ थारो जाया ठाकरा; वावा किम नासंतरे ना० ॥ ॥ का० ११ ॥ उवाइ उना किया, सादागर आसितर नी०
नानु नारे एहि लक्षणे, किम रहेस्ये घरसुतरे ना०॥ को० १२॥ अश्व तणे घर जाणीइ, तुं पाटोधर पुतरे ना० ॥
घोमो राखी नवी शक्यो, तो किम राखीश राजरे ना०॥ तुम्ह स्या पत्रा अश्वने, कुलनी न रहि लाजरे ना०।
१४॥ बुढा वांधा बावला, जीन कर्या स्यो काजरे ना० ॥ चढि घोमे दुखुं सहि, चतुरपणुं तुक आजरे ना०॥ को०
घोमे चढीयो जाय जो, वेचणनो स्यो कामरे ना० ॥ कोइ चढावे जोरस्युं, देखाडं गति तामरे ना० ॥ को० १६ ॥
पांच नर आवीया, उपाड्यो आकाशरे ना० ॥ पड्यो अपुगो उपरे, खोपर दंत विणासरे ना० ॥ को० १७ ॥ वीर
इम सही, दाव्या शुनट अपाररे ना० ॥ तीजीवार चढावतां, चांप्यो नानुं कुमाररे ना० ॥ को० १८ ॥ नाए
पग देइने, आपहि चढियो जामरे ना० ॥ लाग्यो अश्व खेलाववा, तरुणा तणी परे तामरे ना० ॥ को० १९॥
कुदण चालणे, राग वागु अनुमानरे ना० ॥ राजपुत्र अति रंजिया, रंज्यो कुंवर नानुरे ना० ॥ को० २० ॥ अ
ढंचो जइ, सुगमाइनो संचरे ना० ॥ देखाडि आघो गयो, कुमर लीख्यो परपंचरे ना० ॥ को० २१ ।
एशीमी कही, ढाल अनोपम नामरे ना० ॥ गुणसागर कामे कियो, नामां सुतग तमामरे ना० ॥ को० १२ ॥
॥ दोहा ॥ आगे जातां अति नलो, दिठो वन सुख गाम; पुठि कर्ण पिसाचिका, नामा वन अनीराम ॥ १ ॥
घोमा रुपे चारीया, घास अने तरुपान; विघ्नसंघिनवेलमी, कीधो अधीको जान ॥ २ ॥ आगे अपर
विलोकियो, नामां केरो बाग; जगमें तरुवर जेतला, तेलानो तिहां लाग ॥ ३ ॥ वानर रुप रतिपति, रिस

विशेषे जोय; पान फूल फल तोमीयां, तुंव कियो वन सोइ ॥ ४ ॥ नगरी मांही आवतां, दिठो रथ वर एक; आवे चाल्यो सनमुखे, दिसे शोभ अनेक ॥ ५ ॥ ढाल ७१ मी ॥ रामचंद्रके बाग चंपो मोरी रह्योरी ए देशी॥ दिसे शोभ अनेक, सोवन रल विराजे; मंगल कुंभ विवेक, वारु वाजां वाजे ॥१ ॥ आरीसाकी सोह, सोहे ध्वज अभीराम; नारीजण संदोह, गावे गीत सकाम ॥२॥ पुछी विद्या काम, भांखे शयल विच्यारो; कुंभा राघरनुं नाम, परणे हरख अपारो ॥३॥ कुंभाराघर जाय, लावे कुंभ उदारु; तुझ माता उखदाय, भामा शाम्रहकारु ॥ ४ ॥ किधो रुप विकार, उंट अने खर केरो; जोतरीया रथ भार, खेमे आप घणेरो ॥५॥ हांशी करे ते नार, हाको हाक मचावे; भांजे रीसमोभार, सोरथ आपपुमांवे ॥६॥ खंभीत किधां कान, पाड्या दांत जीवारे; आयो कोपर जान, फाड्या वस्त्र तेवारे ॥७॥ गीतथाने विलाप, करती नारी नाठी; किम राखेवो आप, हरीथी हरणी त्राठी ॥ ८ ॥ शेरी शेरी सोइ, हिंमे आप सोहायो; कामणगारो होइ, सबके मन भायो ॥ए ॥ किनर सुर अवतार, खेचर भुचर राजा; लोक कहे शुं विच्यार, एहना अधीक दवाजा ॥१०॥ के कोइ असुर कुमार, के इंद्र जाल कहावे; यादवनो परीवार, मांहे नयन विपावे ॥११॥ कोइ होज्यो एह, तुम्हने शिकणवार; बुढा आणी सनेह, वरजे वारंवार ॥१२॥ मोकरीने नृप सार, पुछी कांइ करेवो; योगीनो व्यापार, काज न कान धरेवो ॥१३॥ मदन करे ए काज, किधो रुप अनेरो; मा मिलवाने आज, आणे हरख घणेरो ॥१४॥ त्रिस एक अने पंचास, ए ढाल कहाणी; श्रीगुणसुरी जगीश, श्रीहरीनंद वखाणी ॥१५॥ ॥ दोहा ॥ रुप अनेरो धारीके, चाल्यो जाइ जाम; दृष्टे आवी वावमी, सबही

पंच वरण रला तणो, तेहनो किस्यो वखाण ॥ २ ॥
विधी अन्नीराम ॥१॥ कंचन केरो कामठे, पयमीनो मंमाण; पंच वरण रला तणो, मदन करे उपाय ॥३॥ ढाल ८२ मी साधु
रखवाली नारी रहे, निर न लीधो जाय; पण जाणी नामा तणी, मदन करे उपाय ॥३॥ ढाल ८२ मी साधु
संगती नित किजीए ॥ए देशी॥ रुप कियो ब्राह्मण केरोरे, स्वेत जनोइ किधी साररे हो; वंजणा; धोली धोती पहेरणेरे
फेंटानो भाति विस्तार हो ॥वं० रु० १॥ मस्तके बांध्यो फालीयोरे, पवीत्री पावन पहरायरे हो वं० ॥ पगे गुजराती
खासमारे, वर्णो गुरुनो विरद धरायरे हो ॥वं० रु० २॥ उपरणीनो उढवोरे, काने सोनानो जाररे हो वं० ॥ आंगुली
यांवर मुद्रमीरे, माथे किधो तिलक उदाररे हो ॥वं० रु० ३॥ मातोने अरु फांदशुंरे, पिली आंख्या जोति अपाररे
हो वं०॥ हाथे कमंमल लाकमीरे, देव धुनीनो करे उचाररे हो ॥वं० रु० ४॥ ठापा दिसे द्वारकांरे, गंगा केरो माथे
मंमरे हो वं०॥ मथुरा माल विराजीतारे, किरीया कांमे करी प्रचंमरे हो ॥ वं० रु० ५ ॥ करमें रातो टिपणोरे, यांचे
नक्षत्र चार विच्याररे हो वं०॥ जोशी जोतिस पुरीयोरे, लग्न तणी लहेवेलावाररे हो ॥वं०रु०६॥ आशीर्वाद प्रकाशी
योरे, दाशी दोमी लागी पायरे हो वं०॥ कमंमल जल जाचीयोरे, पेट जराइ सुखमें थायरे हो ॥वं० रु० ७॥ ए जल
मंत्री आपीशुंरे, मन रलीयात सोइरे हो वं०॥ देसे शीधो सामटोरे, तुम्हने पुन्य घणेरो होइरे हो ॥वं०रु० ८॥ चेमी
चंचल जातीनीरे, लाज नही निर्लज अपार हो वं०॥ वांजणा मांजणा आवीयोरे, खेसोधोती मलावो याररे ॥वं० रु०
९॥ आवी वलगी वांनररे, सोपुठे ए कुण विच्याररे हो वं०॥ गुन्हेगार हमारमोरे, किउनलही नामाकीसाररे हो ॥वं०
रु० १०॥ नामाने कोजुतणीरे, केकोदेवीने अवताररे हो वं०॥ उरसथकी तं उतरयोरे, नामां कश्न तणी पटनाररे हो ॥वं०

रु० ११॥ माता जानुकुमारनीरे, तेहनीवावी विशेषेधाररे हो बं० ॥ हमरखवालीआ करीरे, लेण न पावे कोइ वाररे हो ॥बं० रु०१२॥ जासां साथे जुपतीरे, ए जलमांहे झीले सोइरेहो बं॥ केजामां सुत जानुजीरे, अवर नजीलण पावे कोइरे हो ॥बं०रु०१३॥ तुझ सरिखा निस्युं चालीरे, रावन राणीनो पइसाररे हो वं०॥ विप्र पधारो वेगस्युंरे नहीतर जाण स्यो तुम्हे साररे हो ॥ बं० रु० १४ ॥ एह वचन सुणी खीजीयोरे, रे तुं दासी कोलाणि कोइरे हो बं० ॥ ब्राह्मण पग रज खेरवेरे, सब जग पावन होइरे हो ॥ बं०रु० १५ ॥ हलवेश चालीयोरे, पोहतो वाव तणा जल पास हो बं० ॥ दासमझियां मली साहीयोरे, कर फरस्यां गुण जपज्यो तासरे हो ॥ वं० रु० १६ ॥ गौरी हुइ सामलीरे, सोना पामी सघली दासरे हो बं० ॥ करेहि प्रशंसा सादरीरे, पात्र वमो मुखदेसावासरे हो ॥ बं० रु० १७॥ वहिर आवी गोरझीरे, आपण मांहि निहाले रुपरे हो वं०॥ ए मोटो जपगारीयोरे, एह पसाइं रुप अनुपरे हो बं० रु० १८॥ जरी कमंमल नीरसुंरे, निसरीयो विप्र जे वाररे हो बं०॥ खाली दीठी वावझीरे, दासी सघली लागी लाररे हो ॥ बं०रु० १९॥ जल सोसन एसी दोयमीरे, ढाल वारु विशेषे एहरे हो बं०॥ श्री गुणसागर सुरजीरे, मदन चरीत्रनो नावे ब्रेह हो ॥ बं० रु० २०॥ ॥ दोहा ॥ रिस वसे ते दासमी, जांखे वचन सरोस; अति उप्रदूट अगाह जल, कां कियो तें सोस ॥१॥ के माकि के सोहरो, विप्र नहि चंमाल; एहवो काम न कोकरे, जीव दया प्रतीपाल ॥२॥ढाल ८३ मी ॥ जो गनाने राखोरे विल वाय तथा हुं वारी धनां ॥ ए देशी ॥ बंन्नणारे कांजल लिधो जाय, वंन्नणारे हम लागा तुम्ह पाय; बंन्नणारे जंगम थावर जीव, बंन्नणारे जल विण करशे रीव॥ बंन्नणारे का०ए टेक॥ जल राजा जलदेवतारे, जल

सम अवर न कोय; जन्न जगने जीवामणोरे, जल विण तृपति न होइ ॥ वं० का० २ ॥ अन विनां आघुसेरे, जल विण एक लगार; सरे नहि तिह कारणेरे, जल मोटो संसार ॥ वं० का० ४ ॥ अमृत पंच वखाणियारे, जल सव आदि सार; घणुं किस्युं विस्तारवुंरे, जलथी जग ववहार ॥ वं० का० ५ ॥ हम वलिहारी ताहरीरे, वावा सुण अर दास; पाप तणी ते पावलीरे, धरी स्वामीनीको त्रास ॥वं० का० ६॥ जुस्यां करो नगी ना रहिरे, जाय जीम गजराज; शंक न माने कोइनिरे, गाजे जीम घन गाज ॥ वं० का० ७ ॥ विविध प्रकारे चेष्टारे, करतो जाय उदार; एटले आगे आवियोरे, जामाने घेजाररे ॥ वं० का० ८ ॥ हाटानि शोजा हरेरे, मणि मोतीने रयण; हरे करे अति आकरोरे, लोका साथ्ये कुंचयनरे ॥ वं०का० ए॥ अन लुण कपुरस्युंरे, सुधा विविध प्रकार; सत्र वस्त्र आदि करीरे, उव्यतणो अपहार ॥ वं० का० १० ॥ घोमा हाथी वाहिणीरे, जामां जानु नाम; जे देखे ते अपहरेरे, सोर मचायो स्वांम ॥ वं० का० ११ ॥ सात पांच मिलि सामटिरे, वेगे २ सोइ; चोर हमारो चोतरेरे, चोहमे वोए होइ ॥ वं० का० १२॥ घइरां साथे वोलिवोरे, पुरुषां जोर न कोइ; कमंमल फोमी दियोरे, जल वहि चाल्यो सोइ ॥ वं० का० १३ ॥ कांइक जलतो थयिनोरे, कांइक विया जोर; चोहटो वाह्यो वेगस्युंरे, मांचि रह्यो अति सोर ॥वं० का० १४॥ कोमी कीराणा कापमारे, कोइ न लहे पार; वस्तु अमोलिक वाहवेरे, पाम्यो हर्ष अपार ॥वं० का० १५॥ पाणीपुर पंमूरथीरे, दासी गइ ते नास; आपुणा दृष्टी अगोचररे, माने मन सावाश ॥वं० का० १६॥ एतो त्रासीमी कहीरे, ढाल विशाल विशेष; गुणसागर नवी सांजलेरे, न करे कांइ अदेख ॥ वं० का० १७ ॥दोहा॥ तदनंतर किधो जलो, योवन रुप रसाल; ब्राह्मण गुणको

आगलो, गले तुलसीकी माल ॥१॥ चर्म सरीरी प्राणीयो, कांठे बेठो आय; मोह वसे मदमस्तना, बिजानुं शुं जाय॥२॥

॥ ढाल ७४ मी ॥ देशी झुमखझानी ॥ रंगे रमतो राजीयो,२, पेखे पुष्प पंकुर; रामा सुत मोहना, पुछे विद्या सो कहे२, ए सब फूल सनुर ॥ रा० १ ॥ जानुं कुमर विवाहनो, गुंथे माल अपार रा० ॥ मालि पासे मागतो आपो फूल बे च्यार ॥ रा० २ ॥ नापे तव ते खीजीयो, फरसे हाथ लगाय रा० ॥ विविध जातना फूलमां, आक तणा कहेवाय ॥ रा० ३ ॥ गांधी साले आवीयो, मागे वास सुवास रा० ॥ नापे ते तव वासनी, किधी वास कुवास रा० ४ ॥ गजथाने नेंइ साकरे, नेंइसाने गजराज रा० हयथाने खर बांधीया, खरथाने हयसाज ॥रा० ५॥ उंट थानके बोकमा, बोकमा थानके उंट रा०॥ खरही खुटने साधुजी, साधु करे खरखुट ॥ रा० ६ ॥ धान जातीने फेरवे, चावल कुरी थाय रा० कुरीने चावल करे, इम सब नाज फिराय ॥ रा० ७ ॥ लुण करे घन सारजी, घनसारानो खार रा०॥ रत्न करे ते कांकरा, कांकरा रत्न अपार ॥ रा० ८ ॥ हिंग करे कस्तुरीका, कस्तुरी फिरी सोइ रा० ॥ सोनाने पितल करे, पितल सोना जोय ॥रा० ९॥ घीनो तेल समाचरे, तेल तणो घृत धार रा० ॥ ज्वारी करे मोती तणी, मोती करे ज्वार ॥ रा० १० ॥ पाटु वस्त्र विराजतां, सोतो किधा टाट रा०॥ टाट सरीखा जे हुता, ते फिर किधा पाट ॥रा० ११॥ धोले दिन बजारमें, एतो पाडे वाट रा०॥ बुंब न वारह तेहनी, साह करे उचाट ॥ रा० १२ ॥ वेपारी घांघा हुवा, गवी वस्तु न पाय रा०॥ गाहक आया फीर गया, वेपारी पिछताय ॥ रा० १३ ॥ लाल सरीखो व्यय करे, वेपारी आचार रा०॥ लाल विना धन [illegible] [illegible] इ दंभ विच्यार ॥रा० १४॥ चाक फिरंते निपजे, मोटो नांझो जोय रा० ॥

सम अवर न कोय; जल जगने जीवाम्णोरे, जल विण तृपति न होइ ॥ वं० का० २ ॥ अन विनां आघसेरे जल

अण फीरंते करवो नही, साह विमाशण सोय ॥रा० १५॥ कौतुक करतो चालीयो, आयो राजडवार रा० ॥ बाबा जीनो देखीयो, मंदिर सब विधी सार ॥रा०१६॥ मेखकरीने लावीयो, जाणी बाबा प्यार रा० ॥ बावो बेगो देखीयो, इंद्र तणे अवतार ॥रा० १७॥ दाता जुगता अरुगुणी, सायर जेम गंजीर रा० ॥ मात सुनद्र जाइयो, मेरु तणी परे धीर ॥रा० १८॥ स्वदेशे स्वजातीमें, मान लहे सहु कोय रा०॥ एपरजुमी पंचाइण, नाग्य बली अति होइ ॥रा० १९॥ राय तणे गोफे लभे, मेघमहा मयमंत रा०॥ पहोली दोफे गिर पभे, कभ पिता बलवंत ॥रा० २० ॥ कर्मे तो नवी गुदरे, बाबाही शुं सोइ रा०॥ सिंहासगान साउकां, ए उखाणो जोइ ॥ रा० २१ ॥ श्रीवसुदेव नरींदशुं, जुचर खेचर राय रा०॥ आगे कोइ न जितीयो, पोते जीत्यो जाय ॥ रा० २२ ॥ ए चोराशीमी ढालमे, पोते बाबा दिठ रा०॥ श्रीगुणसागर सुरजी, नयणे अमीय पइठ ॥रा० २३॥ ॥ दोहा ॥ आगे दिठो अति नलो, नामां नवन उदार; ध्वज तोरण माला नली, पोखे शोन अपार ॥ १ ॥ विद्या नांखे स्वामी सुणो, जोतुं दर्शन साल; करवुं ते करजे इहां, विजो सहु जंजाल ॥ २ ॥ स्नान कियो सरोवर जले, अरु शीर तुटा केस; माथे टिको चिरनो, विप्र तणो वरवेश ॥३॥ वरस चतुरदसनो सही, ब्राह्मण बाल कुमार; नांम धरावे वेदीयो, गाढो बोलणहार ॥४॥ ढाल ८५ मी॥ इम जीन पुंजीए ॥ए देशी॥ श्रीहरी राज कुमारजीरे, राचे केली मोझार; पेखी पफारापर तणारे, अमरखवंत अपारोरे ॥१॥ थागो वेदवो, दरसण मोहन वेलोरे; सुरगुरु जेहवो ॥ ए आंकणी ॥ नोजन अर्थे आवियोरे, नामा नामनी पास; स्वस्ती कही उनो रह्योरे, सावोले उल्हा सोहो ॥ आ० २ ॥ विप्र कहे चाहो किशुंरे,

माता भोजन आप; क्षुधा वेदनी व्यापथीरे, आज जीमवुं धापहो ॥आ० ३॥ पहीला ब्राह्मण तेडीयारे, भोजन अर्थे उदार; आवी मील्याछे एकवारे, अगणीत केइ हजारहो ॥आ० ४॥ भोजननुं शुं मागवोरे, कृष्ण वल्लभासंग; हयगय धन कंचन मणीरे, मागश मनरंगहो ॥ आ० ५ ॥ विप्र कहे विप्रो सुणोरे, वारु वचन विचार; तुम्ह तो विद्या वेचणारे, न लहे पुन्य प्रकार हो ॥आ० ६॥ दान तणा फलछे घणारे, अन समो नही कोइ; अवरां त्रपति न उपजेरे, त्रपती अनथी होइहो ॥आ० ७ ॥ अन याचना तेहथीरे, पहीली किधी एह; मुफतुशी जग तुं सइरे; इहां नही संदेहहो ॥आ० ८॥ भामा भांखे परीयणोरे, भंल भोजन शुं आज; विप्र जमावो वेगशुंरे, भुख्या भोजन काजहो ॥आ० ९॥ पुनरपी भांखे भामनीरे, सघलामांही जाय; मनगमतो भोजन करोरे, त्रपति घणेरी थाय हो ॥आ० १०॥ विप्र मांहे नवी जसुरे, एतो विधी वाताहीण; ब्रह्म क्रिया पाले नहीरे, पापा चार प्रविणहो ॥ आ० ११॥सर्व सुलक्षण वंतहुरे, विद्यानो भंडार; मुफ भोजनदे सादरोरे, लचपच मकर लगारहो ॥आ० १२॥ गौब्राह्मण ने तिर्थ जेरे, मुफ तृप ते तृपताय; पात्र न मुफ सो डुसरोरे, मात विमासे कांइरे हो ॥आ० १३॥ क्रिया हिण लक्ष कोमीनेरे, भोजन दिधो वादी; क्रियावंत एकही भलोरे, सुणी जे आदी अनादीहो ॥ आ० १४ ॥ बेठो सघला आगलेरे, पग धोवाने काज; विप्र कहे रोसे भरयोरे, आवेछे शिर खाजहो ॥ आ० १५ ॥ ज्ञान ब्रध वय ब्रधजेरे, समफावे परीवार; कलह तणो अवसर नहीरे, मौन तणो आचारहो ॥ आ० १६ ॥ बइठो पहीले आशणेरे, ब्राह्मण आव्या वाजी; चाल्या थानक डुसरेरे, जाण्यो बुटा भाजीहो ॥ आ० १७ ॥ तिहां पण अग्नीमआसणेरे,

जाइ वेगो सोइ; तवते ब्रह्मण कलकल्यारे, अजब तमासो होइहो ॥ आ० १८॥ वदशास्त्रना जाणथेरे, न लहो वेद विन्यार; हिस्यादिक पातिक करोरे, न तजो क्रोध लीगार हो ॥ आ० १९॥ गर्व करो जाति तणोरे, ज्ञाति नतास्यो कोइ; तारे तो करणी करोरे, रीस कीया स्युं होइ हो ॥ आ० २० ॥ पंच्याशीमी ढालमेरे, विप्रां कीधो क्रोध; श्री गुणसागर सुरजीरे, धन तेजे अविरोध हो ॥ आ० २१ ॥ ॥ दोहा ॥ सुधी वात न सरद हे, सुधी शुं नहि राग; मुरखने उपदेश ते, टाढि उपर लाग ॥ १ ॥ सहज न फीटे कोइनो, ब्राह्मण जाति विशेष; उठ्या मारवा भणी, विप्र कहे मां देख ॥२॥ माय कहे हुं शुं करुं, विप्रा साथे न जोर; तुं पण निचलो नवि रहे, ए चपाणी कोर ॥३॥ हलकारी विद्या घणुं, हल२ थइ अपार; आपुण मांहि आंधला, लागा करण प्रहार ॥४॥ ढाल ८६ मी ॥ देशी वनमालानी ॥ लाग्या ते करण प्रहार, नवि जाणे कोइ विच्यार; आपुण मांहि अपार, वलगे ते गहेलगेमार ॥१॥ पहिली तो जीभ जमाइ, बीजी तो ढिक वजाइ; तीजी तो लात लगाइ, चउथी तो दांता खाइ ॥२॥ पंचमी वार मुक्तटाइ, जोटिनी मार मचाइ; उठे लाकमी उगाइ, ते साहमां आवे लाइ ॥ ३ ॥ वावाने वेटो जाइ, लोपाणी सपत्र सगाइ; आंधे आंधो पेलाइ, नवि जाणे आप पराइ ॥ ४ ॥ आचाराज वना थाइ, हलकार करे आगे आइ; उपाध्या आप वमाइ, नरखाणी लघुता पाइ ॥ ५ ॥ जोशी जोतिष वरताइ, न सक्या ए जाणी बुराइ; ज्ञांनि अनीमांनी जाइ, चउवे छवे अधीकाइ ॥ ६ ॥ तिरवाकी आवे धाइ, पढीतावे केस गहाइ; नट मिथ्या एह वताइ, माहिमा तो आप गमाइ ॥ ७ ॥ पग वाजरी गम कराइ, कल्या विण जाइ न कांइ; मारंता जत नमाइ, जदजीए

कथा सुणाइ ॥ ८ ॥ करताने साथे कीजे, तो पुन्य न पाप गणिजे; होथाका लाहो लिजे, उजागर होइ फिरीजे ॥ ॥ ए ॥ नवलीनो सुंठ कहावे, आपुण हि आपु बंधावे; मंकोमो खीज्यो आवे, तो मांस आपणो चावे ॥ १० ॥ ते विप्र लथाबथ होवे, तव लोक तमासो जोवे; ते लाज निकामी खोवे, ते आपे आप विगोवे ॥ ११ ॥ ते धरति साथर सोवे, मारया लाता ना रोवे, विण वेलण पोलि पोवे, विण लोटि मुहमो धोवे ॥ १२ ॥ ते लमता माथा फूटे, ते ओमाव्या नवि छुटे; ते आप आपमें कुटे, ते मांहोमांहि लुंटे ॥ १३ ॥ ते तमफमता अति त्रागा, नमशता साहे नागा; ते थोथे घावे घागा, लमथमिया जाइ नागा ॥ १४ ॥ ते गाढा होइ लागा, जब लात धबुका वागा; तेतो उघामा नागा, गहेवरीया जाइ नागा ॥ १५ ॥ जे लुंदपणाथी लमीयां, जे नुमपणे नमनामियां; ते पौरष पोखे पमीयां, ते अलगाथी अमवमीयां ॥ १६ ॥ जेथासुगालामाटी, ते पीता कपथ वाटी; बल हेते खाता काटी, थर हरीयां लागा साटी ॥ १७ ॥ मोकरमानि कमी नागी, ते खिर न मिलि लागी; जब चोट पराइ वागी, लामूनि लालच तागी ॥ १८ ॥ नोजन तो बहुला देख्यां, ए नोजन आज विसेख्यां; अवराने लामू खाधां, नामांने गमधा लाधा ॥ १९ ॥ ए नारथ हुउ नारी, ते दिगे हरि पटनारी; ओमवि अलगा किधां, लघु विप्र समिपे लीधां ॥ २० ॥ ए ढाशीमी ढाल रसाली, ए विप्र विनोद विसाली; श्री गुणसागरजी नांखी, परजुन चरित्र ठे साखी ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ परथिण शुं नामां कहे, बालिक ब्राह्मण एह; जीमावो हम आगले, आणी घणेरो नेह ॥ १ ॥ मांमो उंचि मांमाणि, उपर थाल विशाल; विविध प्रकारे पीरसणा, पीरसावो ततकाल ॥ २ ॥

॥ढाल ८७ मी॥ ढोफा किमेहेदिमे ढोइहो ॥ तथा गौतमने मेल दियो महाविर ॥ए देशी॥ नामानो नांप्यो
करे, आज्ञाकारी सोइ; नगति नलेरी साचवे, राचवे रागण होइ ॥१॥ ए विप्र हमारे मन वस्यो, ए विप्र करामतदार;
ए विप्र तणा गुणसार, ए गणे ढांक्यो रयन; ए विप्र देपत हम चयन ॥ २ ए० ॥ विप्र नणे सुण स्वामनी, पुरो
पकतो जाण; वेसावे जमवा नणी, नहिंतर जाउं परथान ॥ए० ३॥ नोजनने विवहारनो, घाठो नावे गम, पहीलि
चोकसी किजीइं, इम कहे त्रिनोवन स्वाम ॥ए० ४॥ नामा नांपे स्युं कहि, एहवि उठि वात; ए घर दीपे हाथीया,
माणसनी शिमात ॥ए० ५॥ पहेला मेवा पिरशीया, पिस्ता ड्राख बदाम; चारोली चतुराइशुं, खांकतली अनीराम
॥ए० ६॥ खाजां गजां सारीखा, लाकुनी बहु नात; घेवरफीणी लापसी पिरसे मननी खांत ॥ए० ७॥ खीर खांक घृत
सामटां मांड्यो मोटे मान; वका विशेखे पिरशीया, विप्र तणो हित जाण ॥ए० ८॥ घोलवकाने घारवमी, पुरीपरी
घल नाव; सालदाल ने सालणां, पिरसे चितने चाव ॥ए० ए॥ धीनी धार न खेंचइ, डध दहींने घोल; दाखलुवारी
रायता, ए अति वस्तु अमोल ॥ए० १०॥ नामां नांखे सादरी, अमृत करे आहार; कोइ काणी न राखवी; ए सहु
तुज परीवार ॥ ए० ११ ॥ पिरसतां वेला थइ, जमत वार न कोइ; वैस्वानर मुख मेल्हतां, घास तणी पेरे जोइ
॥ए० १२॥ लावोरे लावोश वली, एकज लागी तास; ताम अनेरा पिरसणो, पिरसे आणी उल्हास ॥ ए० १३॥
केइ हजारा कारणो, अन अने पकवान; किधुं थुं ते वावरथुं, अचीरज ए असमान ॥ए० १४॥ पाकाने काचा करी
थाल नरीने ठेली; पाठे कांइ न देपइ, श्राम घके जल मेली ॥ए० १५ ॥ मुगमव माखां घणा, चावलने जव जेह;

गिहुं चण्या आदी करी, खाइ गयो तव तेह ॥ ए० १६ ॥ हयगय उंट तणो सहु, दाणो पण तेह खाध; आणी उधारो पिरशीयो, तृपतीतोहिन लाध ॥ ए० १७ ॥ अग्नी झालमें बालीए, लाकम गामा लाख; तोपण ते झापे नही, तिम एहनी अग्नीलाख ॥ए० १८॥ यादवनी नारी मली, करे कतुहल कोम; निजश घरथी आणके, पिरसे होमाहोम ॥ए० १९ ॥ कोलाहल मांच्यो घणो, मिलीयां लोक तिवार; तृपती न पावे खायवे, देव तणो अवतार ॥ए० २०॥ विप्र जणो सुण नामनी, आपुण बोल्यो पाल्य; कांथाइ अति सुंबमी, अवर किशी दिन गाल्य ॥ ए० २१॥ जानु तणी माता जली, नारायणनी नार; उग्रसेन कुमरी कही, अवसर सहु तुफलार ॥ए० २२॥ रूपणपणो नवी बुझीए, तुझ सरखीने देख; लघुनोजी हुं बालुमो, जुख्यो राख्यो विशेष ॥ए० २३॥ नाहुवो आहारजी, नाहुवो अपवास; अधवीचो होइ रह्यो, कांरे कियो विस्वास ॥ ए० २४॥ निका मंदीर नान्हमा, पावे सघली लाज; मोटा घरमर जुखनां, साच मलीए आज ॥ ए० २५ ॥ पाय पसारण तेतलो, जें तो सोम पसार; बोटी सोमे सोवतां, लागे टाढी अपार ॥ ए० २६ ॥ पुरो न पमे एकनो, तो एस्यो विस्तार; पेट न डखे थोखरो, घर सारु विवहार ॥ ए० २७ ॥ आमंबर मांहे घणो, न लहे घरनी सार; ते तो माणस बावलां, लोक हसावण हार ॥ ए० २८ ॥ ब्राह्मण सायर अग्नीनो, पुरो पमवो डर; अन अने जल इघणां, जो दिजे जरपुर ॥ ए २९ ॥ यद्यपि में किधो घणो, आगे नायो सोय; जुख्यो तो अति जमजमे, डसण एह न कोइ ॥ ए० ३० ॥ सत्याशीमी ढालमें; आयो नामां गेहः श्रीगणसागर सरजी साञ्पती आणे नेह ॥ए० ३१॥ ॥दोहा॥ कुबजा दाशी ए वली, सरली किधी

॥ ढाल ८७ मी ॥ ... नामो दिठी ताम ॥ १ ॥ विस्मय पामा नामनी, ... लघु ब्राह्मण परसादथा, ...
...न; रूपे सोहागण सुंदरी, नामो दिठी ताम ॥ १ ॥ देव तुम्हारी दासनी, कुबज्या माहरो नाम; जइ बेठा एकांत ॥ ४ ॥
साथोजे उल्हास ॥ २ ॥ लालच लागी नामनी ए अति विद्यावंत; हाथ ग्रही आघोलीयो, ॥ ए देशी ॥ रहे
...नीराम ॥ ३ ॥ संजम लेवा संचर्योरे, साथे सहु परीवार; संजम रंग लाग्यो ॥ नामा० ॥ १ ॥
॥ ढाल ८८ मी ॥ जामां जुलिरे, देव प्रकासो आपणोरे, प्रश्न तणो छे थान नामा० ॥ १ ॥
...पणे पुठे खरीरे, ज्ञान तणो अनुमान; नामां जुलिरे, तंत्र मंत्र जांणुं घणांरे, वस आणुं
...लिरे जुलि नरमें नामनीरे, जोसीनो जगमें यमोरे; नाखे वचन विच्यार ना० ॥ इंद्र करु घर प्राहुणोरे, शेपनाग शुं सोइ ॥ना० ३॥
नरतार ॥ना० २॥ चंद्र सूर्य वरु देवतारे, वश वरतावुं दोइ ना० ॥ ना० ४ ॥ अणनावंतानो
...पाले पेसुं सहिरे, आकाशे पण जाउं ना०॥ जगत तणा नोवाहरुरे, वेगे करीने थाउं ॥ ना० ५ ॥ हम तुम्ह विच न आंतरोरे,
फालतुंरे नावंतानो लाज ना० ॥ पुठेवुं पुठे सहिरे, काज करुं ततकाल ॥ ना० ६॥ पगे लागी हाहा कररे, आंसुं नांखे
भ्रांत पनवि डर ना० ॥ तुज गुणमोरे वांधीयोरे, वेगो आणी हजुर ॥ ना० ७ ॥ तुं म्हारे वालेसरुरे, तुज सम अवर न
नयण ना०॥ हियो नर्थो आवे घणुंरे, मनमें अधीक कुचयन ॥ ना० ८ ॥ साल समाणी सालतिरे, सो कहिए निश
कोइ ना० ॥ पिता पुत्र नाइ नलोरे, करी दे कांएक सोइ ॥ ना० ९ ॥ साथी त्रिकोटि रोमछेरे, एक२ने एह ना०॥
दिश ना० ॥ दिन २ आवे शिर चक्रिरे, ए दुख विसाविस ॥ ना० १०॥ आवटणुं अती आकरुंरे, जोही चढे नहि मंस ना०॥
अमरख आणी अती घणोरे, पापणी पामे वेह ॥ ना० ११॥

निशदिन लागुं झूरणुंरे, शातानों नांहे अंस ॥ भा० ११ ॥ हरी वश आवे माहरेरे, नवि ले रुखमणी नाम भा० ॥
दोरो डांडो दांखवोरे, द्यो मनगमता दाम ॥ भा० १२ ॥ दुध भलावणी उतनेरे, वानरने फल जेम भा० ॥ सिल
भलावण लंपटारे, एह भलावण तेम ॥ भा० १३ ॥ ठगां ठगोरी भामिकारे, आरती मांहि एम भा० ॥ आप ठगावे
ठग कनेरे, अवर न ठगइ केम ॥ भा० १४ ॥ विप्र भणे भामां सुणोरे, जो वीधी कीधी जाय भा० ॥ सहस गुणो
आदर लहेरे, रुखमणी पगे वेलाय ॥ भा० १५॥ जेहि कहो सोइ करुंरे, न करुं शोच लिगार भा० ॥ लाज हमारी
तुम्ह भणिरे, तुं गति मति दातार ॥ भा० १६ ॥ मुंड मुंडाइ मोहडोरे, कालो करिय अपार भा० ॥ फाटा चुंथा
पहेरीनेरे, मौन तणो आचार ॥ भा० १७॥ ॐ क्रीं अरफ वरफ रुंढ मुंडशुंरे, अवघोतेर सो वार भा०॥ जाप जपंता
पामस्योरे, रुप अनोपम सार ॥ भा० १८॥ इंद्राणी अलगी थकीरे, थाशे सहिय उदाश भा०॥ एवो रुप न माहरो
रे, जेहवो भामां पास ॥ भा० १९॥ देव दुर्लभा थायस्येरे, कृष्ण तणी शी वात भा०॥ रुखमणी तो पासंगमेंरे, नहि
आवे सुण मात ॥ भा० २०॥ जो दुख तो सुख जगतमेंरे, दुख विण सुख नवि होय भा०॥ कान सहे विंधावणोरे,
कुंडल पेरे सोइ ॥ भा० २१ ॥ जो तरुवर धुरी डमी पडेरे, तो नव कुंपलि लाल भा० ॥ दिन थोडामें थायस्येरे, शोभ
निक शुं विशाल ॥ भा० २२॥ डरु २ डरतां रहेरे, उद्यम नहिय लगार भा०॥ आंखी सरीखा मानवीरे, काजलनो
शिंगार ॥ भा० २३ ॥ इमनी सुणी शा भामनीरे, आतुर थइ अपार भा०॥ विप्र वचन वाल्हां करिरे, हुइ विपरीत
ते वार ॥ भा० २४ ॥ परने चिंते जेहवुंरे, तेहवुं पावे आप भा० ॥ एतो परतक्ष देखजोरे, भामा लाग्युं पाप ॥भा०

२५ ॥ वळे आपणी आगमुर, परशु हपा होइ ना० ॥ शिर मुंमावे आपणेरे, नामनि परे जोइ ॥ ना० २६ ॥ कींधीथी वाकुर नणिरे, अवर परे अरदास ना०॥ घोमो फिरी नपर चड्योरे ते परे हुइ तास ॥ना० २७॥ फीरी आवुं आगे जइरे, जापजपे मन सुध ॥ ना० इम कही आगे चल्योरे, कारज करीय विरुध ॥ ना० २८ ॥ अठ्यासीमी ढालमेंरे, नामनें नरमाय ना०॥ श्री गुणसागर गुरु कहेरे, मा मलवाने जाय ॥ ना० २९ ॥ ॥ दोहा ॥ माता सुखनो आसनो, काम कुमर मन रंग; चाल्यो अति नछरंगस्युं, आणी हेत अनंग ॥ १ ॥ काम कुमर आव्या तणी, वेलाने अधीकार; माय मनोरथ मालनी, ढाल रसाल अपार ॥ २ ॥ ढाल ८९ मी ॥ ॥ मेरी सहियां गरिधर आवेगो ॥ ए देशी ॥ मेरी सहियां लालन आवेगो, प्यारो प्राण आधार; मेरो मदन कुमार; यादव कुल शणगार ॥ मे० ए० आ० ॥ एह वासर जे गया, माहरे नावे वादी; पेट नरती दिन प्रति, न जम्यो अन सवादी; जन मन जीवी तणीरे, आजहीथी आदी ॥मे० १॥ चामरुपी होइ रहीयां, मिंमका जग जोइ; मेह वुठे देव त्रुठे, मुया जीवे सोइ; जीव जीवन आवीयाए, एह परे हम होइ ॥ मे० २ ॥ सुनचीती सदा रहती चेतना सुतनी पास; गाय वनमें जाय हांकी, चरती फिरत नदाश; हिंसंति आवे घणुं, वाहुरीया घर जास ॥ मे० ३॥ चक्र वाकी जीम चाहे, नगंतो दिनकार; चंदने चाहे चकोरी, वपैयो जलधार; आंवनोवन कोकिला, विर हणी नरतार ॥ मे० ४ ॥ क्षुधावंतो अन चाहे, तृषावंतो वारी; स्यैरणी स्वगारमेरे, रोगीयो नपचारी; तेम एम न माहरो, पुत्रने प्रधीकारी ॥मे० ५॥ स्वामी श्रीमंधर वतावी, सोइ वेला आज; जलदनीपरी वाट जोतां, मिल्यो ए

सुभ्र साज; देवगुरु प्रसादथी, सरचा वंछीत काज ॥ मे० ६ ॥ द्यो बुहारो वाट झामो, जली रज बेसावी; पंचवर्णी कुसुमकेरो, फूल पगर रचावी; गाम गामे धुपणा, करो चितने चावी ॥ मे० ७ ॥ गेह धोलो आज सोलो, दैवनो विवहार; भ्रांती फेरो पात्र तेड्यो, पेखवा परीवार; वाजां विविध प्रकारनां, वाजा वोइणी वार ॥ मे० ८ ॥ नारी आवो गित गावो, करो मंगल च्यार; करी वधावो कलस लावो, सात पांच उदार; दोब अक्षतने दहीं, सजंण मेल्यो सार ॥मे० ९॥ चोक पुरो मती अधुरो, रहे एक लिगार; अलग चुरो असुभ्र सघला, सजो सुभ्र आचार; वेगे हुवो उतावली, कांइ लगावो वार ॥ मे० १० ॥ थालरोलां नरी कचोलां, कुंकुमा घन सार; रत्न रुमा नही कुमी, हेम रजत अपार; वधावाने कारणे, घणा मोतीना हार ॥मे०११॥यल करणा असुभ्र हरणा, वाटमे न रहाय; रांम नेसो अंध तेसो, कुंकुने न कराय; नाक चिबो चिपमो, बुर मुहोटली जाय ॥ मे० १२ ॥ नारी परणी अने अपरणी, साजी उज्वल वेस; गौसव छिकल सपुर्ण, दधी मधु सुवीशेस; अग्नी ज्वाला दिपती, अपरस उण अशेष ॥ मे० १३॥ रथ सजोमो पाट धामो, हाथीयो सणगार; पंथे राखो सरस नांखो, पित्त वरणी गार; मांछलां मिलीयां नलां, साधु रोजी धार ॥ मे० १४ ॥ हंसनीपरे हालतोरे, चालतो सुंदर इंद; नयणे नीरखीहिए हरखी, जणी तेज जिणंद; साहमो जोशुं घणुं, जेम उतीया चंद ॥मे० १५॥ गोदी करी शुंहीइधरीशुं, चुंबीशुं सोवार; मुह माथो दिन सनाथो, जाणीशुं सुविच्यार; विलसशुं मन मोकले, अरथना नंमार ॥मे० १६॥ हाथे फरशी हिए उरशी, राखी शुं नांखी ताम; देइ मुखमें कवो सुखमें, जिमो कुंवर काम; पाननी बीमी करी, आपीशुं अन्नीराम ॥ मे० १७ ॥

वात सुणशुं कुवर करा, थई धरी लगी जेह; आपणा वितक विच्यारा, आलीशुं धरी नेह; मनोरथनी माला जली,
गुंथी राखी एह ॥मे० १८॥ ए नेवाशीमो जली, ढाल तो सुख कार; कहे श्रीगुणसुरी सघली, ढालमें शिरदार; सां
जल्यां आवी मिले, सकल वंछीत फल सार; ॥मे० १९॥ ॥ दोहा ॥ आगे जातां आवीयो, सुंदर मंदिर एक;
हयथट गयथट नरथटां, पुरीत शोल अनेक ॥ १ ॥ वली विशेषे जुवतां, विद्या जांखे इश; ए घर तुम्ह माता तणो,
जणणी पुरी जगीश ॥ २ ॥ नित्य महोछव नवनवा, दिजे, पौली प्रवाय; याचक जय१ उचरे, जुरी जणे गुण गाय
॥३॥ ढाल ९० मी॥ परम सलुणो साधुजी ॥ए देशी॥ मोहन प्यारे चेलणा, चतुराइ दिसेरे; रागे राची रुख
मणी, मलवाने मन हिसेरे ॥मो० १॥ रुप धरयो रलीयामणो, रुखी वालीक रुमेरे; मिठो नीमीत जाखणो, बोले
जीम सुमेरे ॥ मो० २ ॥ वेस विराजे साधुनो, महीमा ए अति मोटोरे; पुज्य पठे वमी पांगुरी, चलोटो पण
ढोटोरे ॥मो० ३॥ खांधे लटके लोवमी, लटकंतो चालेरे; जयणनो गुण राखतो, हलुए हलुए हालेरे ॥ मो० ४ ॥
देह प्रमाणे दिपतो, करमे दंम धरावे रे; मन मथनावे दुकमो, दरसणने दावेरे ॥ मो० ५ ॥ मोहमे विधी मुहपति,
मुनी मय लेगात्रीरे; गुण आचारे उजलो, अति चारीत्र पात्रेरे ॥ मो० ६ ॥ आठो उघो वांहमे, पुजवाने काजेरे;
यल करेवे जीवनी, संजम गुण गाजेरे ॥ मो० ७ ॥ रंग रंगीला पातरा, पमी लेहि लिजेरे; एखणा सुधी आहारनी,
गवेखणा कीजेरे ॥ मो० ८ ॥ सुमते सुमतो वे खरो, गुपतिए करी गाढोरे; दर्शण दिठे जेहने, चित होवे टाढोरे ॥
मो० ९ ॥ पीहरीयो ठकायनो, व्रत तो चोखा पालेरे; निग्रह इंद्रि पांचनो, डपण सहु टालेरे ॥ मो० १० ॥ शिल

धरे नव वामसुं, तस क्राधे न कोइरे, समता रसनो सागरु, निरलोभी आति होइरे ॥ मो० ११ ॥ सनमुख दीठो आवतो, शा साहमी आवेरे; देइ प्रदक्षणा वंदनां, करती मन सुख पावेरे ॥ मो० १२ ॥ लेवा चाली पाटलो, हरी आसणे बेठोरे; रुखमणीना मन जीतरे, आति अचरज पेठोरे ॥ मो० १३ ॥ विनय करीने विनवे, रुषी उरहा आवोरे; वेसो वीजे आसणे, जीम साता पावोरे ॥ मो० १४ ॥ ते धन थानक जाणीए, जींहां रुषी ले विश्रामोरे; उवावुंबु कारणे, तुम्ह मति डख पामोरे ॥ मो० १५ ॥ देवा धीधीत एह अछे, हरी केहरीको जायोरे; बेठो सुख पावे सहि, अवरा नेध्र सोहायोरे ॥ मो० १६ ॥ रुपि जांखे सुण श्राविका, ए केहि चिंत्यारे; साप खेलावे मानवी, जाणी अहिमंतारे ॥ मो० १७ ॥ लब्दि प्रसादे देवता, हम शुं नवि बोलेरे; ताजु घाली झुंगरा, कर साथे तोलेरे ॥ मो० १८ ॥ मेरु तणो दांमो करे, धरती छत्रांकारेरे; राखे हाथा उपरे, सायर जलनी धारेरे ॥ मो० १९ ॥ तो तुम्ह साचा स्वामीजी, खमवो ए अपराधोरे; दिसोछो तो नान्हमा, संयम किम लाधोरे ॥ मो० २० ॥ भुमंमल पर जनमीया, प्रथवीपति तातोरे, माता तो महि मंमणी, वैरागे वातोरे ॥ मो० २१ ॥ आज लगी गुरु भेटणा, हमने नवि हुइरे; आपहि आपे जागीया, गति मति जुइरे ॥ मो० २२ ॥ तिरथवाशी हुं सहि, इहां आयो आजोरे; वरस सोलनो, पारणो, करवाने काजोरे ॥ मो० २३ ॥ जांखे राणी रुखमणी, ए अधीको केहेवायोरे; उत्कष्टी अवगाहना, वरसी तणो तप थायोरे ॥ मो० २४ ॥ अंबताइं उपवासीयो, माता थान हरामोरे; वात वमास्युं कीजीए वोहरावणनो कामोरे ॥ मो० २५ ॥ खट चोरासीमी भली, ए ढाल कहावीरे; श्री गुणसागर सव लह्यो, मा दरशण पावीरे ॥

सो० २६ ॥ ॥ दोहा ॥ दरशण पामी माता तणो, मान्यो सुख मनमांहि; तेतो जाणे केवलि, के जाणे चित प्रांहि ॥ १ ॥ मनहि मील्यो नयणा मील्या, अने मलियो वयणां कांय; च्यार मिलणमां एकहि, मिलण मलि नहि माय ॥ २ ॥ ढाल ए१ मी ॥ ॥ साहिब बाहु जणेसर विनवुं ए देशी ॥ रुखमणी तुंतो साची श्राविका धारो अति शोजाग हो रु० ॥ परदेशामें सांजल्यो, देव गुरु शुं राग हो ॥ रु० तुं० १ ॥ क्षुद्र नहि रुपे जलि, सोम महा सुखदाय हो रु० ॥ सत्य वदे मर पापनो, सरलपणे सुचि काय हो ॥ रु० तुं० २ ॥ स्नेह घणो लज्या घणी, दया घणी दिल मांहि हो रु० ॥ सम जावी शुन्न दृष्टणी, गुणनि रागणी प्रांहि हो ॥ रु० तुं० ३॥ धर्म कथक धर्मातमा कुल तो अन्नय विसुध हो रु० ॥ दिरघ दृष्टिए देखणी, अर्थ लहे अविरुध हो ॥ रु० तु० ४ ॥ विनयवंति गुण जाणती, पर हित करत जगीस हो ॥ रु० ॥ लब्धि लखी गुण धारणी, एवं ए एकाविस हो॥ रु० तुं० ५ ॥ समकीत गुणने पालवे, धारो निश्चल नाम हो रु० ॥ देव न देवी चालवे, धर्मिसु धर्म प्रणाम हो ॥ रु० तुं० ६ ॥ पर्व तणी आराधना, फरती मन उजमाल हो रु० ॥ पोसा पमीकमणा करे, सब वीधी वात रसाल हो ॥ रु० तुं० ७ ॥ साहमी शिलवंति सीता जेसी, नाग्यवंति संसार हो रु० ॥ पंचासिनी उपमा, सत्यवंति वरनार हो ॥ रु० तुं० ८॥ साहमी साहामणी साचवे, धर्म थानक पोसाल हो रु० ॥ साधु साधवियां तणी, गोरु जीम संनाल हो ॥ रु० तुं० ए दिन प्रत्ये चारी प्रकारनो, दान तणो अधीकार हो रु० ॥ अण वोहोराव्या आवमी, जीमवा नेम अपार हो ॥ रु० तुं० १० ॥ इम सुणी गुण उरथी, गोमंतो गुणगेह हो रु० ॥ हुं आयो तुम्ह आंगणे, आणी धर्म सनेह हो ॥ रु० तुं०

११॥ सार न पुछी एतली, वोहोरो स्वामी आहार हो रु०॥ अंतराइ कोइ माहरे, केथइ चित विसार हो ॥रु० तुं० १२॥ कहे रुखमणी रुपीजी सुणो, आरति वंति आज हो रु०॥ रांधण सींधण वीसरी, वीसरीयो सव काज हो ॥रु०तुं० १३॥ एवमीशी आरती अछे, नांखे सयल विचार हो रु० ॥ पुत्र आगम वेला हवे, ए जिन नांखीत सार हो ॥ रु० तु० १४॥ सही नाणी सघली मली, सुके व्रक्ष अशोक हो रु०॥ फूल फले करी गह गह्यो, देखे सघला लोक हो ॥रु० तुं १५॥ मुंगा लाग्या वोलवा, विरुया आति रुप हो रु०॥ कुवज फरी सर लाधीयां, आधा नयण अनुपहो ॥रु० तुं० १६॥ निर नराणी वावमी, कमले शोन्न उदार हो रु०॥ कोयल वोल सोह्यामणा, मोर करे किंगार हो ॥रु० तुं १७॥ विण रतु२ राजीयो, आणी विराज्यो आज हो रु०॥ नमरा गुंजारव करे, फुल फुल्यां तरु साजहो ॥रु० तुं० १८॥ माहरो मन पण उलस्यो, पान्हो चढीयो पुर हो रु०॥ पण नायो मुझ नान्हमो, ए मन चिंत्या नुर हो ॥ रु० तुं० १९॥ उतावली एतिकीशी, जे नांख्यो जिनराय हो रु०॥ प्रोहर घमीने आंतरे, सो तो रहस्ये आय हो ॥रु० तुं० २०॥ सान्नांखे रुखी राजीया, घमी घमुथल होय हो रु०॥ नामा सुत नाव्या हमे, शिर रुमा तो जोय हो ॥रु० तुं० २१॥ वाल तजी तव वोलीयो, किसी विमासण एह हो रु०॥ वाल गया फरी आवस्ये, साजी चाहीए देहहो ॥रु० तुं० २२॥ में जाण्यो तो मोटको, एठे उपद्रव्य कोइ हो रु०॥ तव लगे नय नवी नांखवो, प्राण कुशल जव होइ हो ॥रु० तुं० २३॥ प्राण तजुं ततखीण सही, पामीए अपमान हो रु०॥ मान गया जग जीवणो, ते तो जहीर समान हो ॥ रु० तुं० २४ ॥ मांगो पाणी उतरयां, तलपी२ मरी जाय हो रु० ॥ सहिरूपि ते माणसे अमरखतो न सहाय

जे ॥रु॰ तुं॰ २५॥ पुछेवो युग तो नही, रुपीने गृह व्यापार हो रु॰॥ पण आरती छे आंधली, नांखो कांइ विच्यार
। रु॰ तुं॰ २६ ॥ रिते हाथे न पुछीयां, नवि फल दाइक थाय हो रु॰ ॥ तोशुं आपुं देवजी, खीर खरीइ सोहाय
। रु॰ तुं॰ २७ ॥ शिली आगन सालगे, फूंकिश जोइ हो रु॰ ॥ घांची थाती जाणके, फिरी नांखे रुखी सोइ हो
तुं॰ २८॥ शिधा मोदक मोटिका, सिधाहि पकवान हो रु॰॥ मिठाइ मेवा घणां, फासुक वस्तु प्रधान हो ॥ रु॰
२९॥ हाजर सहेजे जे हुवे, सोश्राणी वाहिराव हो रु॰॥ नरीयां मोटां माटलां, विद्याने प्रनाव हो ॥रु॰ तु॰ ३०॥
रीया हरी केसरी, हरी आरोगण हेत हो रु॰ ॥ लाफु लिधा नवि गया, लिधा सुन संकेत हो ॥ रु॰ तुं॰ ३१ ॥
एक छपामीयो, तव बोले रुपीराय हो रु॰ ॥ एक किस्युं पुन्यातमा, कर कागे देखाय हो ॥ रु॰ तुं॰ ३२ ॥
रुछे जरस्ये नहि, हरी एकेको खाय हो रु॰॥ चोथा ए तुम बुऊइ, नहि, नही रुपी हत्या थाय हो ॥रु॰ तुं॰ ३३॥
कोइ माति मानजो, तप निल वधी प्रमाण हो रु॰॥ नस्म होवे हम नोगव्यां जे छे ते सहु आण हो ॥ ॰ तुं॰
। वहराव्या सघला सहि, खाय गयो रुखि बाल हो रु॰॥ चक्री खिर तणी परे, तस जरयो ततकाल हो ॥रु॰ तुं॰
। धर्म तणी वर गोठमी, करतां वरते जाम हो रु॰॥ सांनलवा सरखो हुइ, अवर कथा अनीराम हो ॥रु॰ तुं॰
॥ एकाणुंमी ढालमें, नोजन माता हाथ हो रु॰ ॥ श्रीगुणसागर सुरजी, ढलट सघली साथ हो ॥रु॰ तुं॰
। ॥दोहा॥ नामां नाव विसुधशुं, जाप जप्यो परिपुर; रुप न रचवी राजीयो, छतो गमायो नुर ॥ १ ॥ सुत
ग धन वांछना, दाशी शु घरवास, रुप आशा शिर मुंनीगा- नेने निशाम निराठ ॥२॥ तृश्ना वाह्यो वाणीयो,

जलवट वणज कराय; कोइ वाय झबुकते, आयो मुजग गमाय ॥३॥ जलहि जलने साचवे, ताल न तृपतो होय; जल२ करतां जल गयो, रातो पमीयो सोय ॥४॥ अरे किहां ए विप्रते, वादी विगोयां जाय; हाथ घसे शिर धुणावे फीरी२ पिछताय ॥५॥ ढाल ए२ मी॥ पुन्य तणारे फल मिठारे जांणो ॥ए देशी॥ फिरी२ पिछतावा करति, वरते नामा जामरे माइ; सात पोकार अनावी आवी साउख पावि तांमरे माइ ॥ फि० १ ॥ तन संनाली पहिरे फाली, वाली झाक झमालीरे माइ; नवारी मेरे नानुं कुमरपर, पुछे कुमर रसालीरे माइ ॥फि० २॥ तन मन प्यारो नंद हमारो, सारो राखे इसरे माइ; उर न चाहुं तुझ आराहुं, ए मुको जगीशरे माइ ॥ फि० ३ ॥ अवरसहुवा तानो सुधो, पण फिरी नावे केसरे माइ धुरती धुति खरी विगुती, होशेहाश विशेषरे माइ॥फि० ४॥ अमरख आणी नामांराणी गणीए अनीमानरे माइ;रूखमणी नुंमीनेअति नुंमी,करशुं आपसमानरे माइ ॥फि०५॥ एमाविमाशी बहुली दासी, नावी लीधो लाररे माइ; माथे मुंमण करवा नुंमण, पोखी द्वेष अपाररे माइ ॥ फि० ६ ॥ मणांनो नाजन साथे साजन, वाजानो विस्ताररे माइ; गावत गीत विशेषे आव्या, रुखमणीने दरबाररे माइ ॥ फि० ७ ॥ आवत निरख्यो मन स्युं परख्यो, ए नामा परीवाररे माइ; आंसु ढलियां रुपी अटकालियां, पुछे ताम विच्याररे माइ ॥ फि० ८ ॥ धुरछे हांसुं अतिनें हांसुं, नांख्यो सहु विर तंतरे माइ; नायो जायो लोक सोहायो, गिरुवोने गुणवंतरे माइ ॥ फि० ए ॥ नामां केरां लोक घणेरां, के सांकेरे काजरे माइ; आवी मीलियां अति उछलियां, बोले गोमी लाजरे माइ ॥ फि० १० ॥ ए उख तो जाण्योथो आगे, नारद वचन विच्याररे माइ; ए दिन लीधां काज न सिधां, दिन

नंदे हरि नाररे माइ ॥ फि० ११ ॥ बोले चेलो पाभी हेलो, माता मकरे अंदेहरे माइ; बेटो करतो सोमे
माणिश मन संदेहरे माइ ॥ फि० १२ ॥ रुखमणी गंनी राखी कानी, माया रुखमणी कीधरे माइ; आपण
वदन सरोजो, हाथां आलीसो लीधरे माइ ॥ फि० १३ ॥ नारी सुरंगी भुखीत अंगी, हस्त मुखी हुंशीधार
आदर देती लोकां सेते, वचन वदे सुविच्यारर‍े माइ ॥ फि० १४ ॥ लोक प्रवीणा जांखे दीणा, माताहमनहि
माइ; तुम्ह हम ठाकुर हम तुम्ह चाकर, उसन जरीय कोसरे माइ ॥ फि० १५ ॥ सामनि फारज करवो
हम आव्या तुम वाररे माइ; जीन गले एह वचन कहेतां, साचो देवि विच्याररे माइ ॥ फि० १६ ॥ रुखमणी
रोसन राखे, सामीनी केरो कामरे माइ; वेगे किजे जग जस लिजे, ए लीर बोल्यो रामरे माइ ॥ फि० १७ ॥
विच्यारी हरखी नारी, सारी जारी जावरे माइ; जाजन आगे धरती रागे, चित्तनो चोखो चावरे माइ ॥ फि०
अक्षत दोब दहि सु मंगल, किजे विविध प्रकाररे माइ; अधम तणी अहि नाणी जाणी, ए खाता वपर खाररे
फि० १९ ॥ नाचि आवी आप जणावी, कापे केस जे वाररे माइ; कान नाक वेणी आंगुलिया, ठे दाइ तेर
माइ ॥ फि० २० ॥ नावीने नारी जन केरी, एह अवस्था होइरे माइ; आप न देखे हरख विशेषे, चाली जा
माइ ॥ फि० २१ ॥ रुखमणी केरी घणुं घणेरी, करती जाइ प्रशंसरे माइ; एहवी मीठी अवर न दीठी, धन
कुल वंसरे माइ ॥ फि० २२ ॥ देह विपर्यय जाणी हसंता, दिठा लोक ते चाररे माइ; हम सुंदरता ठे मन
तेहथी हाश प्रकाररे माइ ॥ फि० २३ ॥ नाचत गावत अति सुख पावत, आवत जामा पासरे माइ; एक

ढखो रुखमणी, गुण केरो करे प्रकाशरे माइ ॥ फि० २४ ॥ ज्ञमके तमके जामा जामनी, केश न देखे एकरे माइ; रेरे ढोहणी दासभीयो तुम्हे, खाधी लांच अनेकरे माइ ॥ फि० २५ ॥ लांच तणुं पुछेवुं पाछे, वेणि नाकने कानरे माइ; आंगुलिया जतरीयां दिसे, देह घटाचो वानरे माइ ॥ फि० २६ ॥ चमकी चित भींतर अती चतुरां, व्यापि वेदना जामरे माइ; ढांकी काया चोर तणि पेरे, निज २ घर गइ तामरे माइ ॥ फि० २७ ॥ सु साति करीने स्वामनी पुछे; किधो किणे आ कामरे माइ; रुखमणी रंच न दोश न दिसे, ए विलसे नृप स्वामरे माइ ॥ फि० २८ ॥ सेवक ढखीए स्वामी लहे ढख, सुपी ए सुखीयो होइरे माइ; तेमी प्रधाना आगे नांखे, जोर वहे जग जोइरे माइ ॥ फि० २९ ॥ वेणी दंभजनाप्यो आप्यो, ए न वद्यो विपरीतरे माइ; फिर२स्ता रुप अनेका, सुभने वितक वितरे माइ ॥ फि० ३० ॥ होमे हाम न पुगी कोइ, होमे आया हेठरे माइ; हाणी वणीने लोका हांसो, होमे हारी नेठरे माइ ॥ फि० ३१ ॥ परपदा मांहे पधारो प्रभुजी, देखावो ए कामरे माइ; शिरे लाणा नवि जाय थाप्या, स्याणि ढुंभो नामरे माइ ॥ फि० ३२ ॥ हरी हांसो नमावे हयमे, आप वजावे हाथरे माइ; कोइ पलेणो करण न पावे, स्वामीनि सरिखो साथरे माइ ॥ फि० ३३ ॥ कन कतुहल करतो जाणी, आवी जामा आपरे माइ; केश अपावो कपटी कंता, के थाशे संतापरे माइ ॥ फि० ३४ ॥ थारेही आपे नवि सरीयुं, बलदेवा अुं वातरे माइ; तुम्ह पुरुषोतम साखी राखी, इम करे कुण मातरे माइ ॥ फि० ३५ ॥ हरीस्युं हलधर देइ उबंभो, माथे चहोडी नारयरे माइ; सुधी वाते रुकटि करतां, लहिशे नाम गीमाररे माइ ॥ फि० ३६ ॥ कन कहे शा आप एकेली, ए बहुलो परीवाररे माइ; किम मुंभाइ

दादा देखो, ए स्योकां विवहाररे माइ ॥ फि० ३७ ॥ श्री वलदेव दिलासा कीधा, जामाने नरपुररे माइ; रुखमणी घर जुंटेवा कारण, मोकलिया नभ चुररे माइ ॥ फि० ३० ॥ ए वाणुमी ढाल नलेरी, मुंमणको अधीकाररे माइ; श्री गुणसागर सुरी वखाणे, हरी सुत चरीत उदाररे माइ ॥ फि० ३९ ॥ ॥ दोहा ॥ तेहज रुप तजी फीर थयो, चेजो पेहेल प्रमाण; चमकी राणी रुखमणी, ए वम गुणनो जाण ॥ १ ॥ विद्याधर मांहे वस्यो, विद्या तेह विशेष; रुप करेछे नव नवा, पण ए काम नरेश ॥२॥ एहवो अवर न जगतमें, एहवो अवर न राय; एहवो अवर न जाइयो, एहवो अवर न थाय ॥३॥ ए जायो माहरो सहि, ए सम अवर न कोइ; तारा दिश सघली जणे, रवि पुरव दिश होइ ॥४॥ फेलवतो अति हि कला, खिसीन जाये खाप; माय मनोर्थ पुरवा, पुत्र प्रगट कर आप ॥५॥ कामदेवनी उपमा, रुप अनोपम सार; अभ्र पम्लथी निकल्यो, सहेस किरण दिनकार ॥६॥ सर्व अवेवां शोभतो, सर्व आभुक्षण धार; सर्व कला गुण आगलो, दिठो काम कुमार ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ९२ मी ॥ मेकजलाकोपणालयो ॥ तथा क्युं जाणुं क्युं बनी आवसि ॥ ए देशी ॥ पगे लाग्यो माता तणे, माता लियो उगाय हो लाल; आलंग्यो अलजे घणुं, हेज हिए न समाय हो लाल ॥ १ ॥ आज भलो दिन माहरो, ऊधे वुठा मेह हो ला० ॥ दर्शण दिठो ताहरो, जाग्यो तनमें नेह हो ॥ ला० आ० २ ॥ गती आवी गह्वरी, आंसु वरसे नयण हो ला० ॥ माता पुत्र मिली रह्यां, उपज्यो अधीको चयन हो ॥ ला० आ० ३ ॥ मुह अने माथो घणुं, चुंबे वारंवार हो ला० ॥ हुं वारी तुझ उपरे, तुं मेरो प्राण आधार हो ॥ ला० आ० ४ ॥ वलहारी सुरति तणी, मुरती मोटी सोह हो ला० ॥ अणियाले लोयणे,

माता पनोत माहे हो ॥ ला० आ० ५ ॥ आवो मिलो साहेलमों, देखो मोरो लाल हो ला० ॥ इंद्र चली घर आवियो, सब विध रुप रसाल हो ॥ ला० आ० ६ ॥ प्रेम गहेली गोरमी, चिगन करे लखकोम हो ला० ॥ घन वुठा जीम मोरली, नृत्य करे नर जोम हो ॥ला० आ० ७॥ दाखा पाहे दैवमी, मीठी अति कहाइ हो ला०॥ पाणी पांपण हेठलो, निरखत निठे नांहि हो ॥ ला० आ० ८ ॥ लहेरी खारा जल तणी, वरस्यां पाछे वाय हो ला० ॥ परदेशी प्यारो मिले, शिलक कहि न जाय हो ॥ ला० आ० ९॥ चंदन तो शितल कह्यो, तेहथी चंद सुचंग हो ला० ॥ चंदन चंद विचारता, शितल नंदन संग हो ॥ ला० आ० १० ॥ मिश्री तो मीठी सहि, तेहथी अमृत जोइ हो ला० मिश्री अमृत दोय मे, मीठो नंदन होइ हो ॥ ला० आ० ११ ॥ सोनो तो सुखदायकुं, सोनाहिथी रयण हो ला० ॥ रयण अने सोना थकी, नंदन तो सुख दयन हो ॥ ला० आ० १२ ॥ प्याराथी प्यारो खरो, सरसाथी अति सर्स हो ला० ॥ निकाथी नीको घणुं, निको नंदन दर्श हो ॥ ला० आ० १३ ॥ हियो सरोवर सांकमो, उलट जलनो जोर हो ला० ॥ लहिर न जाइ जालवी, रहीयो होइ सोर हो ॥ला० आ० १४ ॥ सुख मांहि डुख उपनो, माजीना मनमांही हो ला० ॥ वालपणो नवी देखीयो, ए डुख साले प्रांही हो ॥ला० आ० १५॥ गर्भ तणी विधी साचवी, उदर वह्यो नव मास हो ला०॥ कष्टी महा डुखे जनमीयो, किधो परघर वास हो ॥ला० आ० १६॥ दोश न देणो कोइने, कर्माकेरो दोश हो ला०॥ भाग्य लख्यो फल पाइए, करवो रागने रोसहो ॥ला० आ० १७॥ मदन कहे माजी सुणो, ए डुख माणे कोइ हो ला०॥ वालकरुप सोहामणुं, करी देखावुं सोइ हो ॥ ला० आ० १८ ॥ उंधो सुतो आगले, चिंतवे साहमुह

मांहि हो ला०॥ चपल पणे पाठ धारतो, उठावे धरी वांही हो ॥ ला० आ० १९ ॥ मुठी वांधी सोहतो; मोह तो
परीवार हो ला० ॥ हांशी करे अति कलकली, माताने हर्ष अपार हो ॥ ला० आ० २० ॥ खोले लिधो खांतशुं,
ग्वरावे पयपान हो ला०॥ आंखे काजल घालतां, विच२ मेंलेतानहो ॥ला० आ० २१ ॥ आपेही लाग्यो डवा
जानुनी गति कारहो ला०॥ पाव नरे गिर२ पमे, माता मोले लार हो ॥ला० आ० २२ ॥ माताको कर साहीयो.
हंस वचाकी चाल्य हो ला० ॥ वोले नापा तोतली, माता पुछे वाल हो ॥ ला० आ० २३ ॥ जाइ लोटे आंगणे.
धुले धुसर गात हो ला०॥ मुठी वांधी धुजशुं, कंठे लगावे मात हो ॥ला० आ० २४ ॥ माता आपे सुखमी, आप
नाखे डर हो ला०॥ ए नही२ ए नही; उतुं लाव्य हजुर हो ॥ला० आ० २५॥ आमो मांमी आकरो, रोवा लाग
जाम हो ला०॥ वोले माता रूखमणी, ए रहि वाचे काम हो ॥ला० आ० २६॥ तव वय लिधी मुलगी, माय नम
शीश हो ला० ॥ चिरंजीवे चिर नंदजे, माता दिए आशीश हो ॥ ला० आ० २७ ॥ वारू वात विनोदशुं, कर
वरते माय हो ला०॥ वरस सोलनो संचियो, डख देशांतर जाय हो ॥ला० आ० २८॥ माय मनोरथ गुंथती; सप
थइ ते आज हो ला०॥ पुरव पुन्य प्रसादथी; मिलीयां ए सुन साज हो ॥ला० आ० २९॥ एतो त्राणमी कही; ट
महा अनीराम हो ला०॥ श्रीगुणसगार सुरजी, सरीयां वंछीत काम हो ॥ ला० आ० ३० ॥ ॥दोहा ॥
लनइ तणा वली, सुनट महा झुंफार; आवी हुआ एकठा, रूखमणीने दरवार ॥ १ ॥ मदन कहे माता कहो.
कवण विच्यार; जेतें तरूवर वावीया, ते ए फल विस्तार ॥२॥ ॥ढ— ॥४ मी॥ वनमालानी देशी ॥ ते

ए विस्तरीयारे, ए जम आवी परवरीयां; दाशीनी वेणी वाढीरे, ते नकटी किधी काढी ॥१॥ ते होमे मात्रा नाखीरे, हरी हलधर दिधा साखी; सतन्नामां जाइ पोकारीरे, तिहांथी जम आया न्नारी ॥२॥ मा चिंता नवी धरणीरे तुं देखे हमारी करणी; विद्या ब्राह्मण किजेरे, लाकलक्षी हाथ ग्रही जे ॥३॥ पेट वमो तसु हालेरे तेहलुंइश चाले; ते खीली राख्यां सघलारे, ते सुन्नट हुआ अति निबला ॥४॥ तव एक मोकलो किधोरे, प्रन्नु पासे गयो ते शिधो; सुणी बोले श्रीबलदेवारे, ए मंत्र तणा बल लेवा ॥५॥ ए वहुतो मोहन गारीरे, ए वहुतो आप ठगारी; ए वहु तो कामण जाणेरे, ए नाये पियु वश आणे ॥६॥ शिलो दहिं दांतज्युं, तोमेरे; शिलो जल पर्वत फोमे; ए मोर चवे मुखे मीठेरे, पण साप गलंतो दिठो ॥७॥ वाणी एह वमकीरे, सापीणथी पण वांकी; अख्यरनो अधीको आघोरे, जरहो नवी आवे वाघो ॥८॥ जे काम करे नही पांखेरे, ते काम समारे आंखे; जे कालो क्रोधी विशेषेरे, ते मंत्र बले निचुं देखे ॥९॥ नरखोमे दिधा खुटेरे, नर बंधन बांध्या छुटे; मंत्र बले बांधी आण्योरे, नवी छुटे ते नर ताण्यो ॥१०॥ ए मर्म महा में लाधोरे, मंत्र बले माणस गाधो; ते साहमो होइने जुंकेरे; ते जोर जलाइ मुके ॥११॥ एतो हुं जाइने देखुंरे, ए मंत्र तणो बल पेखुं; ए सुतने किरती देवारे, चली आया प्रन्नु ततखेवा ॥ १२ ॥ तव ते ब्राह्मण सोवेरे, दरवाजे आमो होवे; तव कहे हलधारीरे, दिए वाट विशेषे विच्यारी ॥१३॥ विप्र कहे सुण स्वामीरे, तुंए अंतरजामी; न्नाम्मा नो न्नोजन खाधोरे, अति होमे ते फल लाधो ॥१४॥ प्रन्नुजी पाठा वलीएरे, गुरू बुधी विच्यारी टलीए; रिस वसे सोनांखेरे, मर्जादा न तेहनी राखे ॥ १५ ॥ अलगोथा घणां खाणारे, मुज मांदिर मांहि जाणां; विप्र वाणी एम

दाखीरे, न खवाइ जीवती माखी ॥ १६ ॥ एह वचने हलधर रिसेरे, पग साहीने तसघीसे; पहुंता पोले जाइरे काया अधीकी थाइ ॥१७॥ फिरी पुठे जब दिठेरे, ते ब्राह्मण थानक बेठो; मर्म न लिधो कोइरे, अति कालो पि... होइ ॥१८॥ मुक सुइणीपरे मंभ्रेरे, अवरांने ए किम ठंभे; ए माकणी साकणी साचीरे, लही मान महा मदम... ॥१९॥ पुनरपी चाली आवेरे, ते धसमस करतो धावे; दिसे रिस अपाररे, तव पुछी माय कुमार ॥ २० ॥ माय... सुण लालनरे, ए मोटा नांम दणानण; ए यादव केरो नायकरे एह तुम्ह पित्या सुखदाइक॥२१॥श्रीहरीवंशो एह... कोहुक न एठे जेहवो; श्रीबलदेव सोहायोरे, ए तुज उपर अब आयो ॥२२॥ तुम्ह जाइने पगेलागोरे, तुम्ह पाबाही म... नागोरे; जाणी भीमू साथेरे, मति घालो मोहोभे हाथे ॥२३॥ मदन कहे मा सुणिएरे, तेतो परमार्थ ए गुणीए, कालो न... खेलावेरे, तेतो वादी राय कहावे ॥ २४ ॥ युध किस्युं प्रजुने जावेरे, मृगपतिनो अधीके दावे; रण चढियो रोला... हल मुसल मार मचावे ॥ २५ ॥ विप्र वेश न ढंभेरे, ते सींग थइ अति मंभे; बाल ससि सम दाढोरे, गीरि ... सरिखो गाढो ॥ २६ ॥ कुंकुम केसर ढाजेरे, तव मस्तक पुंछ विराजे, सिंघ नादने करतोरे, ते मंदिरथी निसरतो ॥ २७॥ हलधर देखी वीमासेरे, जानी मरी ए इणे हासे; ए नारी नहि घर सरखीरे, मैं धुर छे हां लगे परखी ॥२... उपरणी शुं हाथेरे, वामो विटे नर नाथो; आगे धरीने ढूंक्योरे, ते चोट करंत न चुक्यो ॥ २९ ॥ ते मांहोमां... वलगारे, जण जोवे उभा अलगा; ताभण ताजण करवेरे, उल्हास घणे अनुसरवे ॥३०॥ ते हार्‍यो हरीने आ... हलधरजी धरति लागे; मदन गयो मा पासेरे, आलंग्यो अति उल्हासे ॥ ३१ ॥ पुत्र प्राक्रम दिठेरे, मा लो...

अमीय पड्गा, हलधर निज घर आयोरे, सुतने जस कलस चढायो ॥२१॥ ढाल चोराणुंमी वारुरे, मकरध्वज बल विस्तारु, श्री गुणसागर न्हासेरे; एतो पुरव पुन्य प्रकाशे ॥२२॥ ॥ दोहा ॥ ॥ माता पुछे कुमरने, किंहां अछे रुषी राय; जदथी कुमरी निपाखति, कुमरी कवण कहाय ॥१॥ कुमरी हरण आदे करी, नामा जुंम्मण अंत; दसहि बोल सुणाविया, अचरजकारी संत ॥ २ ॥ कहण सुणण सरीखा नहि, सुतना चरीत्र अनेक; सुर गुरु तो न्हल वरणवे, मैं मुख रसना एक ॥ ३ ॥ अवर सकल विधी साचवी, सुख डखदाइ दोइ; अब मल्यो जइ तातने, ताते पर्म सुख होइ ॥ ४ ॥ ढाल ए५ मी ॥ हो नणदल थांको विरो चारीत्र लइ ॥ ए देशी ॥ हो कुमर जाइ मलो तुम्ह तातने, तात वम्मो संसार हो॰ कु॰ ॥ बोले माता रुखमणी, आणी हेत अपार हो कु॰ जा॰ १ ॥ जीम सुख दिधो मा न्हणी, तमि सुख दो नीज तात हो कु॰ ॥ तात तुम्हारा दर्शणे, तर सेथो दिन रात हो ॥ कु॰ जा॰ २॥ स्वर्ग थकी सुख स्वर्गिना, जेहनो स्वामी तात हो कु॰ ॥ पंम्नीतजननी गोठम्नी, तिजो दक्कण वात हो कु॰ जा॰ ३ ॥ कुमर कहे किंहां मलुं, परखदा मांहि जाय हो कु॰ ॥ तात तुम्हारो पुत्र हुं, इम तो मैं न कहाय हो ॥ कु॰ जा॰ ४॥ राजा राणा पुछशे, ए कुण२ एह हो कु॰ ॥ ए रुखमणी सुत आइयो, थो परदेशां जेह हो ॥ कु॰ जा॰ ५ ॥ न्हले पधारयो बापम्नो, मावित्रां सुख काम हो कु॰ ॥ रम्नवम्नतोथो पर घरा, जीम तिम आयो गम हो ॥ कु॰ जा॰ ६॥ नान्हा मोटांना कियां, मैं न खमाइं बोल हो कु॰ ॥ हुं निशांण वजावते, मिलस्युं घुम्नाइ ढोल हो ॥ कु॰ जा॰ ७॥ वम्न बाबा वम्न बंधवा, हरी हलधर शुं सोर हो कु॰ ॥ मचाउ अति आकरो, जोउं जादव जोर हो ॥ कु॰ जा॰ ८॥

पहुंता पोले जाइरे ते

दाखीरे, न खवाइ जीवती माखी ॥ १६ ॥ एह वचने हलधर रिसेरे, पग साहीने तसघीसे;

नेमीनाथ ढांमी करी, वेमीस सहु परीवार हो कु० ॥ आप जणावी तातने, करशुं आइ जुहार हो ॥ कु० जा० ए ॥ वाचा मागुं तुझ कने, चाल हमारी लार हो कु० ॥ अण पुछ्यां आवुं नहि, पतिव्रता आचार हो ॥ कु० जा० १०॥ जाएयुं मति पाछो वले, मति समरे उदेश हो कु० ॥ ऋभ तणी वे पाधरी, मानी वात अशेप हो ॥ कु० जा० ११ ॥ वांहे साहि रुखमणी, परखदा उपर आय हो कु०॥ कीधी पुरुषा पचारणी, सांभल यादव राय हो ॥कु० जा० १२ ॥ जो जोग पांमवो, अवरजीको झूझार हो कु० ॥ आवी मील्यो उतावला, लागो हमारी लार हो ॥ कु० जा० १३॥ चंदेरी पती मारीयो, कीधो अती संग्राम हो कु०॥ आणी राणी रुखमणी, सो अब जाइ निकाम हो ॥कु० जा० १४॥ विद्याधर पति नंदन, हुं एकाकी बाल हो कु०॥ लीधा जाउ रुखमणी, जेहनो हरी रखवाल हो ॥कु० जा० १५॥ चोर नहि लंपट नहि, नहि नटवीटमें नाम हो कु०॥ साहि रह्योतुं सुंदरी, किव न धसेनृप शाम हो ॥कु० जा० १६॥ स्या तुम्ह राणा राजीया, स्यो जीव्यो जग तमाम हो कु०॥ जेहनी लीजे जामनी, अवर किस्युं करे काम हो॥कु० जा० १७॥ युध विना जावं नहि, सांभलज्यो जे सुर हो कु०॥ पाछी हि जब दोमस्ये, तेका कीजे असुर हो ॥ कु० जा० १८॥ इम सुणी यादव सभा, हल २ हुइ अपार हो कु०॥ संवाह्या जम सामवा, गाढा झुझण हार हो ॥कु० जा० १९॥ मोरढाणो हलधर महा, सुणी रुखमणी अपहार हो कु०॥ उगाइ उन्नो कियो, रातो थयो अपार हो ॥ कु० जा० २० ॥ भ्रगुटी जाली जमाझतो, करतो कंप शरीर हो कु०॥ उठ्यो अच्युत उतावलो मेरु तणी परे धीर हो ॥कु० जा० २१ ॥ पांमुनंदन परवमा, अर्जुन जीम कुमार हो कु०॥ कवण२ करी कलकले, न लहे निज परवार हो ॥ कु० जा० २२ ॥ आप आपणे

पारखे, गाजंता नुपाल हो कु०॥ जयसेन आदे करी, अरी कुल केरा काल हो ॥कु०जा०२३॥ ए पंचाणुमी ढालमें आप जणावण हेत हो कु०॥ श्रीगुणसागर सुरजी, मदन कियो संकत हो ॥कु०जा०२४ ॥सिंधु रागे; दोहा॥ बाती फरसे केइ नम, केइ अधर मसंत; केइ हाथ पछामतां, जाणे पाके तंत ॥१॥ कंपावे काया घणी, क्रोध तणे वश जोय; अंध हुवा आगे धसे, समक पके नही कोइ ॥२॥ थंन उखाली नाखतां, मोमता निज अंग; सुनट वहे उतावला, देख वारण रंग ॥३॥ ढाल ए६ मी ॥ कागल लखी दीधोरे ॥ए देशी॥ रण रंगे रातारे, नम मोटा मातारे; खाताहो अमल अलवेसरुरे, रणनेरी दिधी रे; कांइ ढील न किधीरे, लीधोहो नेम ए सुंदरुरे ॥१॥ कारीज अणसरीयांरे, नोजन प रहरीयांरे; सरीयांहो कारीज जल पियांरे, बगतरने अंगेरे; शिर टोपशुं चंगेरे, चंगाहो खमग हाथे लीयांरे ॥२॥ बरछा जलहलतारे, पेमा खल शतारे; ढालताहो नेजा अति नलारे, तीरांसुं तरकसरे; नरी लीधां करकसरे, बरकसहो राखी राखण कलारे ॥३॥ हाथां कोमांरे, कावा परचंमारे; दंमाहो वज्र गदा ग्रहीरे, जम धमस्युं जोइरे; बतासे होइरे, साहेहो साधन जस नणीरे ॥४॥ तुटंता कसाणारे, सुरा तणां रसणारे; ग्रसणाहो परदल बल बहुरे घोमाने हाथीरे; सदन सहु साथीरे, आरुढहो हुआ ते नम सहुरे ॥५॥ तव बोले मातोरे, सांनल सुत वातोरे विरनीहो माय कही वाम जेरे; त्रीय नांखे कंतारे, मोमे गज दंतारे; सुरनोहो नाम लही वामजेरे ॥६॥ कुसम कीसे जोरे, सोवंत सहेजोरे; विंटीएहो डहवीयो तुं घणोरे, सहेणाठे सेलोरे; खांमा नाखेलोरे, खेल खरो असोहामणोरे ॥७॥ मुक लोचन तीरोरे लागंत अधीरोरे; कीमहो खमसे मालाकी अणीरे, मुक हाकन हमीयोरे; तुं पाए पमीयोरे, कीम सहस्ये दल कारणीरे॥८॥

भीमतोर भगोरोरे, ए मोटो ठोरोरे; मोरोहो मरण विच्यारजेरे, सखीयामें वासोरे; नसल्ला यहां सोरे; स्वामीनो काम समारीजेरे ॥९॥ रायागण आयारे, शोजंत सवायारे; पायाहो सुजस प्रगट पणेरे, कोइ छत्र धरावेरे; कोइ चामर ढलावेरे, भावेहो चित राजा तणेरे ॥१०॥ गुण लक्षणवंतारे, सोहंता दंतारे; वरसेहो साथे विराजतारे मदशुं थ्यां वहेतारे; कांइ समज न लहेतारे, जलहरे जेम गाजंतारे ॥११॥ ऊंचा अति चढीयारे, पर्वतशुं भमीयारे झुमीया हेमजंजीरशुंरे, ढलकंती ढालेरे; मलपंता चालेरे, हालेहो आप सरीसशुंरे ॥१२॥ घोडा हणहणतारे, ते सघला थ तारे; खणताहो धरती खुरतालशुंरे, लंबोदर रूडारे; चालंता नही कुडारे, सुडाहो वरण विलासशुंरे ॥१३॥ र राजे वारुरे, चालंता चारुरे; सारहो तुरंगम जोतरारे, सस्त्रांसु भरीयांरे; रण आगे धरीयारे, पायाहो धरणीने पोते ॥१४॥नरपायकपालारे, हुशीयार हठालारे; आगेहो होइने हालणारे दिसे झलहलतारे, रीसे फलशतारे; चलताहो नवालणारे ॥ १५ ॥ रणझुमी आयारे, यदुपती रायारे; मांड्याहो लोग लभावणीरे, माता मुनी संगेरे; मनरंगेरे, रगेहो जग उमावणीरे ॥ १६ ॥ हरी साथ सरीखोरे, ए सघल परीखोरे; किधाहो विविध प्रकारशुंरे. न रहय वर हाथीरे; साथाशुं साथीरे, झुझेहो धर्म विच्यारशुंरे ॥१७॥ नलढोल ऊदामारे, काहला अभीरामारे; नीरुपम जुजुलरे, भूडा ढवाजेरे; शरणाइ साजेरे, रागहो जमीरो सिंधुलरे ॥१८॥ गोखे चढीयो गोरीरे, देखे चोरीरे; आगे हो सोहे मारो नाहलोरे, कुलदेवी मनावेरे, प्रीतमो जस पावेरे, आज हो एह उमाहलोरे ॥ १९ सुरा अति झूझेरे, नर कायर धुजेरे; दीन वचन मुखे जपतारे, जोवे देव तमासोरे; आकाशे वासोरे; या संगीहो

हर कंपतारे ॥ २० ॥ अतिपें हां आफंवेरेरे, आठा थो अंबरेरे; हाथहो हाथ सुझे नाहिरे, नहि वेरविरोधारे, हासा क्रत क्रोधारे, मदन विनोदाहो जाणे सहिरे ॥ २१ ॥ जम जम जागेरे, हरी दलने आगेरे; काम करे उगावणीरे, दल देखी खीसंतारे; धाया धसमस्तारे, हलधर पांभवपर जणीरे ॥२२॥ ते चोंपे चमीयारे, अति गाढा लमीयारे; नमीया हो मदन माया करीरे, हरी आपण आयोरे, सव जोर देखायोरे; कांइ न चाले चिंता खरीरे ॥ २३ ॥ पग आघा वावेरे, हरी साहमो आवेरे; पावे हो सुख हरी देखवेरे, हरी लोयण दकरे; वर वाह सुजकणारे, फूरके हो ते नर पेखवेरे ॥ २४ ॥ हरी जाखे जाइरे, ते रीस लगाइरे; तोहि तुज साथे नेहलोरे, हसी बोले नीकोरे; जायो हरीजीकोरे, कुण समो नेहनो जलोरे ॥२५॥ जो जोर न चालेरे, कां जांखन घालेरे; आपी हो त्रिया रुपी जीखमीरे, एह वचने कोप्योरे; अती गाढो रोप्योरे, नाभु हो त्रोमी जीवं चिचमीरे ॥ २६ ॥ जेहनो वल आपोरे, ते ठेयो चापोरे; ए वलि नाम महा वलिरे, घर वेगा जाउरे; हरी सुखीया थायोरे, नारी हुइ न हुइ जालिरे ॥ २७॥ अंगुठाथी लागीरे, जाइ माथे जागीरे; रोमे हो रोम साली घणीरे, तव कोमी उपायारे; किया हरी रायारे, एक न लागो नंदन जणीरे ॥२८॥ शस्त्र बल जांगोरे, हरी बाथा लागोरे; काल रुपी हो थयो कान्हमोरे, माताजी देखेरे; चिंत्यासु विशेषेरे, मतरे दमे माहरो नान्हमोरे ॥२९॥ वेसे मुज आमारे, ए दोइ पवामारे, हाणी होवे घर माहेरेरे; रुपिरोप विचालोरे, जइ किजे टालोरे, हाथे हो वात वे ताहेरेरे ॥ ३० ॥ रुपि विच करावेरे, रुपी रोस हरावेरे; कृश्न करो किस्युं नंदस्युंरे, नंदन समजायोरे; धसी सामो आयोरे, लाग्यो हो पाय आणंदस्युंरे ॥ ३१ ॥ आलंगी लीधोरे, जाणे अमृत पिधोरे, कीधा

नीमतोर नगोरेरे, ए मोटो टोरेरे; मोरोहो मरण विच्यारजेरे, सखीयामें वासोरे; नसहा यहां सोरे; स्वामीनो काम
समारीजेरे ॥९॥ रायागण आयारे, शोनंत सवायारे; पायाहो सुजस प्रगट पणेरे, कोइ छत्र धरावेरे; कोइ चामर
ढलावेरे, नावेहो चित राजा तणेरे ॥१०॥ गुण लक्षणवंतारे, सोहंता दंतारे; वरसेहो सावे विराजतारे मदशुं अति
वहेतारे; कांइ समज न लहेतारे, जलहरे जेम गाजंतारे ॥११॥ उंचा अति चढीयारे, पर्वतशुं भमीयारे झुमीयाहो
हेमजंजीरशुंरे, ढलकंती ढालेरे; मलपंता चालेरे, हालेहो आप सरीसशुंरे ॥१२॥ घोमा हणहणतारे, ते सघला वण
तारे; खणताहो धरती खुरताळशुरे, लंबोदर रुमारे; चालंता नही कुमारे, सुमाहो वरण विलासशुंरे ॥१३॥ रथ
राजे वारुरे, चालंता चारुरे; सारहो तुरंगम जोतरारे, सस्त्रांसु नरीयारे; रण आगे धरीयारे, पायाहो धरणीने पोतरेरे;
॥१४॥नरपायकपालारे, हुशीयार हगालारे; आगेहो होइने हालणारे दिसे झलहलतारे, रीसे कल श्तारे; वलताहो पुंठ
नवालणारे ॥ १५ ॥ रणभुमी आयारे, पडपती रायारे; मांड्याहो लोग लमावणीरे, माता मुनी संगेरे; मेली
मनरंगेरे, रंगेहो जंग उमावणीरे ॥ १६ ॥ हरी साथ सरीखोरे, ए सयल परीखोरे; किधाहो विविध प्रकारशुंरे, न
रहय वर हाथीरे; साथाशुं साथीरे, झुझेहो धर्म विच्यारशुंरे ॥१७॥ ननढोल डमामारे, काहला अनीरामारे; नाद
नीरुपम जुजुछरे, भुंगा डवाजेरे; शरणाइ साजेरे, रागहो जमीरो सिंधुछरे ॥१८॥ गोखे चढीयो गोरीरे, देखे चित्त
चोरीरे; आगे हो सोहे मारो नाहलोरे, कुलदेवी मनावेरे, प्रीतमो जस पावेरे, आज हो एह छमाहलोरे ॥ १९ ॥
सुरा अति फूलेरे, नर कायर धुजेरे; दीन वचन मुखे जपतारे, जोवे देव तमासोरे; आकाशे वासोरे; वा संगीहो थर

सुत आगमनी वात ॥पु० ७॥ हरी निरखे मुख रुखमणीरे, रुखमणी हरी मुख जोय; हरी रुखमणी मुख पुत्रनोरे पुत्र पित्या मा जोइ ॥ पु० ८ ॥ अमृत वरसे लोयणेरे, परम महा सुख होइ; ते सुख ज्ञानी वाहीरोरे, अवर न जाणे कोइ ॥पु० ९॥ भामां छे वसभागणीरे; कहि तिथी अनीवार; अब भाग केहनो वसोरे, कुण वसी संसार ॥पु० १०॥ मैं पण बालपणा थकीरे, काम कियां अभीराम; मुजही स्युं मंमथा भणीरे, प्रथीको कुमर काम ॥पु० ११॥ नगरीनी शोभा घणीरे, कचरो काढेरे डर; फूल विछेरे सेरमीरे, अग्र देवे अति भुर ॥ पु० १२ ॥ वाजां विवीध प्रकारनांरे, गुहरगमेनिशान; नादे अंबर गाजीयोरे, नाचे पात्र सुजाण ॥ पु० १३ ॥ घर२ गुमी उछलीरे, घर२ मंगल भ्यार; घर२ होवे वधामणारे, घर२ उछव सार ॥ पु० १४ ॥ पुत्र पित्याहथी चढीरे, रुखमणी मोलेलार दस दसारने हलधररे, लोकानो नही पार ॥ पु० १५ ॥ गोखे वेठी गोरमीरे, बहुलीदे आशीश; मात पित्यानी पुरज्योरे, आस्या अधीक जगीश ॥पु० १६ ॥ धन तुं माता रुखमणीरे, थारे एवो पुत; घणा किस्युं करे जाइयारे, कारण कोमीक सुत ॥ पु० १७ ॥ सांभलतां मारग विछेरे, विवध प्रकारे बोल; आया रुखमणी मंदिरेरे, वाग्या जंगी ढोल ॥पु० १८॥ मदन महोछव किजतांरे, हरखे सघला लोक; भामांने भानु तणोरे, चितमो थाय ससोक ॥पु० १९॥ हरी हलधर निज नंदेशुंरे, अवर अनेरा राय; रुखमणी घरे आरोगीयारे, दिन केता एम थाय॥पु०२०॥ दुर्योधन नृप आवीयोरे, हरीशुं करे पुकार; मुझ पुत्री वहु तुम्ह तणीरे, किउं न करो प्रभु सार ॥पु० २१ ॥ हरी चित चिंत्या आकरीरे, जाणी मदन जेवार; कुमरी आणी आपतांरे. हरी हरखत तेवार ॥ पु० २२ ॥ दुर्योधनने

हो विविध वधामणारे, हरी हरख न मावेरे; सुत दर्शण सोहावेरे, पावे हो आनंद अति घणोरे ॥ ३१ ॥ ए ढाल प्रसीधीरे, पटनेउमी कीधीरे; कीधी हो आप जणावणिरे, कहे गुणसागररे; हरी नंद उजागररे, नागर नवल लीला घणीरे ॥ ३३ ॥ ॥दोहा॥ काम कुमर मलवे करी, ए अधविच विचाल; हर्ष यने विखवाद अति, हरी पाम्यो समकाल ॥ १ ॥ नंद मिल्यो आनंदमें, ए हरी हरख अपार; बंधव जन्म धरणी पड्या, ए विखवाद अपार ॥ २ ॥ संकेलि माया सहु, जे जीम था तिम कीध; जयश्कार जगतमें, मदन महा जस लीध ॥ ३ ॥ मार २ कर उविया, सर्धुं कहे नृप स्वांम; एक ए पुत्र हमारने, सकल कियां गतमाम ॥ ४ ॥ माता एसा पुत जणे, जेसा काम कुमार; जिहां जोउं तिहां तेहवो, आप जणावण हार ॥ ५ ॥ ढाल ए७ मी ॥ सुधारस मोरली वाजे ॥ए देशी॥ आप जणायो जगतमेंजी, श्री श्री काम कुमार; यादव पांन्व नोजगांरे, मार्यो मान अपार; पुत्र पधारीयो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हरख्यो क्रश्न नरेश, हरखी मा सु विशेप; हरख्या लोक अशेप, पु० ॥ वधी विजय आदे करीरे, प्रणम्यो दशेहि दसार; आलिंगी हर्फे धरेरे, श्री वलनद्र उदार ॥ पु० २ ॥ राजा अरजुन नीमस्युंरे, मिलवानो अधीकार; राणा राजा प्रणम्यारे, पगे लाग्यो परीवाररे ॥ पु० ३ ॥ नानुं कुमार नासी गयोरे, माता नामा पास; वात जणावी विस्तरीरे, नामां हुइ उदाशरे ॥ पु ० ४ ॥ नोली नामां नामनीरे, आरति वंति होइ; जे किरतार वन्मा कियारे, ते स्युं जोर न कोय ॥ पु० ५ ॥ गगन थकि उतारीयोरे, विद्या रुपे विमान; कुमरी राखी उलवेरे, थकीत हुवा राजान ॥ पु० ६ ॥ रुखमणी प्रनु पगे लागतारे, हरीहांसो न समात; किउं न जणावीयो मुज नणीरे,

॥खंभ ५ मो॥ ॥ दोहा ॥ आचार्य इंद्रि दमे, आचार्य ब्रह्मच्यार; आचार्य आपे करे, क्रोधादीक परीहार ॥१॥
आचार्य व्रत आचरे, आचार्य आचार; सुमती गुप्ती व्रत पालतां, आचार्य गुणसार ॥ २ ॥ आचार्य आरा-
धतां, आपे वाणी विलास; अव पंचम अधीकारनो, पभणुं पुन्य प्रकाश ॥ ३ ॥ कृश्न कहे सचीवा प्रत्ये, मदन
कुमारको व्याह; मांड्यो आडंबर घणो, कर्यो घणो उछाह ॥ ४ ॥ खेचर पतीने खेचरी, बोलाव्यो तेहीवार;
साथ घणी कन्या तणे, रतीने लीधी लार ॥५॥ आया नगरी द्वारीकां, हरीबल अने कुमार; साह्मा जाइ साचवे,
विनय तणो आचार ॥६॥ रुखमणी खेचरणी मली, मांहोमांहे आनंद; वहीनी प्रसाद तुम्हारडे, ए मुझ घर आ
णंद ॥७॥ भुचरणीने खेचरी, देव कुमरी अवतार; सरखी वए पंचासवर, कन्या मेली उदार ॥८॥ सगासणीजा
सामटा, वहीन भुया भाणेज; विंटी मीलीया एकठा, सहु परीवार सहेज ॥ ९ ॥ ढाल ९८ मी ॥ सहेरानी
तथा सुगत नगर माहरुं सासरुं ॥ ए देशी ॥ गुंथी मालणी भलो सेहरो, रचना रची साररे; काम कुंवर
शिर सोहतो, सोहे शोभ अपार हो ॥ गुं० १ ॥ पांच पिरोजा हिरनां, मुक्ताफल वरलालरे; माणेक चुनी
लसणीया, भलां रतन रसालरे ॥ गुं० २ ॥ विविध प्रकारे कारीगरी, करी खांती अनेकरे; देखण आवे देवता,
मन आणी विवेकरे ॥ गुं० ३ ॥ मोहन मस्तक जपतां, काने कुंडल दोइरे; चंदने सुर्य एकठा, मलियां
तिहां जोइरे ॥ गुं० ४ ॥ नखशिख लगी वणातां भीके, भलां भुषण होइरे; पेहेर्या परम पावन पणे, सोहे
इंद्र सम सोइरे ॥ गुं०५॥ पंच स्वर शब्द सोहामणा, वाजंता निशाणरे; नाचे पात्र मन भावती, दिजे वंछित दानरे

हरी कहेरे, परणो एही कुमार; पुत्री सरखी माहरेरे, लघु भ्रातानी नार ॥ पु० २३ ॥ साजन मेलानी नसीरे, [illegible]
णमीरे ढाल; श्रीगुणसागरजी कहेरे, नमीए पुन्य त्रिकाल ॥पु० २४ ॥ चोपाइ ॥ खंम्ड खंम्ड रसठे नवानवा, सुण[illegible]
मिठा साकरलवा; श्रीहरीवंश चरित्र जयजयो, चोथो खंम्ड ए पुरण थयो ॥१॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

॥ इति ढालसागरप्रबंधे हरिवंशनामा चतुर्थोऽधिकारः समाप्तः ॥

देव विमाने मा० ॥ एकदिन आवे हो सी मंधर पासे मा० ॥ विधी युत्त वंदे हो मन उल्लासे ॥ मा० १॥ पुर्व भवनो हो सघल विचारो मा०॥ पुछ्या भांखे हो जीनवर सारो मा० ॥ पुनरपि पुछे हो बंधव माहरो ॥ मा० ॥ तेहनो किहां छे हो शुभ अवतारो ॥मा० २॥ तव जिन भांखे हो हरी घर सोहे मा०॥ सुखमे हो जन मन मोहे मा० ॥ मुजने मेलो हो भाइशुं होशे मा०॥ के नही भांखे हो जिनवर जोशे ॥ मा० ३ ॥ सुण तुं सुरवर हो तुही पण त्यांही मा०॥ हरी घर नंदन हो थाशे उछांही मा०॥ तव प्रणमीने हो जिनपद भावे मा० ॥ हरी समीपे हो सुरवर आवे ॥मा० ४॥ वात जणावी हो सघली हरीने मा० ॥ हरीए सांभली हो हरख धरीने मा० ॥ हार सगुणो हो हरीने दिधो मा०॥ तेमणी भासुर हो नामे प्रसीधो ॥मा० ५॥ विधीतव दाखी हो सुरवर जावे मा० ॥ हरी मन एहेवो हो वितक थावे मा०॥ जो भामाने हो ए सुत आवे मा०॥ मदन संघाते हो द्वेष मिटावे ॥मा० ६ ॥ ए मर्म हरीनो हो मदने लहीयो मा०॥ हार व्रतांतज हो माशुं कहीयो मा० ॥ अवर न चाहु हो नंद अनेरो मा० ॥ क्रोम सरीखो हो तुही भलेरो ॥मा० ७॥ बाहु बलने हो राम सरींखो मा०॥लक्ष्मण भषिम हो एह परीखो मा० ॥ एही माता ए हो एकज जाया मा०॥ सिंह सरीखा हो तेज सवाया ॥मा० ८॥ जंबूवती गेहे हो कामकुमारो मा०॥ जइने दाखे हो हार विचारो मा०॥ हरी जो आपेहो हार सनुरो मा०॥ तो तुम पामो हो कुमर सुरो ॥मा० ९॥ सत्यभामानो हो रुप करीने मा०॥ आवी जंबुवती हो पास हरीने मा०॥ वसंत रमवा हो वनमे आया मा०॥ हार देइनेहो बहु सुख पा ॥मा० १०॥ शिख लेइराणी हो निज घर आइ मा०॥ वेरी केरोहो वास उखदाइ मा०॥गाफील खावे होमारएभावो

॥ गुं० ६ ॥ गयंवर शिर सिंडरनो, घणो कीधलो पुररे; हयंवर सार समारियां, चाले दधीहि छुररे ॥ गुं० ७॥ साजन मिल्यां सामटा, मली सामटी वालरे; धवल मंगल घणां गावती, त्रिय फाक फमालरे ॥ गुं० ८ ॥ कुमर घोमे चढ्यो मोटके, आया वाग मोफाररे; काल संवर हरी उछव, करे विविध प्रकाररे ॥ गुं० ए ॥ खेचरथी खरी खांति सुं, गावे नवनवा धोलरे; जुचरणी जरमाववा, करे अति घणा टोलरे ॥ गुं० १० ॥ पहिलि परणी रति रंगसुं, पठी पंचासने वगरे; एक लग्ने तव व्याहनो, जणे ब्राह्मण पाठरे ॥ गुं० ११ ॥ परणी पधारीया मंदीरे, पोहोती मन तणी कोमरे; इंद्र इंद्राणी सारखी, मली काम रति जोमरे ॥ गुं० १२ ॥ खेचर खेचरणी गयां, तव आपणे वामरे; पुन्य तणा फल जोगवे, जली जामनी पामरे ॥ गुं० १३॥ उदधी कुमरी आवे करी, नृप कुमरी शुं विलासरे; जानुं कुमर परणावियो, पुगी मायनि आशरे ॥ गुं० १४ ॥ काम कीरती अती विस्तरी, घर२ वार बजाररे; देश पुर नगर घणुं, जग मांहे जयकाररे ॥ गुं० १५ ॥ वदन विराजत जारति, करी लढिनी वेसरे; अमरख आणीने किरती, लियो आपे परदेशरे ॥ गुं० १६ ॥ कमलि रमलि करे रंगस्युं, जोगी जमरलो जेमरे; नागर नवल रस रामती, रमे रातदिन तेमरे ॥ गुं० १७॥ ए अगणुंमी ढालमें, हुवो कुमर परणेतरे; श्री गुणसागर सुरजी, रुखमणी सुख हेतरे ॥ गुं० १८॥

॥ दोहा ॥ श्री कुंवर वर सांवनो, चरित्र सुणो जवि लोय; चरम शरिरी आतमा, नाम लिया सुख होय ॥ १ ॥ पुर्व जवंतरनो जलो, जाइ काम कुमार; आवी मले किम एकठो, प्रिति तणो विवहार ॥ २ ॥ ढाल एए मी ॥ जो केशर वरणो हो काढ कसुंवो मोरा लाल ॥ ए देशी ॥ केटल जीवजे हो सुख वहु माने मारा लाल, वारमे स्वर्गे हो

नवाणुंमी हो वचने थुणजो ॥ मा० २१॥ ॥दोहा॥ रुप कला गुण आगला, चंद वर्ण शुन्न नयन; कुमर दोइ देखता, लोक लहे अति चयन ॥१॥ यादव नारी कर कमल, कुंवर न्नरम सुजाण; केलि करे मन न्नावती, प्यारा प्राण समान ॥ २ ॥ वारु वसन विराजता, वारु नुषण धार; वारु चाल मरालनी, वारु सुख दातार ॥ ३ ॥ सांव पढायो रतिपति, तिमहि न्नान सुन्नानु; परम मनोहर गुण नीला, लालन लीला थानु ॥ ४ ॥ ॥ ढाल १०० मी ॥ पांचमी वाफे परमेसरु, वखाणी वारु ॥ ए देशी ॥ लालन लीला थान बोले आढे वयन; माननी मन मोहवा, मोहनी तो अयन ॥१॥ हमारे लालनां, लिलावंत कुमार; जांबुवति न्नामा नणे, प्यारे प्राण आधार ॥२॥ खेलंता अती खांतसुं, मित्राके परीवार; परखदा मांहि आविया, करण तात जुहार ॥३॥ सांम वेगे कामपे, न्नानुपे सुन्नानुं, रुपे रंजे राजवी, सोहाके निधानुं ॥ ४ ॥ युवा ख्याल हो वही, पांफवा वलदेव; कुंवर दोय खेलाववा, मांफीया तत खेव ॥५॥ कोफी कंचन हारीयो, ताम सुन्नानु कुमार; पहीली जीत सांवकी, मदन केरे उपगार ॥ ६ ॥ कुकफ युधे जितीयो, कंचन कोफी दोइ; जाकी पुंठे कामठे, जाती क्युं नवी होइ ॥ ७ ॥ सुवर्ण सर्व तामही, काम दियो वाटी; युवा मीठी हारहे, आपे लुटे आठी ॥ ८ ॥ च्यार कोफी हेमनी, जीतीयो फल हीफ; वार नाही देतही, काम २ कोफी ॥९॥ आठ कोफी वस्तरे, हारे हारी सोल; तिस दोइ कुंकुफले, तोही नावे बोल ॥१०॥ च्यार साठीको स्तुन्ने, कोफी डणी जोइ; अस्खवदे वादही, हेमहारे सोइ ॥११॥ ठपनकोफी दोइसें, युध होफे जोफ; लालच लान्न लोन्नवे, लिन रिलीन वहोफ ॥१२॥वेरन विच्यारीहीए, चहतमांन समांन;मनप्रांनशुं गमे, होफी करतहे आन ॥१३॥सांब कहे मायजी,

मा० ॥ नामानी पेरे हो लहे पछतावो ॥मा० ११ ॥ पक्ष प्रतापे हो इम सुख थावे मा०॥ सपख्यो वायस हो फल
चंच पावे मा०॥ निपखो माणस हो घणुं शीदाय मा०॥ सिंच सरीखो हो फल नही पाय ॥ मा० १२ ॥ श्राश धरीने
हो हवे सतनामा मा० ॥ हरी समीपे हो आवी शामा मा० ॥ पिण अणण रज्यो हो पामे किहांशुं मा० ॥ फल
फल किजे हो पुन्य विनाशुं ॥ मा० १३ ॥ लुणी लेइ गइ हो प्रथम नारी मा० ॥ पेटत्तर पिवो हो तत्कज सारी
मा०॥ देव संघाते हो जोर न चाले मा०॥ एह वतांतज हो हरी मन साले ॥मा० १४॥ हार अनेरोहो हरीए आणी
मा०॥ दिए नामाने हो हरखी राणी मा० ॥ जंबुवती उरे हो सो देव आयो मा० ॥ नामाराणी हो अन्य ते पायो
॥मा० १५॥ शुभ रिखवारे हो कुमर जायो मा०॥ जंबुवतीने हो हरख सवायो मा०॥ रुपे दिपे हो जोगपुरंदर मा०॥
लक्षणे शोभे हो सर्व सुहंकर ॥मा० १६॥ तिणाही वेला हो तिणही गामे मा०॥ सारथीने घरे हो पदम नामे मा० ॥
मंत्रिनी नारी हो तेणे पण जायो मा० ॥ कुधी सेननामे हो सुत सुहायो ॥मा० १७ ॥ सेनापती हरीनो हो तसघर
पुतर मा०॥ जनम्यो जयसेन हो नामे उतर मा०॥ ए च्यारे कुमर हो निका कहीए मा०॥ एक समाना हो जनम्या
लहीए ॥मा० १८॥ वधाउ आवे हो हरीने आगे मा०॥ दानज आपे हो तेहने रागे मा०॥ घर२ मंगल हो सोहव
गावे मा०॥ सांब कुमरजी हो नामसुं हावे ॥मा० १९॥ नामा जायो हो कुमर भीरु मा०॥ नामे सुभानु हो अधि
क अधीरु मा०॥ दोइ घर थावे हो महोछवहेजे मा०॥ दिन२ चंदज्युं हो चमता तेजे ॥ मा० २० ॥ सांबशुं भानुं
हो जनम वखाण्यां मा० ॥ भाइ२ शुं हो प्रेम प्रमाण्या मा० ॥ कहे गुणसागर हो श्रोता सुणजो मा० ॥ ढाल

नरखे नयण; नयणेहि नीरख्या पछे, कहेणा नहि कुवेण ॥ ६ ॥ अणजाएयां अण देखीयां, कह्यो पर शीर थोक; अणसहतां ना शिखव्या, जुव कहेछे लोक ॥ ७ ॥ ढाल १०१ मी ॥ सियल सलुणि मयण महा सतिरे ॥ ए देशी ॥ साम कहे सुण सुंदरीरे, जुव कहे नहि लोयरे; पंचामे परमेसरुरे, पंच करे तिम होयरे ॥सा० १॥ अंगुठाथी घुंटियारे, घुंटीथी तो जानुरे; जानुथी कटी जइ अरूरे, नाणे कोइ गुमानरे ॥ सा० २ ॥ केम्फि थकी हइरूे चढिरे, हइम्फाथी गले जामरे; परम महा दुख आवहीरे, अकुलाइ जन तामरे ॥ सा० ३ ॥ मुलाजा मोटा तणारे, तोहि न तोम्फ्या जातरे; नाके चढो दुख दुःसमोरे, लोक तदा विल लातरे ॥ सा० ४॥ वाम्फ नखे जो काकमीरे, वोलावा लुटंतरे; कुण आगे पोकारीएरे, माता गोरु कुटंतरे ॥ सा० ५ ॥ पोहरीयो परजा तणोरे, राजाजीनो नामोरे; आप अन्याय जो आचरेरे, केम वसे ते गामोरे ॥ सा० ६॥ प्रभुजी तो भांखी थणीरे, सान पति जे एकरे; बालिक बाला वाछलारे, एक सरीखी टेकरे ॥ सा० ७॥ सुंदरीने समफावबारे, साम करे उपावरे; पुर वलि मन सांभलिरे, थावक जाणे थावरे ॥ सा० ८ ॥ जांबुवति आहिरणीरे, आपुण हरी आहिररे; दहि वेचणने आवीयारे, खेले ज्यां कुंवर धीररे ॥ सा० ९॥ सामा वरसां सोललिरे, सामी वरस सो दारुरे; सामा रुपे रुयमीरे, देखी करे अभीलाषरे ॥सा० १०॥ मंसा हारा लंपटारे, सरीखो होइ सभावरे; उमासे उरु पसुरे, राखे चितनो चावरे ॥ सा० ११ ॥ सांभ कहे आहिरणीरे, आपुण उरहि आवरे; वेचाउ महि ताहरोरे, अधीको लाभ अपाररे ॥ सा० १२॥ कंत कहे कुंवर सुणोरे, आगे कोइ न कामरे; लाभे धाया वापजीरे, आज रहे जो मामरे ॥सा० १३ ॥ लाते मार्यो तव म्फोकरोरे, साहि बाला

धस्यो दांक्यो प्राण;फेरीने सार नावही,कतुक जीती जाए ॥१४॥ वित चित्त मोकले,देता शकनांही; सर्व सांब होइ, रह्यो जगमांही ॥१५॥ दान ते देया करे, वालही गोपाल; देव शेवा साचवे, मानही चुपाल ॥ १६ ॥ दान देता शंकहि, करत सुजस एक जोजन, मेह जोजन वार; सर्व लोकमें सुणिए, दान सवद सार ॥१७॥ देखी पेखी सुविशेषी, त्याग तेग तास; धर्म नंद हलधरु, पुत्र पोथी वाठना, वाजीको विलास ॥ १८ ॥ क्रश्न साथे विनंति करत धरता हेत; सांव कुंनि वाजनी, होत कलु कदेत ॥ २० ॥ देव उल्हास ॥ १९ ॥ हाथी घोमाकि कलु, नांहिहे करो, कुमरजी केरे काज; दायक पायक मोहिस्यो, रिझहि तो राज ॥ २१ ॥ मास एक राज दियो, हलधरादिक श्राय; काम जानुं कुमार प्राप कुल किज ते, पामे हे उठाह ॥२२॥ निति पांमी अनीतता, तेणे कीयो दोर; माचियो मना घणो, शिल चंगनो सोर ॥ सकल राय ॥ २३ ॥ एतो सोमी मदन बंधु गुणही सींधु, नंद नंद नंद; नव विना कुचाले चाले, मोहनि तो मसंद ॥ २५ ॥ सांवको वखाण; सुरी गुणसागरु, पुन्यको प्रमांण ॥२६॥ ॥ दोहा ॥ जांबुवती शुं हरी कहे, थारो सांव नगारी मांहि नारीनो, लोपे सीयल अपार ॥ १ ॥ शा नांखे सामी सुणो, माहरो साधु शुं लोग; बालक जाणहि, किस्यो अन्याइ जोग ॥ २ ॥ कटका मांहे म्हाहरो, उंट कहावे जेम; कांइ करो हरी रायजी, लोग एम ॥ ३ ॥ चाम्र घणो मुह लागणो, छत्रकनो राय; होवे तो घर तेहनो, आदा विकर थाय ॥ ४ ॥ पेट सारीखो, शंकरको सो सोच; किया कुटंवो निर वहे, अवर सकलहि पोच ॥५॥ कहि सुणी चित नाणिए,

॥दोहा॥ भामा आवी बागमें, देखी कन्या रुप; मोही मनमें माननी, पुछे सकल सरुप ॥१॥ ए वन मांहे एकली, कांइ फरे सुकुमाल; देखाती सुंदर महा, वलतो उत्तर वाल ॥२॥ ढाल १०२ मी ॥ हरीयामन लाग्यो ॥ ए देशी॥ भामा ठग लाग्यो, ठग लाग्यो गठवा भणी; तोहि भरम न भांगोहो ॥भा० १ ॥ साधु केवल वाटमी, ठगने वाट पंचास हो भा०॥ उरोकावे शेरमी, उफामे आकाश हो ॥भा० २॥ उघामो तनु साधुनो, ठग मुलतानी तीर हो भा०॥ जालवी सकीए केटलां, नांखे विंधी शरीर हो ॥भा० ३॥ ठगठ देहि आकरी, साधु कहावे काठ हो भा०॥ मांही रही फोले घणुं, ए जग प्रगट्यो पाठ हो ॥भा० ४॥ विंछुनो विष पुंछमे, अहि विष दाढे जोय हो भा०॥ ठगनो विष हैमे वसे, चतुर विचारो कोइहो ॥भा० ५॥ ठग मुखे मीठा सही, मांहि अधीक कठोर हो भा०॥ पंभीतजननो पारीखो, जेहवो पाको बोर हो ॥भा० ६॥ कोटी प्रकारे ठग तणी, न मीटे सहज सभावहो भा०॥ आंबा जांबु उपरे, राता मांहि कसाव हो ॥भा० ७॥ कुमरी भणे भामा भणी, वारु वचन विशाल हो भा० ॥ हुं पुत्री राजा तणी, वाधी जइ मोसाल हो ॥भा० ८॥ व्याह जोग जाणी करी, बाप हमारो आय हो भा०॥ वेसारी सुखपालमें, लइ चाल्या माय हो ॥ भा० ९ ॥ आवी वस्यो ए बागमें, सुता सघला लोक हो भा० ॥ मुझने नावे निंदमी, मामी तणो वियोग हो ॥भा० १० ॥ हुं तव हेठी उतरी, डर रह्यो सुखपाल हो भा० ॥ प्रोहर पाछे सोवती, छोमी गयो भुपाल हो ॥भा० ११॥ जागी जोशुं दहदसे, चाली गयो ते साथ हो भा० ॥ युथ भ्रष्टजीम हरणली, फिरती फरुं अनाथ हो ॥भा० १२॥ जो तुं पुत्र शुं भानुशुं, पुत्री वंछे व्याह हो भा०॥ घर पधरावुं माहरे, आणी अति उछाह

[illegible] पापी टल्य माता थकिरे, एम कहो हरी रायरे;
हाथरे; खांचि चाल्यो ऋतिरे, प्रगट थयो जग नाथरे ॥ सा० १४ ॥ पापी टल्य माता थकिरे, एम कहो हरी रायरे;
जांबुवति प्रगट करीरे, नाजी गयो धरी लाजरे ॥सा० १५॥ हरीणाक्षीसुं हरी कहेरे, विरा सुतनां कामरे; माता मयंगल
मारणोरे, हरी शामीनी अनीरामरे ॥सा० १६॥ जे न टले सवंधर्थारे, अवरां केम टलंतरे; अनख नखे जे मानविरे,
ते क्युं नखन नखंतरे ॥ सा० १७ ॥ हाथ ठरीने लाकमीरे, बुटी थमतो आपरे, आयो परखदामे चलिरे, पुछे
श्रीहरी बापरे ॥ सा० १८ ॥ कुंवर एशुं किजीएरे, प्रनु ए खुटी थायरे; चात कहेजे कालनीरे, एत समुहमें वेवायरे
॥सा० १९॥ रे रे धीव शिरोमणीरे, रे रे कर्म कुपातरे; करणो कहेणी ताहरीरे, सारखी देखांतरे ॥सा० २० ॥ देश
निकालो कियोरे, जाजे अलगो अपाररे; क्रोधे पुरचो कन्हाजी, न करे सोच लगार रे ॥ सा० २१ ॥ राजा एहवा
चाहीएरे, न्याय धर्म प्रतिपालरे; बेटा उपर वाहणीरे, खेमावे भुपालरे ॥ सा० २२ ॥ काम कहे सुणय तातजीरे, ए
मुझ वाहलो विररे; कहिए आवे पगे लागवारे, साहसवंत सधीररे ॥सा० २३ ॥ केशव कोपवशे कहेरे, नानु कुमरनी
मायरे; वेसाम्नी नज हाथणीरे, लावे तवही अवायरे ॥ सा २४ ॥ चमते पाणी पेसवारे, ताम समे अरदासरे; उखध
आवी तावनेरे, ए तिनु विपनाशरे ॥ सा० २५ ॥ विमोही तव पाननोरे, लेइ चाल्यो सोइरे; अति ताण्यो त्रुटे सहीरे,
अति मथ्यो विख होइरे ॥सा० २६॥ पग प्रणमी जणणी तणारे, नामा वनमां जायरे; विद्याने बले वाहलोरे, कन्या
रुप करायरे ॥ सा० २७ ॥ चारु वेश विराजतिरे, जोवनवंति नाररे; रुप कला गुण आगलिरे, दिसंती झाक झमालरे
॥सा० २८॥ एकोतर सोमी ढालमेरे, सांब कुंवर शुं रोसरे; श्री गुणसागर सुरजीरे, उसन नरिए कोसरे ॥सा० २९॥

॥दोहा॥ भामा आवी बागमें, देखी कन्या रुप; मोही मनमें माननी, पुछे सकल सरुप ॥१॥ ए वन मांहे एकली, कांइ फरे सुकुमाल; देखाती सुंदर महा, वलतो उत्तर बाल ॥२॥ ढाल १०२ मी ॥ हरीयामन लाग्यो ॥ ए देशी॥ भामा बग लाग्यो, बग लाग्यो गवदा भणी; तोहि भरम न भांगोहो ॥भा० १ ॥ साधु केवल वाटमी, बगने वाट पंचास हो भा०॥ झरोकावे शेरमी, झफामे आकाश हो ॥भा० २॥ उघाडो तनु साधुनो, बग मुलतानी तीर हो भा०॥ जालवी सकीए केटलां, नांखे विंधी शरीर हो ॥भा० ३॥ बगउ देहि आकरी, साधु कहावे काव हो भा०॥ मांही रही फोले घणुं, ए जग प्रगट्यो पाव हो ॥भा० ४॥ विंछुनो विप पुंछमे, अहि विप दाढे जोय हो भा०॥ बगनो विप हैडे वसे, चतुर विचारो कोइहो ॥भा० ५॥ बग मुखे मीठा सही, मांहि अधीक कठोर हो भा०॥ पंडीतजननो पारीखो, जेहवो पाको बोर हो ॥भा० ६॥ कोटी प्रकारे बग तणी, न मीटे सहज सभावहो भा०॥ आंबा जांबु उपरे, राता मांहि कसाव हो ॥भा० ७॥ कुमरी भणे भामा भणी, चारु वचन विशाल हो भा० ॥ हुं पुत्री राजा तणी, वाधी जइ मोसाल हो ॥भा० ८॥ व्याह जोग जाणी करी, बाप हमारो आय हो भा०॥ बेसारी सुखपालमें, लइ चाल्या माय हो ॥ भा० ए ॥ आवी वस्यो ए बागमें, सुता सघला लोक हो भा० ॥ मुजने नावे निंदमी, मामी तणो वियोग हो ॥भा० १० ॥ हुं तव हेठी उतरी, डर रह्यो सुखपाल हो भा० ॥ प्रोहर पाछे सोवती, ढोमी गयो भुपाल हो ॥भा० ११॥ जागी जोशुं दहदसे, चाली गयो ते साथ हो भा० ॥ युथ भ्रष्टजीम हरणली, फिरती फरुं अनाथ हो ॥भा० १२॥ जो तुं पुत्र शुं भानुशुं, पुत्री वंछे व्याह हो भा०॥ घर पधरावुं माहरे, आणी अति उछाह

हो ॥ जा० १३ ॥ साजांखे सुण स्वामीनी, ऊखाणो जगमांही जा० ॥ सुरांमां मिना नहीं, जापशी पांथी ग्रांही हो ॥ जा० १४ ॥ हरी सुत जायो ताहरो, थाए मुऊ जरथार हो जा० ॥ तो तो त्रुठो जाणीए, आपणपे किरतार हो ॥जा० १५॥ वरणवीचारचो ऊधनो, सघलो धोलो होय हो जा०॥ आक अने सुरजी तणो, अंतर न कियो कोयहो ॥ जा० १६ ॥ न करी एह विच्यारणा, नही घर जोगी जात हो जा० ॥ मुसो घाल्या पारवमें, हंसनी पखो थात हो ॥जा० १७॥ सिंघ प्रते जंबुक कहे, कानहयो होइ हो जा०॥ केम फिरी स्वर आवही, तेम ए जामा जोइ हो ॥जा० १८॥ आप चढी वर हाथणी, आगे सांव वेसार हो जा०॥ लेइ आवी निज घरे, माटीपणो अवधार हो ॥जा० १९॥ न्हावण धोवण जोजने, आसन शयन विचार हो जा०॥ ससुरा अति साचवे, सार्थीयो संसार हो ॥जा० २०॥ समय विच्यारे आपणो, सयणा सयाणा जेह हो जा० ॥ श्री हरीचंद्र नरेंद्र ज्युं, मरद कहावे तेह हो ॥जा० २१॥ विमोतेर सोमी ढालमें, जामा सांव कुमार हो जा०॥ श्री गुणसागर सुरजी, करे विनोद अपार हो ॥ जा० २२ ॥

॥ दोहा ॥ श्री वसंत रतु राजीयो, आयो करीय मंमाण; कामदेवनो मीत्र ए, वरतावे जग आण ॥ १ ॥ मौरा आंबा अति जला, केसु कुसम सम वान; मधुकर गुंजारव करे, कोइल शब्द प्रधान ॥ २ ॥ मलियाचलना वायरा वाजे अति सुखकार; दुखियाने दुखदायकु, सुखिया सुख दातार ॥ ३ ॥ ढाल १०३ मी ॥ ॥ कंत तमाकु परहरो ए देशी ॥ कुमर सुजानुं जाणीए, खेलण काज वसंत मोरा लाल; साथे मित्र मनोहरु, वनमें जाइ रमंत ॥ मो० १ ॥ कुमर सुजानुं जाणीए ॥ ए आंकणी ॥ हिंमोले अति हिंचती, गाती गीत सुचंग मो० ॥ नारी नीरोपम

निरखतां, ऊपज्यो अंग अनंग ॥ मो० कु० २ ॥ जुहक माने संधीया, तिखां लोचन बाण मो० ॥ नारी आहिंडे नीकली, नांखे विंधी प्राण ॥ मो०कु० ३ ॥ महिलारुपे मांमीयो, मोहनी मोटो फंद मो० ॥ कामी मृग आवी पडे, थाइ गति मतिमंद ॥मो० कु० ४॥ दाढ गलावे आंबली, लाख गलावे आग्य मो०॥ शिल गलावे सुंदरी, रागी राचे राग ॥ मो० कु० ५ ॥ मुरछाणो धरणीए पड्यो, मंत्रा करी उपचार मो० ॥ उठाइ घर आणीयो, माता ते जाणी विच्यार ॥मो० कु० ६॥ कन्या मेली निनाणुंए, सोमीए धुर आण मो०॥ नामां कुमर सुजानुंनी, व्याह तणी विधी ठाण ॥मो० कु० ७॥ नांखे कुमरी मुलगी, नामां शुं आणंद मो०॥ करशुं कर२ उपरे, तो वरशुं तुजनंद ॥मो० कु० ८॥ बाला वात विशेषथी, नांखे नामा साथ मो०॥ मूज परण्ये परणी सहु, परणे विनही नाथ ॥ मो० कु० ए ॥ नामां मान्या बोलमा, स्यो बहुलो विस्तार मो०॥ नारी कही पग पानही, पुरुष कह्या शिरदार ॥ मो० कु० १० ॥ चोरी मांही साहीयो, वरनो दक्षण हाथ मो०॥ वामां करशुं दाबीयो, देखे सघलो साथ ॥ मो० कु० ११ ॥ कन्या निनाणुं तणी, धक्षण करशुं खाण मो०॥ साहीने विधी साचवी, ते सघली वश आण ॥मो० कु० १२ ॥ सयन घरे श्री सांबजी, भृगुटी चोहडी कपाल मो०॥ बिहाव्यो कुंवर खरो, नाशी गयो ततकाल ॥ मो कु० १३ ॥ सासनस्यो आयो सहि, नामां जननी पास मो०॥ कंठ लगायो पुछीयो, जाणी अधीको त्रास ॥ मो० कु० १४ ॥ मुजने मारे मायजी, नाइ सांबसनुर मो०॥ सांबकी हारे मरपणो, आवी चाली हजुर ॥मो० कु० १५ ॥ पगे लागी ऊभो रह्यो, करुयाणा अति नयण मो०॥ अकुलाणी आतुर थइ, बोले कोठा वयण ॥ मो० कु० १६ ॥ धरत धीठ शिरोमणी,

जिहां तिहां उसदाय मो०॥ क्युं आयो अण तेडीयो, नामा भुरक साथ ॥मो० कु० १७॥ सांब कहे ते आणाया,
सकल लोकनी साख्य मो० ॥ वेसारी वध हाथणी, माता झुठ मनांख ॥ मो० कु० १८ ॥ जणे सुजामां जामनी,
होइ खीसाणी आप मो०॥ हाथ कमाया कामनो, सोचनको संताप ॥मो० कु १९॥ तग माता तग तातजी, नाइपण
तग जास मो०॥आप तगारो जगतनो, हुकीम पहुचुं तास ॥मो० कु० २०॥ हे मागद पुत्री नली, सूहीरणी तस नाम
मो०॥एवं सांब कुमर घरे, रमणीसत अचीराम ॥मो० कु० २१॥ चरणकमल निजताततनां, प्रणमी नांखे वात मो०॥ कामक
ला शुं विच्यारतां, हरीहांसोन समात ॥मो० कु० २२॥ कन्यासोही सुजानुंने, परणावी सुखकार मो०॥मनमान्या सुख जो
गवे, सांबसुजानु कुमार ॥ मो० कु० २३ ॥ सांब कहे वसुदेवशुं, बाबाजी अवधार मो० ॥ थें परदेशां आणमी,
पामी नार सुनार ॥ मो० कु० २४ ॥ सब विध सुंदर सुदरी, घर बेठाही, देख मो० ॥ तात प्रसाद तुम्हारके
मे पामीसु विशेष ॥ मो० कु० २५ ॥ वेटाजी तुम्ह तो वडा, जोता सब परिवार मो० ॥ तुम सम अवर न उपनो,
म्हारा वंश मोझार ॥ मो० कु० २६ ॥ तिम्रोतर सोमी ढालमें, जांबुवति उछाह मो० ॥ श्री गुणसागरजी कहे, होवे
मदन विदरभी व्याह ॥ मो० कु० २७ ॥ ॥ दोहा ॥ एक दिवस चिंत्या वसी, रुखमणीने मन एह; विदरभी
कुमरी भली, रुप कला गुण रेह ॥१॥ जो घर आवे कामने, तो पुगे मन आश; सहि करी जाणुं सखी, पुरो पुन्य
प्रकाश ॥ २ ॥ ढाल १०४ ॥ आज भलो दिन माहरो ॥ ए देशी ॥ विदरभी सुं मन वस्यो, जुया भलेरो भाव
हो लाल; वहु करवाने कारणे, चिंतने लाग्यो चाव हो ला० ॥ वि० १ ॥ दूत अनोपम मोकल्यो, रुकमीया राजा

पास हो ला० ॥ पुत्री दे मुझ पुत्रने, धुर आशीष प्रकाश हो ला० ॥ वि० २ ॥ रुकमीयो रीसे रातमो, बोले अति
अविच्यार हो ला० ॥ आगे अमरख अति घणो, मारो छे हरी लार हो ला० ॥ वि० ३॥ ए कुमरी उतम खरी, वहि
न कुमर घटि वंस हो ला० ॥ जो वर २ लहेशे नहीं, अण परण्यां परशंस हो ला० ॥ वि० ४ ॥ हरी घरथी
चंमालने, घरे दिधां अति सोहे हो ला० ॥ नाते घावां जेहने, उपावे अंदोह हो ला० ॥ वि० ५ ॥ छत तणो मुख
सांभली, ए अविच्यारी वात हो ला० ॥ पिछतावो करती घणो, छचिंती रुखमणी मात हो ला० ॥ वि० ६ ॥ मर्म
लहि माता तणो, कामने सांब कुमार हो ला० ॥ रुप करी चंमालनो, कुंमनपुर आवंत हो ला० ॥ वि० ७ ॥ रुप
कला करी सोहतो, गावे गीत रसाल हो ला० ॥ विणर वाब उपांगसु, वाजे मादल ताल हो ला० ॥ वि० ८ ॥ सुर
गायननी उपमा, भेद संगीतनो जाण हो ला० ॥ स्वर मंमलसुं साचवे, राग तणा मंमाण हो ला० ॥ वि० ए॥ ग्राम
तिन स्वर सातसुं, मुर्छना एकविस हो ला० ॥ गुण पंचासा तानसुं, जाणपणाना इश हो ला० ॥ वि० १० ॥ रुप
तिहां गुण नवि होवे, सुगुण तिहां नहि रुप हो ला० ॥ रुप अने गुण एकवां; पुरव पुन्य अनुप हो ला० ॥ वि०
११ ॥ मोह्यां राणा राजीया, मोह्या बाल गोपाल हो ला० ॥ मोहि रमणि अती घणी, खग मृग अति सुविसाल
हो ला० ॥ वि० १२ ॥ गगन गति सुर मानवी, थंभी आप विमान हो ला० ॥ नाद सुणेवा कारणे, मोहि रह्यां
धरी ध्यान हो ला० ॥ वि० १३॥ नादे मोह्या हरणला प्राण तजे ततकाल हो ला०॥ साप छिढर मांहि पमे, सहिरो
गात्र लाल हो ला० ॥ वि० १४ ॥ नादेइ स्वर गाइयो, स्वांग विरुप धरंत हो ला० ॥ नारी आगे नाचियो, थेइ थेइ

थेई करंत हो ला० ॥ वि० १५ ॥ राधावलन राचियो, ए जग मांहि अचंन हो ला० ॥ राणी रुखमणी आग कीधो नाटारंज हो ला० ॥ वि० ॥ १६ ॥ नादे ब्रह्मा चउमुहो, रस मोखरनो मुहहो ला० ॥ ठेदि नांख्यो नारदे; तिखा नुह हो ला० ॥ वि० १७ ॥ वेद थकी ए पंचमो, नाद कह्यो उपवेद हो ला० ॥ प्रिती उपावण साद- नाद रहे सर्व देख हो ला० ॥ वि० १८ ॥ दुखीयाना दुख पअहरे, सुखीयाने सुखकार हो ला० ॥ श्रवण रु हारी खरो, मनमथ उत उदार हो ला० ॥ वि० १९ ॥ नारी जननो वाल हो, नाद निरोपम नाम हो ला० चतुरा चितनो पारीखो, नाद महा अभीराम हो ला० ॥ वि० २० ॥ विदरजी नृप कुमरी, वेठी राजा गोद हो ला गवराव्यां ते मुंधमा, मोहि गीत विनोद हो ला० ॥ वि० २१ ॥ सुंदरताइ देहिनी, सुयमाइ अधीकार हो ला० जीम२ जोवे सनमुखे, तीम२ उपजे प्यार हो ला० ॥ वि० २२ ॥ किहां थकी तुम्ह आवियां, पुठे राज कुमार ला० ॥ स्वर्ग थकी पाव धारीया, माणस लोक मोझार हो ॥ ला० वि० २३ ॥ देखी नगरी द्वारिकां इहां आया जोइ ला० ॥ मदन कुमर सोभागीयो, पुठे कुमरी सोइ हो ला० ॥ वि० २४ ॥ सांब कहे सुण सुंदरी, मदन महा दातार ला० ॥ जोग पुरंदर सुंदरु, आप कियो किरतार होला० ॥ वि० २५ ॥ माननीयां मन मोहवा, मोहन सुरति आप ला० ॥ गीत घणा रति पती तणां, गावे करी आलाप हो ला० ॥ वि० २६ ॥ अवर अनेरा मानवी, पामे उपम ज हो लां० ॥ सोतो प्रभु आपण अठे, स्युं वरणिए तास हो ला० ॥ वि० २७ ॥ अयरावतिनी उपमा, अवर गजा दे हो ला० ॥ पण अयरापति हाथीयो; कहे किण सम कहेवाय हो ला० ॥ वि० २८ ॥ इंद्र तणि उपमा दिया, अवर

राय धिकार हो ला०॥ पण तो उपमा इंद्रने, अवरा ए अविच्यार हो ला० ॥ वि० २ए ॥ इस२ सर्व जगतको, इस इस नही होइ हो ला०॥ राय मदन राया तणो, पण तसराय न कोय हो ला० ॥वि० ३०॥ प्रजुताइ तो इंद्रनी, धनद देवको कोस हो ला०॥ तेज जलण को जागतो, काकतणो तो रोस हो ला० ॥वि० ३१॥ सत्व रामके राज तो, हरीनी थितीनो थोज हो ला०॥ सुरथी नर थकी खग थकी, पामी अधीकी शोज हो ला०॥ ॥वि० ३२॥ रुप्पा मे रुप्पो घणो, गुरुयोने गुणवंत हो ला०॥ पुन्ये प्रापती पामीए, काम सरीखो कंत हो ला० ॥ वि० ३३॥ कुमरी हुइ अनुरागणी, सजस सुणात प्रमाण हो ला०॥ परणुं कुमर कामने, नहीतर ठोकुं प्राण हो ला० ॥ वि० ३४ ॥ एतले बुठ्यो हाथीयो, किमही वसनावंत हो ला०॥ राय कहे गज वश करे, ते वंढीत पावंत हो ला० ॥वि० ३५॥ नाद वले वश आणीयो, ते मोहोटो गजराज हो ला०॥ मागण हारो मागीयो, सारु वंढीत काज हो ला०॥ ॥वि० ३६॥ बाप प्रसादे ठे सहु, रोटापोवण हार हो ला०॥ नवीठे तेह थकी दिए, ए तुं कारज सार हो ला ॥वि० ३७ ॥ दे ए विदरज्ञी कुमरी, कन्यादान प्रधान हो ला०॥ मुऊस्यो वर नवी पामस्यो, तुठ्यो श्री किरतार हो ला ॥वि० ३८॥ खिज्यो राजा रुकमीयो, रे रे कहि दे गाल हो ला०॥ जंगी जंगीठो सही, बोलो बोल संज्ञाल हो ला० ॥वि० ३ए॥ किधां नगरी बाहीरां, गाम अपावन थाय हो ला०॥ मामो मारेवो नहि, मारथा मायरी साय हो ला० ॥वि० ४०॥ निमोतेर सोमी ढालमें, वैदरज्ञीनो प्रेम हो ला०॥ गुणसागर प्रजुनशुं, नंग जस्माणो हेम हो ला० ॥ वि० ४१ ॥

॥ दोहा ॥ मदन गयो मंदिर चली, निशज्ञर सोवे सोय; निंद गइ प्रभु निरखतां, मन रलीयायत होय ॥१॥ लेख

लखी सुविशेषथी, दियो कुमरे जाम; रुखमणा नाम वाचता, पामा अचरज ताम ॥ २ ॥ पुठे पदमनी प्रेमशुं, दव प्रकाशो नाम; थारा मननो भावतो, हुवं कुमर काम ॥ ३ ॥ ढाल १०५ मी ॥ हंसलानी देशी ॥ भाग्य वमो प्रभु पाइयो, ए वरहे श्री काम कुमारके; पुरंदरहे केरो अवतारके; हुंतो हे वमचखती नारके, प्रसंशा हेलेशुं संसारके ॥भा० १॥ जे मन माने आपणो, करवोहे सोइ भरतारके; नारीज मारो नाहशुं; भरवोहे ए जग ववहारके॥भा० २॥ पितांबर पहिरथो भलो, कंकणहे बांध्यो वर हाथके; वेला साधी वेगशुं, कुंवर रहे कुवरीने साथके ॥ भा० ३ ॥ आरण कारण साचवी, तव किधो हे विवाह उल्हासके; रात वशो भगी गयो, आयो हे बंधवनी पासके ॥भा० ४॥ दिवी पश्चम राते सोवती, कुमरी हे निंद्रावश थायके; दिन उग्यां आवे सही, दातण हे लेइने धायके ॥भा० ५॥ दिवी कुमरी निदमें, कंकण हे बांध्यो सुवीशेषके; कोरी साफी पेरणे, एनीको हे परणे तरवेसके ॥ भा० ६ ॥ सास भरी पाठी वली, लावी हे राणीने रायके; परतक्ष चरीत्र देखावतां, आपुणपेहे उशीगण थायके ॥ भा० ७ ॥ रायभणे राणी सुणो, एकारीज हे विपरीत जोयके; कुलने लंछन लावीयो, ए बेटी हे नही वेरण होयके ॥भा० ८॥ जलहर जग जीवामणो जाइ हे विधूत गुण खाणके, वंशदेव तस मांही ए; ऊपजी हे विषवेली आणके॥भा० ए॥ हुं चुक्यो वाचा सही, पापणी हे पुत्रीने हेतके; हवे उरण थायस्युं, एहने हो कुमाने देतके ॥भा० १०॥ फाटो, उथ न राख णो, विणठा हे माणसनो त्यागके; करवोठे सुण सुंदरी, सगपण हे करवो नहि लागके ॥ भा० ११ ॥ अंगुलो साप मस्यो, ठेदे हे स्याणा नर जेहके; राख्यो खोवे देहने, तेहवी हे कुमरी ठेहके ॥ भा० १२ ॥ राजा तेमी मागणा,

दिधी हे कुमरी तेहि वारके, पाले वाचा आपणी, न कीयो हे नृप सोच लीगार के ॥ ना० १३ ॥ खरी ए आपी रीस वसे, जे शीर हे आवंत कलंकके; सतवंति सीता सती, रघुपती हे सात जीय निशंकके ॥ ना० १४॥ कुंव कहे हुं स्युं करुं, नरवि हे हमाहिने नेवके; राजसुता सुक मालिका, करवी हे एहनी अती वेवके ॥ ना० १५ ॥ लोकुमें अवहेलणा, मनमे हे तस हरख अपारके मन मान्यो पति पाइयो, लोटे हो लाग्ने संसारके ॥ ना० १६ ॥ सांव कहे सुण नाइजी, आपुणपुहे देखावा आजके; देव नुवन समराविया, निंद्या हे सारे सव काजके ॥ ना० १७॥ धोधो मादल वाजहि, नाचे हे तिहां पात्र अनेकके; मंगल गावे गोरमी वरते हे विवाह अनेकके ॥ ना० १८॥ रोस गयो राजा तणो, किजे हे पछतावो एम के; ढाढीने गाढी करी, दिजे हे विदरनी केमके ॥ ना० १९ ॥ आंत तपे अती आकरी, गाढो हे मनमांही कुचयनके; अग्नी तणा संजोगथी, नागी हे जीम चुवे नयनके ॥ ना० २० ॥ मावीता बारु तणा, अवगुण हे सासेवा प्रांहिके; कुमारी सुत जाइयो, कुंति हे नृप काढी नांहिके ॥ ना० २१ ॥ काठ जल वोले नाहि, आपण हे जपायो जाणके; वरूवा नर जल वालणो, सायर हो न उल्हावे प्राणके ॥ ना० २२॥ क्रोध वसे मुफ आंधले, कियो हे कार्य विपरीत के, न कुच वातने कारणे, तोमी हे पुत्रि स्युं प्रीतके ॥ ना० २३ ॥ सोइ दान श्रवणे सुणी, चमकियो हे रुकमीयो रायके; खवर करी जणाविया, एतो कोइ हे हरी सुत काहिवाय के ॥ ना० २४॥ बूटी चाले आवियो, मलिया हे नाणेजां धायके; हेज हिए न समावहिं, लीधो हे कंठ लगायके ॥ ना० २५॥ काम सांव कुमर नला, आण्या हे निज घर उछाह के; आनंद रंग वधामणां, सासु हे मन उपज्यो उछाहके ॥ ना०

२६ ॥ दियो अधीको दायजो, दियां हो साथे परीवारके; देइ ददामां जीतनां, चाल्यो हे श्री काम तिवाके ॥ ज्ञा०
२७ ॥ आव्यां नगरी द्वारिकां, हरख्यो हे श्री कृष्ण नरेशके; हरखी माता रुकमणी, हरख्यो हे परीवार अशेषके ॥
ज्ञा० २८ ॥ जे जे चिंत्या बोलम्हा, ते ते हे चमीया परीमाणके; बहुअर सासु प्रीतमी, माने हे सुख मेरु समानके ॥ ज्ञा०
२९ ॥ सांबने परजुनजी, तनसु हे जुहा मन एकके; जोमी नल कुबेर तणी, राखे हे हव न तजे टेकके ॥ ज्ञा०
३० ॥ अनिरुधादिक कामने, नंदन हे गुणवंता सोइके; तस संख्या सुत संबने, साखा हे विस्तरती जोयके ॥ ज्ञा०
३१ ॥ पचफ़ोतर सोमी ढालमें, वैदरमी हे केरो विवाहके; श्री गुणसागर सुरजी, लिजे हे शुन कर्मा लाहके ॥ ज्ञा०
३२ ॥ ॥ चोपाइ ॥ खंम्म खंम्म रसले नव नवा, सुणतां मीठा साकर लवा; श्री हरीवंश चरित्र जय जयो,
पंचमो खंम्म ए पुरण थयो ॥ १ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

॥ इति ढालसागर प्रबंधे हरिवंशनामा पंचमोऽधिकारः समाप्तः ॥

॥ खंम ६ ठो ॥ ॥ दोहा ॥ गुण पण विसे पुरीया, सुंदरने सुकमाल; एहवा उपाध्या तणा, प्रणमी चरण त्रिकाल ॥ १ ॥ वर ठगा अधीकारनो, विस्तारिये विस्तार; पंचालि प्रगटि खरी, सती शिरोमणी सार ॥ २ ॥ ठठो ज्ञाता
अंग छे, तिहां छे बहु विस्तार; नांख्यो विर जणंदजी, गणधर सत्रा मोझार ॥ ३ ॥ नाग सीरी हुति भ्रामणी,
कमवो तुंबो दिध; मास खमणने पारणे, मुनीवर हत्या लीध ॥ ४ ॥ करतां करमज सोहिलां, नोगवता जंजाल;
नाग सीरी जीम मति करो, फोगट पातिक जाल ॥ ५ ॥ नमती जुर नवंतरे, चंपा नगरी तेह; नज्ञा ठरे उपनी.
सागरदत शुं गेह ॥ ६ ॥ ढाल १०६ मी ॥ जीहो मथुरा नगरीनो राजीयो ॥ ए देशी ॥ जीहो नरगादिक डुख
नोगवि लाला० ॥ परवस करशीव; जीहो नज्ञा घर आवी अवतर्यो ला०॥ नागसीरीनो जीव ॥१॥ चतुर नर जो:
ज्यो कर्म वीपाक, जीहो करम करे विण राजवि ला०॥ करम करे सो रांक च० ॥ए आंकणी॥ जीहो अनुक्रमे जा.
दारीका ला० ॥ सुंदर रुप रसाल; जीहो नणी गणी चोसठ कला ला०॥ चाले राज मराल ॥च० जो० २॥ जी
वेपारी विजो वसे ला०॥ तिहां वली जिण दत शेठ, जिहो धनपती सघलाठे घणां ला० सघला जेहने हेठ ॥च०जो
३॥ जिहो तस घर घरणी नली ला०॥ सागर नामे पुत, जिहो रुपवंत सहुने गमे ला०॥ राखे घरनो सुत ॥ च
जो० ४ ॥ जीहो एक दिवस सागर फरे ला० ॥ नगर कतुहल काज, जीहोरमलीकरे सुकमालीका ला० ॥
डंवर कुल लाज ॥ च० जो० ५ ॥ जीहो सागर रुपे मोहीयो ला०॥ घर आव्यो दलगीर, जिहो मातपित्या
तिहां ला०॥ ... कोड आधेर ॥ च० जो० ६ ॥ जीहो पुत्र कहे तमे सांजलो ला० ॥ जो मुझ वांछो खेम,

सागर दतनी नंदनी ला०॥ प्रणावो मुझ प्रेम ॥च०जो० ७॥ जीहो वात सुणी शेठ हरखीयो ला० ॥ साजन लीधां साथ, जीहो सागर दत्त घरे आवीयो ला०॥ वेव मलीया देइ हाथ ॥ च० जो० ८ ॥ जिहो शेठ कहे किण कारणे ला०॥ आया मुझ घरबार, जीहो निज पुत्री मुझ पुत्रने ला०॥ दिजे एह विच्यार ॥ च० जो० ९ ॥ जिहो शेठ कहे मुझ अंगजाला, जिवन प्राण समान, जिहो गेह जमाइ जोरहे ला०॥ तो आवो करी जांन ॥ च० जो० १० ॥ जीहो एम सांभली विलखो थयो ला०॥ शेठ गयो निज ठाम, जीहो सागर पुछे वापने ला०॥ वात कही तिणे ताम ॥च० जो० ११॥ जीहो सागर आदर करी कहे ला०॥ जीवन प्राण समान, जीहो गेह जमाइ जोरहुं ला०॥ वंछित भोग रसाल ॥ च० जो० १२ ॥ जीहो जिनदत सागरने कहे ला०॥ चिंताम करो चित, जीहो जान सजी तिहां आवीया ला०॥ जिम तिम राखे प्रित ॥ च० जो० १४ ॥ जीहो हथीमेलो सागर ग्रहे ला०॥ शेठ सुतानो हाथ, जीहो भोभर सरीखो आकरो ला०॥ चिंते न जुम्यो साथ ॥ च० जो० १५ ॥ जीहो अनुक्रमे परण्यो प्रेमशुं ला०॥ सागर करत विच्यार, जीहो नामे ए सुक मालीका ला०॥ परणामे अशीधार ॥ च० जो० १६ ॥ जीहो सांझ समे एक मेहेलमां ला०॥ सुता स्त्री भरतार, जीहो अंग लगावे अंगस्युं ला०॥ जेह विपय अंगार ॥ च० जो० १७ ॥
८८ जीहो कर्मनीकाचीत जेहने ला०॥ ते केम पामे भोग, जीहो छिमोतेरसोढाले गुणसागर कहे ला०॥ तोही न समझे ।ोग ॥च० जो० १८॥ दोहा॥ जिमतिम करम न किजीए, किजीए चित विच्यार, धर्म करो निज हितभणी शम पामो भवपार ॥ १ ॥ मन भंग देखी वालम तणो, चमकी नारी ते वार; असमंजस ए स्युं करे, कोइक खरो

निरधार ॥१॥ ढाल १०७ मी ॥ ह॰ना॰ला खाटे त्रण कम्हा ॥ए देशी॥ रथ असवारी समारथी; साहीब मोरा, किधां
दिधां दान हो, सागरदत ग्रह उतस्यां सा० ॥ हरख्यां सहु साजन हो ॥१॥ कर्म अजब गति, बांधो विविध मतिः;
उदय आवे अति आकरां ॥ सा० ॥ कर्म करे सो होय हो ॥ ए आंकणी ॥ सागर वलि सुकमालिका सा० ॥ वेग
जइ एकांतहो; पण चतुराइ नीज नाहनुं सा०॥ चंचल चित नीर खंत हो ॥ क०२ ॥ रंग हुतो जे परणता सा० ॥ ते
रंग नहि खेलंत हो; ए रंगमे ते रंगमे सा० ॥ अंतर अनंतर हो ॥ क० ३ ॥ प्रतिवंता गुण राखवा सा० ॥ आवी
करे मनोहार हो; अंग फरस अति आकरो सा० ॥ केम सहे नरथार हो ॥ क०४ ॥ जीम अहिं छंडे कांचली सा०॥
उव्यो नारी उवेख हो, रेप्रिउ पुछे प्रेमदा सा०॥ उगेठो कुण विशेष हो ॥का० ५ ॥ कहे पिउ देह चिंत्या नणी
सा०॥ जाइसंग्रह अनुसंग हो, नारी पण झारी नरी सा०॥ जाणी कपट थइ संग हो ॥ का० ६ ॥ प्रिउ वारे पण
नवी रहे सा०॥ नवलिगत कोइनेह हो, सागरनो दाव फाव्यो नही सा०॥ आव्यो करी सुचीदेह हो ॥ का० ७ ॥
उपज शक्यो नही ठेतरी सा०॥ नेह गहेली नार हो, जोरे कर ग्रही कंतनो सा०॥ आण्यो गेहमोझार हो ॥ का०
८॥ सेजे वेसारचो हेजथी सा०॥ मांफी घणी मनुहार हो, खिण२ मे एम किम करो सा० ॥ कहोने प्राण आधार
हो ॥का० ९॥ मांड्यो प्रथम समागमे सा०॥ कपटनी हेजा कंत हों, किम रम्शे एणे लक्षणे सा० ॥ प्रिती रिती
मतीवंत हो ॥का० १०॥ प्रथमज कलवमें मक्षिका सा०॥ स्यो तेह मांही स्वाद हो, स्वांमी अबला उपरे सा० ॥ एव
मो स्यो उनमाद हो । ... ११॥ पहेली रामतमें प्रजु सा०॥ काढी वेठा वेस हो, आगल कीम निरवाहस्योसा०॥

मुझथी एह विशेष हो ॥का० १२॥ महाल कहीज कारी इस्या सा० ॥ टहील निकरण हार हो, तोपण मन माने नही सा०॥ अहो योवन शणगार हो ॥ का० १३ ॥ हुं तुम पगनी पानही सा०॥ तमे मुझ शीरना मोड हो, गोद बिछाइ पाए पडुं सा०॥ किम रह्या मोह मचकोड हो ॥ का० १४ ॥ तुम ससरे नंवी उछव्या सा०॥ लहेणे देणे लगार हो, लालच हुवे कोइ वातनी सा०॥ कहो सुखे न करो विच्यार हो ॥का० १५॥ होवे जमाइ लाडको सा०॥ जीमरुशे तिम रंग हो, पण विण स्वार्थ रुशणुं सा०॥ ते तो बालकढंग हो ॥ का० १६ ॥ इम कही खीण विसमी सा०॥ चतुरान न चीतचाव हो, निंद्रावश हुइजीके सा०॥ सागर लीधो दाव हो ॥का० १७ ॥ बार उघाडी नाशी गीयो सा०॥ सुती मुकी नार हो, एहवी में जाणी नही सा०॥ धीग एहनो अवतार हो ॥का० १८॥ सत व्रतसोमी ढालमें सा० ॥ कीजे क्रोध विशेष हो, गुणसागर ए नवी सीटे सा० ॥ जे विधी लखीया लेख हो ॥ का० १९ ॥

॥दोहा ॥ जागी तव सुकमालीका, पती न विदेखे पास; गदग कंठ रुदन करे, नाह कीहां गयो नाश ॥१॥ झारी लेइ दाशी तिहां, आवे मनने रंग; विलखी शेठ सुता घणी, दाशी देखी विरंग ॥२॥ दाशी जांखे शामनी, आमण डमणी कांइ; पहीले दिन खटपट कशी, गुण अवगुण न जणाइ ॥३॥ सुती छोडीने गयो, सागरदत्त वर आप; दाशी शेठाणीने कहे, एह जमाइ पाप ॥४॥ सागर दत्त रीसे भर्यो, जीनदत्तने घर जाय; उलंभादे शेठने, निज अंगज तुम नाय ॥५॥ तेडी सुतने हडकीयो, तें कीयो ए अकाज; शेठ सुता परणी करी, छोडी कीम निरलाज ॥ ६॥ पुत्र कहे सुण तातजी, जाउ नही तस पास; जोगी जंगम व्रत ग्रहु, मत कर अवर विश्वास ॥७॥ शेठ सुणी ए वातडी, छोडी

ढाल१०८ मा ॥ मुनीवर ढूंढणा ॥ए दशी ॥ अन
आपण कान; आवी वेटीने कहे, पुव करम नीदान ॥८॥ वड्गो महीलमांरे हां; देखे नगर मंझाण ॥क० १॥
विवस घरनो धणीरे हां, सागरदत्त सुजाण; कर्म विटवंणा, छंचो वड्गो महीलमांरे हां; देखे नगर मंझाण ॥क० १॥
जुवे नागो छवलांरे हां, शेठे दीठो रंक क०॥ हाथे नांगो ठिकरोरे हां, मागे नीख नीशंक ॥क० २ ॥ जिण निणा
मांखी फरेरे हां, जे लाजे ते खाय क०॥ फाटां त्रुटां लूगमांरे हां, केने नावे दाय ॥क० ३॥ शेठे तेमावी तेहनेरे हां,
दीधुं आदरमान क०॥ मोदक दीधां मोकलारे हां, उपर उनुथांन ॥ क० ४ ॥ नाइ तेमी मरदन कीयांरे हां, पर
फराव्यो तास क०॥ आनरण पहीराव्यां नलारे हां, तन हुवो तेज प्रकाश ॥क० ५॥ हरख्यो नीखारी घणुंरे हां, जा
वी निज धीय क०॥ सखरा वाघा घर दियांरे हां, सुख नोगवे चिरंजीय ॥क० ६॥ मीठा नोजन जमयारे हां,सासु ससरा
नाग अनंग क०॥कीहां शेठ घर पामीयोरे हां,जीहां सुख नवरंग ॥क० ७॥ रात समे वेहु जणारे, सुवा मंदीर जाय क०॥
क०॥ शेठ सुता सुकमालीकारे हां, लाधु रुप निधान ॥क० ८॥ नाठो डमक तिहां थकीरे हां लेइ निज समुदाय
वेला कर फरशीजरे हां, अगन समो डशाय ॥ क० ए ॥ नाठो डमक तिहां थकीरे हां दिठो वदन विलाय
साप कांचली जीम तजीरे हां,टलीय अलाय वलाय॥क० १०॥शेठाणी नीज नंदनीरे हां दिठो वदन विलाय
माता पुठे शुं थयोरे हां,रुदन करे मसकाय॥क० ११॥जननी नांखे सुण सुतारे हां, मतमन आणे शोक क०॥सुण
लखीयां नवीटलेरे हां,हससे डर्जन लोक॥क० १२॥ चिंता तजीनजी धीरमारेहां घरवेठी देदान क०॥ अंतराय मोट
रेहां,सुख पामीश अस ॥क०१३॥शेठसुणी आवी कहेरे हां वेटीमकरअंदेह क०॥ पुर्व कर्म उदय थकीरे हां, पतां

थाय वीगेह ॥क० १४॥जे घर आवे ते वहोरे हां, जाचक आशकरेह क० ॥ तेहने मोभाग्यो दीएरे हां, नाकारो न करेह ॥ क० १५ ॥ वोहोरण आवे साधवीरे हां, गइ गुराणी पास क० ॥ वशीकरण विधी पुछतारे हां, बोले सा उल्हास ॥ क० १६ ॥ मंत्र तंत्रने जंत्रमारे हां, उपध मुली तेम क०॥ कामण मोहण जीन मतिरे हां, करण करावण नेम ॥ क० १७ ॥ लीधो चारीत्र सादरोरे हां, करती तप अपवास क० ॥ मारगथी बाहिर पभीरे हां, सेवति वनवास ॥ क० १८ ॥ कांइकरे व्रत आदर्योरे हां, जो न तजे संकल्प क० ॥ पग२ सिदाये घणुंरे हां, वदे डुख अनल्प ॥ क० १९ ॥ आलो गोलो भीतसुंरे हां, लागे अपर खीरंत क० ॥ रागीनो मन राचणोरे हां, वैरागी वीर चंत ॥ क० २० ॥ वनवासे डुखण घणांरे हां, रागी नरने होय क० ॥ घरवासे वैरागीयांरे हां, दोप न लागे कोय ॥ क० २१ ॥ वस्तु अपुरव बे घणीरे हां, आंबा दाभम भाख क०॥ खातां मन पाछो पभेरे हां, अणखाया अभीलाख ॥क० २२॥ मोहपे साची मोटकीरे हां, वसुधामें विख्यात क० ॥ हाथी उभे वायरेरे हां, भांस मांस कुंण मात ॥ क० २३ ॥ अगेतेर सोमी ढालमेंरे हां, किंइ२ न करे कर्म क० ॥ बुटवो नहि जीवनेरे हां, एक विन्या जिन धर्म ॥क० २४॥

॥ दोहा ॥ ललितादिक गोठिल वसे, पांच पुरुष धनवंत; राजा माने अती घणुं, भोगी भमर रमंत ॥ १ ॥ रथ बेशी वेशा सहित, आया वन पंभूर; वेश्या रथथी उतरी, बेठी आसन पुर ॥२॥ पांचे गोठिल सेवकां, मिल दिधो आदेश; भोजन करज्यो भातिशुं, जीम खुशी हुवे वेश ॥ ३ ॥ ढाल १०९ मी ॥ ॥ मोरा साहिब हो श्री सितलनाथके हुंबुं सेवक ताहरो ॥ ए देशी ॥ एक गोठील हो घणुं चतुरसुजाणके, वेश्या आगल आइने; रंगे राती हो

मेंहदी लेइ हाथके, पग मंडण मन भाइयो ॥१॥ धन्य वेश्या हो सुहागण नारके, स्युं कीधे इण नातरे; पांच गोविंस हो सेवे चित लायके, पग एक कोइ न चातरे ॥२॥ तिणे मांड्यो हो पग रुमी भातके, वेल फूल मन लाडने; कर कोमल हो रंग्या वेज रंगके, मधुर स्वर गुण गाइने ॥ ३ ॥ एक लायक हो सुंदर नर आयके, माथे छत्र धरे तसे; आपे उभो हो करी सेवा सारके, वेश्या मुख देखी हसे ॥४॥ जोवन भर हो एक मोहन वेलके, तेल सुगंध शीशी लिए; वेश्या शिर हो घाले तेल फूलेलके, चोटो गुंथे दृढ हिए ॥५॥ नवरंगी हो सारंगी पागके, एक गणिका खोले लिए; एक विंझे हो चामर चित लायके, कर सेती वीमी दीए ॥ ६ ॥ जो नमके हो तमके दे गालके, फिर जगार नको करे; जे मागे हो हासे करी लायके, ते हाजर आणी धरे ॥७॥ ए पांचे हो नर मिठा बोलके, गणिकासुं मुसके हसे; घर घरणी हो छोडी ते मुढके, निश वेश्या मंदिर वसे ॥८॥ हवे साधवी हो देखी ते इमके, चिंते चित धन ए सहि, हुतो परणी हो कोइ पाप सजोग के, मुने पतिये मानी नहीं ॥ ९ ॥ एक ए पण हो अभीमानणी नारके, सिंहासन उपर चढी; पांचे नर हो करे जीजीकारके, देइ जवाप नहव चढी ॥१०॥ जीम लींनु हो देखी गले दाढके, तिम अजा मन टलवले; भोगवता हो मिठा नर पांचके, संजम व्रतथी खलभले ॥ ११ ॥ जो तपनो हो कोइ फल छे साचके, तो पण हुं पुरव भने; एहनी पर हो जो भरतारके, तप संजम भला हुवे ॥१२॥ आतापना हो कीधी बहु भातिके, आइ गुराणी पाये नमे; व्रत पाली हो सुधो आचार के, जिम तिम दिन निगमे ॥१३॥ हवे चेली हो गुरुणी स्युं रीसके, गुरुणीसुं नवि मीले; मन माने हो जीहां तिहां जाइके, ओली जीम नीम मां फिरे ॥१४॥

अंग धोवे हो दिनमें दस वारके, धोवे सामी निरमली ॥१५॥ हाथ धोवे हो मुख धोवे पायके, माथो धोवे मन रली; शेठ बेटी हो जाएयो स्वाद न कोइके, गुरणीथी निसवासरहो गुरुणी स्युं धेखके, खटपट निपट निलज वली; आप गंदे हो रहि अलगी टली ॥ १६ ॥ पाक्षी हारक हो मोटी धर्म सालके, बेठा तिहां सुकमालिका; पाक्षोशण हो आवे कोइ नारके, तिण आगल सुख अटक न कांइके, जाप जपे जप मालिका ॥ १७ ॥ पक्षीकमणो हो जो आवे डुख कहे; बिजो कोइ नही हो आल जंजालके, आप वसे सुखणी रहे ॥ १८ ॥ व्रत पाल्या दायके, तो किण वेला आदरे; किण वेला हो विकथा करे ज्यारके, हारे वस परमादमे ॥ १९ ॥ हो तिणे वरस अनेकके, छेहके आलोया नही; कर्म बांध्या हो तुटे नही जीवके, कोक जतन करे कोसही ॥२०॥ हवे साधवी हो आउखो पालके, बिजे सुर लोके अवतरी; पल्योपम हो नव आउ प्रमाणके, सुरगणीका थइ सुख वरी ॥ २१ ॥ हवे तिहांथी हो चवी साधवी जीवके, सुन करमें किहां अवतरी; ते सुणजो हो संबंध विचारके सुणतां मन आणंद धरी ॥२२॥ ढाल नवसोमी हो तप कीधां जीणके, ते तो निश्चे सुख लहे; जीनशासन हो माहे धर्म असुलके, गुणसागर साचो कहे ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

देश मांहि छे दिपतो, सजल देश पंचाल; कंपीलपुर नामे नगर, न पडे कदिय डुकाल ॥१॥ उंचो कोट त्रिकोट जीम, परदल भंजणहार; दरवाजा ज्यारे भला, लाग्या माल अपार ॥२॥ लखमीधर व्यवहारीयां, वसे सदा सुख वास; शेठ सेनापती मंत्रवि, घर घर लील विलास ॥३॥

॥ ढाल ११० मी ॥

नमो नमो अरणक महा मुनि ॥ ए देशी ॥ राजा राज्य करे तिहां, द्रुपद नामे राजानरे;

लेइ हाथके, पग मंमण मन नाइयो ॥१॥ धन्य वेश्या हो सुहागण नारके, स्युं कींधे इण नातरे; पांच गाठल
चित लायके, पग एक कोइ न चातरे ॥२॥ तिणे मांड्यो [illegible]
ज प्रताप दिवस मणी, साचा जेहने साजनरे ॥ १ ॥ पुन्य थकी सुख संप जे, पुन्य वमो संसारोरे; पुन्य करो तुमे
ाणीया, जीम पामो नव पारोरे ॥ पु० २ ॥ सीयल गुणे सीता सति, चुलणी तस पटराणीरे; रुपे रंजा सारखी,
ोले कोकील वाणीरे ॥ पु० ३ ॥ तस कुखे आवी अवतरी, सुज वेला अध रातोरे; जोग सखर नलो चंद्रमा, माता
रख न मातोरे ॥पु० ४॥ पुरे मासे दिन नले, राणीए जाइ वेटिरे; रुप अनोपम मनोहरु, गुणमणी माणीक पेटीरे
॥ पु० ५ ॥ मात पीत्या हरखीत थया, डुपदी दीधुं नामरे; दिन२ वाधे नृप सुता, चंपक जिम गीरी गामरे ॥ पु० ६॥
चंपक वरणी सुंदरी, दिपे अधीके वानरे; गंगा गोरी अवतरी, रंजाने अनुमानरे ॥ पु० ७ ॥ चंद्रमुखी मृगलोचनी,
राज हंस गति चालेरे; राजकुमर ढुलमी रमे, मातपिता जन पालेरे ॥ पु० ८ ॥ चोसव महिलानी कला, नणी गणी
चतुराइरे; तप किधां जनमंतरे, तिण नखशीख अधीकाइरे ॥पु० ९॥ एक दिन राणी मनरली, कुमरीने शणगारीरे
भुषण पहीराव्यां नला, जनमन मोहन गारीरे ॥ पु० १० ॥ सखीय साहेली परवरी, रमझम करती रंगेरे; करी जु
हार पिता नणी, वेगी जाइ उछरंगेरे ॥ पु० ११ ॥ नृप दिवी नीज अंगना, रुपे रती गुणखाणीरे; नणे ते जाणी
नारती, अमृत वाणी सुहाणीरे ॥पु० १२॥ राजा मनमांहि चिंतवे, केहने ए परणावुंरे; सरीखे सरीखो जो मीले,
तो चिहुं में जस पावुंरे ॥पु० १३॥ कुल आचार सुघर नलो, सासु ससरो साररे; घर लखमी किर्ती घणी, सुलक्षण
वर शीरदाररे ॥पु० १४ ॥ एतला गुण जोइ करी, वेटि दिजे वापरे; पाछल नाग्य लिख्यो लहे, लोकनको संतापरे
॥पु० १५॥ ज[illegible] चिंता कोम करीशरे; प्रणावीश मन मानीयो, जे जग मोटो इशरे ॥ पु० १६ ॥

दसोतेर सोमी ढालमें, पुछ्या जाण सुजाणरे; गुणसागर कहे पुन्यथी, चढशे वात प्रमाणरे ॥पु० १७॥ ॥ दोहा ॥
वलि पुछ्या वरू नागीया, गढ गंजणाहि चाल; एहवा जसु पासे रहे, कोइ न करे टंकाल ॥१॥ सयंवरा मंरूप रंगसुं,
मांरूयो अधिक मंरूाण; कुमरी लाम्फकी ड्रुपदी, वांछा चढे प्रमाण ॥२॥ चोकस वात वणाइने, जोशी तुरत तेरूाय;
मास लगन शुभ दिन घरूी, जोवो जोतिष राय ॥ ३ ॥ जोशी जोयो जुगतिसुं, पोष मास श्रुदि त्रीज; गोधुलिक
चोखो अछे, वरस मांहि एहिज ॥ ४ ॥ सुणी राजा मन रंजीयो, जोशीने ये दान; कुसम माला घाली गले, दिधो
आदरमाम ॥ ५ ॥ आप भुप परधान शुं, वेग करे विचार; सभा विच सिंहासने, पासे सहु परिवार ॥ ६ ॥ ढाल
१११ मी ॥ भवीकुण वात विच्यारो एह ॥ ए देशी ॥ सोनांनी ढीरूका भालिरे, कागल रंग रंगेल; मंत्रिसर
लखजो भलोरे, रखे करो कांइ ढिलरे; मानव मानो भुपत आण ॥ १ ॥ साम भगती सुख पामशोरे, लहस्यो कोरू
कल्याणरे मा० ॥ ए आंकणी ॥ मंत्रिसर कागल लख्योरे, वहु घरू भंज उपमान; अक्षर लखिया परवरूारे, वांचत
हुइ आसानरे ॥मा० २॥ उत तेरूावी राजवीरे, कागद दिधो हाथ; प्रथम तुं जावे द्वारकांरे, जीहां राजा हरी नाथरे
॥ मा० ३ ॥ पग झाटकी पगे लागजेरे, श्री पतिने केजे जुहार; कागल देइ विनवेरे, हरखीत होय मोराररे ॥ मा०
४ ॥ समुद्रविजे नृप सारीखारे, नमी जे दसे दसार; अतुलि बल बलभद्रजीरे, केहेजे तास जुहाररे ॥ मा० ५ ॥
राज पधारो हित धरीरे, मकरो ढिल लिगार; द्रुपद सुता छे द्रुपदिरे, विवाहनो अधीकाररे ॥ मा० ६ ॥ इम कही
उत चालियोरे. हय गय रथ नर वृंद; अनुक्रमें आयो द्वारीकांरे, जीहां छे भुप मुकंदरे ॥ मा० ७ ॥ बाग विचे मेरो

तेज प्रताप दिवस मणी, साचा जहन साजनरे ॥ १ ॥ पुन्य थकी सुख सप ज, उ… मो संसारोरे. …
प्राणीया, जीम पामो नव पारोरे ॥ प० २ ॥ …

दियोरे, नोजन करी बहु नात; वागो सखर वणाइयोरे, सुंदर तनु शोनातरे ॥ मा० ८ ॥ लायक पायक परीवर्योरे
आमंबर करी छत, राजसना ते आवियोरे, बेगा नर रजपुतरे ॥ मा० ९ ॥ पगे लागी कागद दियोरे, मुख वचन
शुन वाण; कुशलखेम पुछी वलिरे, राजेसर कल्याणरे ॥ मा० १० ॥ मधुसुदन मन हरखियोरे, वांची कागल तेह;
कंपिलपुर जावा नणीरे, जाग्यो अधीक सनेह ॥ मा० ११ ॥ सुणजो सहुको यादवारे, सुणजो दसे दसार; सोल
सहस नृपति सुणोरे, करज्यो एक विच्याररे ॥ मा० १२ ॥ मान्यो वचन सहु मलिरे, श्री पतिनो हेतकार; आदर शुं
नोजन दियोरे, छतने कृश्न मोराररे ॥ मा० १३ ॥ किशन सीख ले चालियोरे, छत प्रमोद अपार; वाग मांहि जीहां
छतरयोरे, करी सजाइ साररे ॥ मा० १४ ॥ कटक शुनट साथे घणारे, चाल्यो तिहांथी छत; मारग आवे जोवतोरे.
जीहां अचरज अदभुतरे ॥ मा० १५ ॥ गाम नगरपुर लांघतोरे, करतो विचे मुकाम; आनंद सेती आवियोरे, जीहां
कंपिलपुर गामरे ॥ मा० १६ ॥ सुरज उगे आवियोरे, छत ते राजदुवार; सना मिलि सहुको जुमथारे, किधो जुगा…
जुहाररे ॥ मा० १७ ॥ छत कहे करजोमनेरे, मानी वात मोरार; नाग्य वमो ठे राउलोरे, होसे जयजयकाररे ॥ मा…
१८॥ सहुको रलियाइत थयारे, चढशे वात प्रमाण; इग्यारोतेर सोमी ढालमेंरे, होसे कोम कल्याणरे ॥ मा० १९…
॥ दोहा ॥ निसुणी छत वचनथी, अति हरख्यो राजान; इण कारजथी माहरोरे, होशे जस प्रधान ॥ १ ॥
सनमान्यो ते छतने, राजा अधिक सनेह; आपी पाठी आज्ञा, छत गयो निज गेह ॥२॥ ढाल ११२मी ॥ ला…
दे मात मलार ॥ ए देशी ॥ हवे द्रुपद नामे राय, दुजो छत बोलाय; आज हो वात प्रकाशे निज २ मन तणी…

हथीणापुर तुं जाय, जीहां वसे पंडुराय; आज हो पांच पुत्र शुं सुख लीला घणीजी ॥ १ ॥ युधिष्ठिर जेष्ठो जाण, भीमसेन बीजो वखाण; आज हो अरजुन त्रीजो नंदन तेहनेजी, नकुल चोथो सोय; सहदेव पांचमो जोय, आज हो मांहोमांहे प्रीती अधिकी जेहनेजी ॥२॥ वली तस राजमोझार, दुर्योधन हेतकार; आज हो गंगेव विदुर आदी ते सवेजी, सकल वडा वड वीर, तेहने कहे जे धीर, आज हो कृष्ण परे जइ सहुने विनवेजी ॥३॥ दुत हथीणापुर आय, मिलि विनवीया राय; आज हो वेगे पधारो तेडो तुम भणीजी; दुत प्रत्ये दइ मान, वडा सरव राजान आ०॥ केसरीये वाधे करी शोभा घणीजी ॥४॥ तदनंतर वलि राय, त्रीजो दुत बोलाय; आज हो चंपापुर नगरी जाजे तुं सहीजी, करण तिहां राजान; दिपे करण समान, आ० ॥ अंग नराधीप भणी केहेजे वहीजी ॥ ५ ॥ सल्प अने नंदी राय, आदे सहु समुदाय; आ०॥ वेगेरे पधारो राय मया करीजी, ते पण सांभलि वाय; देइ निशाणे घाय आ०॥ कंपीलपुर जावा उछरंग मन धरीजी ॥६॥ हवे चोथो दुत चलाय, हइडे हरख न माय आ० ॥ वेगे मनावो सोयंपुर पतिजी, दमगोष सुत शीसुपाल; पांचसें भाइ रसाल, आज हो शिस नमावी कीधी विनतीजी ॥ ७ ॥ पांचमो दुत पठाय, हथी शिस नगरे आय; आज हो दमदत राजाजी राज करे जीहांजी, विनवीयो जइ राय; द्रुपद वचन सुणाय आ० ॥ वेगे पधारो मन हरखे तिहांजी ॥८॥ हवे छठो दुत तेडाय, द्रुपदराय बोलाय; आज हो मथुरानगरी भणी सोतो मोकलेजी, श्रीधर नामे राय; वेगोडे सुखदाय, आज हो लेख वांचीने कहे आव्या भलेजी ॥९॥ सातमो दुत सुण वाण, करे हुकम प्रमाण आ०॥ आणंदे राजग्रह पुर आवीयोजी, सहदेव नामे राय; प्रणामी तेहना पाय, आ० ॥

स्वामी वचन सहु संभलावीयोजी ॥१० ॥ तो ते राय वोलाय, आठमो दुत चलाय; आ०॥ कुंभणपुर नगरी राय, रुपी प्रतेजी; वोले मधुरी वाण, करजे जइने जाण आ०॥ वेगो तुं वलजे करजे मुझ फतेजी ॥ ११ ॥ नवमा दुत शुं वात, जातुं नगर वैराट आ०॥ राय वैराटने जइ एम भांखजेजी, सत जाइशुं आज; विनती करी महाराज आ० ॥ राय कीचकने हेत बहु दाखजेजी ॥१२॥ राय पुत्री गुण गेह, परणे अधिक सनेह आ०॥ वेगे पधारो नृपती एम कह्योजी; तेणे तिमज किध, आगन्या पाछी दिध आ०॥ सांभली राय सुख अधिको लह्योजी ॥ १३ ॥ नव देश नोतरया राय, दसमो दुत चलाय आ० ॥ द्रुपद राजानी निज खांते करीजी, जाजे देसादेश; जघु वमा नरेश आ०॥ वात प्रकासे शिघ्र हेत धरीजी ॥१४॥ हवे सकल राजान, सांभली द्रुपद वाण आ० ॥ कंपीलपुर आवण अति उमह्याजी, ढाल बारोतेरसोमि एह; सुणता पामे नेह आ० ॥ सुरी गुणसागर साजन सुख लह्याजी ॥१५॥ ॥ दोहा ॥ सभा सुधरमी रुपजी, वेठा वलभद्र पास; कोष्ठिक जोशी तेमीने, पुछे मुहुरत तास ॥ १ ॥ तिण दान तिथी अटकली, जोग जुगती गुण जाण; सनमुख सारी चंद्रमा, राजन शास्त्र प्रमांण ॥ २ ॥ यादवं नाच्य मेह जिम, उमाया ठपनही कोम; वात सुणी विवाहनी, हरख्या होमा होम ॥३॥ कस कहे सहु सांभलो, मकरो कोइ विलंब; करी सजाइ आवज्यो, यर्जुन कुमर अरुसंव ॥ ४ ॥ वात थायी ते छठिया, पोहता निज२ गेह; घर जाइ मंजन करे, जीणथी दिपे देह ॥५॥ ढाल ११३ मी॥ छबीने चाके छेल छबीलो ॥ए देशी॥ कीधा सोल शृंगार, राजंदा द्वारावति नगरी धणीए; आया रुखमणी पास रा०॥ जिणस्युं प्रित अछे घणी ए ॥ १ ॥ रुपम

णी अधिक सनेह रा०॥ राज्य मया करो मोनणी ए, वेसो आसन एह रा० ॥ हुं दाशी प्रनु तुम तणी ए ॥ २ ॥
रुखमणी कृश्न नरींद रा०॥ आसन वेगा एकगां ए, रमत करवा रंग रा०॥ रतन जमीत नलां सोगगां ए ॥ ३ ॥
लेइ आरी सो हाथ रा०॥ मुख डति देखे कानजी ए, रुखमणी शणी हेज रा० ॥ दिपे डति अनीरामजी ए ॥४॥
श्रीपती सामल मेह रा०॥रुखमणी बनी चुरुामणी ए, आनरण रतन जमाव रा०॥ इंद्र धनुष डती निरजणी ए ॥५॥
रुख मणी पुछे वात रा०॥ राज चढाउ सांनल्या ए, नुपती मलीया जोर रा०॥हय गय पायक खलनल्या ए ॥६॥ कृश्न
कहे सुण नार रा०॥ कंपीलपुर अमे जाइसां ए, डुपद सुता विवाह रा०॥ देखी तमाशो आइसां ए ॥७॥ रुखमणि
बोले बोल रा० ॥ प्रीतम गमन माति करो ए, तुम विण घमीय ब मास रा०॥ वालेसर कुरुणा करो ए ॥ ८ ॥ वासर
वरस विहाय रा०॥ तुम विण साहीब किम रहुं ए, शोक तणो जंजाल रा० ॥ सुख डख किण आगल कहुं ए ॥९॥
कृश्न कहे मे बोल रा०॥ वोल्यो ते सही पालवो ए, उत्तम अविचल वाच रा०॥ अपजस डरे टालवो ए ॥१०॥ रुख
मणी नांखे एम रा० ॥ वलम वेला पधारजो ए, मत मुको विसार रा० ॥ मुने नाह संनारजो ए ॥ ११॥ रुखमणी
दिधी शिख रा०॥ कृश्न सनामांहि आवीया ए, जुमीया यड राजान रा०॥ बंदीजन जस गाइया ए ॥१२॥ शणगारया
गजराज रा०॥ मुख मल फुल शोह्यामणी ए, घंटा घुघरमाल रा०॥ गले कंचन मणी मेखला ए ॥१३॥ शिष शिंडुर
बणाय रा० ॥ काने वेउ चमर ढले ए, एरावण अवतार रा० ॥ ढलकति ढाल नली बनी ए ॥१४॥ कृश्न चमया
गजराज रा०॥ मस्तक ब्रत्र रतने जमयां ए, चामर विंजे च्यार रा०॥ नगर लोक जोवा चमया ए ॥१५॥ चंचल चप

ल तुरंग रा०॥ निना पिला हंसला ए, शिणगारा वहु सुन रा० ॥ आपमी न सके वांसला ए ॥१६॥ रातारथ चो
साल रा०॥ नवल तुरंगम जोतरया ए, चिहु दिश घंटा च्यार रा०॥जाणे गगनथी उतरया ए॥१७॥ लायक पायक कोम
रा०॥ हरखित साथ वचा घणा ए, सुंदर वेश वणाव रा०॥ चाकर चतुर सोहामणा ए॥१८॥ चतुरंगी सेन्या साथ रा०॥
द्वारामतिथी चालिया ए, वाग्या नवल नीशाण रा० ॥ असवारे असी फालीया ए ॥१९॥ सन्नध्द कभ जोम रा०॥
दसे वसार पासे रह्या ए, सोल सहस राजान रा० ॥ सहुको आव्यां गहगह्या ए ॥२०॥ संन परज्ञुन कुमार रा०॥ के
सरीए वाधे नला ए, मोटा मोती कांति रा०॥रुप कला गुण आगला ए॥२१॥ गणिका रुप रसाल रा०॥अनंगेसना
नामे वमी ए, लाखा गमे साथ रा० ॥ नारी चतुराइ रुपे वमी ए॥२२॥ दल वादल मंमाण रा०॥ तंनु तांण्या वागमे
ए, मेरा हुवा नजीक रा० ॥ कभ पधारा रंगमे ए ॥२३॥ रुधिवंत जसवंत रा०॥ राठमीदार आगल वहे ए, शोलागी
शिरदार रा०॥ तेरोतरसो ढाले गुणसागर कहे ए ॥२४॥ ॥ढालना दोहा॥ नोनत वाजे वागमें शरणाइ वहु नात;
यमीयालो वाजे घमी, खलकखमी मन खांत॥१॥ मुजरो करे दरवारथी, सहु कोइ नरराय, शिख लेइ केसव तणी,
नेज२ थानक जाय ॥२॥कभ पधारा महीलमें, नवरंग जीहां चित्र गाम; सुख सेजा वेठा सुखे, पासे वेठा राम॥३॥
ात करे दरवारनी, मारग कुच मुकाम; वार कोस वांधी मजल, पग२ जल तृण गाम ॥४॥सुधो मारग अटकल्यो,
ंकी टाली वाट; कोमी सुभट इण कटकमें, घोटक कुंजर घाट ॥५॥ द्वारामाते नगरी थकी, आया सघला लोक;
ट वलद वेसरनरी, नारर सचीक थोक ॥६॥ वासर पांचमुं कामठे, सुणोलोक धरी राग; पान फल मत तोमज्यो,

ए मुज मोहन बाग ॥७॥ ढाल १४ मी॥ झुमखमानी देशी ॥ जांबु लिंब आंबली, आंबा दामम द्राख; रंगीला मोहना, जंबीरा रायण नली, नवरंगी नवलाख ॥रं० १॥ बिजोरांने करमदा, नालेरी तरबुज रं०॥ सुफ सखर खारेकी खरी, खुरसाणी खरबुज ॥रं० २॥ ज्ञवर पिपर विलमां; खुंबजुंब वमवोर रं०॥ पान बिमी वारी नली, बेग मोर चकोर ॥ रं० ३ ॥ माली मालनी मनरली, पान फूल फल सार रं०॥ वेचण आवे मोलमें, लेज्यो वचन विच्यार ॥रं० ४॥ कुण आपणो कुण पारको, गुनही ने चेमार रं० ॥ किशान आणछे आकरी, कोइ न लोपे कार ॥ रं० ५ ॥ धान मुल वेपारमें, मत को करो अन्याय रं० ॥ निती रिती पंथ चालतां, सहुको लागे पाय ॥रं० ६॥ कौतिक जोवण कौतकी, कुण२ आव्या लोक ॥रं० सुरवीर के साहसी, हरखे आया लोक ॥रं० ७॥ मेरां तिहांथी उपड्यां, गुमीयां गुहीर निशाण रं०॥ कटक विकट चिहुं दिश वहे, धुल चढी असमान ॥रं० ८ ॥ आगल कियां हाथीयां, मदमाता फुंकार रं०॥ घोमा जोड्या जोरमें, हिंसे सहस प्रकार ॥ रं० ९ ॥ नवरंग नेजा फरहरे, विच२ तुंब अवाज रं०॥ धुधु धोसवद सुणी, चोर चरफ जाय नाज ॥रं० १० ॥ गाम नगर पुर पाटणे, श्रीपती करे मुकाम रं० ॥ मोटा छोटा राजवी, शेव करे शिरनाम ॥रं० ११॥ दहिं दुध वृत नरी घमा, पान फूल फल नेद रं०॥ धोरी धोला जोमले, आगल नेटे नेट ॥रं० १२॥ जलथल वन गीरी लंघतां, आया देश पंचाल रं० ॥ जिणी दिशे गंगा वहे, जाणे बाल गोपाल ॥रं० १३॥ साल चणा गऊं घणां, उमदम सुर अपार रं०॥ गुंदरी घणी शेलमी, मणीका द्राख अपार॥रं० १४॥ वाम२ मेवा वणा, धरती जोवा लाग रं०॥ पग२ पाणी मोकला, वन वामीना वाग ॥ रं० १५ ॥ देश शिम

हरी जांखे जुती सुणो, दिवा सरशी सही, देखी कृश्न नरेश रं०॥ ए मोटोछे राजवी, जेहने एहवा देश ॥ रं० १५ ॥ हवे कंपिलपुरनो धणी, डुपद नामे जुप देश अनेक रं० ॥ पण ए देश समो तुमे, दिठो तुमे कोइ एक ॥ रं० १७॥ तेमचा मोटा वागीया, जारो मोटो जाग्य रं०॥ वागा रं०॥ कृश्न सामागम सांजली, करे सजाइ अनुप ॥ रं० १८ ॥ सुंदर कुंजर सज किया, घोमा कंचन साज रं०॥ घोमो वहिल रथ पहिरा नय नवा, शिर सारंगी पाग ॥ रं० १९ ॥ चउदोतेर सोमी ढालमें, गुणसागर सुखकार रं० ॥ सुखिया जिहां जोतरधा, मिलिया शुजट समाज ॥ रं० २० ॥ ॥ दोहा ॥ घुरया डुदामा ततक्षणे, वली वागी करताल; नवरंग तिहां सुख लहे, आवरमान अपार ॥ रं० २१॥ सुहव नारी कलस जरी, करे सोल शिणगार; दरवाजे ऊनी रही, जान नेजा फरहरे, चतुरंग सेन्य विसाल ॥१॥ चमीयो नगरी राय; वंदिजन जय२ करे, माधव सनमुख जाय ॥ ३ ॥ हुवे पेसार ॥ २ ॥ सवज सजाइ सज करी, आदर देइ कृश्नजी, मलिया वेउ उठाय ॥४॥ हरी पुछे राजा सुणो, कुशल गजथी राजा उतरी, लागे श्री पति पाय; राय प्रशाद सदा कुशल, वली विशेषे आज; क्रिपा करी खेम आणंद; राजपाट चमती कला, देश न केइ दंद ॥५॥ नणदलनी देशी ॥ नयन सयन सेति कहे, श्रीपति पधारीया, राज वधारी लाज ॥ ६ ॥ ढाल ११५ मी ॥ जुपति जेट जली करे, भुपत कटक मुकाम हो सुंदर ॥ राजा वे मलिया तिहां, तरुवर सितल ठाम हो ॥ सुं० १ ॥ गजवाजी रथ पालखी, नाम सुजाण हो सुं० ॥ कोमी करे कुरबाण हो ॥ सुं० भु० २ ॥ श्रीपति जेट करी मन कोम हो सुं० ॥ साजन सगपण राखवा, जेनां कोइ न खोम हो ॥ सुं० भु० ३ ॥ पगे लागी विनती करे,

...ग माव हो सुं० ॥ भुपद कहे प्रभु ताहरो, दरशण दिगे निव हो ॥ सुं० भु० ४ ॥ इण
अवसर तिहां पुरी सरे, मिलिया नगरीना लोग हो सुं०॥ आवे कृश्न नरेसरु; अचरज जोवा जोग हो ॥ सुं०नु०५॥
साथे कुण२ वागीया, कुण२ सिरदार हो सुं० ॥ नेमी नमर कुमर तिहां, कुण२ दसे दसार हो ॥ सुं० नु० ६ ॥
मयमंता हाथीनी घटा, हयवर पार न कोइहो सुं० ॥ रथ पायक वर पालखी, दिग आणंद होय हो ॥ सुं०नु०७ ॥
नगर मोछव नृप करे, आमंबर असमान हो सुं० ॥ जादव जोवे जग घटा, गणिका गावे गान हो ॥ सुं० भु० ८ ॥
पुरण कलस शिर पदमनी, शनमुख आवे तेह हो सुं० ॥ पइसारो नृप मांमीउ, नकी जुकी धरी नेह हो ॥ सुं०
भु० ए॥ दरवार बार बणाइउ, सबल कियो छटकाव हो सुं० ॥ पंच वर्ण फूल विखेरिया, बहु परीमल महकाव हो
सुं० भु० १० ॥ विविध विनोद नीहालता, जोता अचरज कोम हो सुं० ॥ ऊंचे नव लखा मालियां, आवी रह्यां
मन कोम हो ॥ सुं० नु० ११॥ हवे कंपीलपुरनो धणी, नलि२ नेट अणाय हो सुं०॥ कमलापति आगल धरे, जिण
दिवे सुख थाय हो ॥सुं० भु०१२॥ मेवा देश प्रदेशना, साकर काजु सार हो सुं० ॥ कला कुंद अति उजला, कोला
पाक अपार हो ॥ सुं० भु० १३॥ साकर वाणी जतनस्युं, पाणी नरी२ कुंन हो सुं० ॥ कुसमपुर फणास नलि, सितल
नधुर सुरंन हो ॥ सुं० भु० १४ ॥ एवा शितल जल पीए, मधुर मीगाइ खाय हो सुं० ॥ नोजन सरस कियां पछी,
मारग श्रम मीटजाइ हो ॥ सुं० भु० १५ ॥ पंमु राजा पण आवियो, पांच पंमव वली साथ हो सुं०॥ विदुर करण
गंगेवशुं, दुर्योधन नर नाथ हो ॥ सुं० भु० १६ ॥ राज यहीं नगरी धणी, श्री सहदेव नरंद हो सुं० ॥ आमंबर करी

आरिया, मयमंत साथ गयंद हो ॥ सुं० भु० १७ ॥ चंपा नगरीनो धणी, कश्र महिपति सींह हो सुं० ॥ सल्प भुप
दलबल सहित, आयो अकल अबीह हो ॥ सुं० भु० १८ ॥ गंधाराधि भुपती, सुकनी नामे अति सुर हो सुं०॥
कंपीलपुर आयो तुरत, गज घट घणे पंमुर हो ॥सु० भु० १९॥ दमघोष सुत दलपती, जाणे बाल गोपाल हो सु०॥
नगरी चंदेरीनो धणी, आयो नृप सिशुपाल हो ॥सुं०भु०२०॥ कुंडन नगरीनो राजीयो, रुपी नृप कुल चंदहो सुं०॥
वार न लाइ आवता, साथे शेवक व्रंद हो ॥सुं० भु० २१॥ वयराट नगरनो धणी, किचक नाम नरेश हो सुं०॥
सो जाइ शुं आवीयो, किधो नगर प्रवेश हो ॥सु० भु० २२॥ मथुरा नगरी अधीपती, श्रीधर नाम नरेंद हो सुं०॥
आयो मृग पती साहसी, मन धरतो आणंद हो ॥सुं० भु० २३॥ मालव देश तणो धणी, वयरीसाल नरेश हो सुं०॥
आयो धायो धसमशी, जीहांठे डुपद देश हो ॥ सुं भु० २४ ॥ एमगामागर नगरथी, आया मोटा भुप हो सुं० ॥
कंपील पुर मेरा दिया, दिपे तेज अनुप हो ॥सुं० भु० २५॥ डुपद महीपति आणीया, करी छठव पुरमांहीहो सुं०॥
सहुने सरखा राखीया, जस थयो नगर अगाह हो ॥सुं० भु० २६॥ मोटा मंदिर मालीयां, धवल ऊंचा आवास हो
सुं०॥ नामांकित हुता जींके, सहुने दिध निवास हो ॥सुं भु० २७॥ जुमीया भुपती जलजला, सुता जे चवसाल हो
सुं०॥ डुपद ते संतोखीया, जमाड्या सुविशाल हो ॥सुं० भु० २८॥ निज२ आवासे रह्या, सघला राजा जाण हो
सुं० गित ज्ञान करे रंगशं, पामे कोम कल्याण हो ॥सुं० भु० २९ ॥ रामत राता राजवी, नाटक गित विनोद हो
सुं०॥ सुख शेती वेहा स , मन धरता प्रमोद हो ॥सुं०भु०३०॥ ढाल पनमोतर सोमी जली, मिलिया राय सुजाण हो

सुं०॥ गुणसागर हवे सांभलो, विवाहनो मंम्हाण हो॥सुं० भु० ३१॥ ॥दोहा॥ द्रुपद राजा आपणा, तव्या शावक कोम्; सयंवरा मंम्प मांम्हीयो, मनथी आलस गोम् ॥१॥ गंगा जल निरमल वहे, गाम मोकली जाण; तास तिर घर तिससी, करी तिहां सखर मंम्हाण ॥२॥ मंम्प गायो मोकलो, कंचन मुक्ता फल रयण; शोभा विवीध प्रकारनी, देखत आनंद नयन ॥३॥ फूल पगर सोहामणां, धुप घटीमेंह कंत; तोरणनी रचना रची, देखी जन हरखंत ॥४॥ लगन तणो दिन आवीयो, हेम सिंहासन राय; बेगा सघला आयने, विविध शोभा लाय ॥५॥ सघला मांही शोभतो राजा पंमु जोय; पुत्र पांच महा बली, गंजी न सके कोय ॥६॥ हवे मंजन करी द्रुपदी, देव जुहारण जाय; केसर चंदन कुसमले, धुपदीप समुदाय ॥७॥ करी पुजा कामदेवनी, भाखे द्रुपदी नार; देव दया करी मुझने, भलो देजो भरथार ॥८॥ ढाल ११६ मी ॥ ॥अलबेलानी देशी ॥ नवयोवन रुपे रुयम्हीरे लाल, हरखीत वदन उमाय; रायजादिरे; करी उलग पाछी वलीरे लाल, आवी जीहां नीज माय ॥ रा० १ ॥ सीलवती भली द्रुपदीरे लाल ॥ ए आंकणी ॥ आभुषण अंग लुहणारे लाल, अरगजो अंग लगाय रा० ॥ कोरज मल पहिरावीयोरे लाल, केसर रंगी पाय ॥ रा० सी० २ ॥ वेणी मंम्म जमावनोरे ला०॥ सोहे मुल अमुल रा०॥ शिसे सोहे राखम्हीरे ला०॥ रतन जम्हीत शीश फूल ॥रा० सी० ३॥ काने कुंम्हल झलकंतारे ला०॥ चंद सुरज अनुकार रा०॥ कर कंकण वर विंछियारे ला० ॥ नक वेसर शणगार ॥ रा० सी० ४ ॥ नयन कमल दल सारिखारे ला० ॥ अंजन रेख बणाय रा०॥ दस अंगुलिए मुंद्रम्हीरे ला० ॥ निलवट तिलक सोहाय ॥ रा० सी० ५ ॥ रंग रंगीला सोहतारे ला० ॥ उढण झीणा

चिर रा० ॥ कर पग मांझ्यां मांझ्यारे ला०॥ कान राखी नकशिर ॥ रा० सी० ६॥ जंघ कमल लताजीसारे ला ॥
सोहे राजकुमार रा० ॥ गंगा गोरी सारखीरे ला० ॥ रति रंभा अवतार ॥ रा० सी० ७ ॥ धोम वहिल आणी नलि
ला० घुघर माल वणाय रा० ॥ सखी साहेली कुंवरीरे ला०॥ लागी जननी पाय ॥ रा० सी० ८ ॥ मन मान्यो
तुं लहिरे ला०॥ जननी दिये आशिष रा०॥ रथ वेगी आणंदसुंरे ला० ॥ तुठो मुझ जगदिश ॥ रा० सी० ९ ॥
साथे सारथीरे ला०॥ शुभट लिया शिरदार रा०॥ रथ रखवाली ते करेरे ला० ॥ रतन जतन अधीकार ॥ रा० सी०
१०॥ सावध्यान जोतां थकारे ला०॥ कर झाली तरवार रा०॥ कुशलखेम शुं आवीयारे ला०॥ हरखी राजकुमार ॥
रा० सी० ११ ॥ मंडप मांहि पेसतांरे ला० ॥ दिठ श्रीपति राम रा० ॥ विजा पण दिठ घणारे ला० ॥ सहुने
प्रणाम ॥रा० सी० १२॥ चंपक पांडल मालतीरे ला० ॥ फूल दडो लेइ हाथरे रा० ॥ परीमल बहु लोम हम हेरे
सकल साहेली साथ ॥रा० सी० १३॥ हाथे दरपण झालीयोरे ला०॥ निर्मल दिसे रुपरे रा० ॥ मणी माणीक
जडयोरे ला०॥ तिण मांही देखे भुप ॥रा० सी० १४॥ नाम ठाम कुल जातशुरे ला०॥ सुविर उदार रा०॥ मात
बांधव सहीरे ला० ॥ राजऋधी भंडार ॥रा० सी० १५॥ जापा जाणे जुजुइरे ला० दाशी चतुरसुजाण रा०॥ कुंवरी
साथे संचरेरे ला०॥ देखाडे राय राणा ॥ रा० सी० १६ ॥ चित्रधारणी शीखवेरे ला० गती मती मंदाचार रा
गुणसागर सुरीए कहीरे ला०॥ ढाल सोलोतर सोमी सार ॥रा० सी० १७॥ ॥दोहा॥ सशीवयणी मृगालोयणी
रुदय कोमल गात; कोकिल कंठी हंसगती, अमृत वचन सोहात ॥१॥ राजकुमरी राजी घणुं, दिठ बहु राजा

मंरूप विच आणी हवे, हाथणी जेम आलान ॥२॥ धणीयाणी मन उलखे, रुचंता बोले बोल; एहवी साथेआवे, विनती करे नीटोल ॥३॥ एक नारी भुपती घणां, सहुको देखणहार; हिमकर देखी सरोवरे, विकस्ये कुमुद हजार ॥४॥ ढाल ११७ मी॥ निंदरमी नाहो निवारीए ए देशी ॥ जीहां बेगढे कृश्नजी, तिहां आवीहे सखी राज कुमारके; आरीसो आगे धरी, देखाड़े हे भला राज कुमारके॥१॥ सखीय कहे सुण स्वामनी, मन थीर करीहे निज नयन निहालके; जे मन माने ताहरे, तेहने कंठहे नाखे फूलनी मालके ॥ स० २ ॥ ए अवसर पाम्यो भलो, मत चुकेहे सखीहीए विच्यारके; धारामती नगरी धणी, एतो सनमुखहो बेठा कृश्न मोरारके ॥स०३॥ सोलसहेस नृपदिन प्रते, जसुशेवाहे सारे करजोड़के; सोलसहस राणी घरे, मन मोहनहे सुंदर नही खोड़के ॥ स ४ ॥ तिन खंडनो राजीयो, नर सघलाहे मानेजसुआणके; दशेदसार जादवा जुड़्या, तिणमांहीहे दिपेज्युं भाणके ॥ स० ५ ॥ एवो बिजो राजवी, नही कोइहे सखी शिरदारके; जो मन माने ताहरे, तो वरजेहे सखी भल भरथारके ॥स० ६॥ तिहां थी आगल संचरी, जिहां बेठाहे सखी बलभद्र विरके; दाशी कहे ए गुण भर्यो, साह सामेहे सखी साहसधीरके ॥स० ७॥ तिहांथी पण आगे गइ, जिहां बेठाहे सखी दसे दसारके; समुद्रवजे राजा वड़ो, जेहनो सुतहे सखी नेम कुमारके ॥स० ८ ॥ तिहांथी आगे आवतां, तिणे दिठाहे वसुदेव निरंदके; बहुतेर सहस अंते उरी, एहवोहे पती लहीए आणंदके ॥ स० ए ॥ राजसुता मन चिंतवे, घणी राणीहे घणो पाप जंजालके; पगे नमता दिन आथमे, निणस्युंहे माहरे कुण पंपालके ॥स० १०॥ जो सुख चाहेहे सखी, तो एहहे सहदेव नरेशके; सुर साहशीक गढपति

जिणही मन हेनही कुम कलेशके ॥स० ११॥ राजग्रही नगरी नली, तसुनायकहे सखी देव सरुपके; जरासंधनो पाटवी एण पुठेहे चमता चक्र२ जुपके ॥ स० १२ ॥ ठाकुरथी चाकुर हुवो, तेहनोहे सखी नही शोभाग्यके; इम चिंतवी आगे गइ, कोइ देखु हो सखी मोटे नागके ॥ स० १३ ॥ इणीपरे सघला राजवी, तिणे दिठाहे सखी नयन निहालके; कुमरी कहे दासी प्रते, सोहागणहे तुं आगल चालके ॥ स० १४ ॥ हंस गमनी एम संचरे, हवे ति हांथीहे आणी उमंग संचके; उजट घट मांही घणो, हव राणीहे देखी पांमव पंचके ॥स० १५॥ देशवास दासी कहे, रुप जोवन हे पांचे जो धारके; वरमाला घाली गले, में वरीयाहे पंच पांमव नरथारके ॥ स० १६ ॥ जय जय शब्द हुवो तिहां, हरि हरख्यो हे जादव राजानके; द्रुपद नृप मन रंजीयो, जस शोभा हे मुक होशे जीहांनके ॥ स० १७ ॥ मंगल नाद सोहामणा, शंख वाजे हो घणां ढोल निशाणके; सघरा मंरूपथी चल्यां, कमलापति हे नृपति राय राणके ॥ स० १८ ॥ ढाल सतर सोमी नली, गुणसागर हे अधीक रसालके; पुन्ये सहु वंछित फले, जग मांहि हे होस्ये जस विसालके ॥ स० १९ ॥ ॥ दोहा ॥ पांचे पांमव द्रुपदी, रथ बेशी तिणवार; नाइ साथे वागेपा, आवी निज दरबार ॥१॥ आरीम कारीम सहु किया, मंजन करी मन रंग; चउरि विच बेठा चतुर, पांचे पांमव चंग ॥ २ ॥ राजकुमरी शणगार करी, आणि सहियर साहि; अमीय सलुणे लोयणे, बेठि चोरी माहि ॥३॥ ॥ ढाल ११८ मी ॥ ॥ देशा सोहलानी ॥ सुहव सुहव गावे सखरो सहलोजो, सुणता श्रवण सुहाय; सरखी सरखी जोमी जुमी एहनीजी, रोहिणी जीम द्विजराज ॥ स० १॥ कमर२ अमर रुपे रुयरुडा पांचे पांम कमार;

अपवर२ सरखी द्रुपदीजी, परणी प्रेम अपार ॥ सु० २॥ याचक२ दिधी दक्षणाजी, सुजस थयो संसार; अवसर२ दान सोह्यामणोजी, वुठो जीम जलधार ॥सु० ३॥ कौंचित२ कामणि तिण समेजी, हरखाणी हरी हास; सहियर२ दिठो न सांभल्योजी, पांच पुरुषनो वास ॥ सु० ४ ॥ माननी२ हवे मन मोकळेजी, वरसे वर दस वार; द्रुपदी२ जोए आदस्याजी, वर केण नीवारण हार ॥ सु० ५ ॥ उतर२ आपे महिला माननीजी, गरव मकरे हे गेमार; मुनिवर२ चारण गुण कह्याजी, सतियामें शीरदार ॥ सु० ६ ॥ उतम२ पात्र संतोखीयाजी, दिधां अढलक दान; सुक्रत२ कीधा इण कुमारीजी, तिण पामी जग मान ॥ सु० ७ ॥ द्रुपद२ नृपति कनकनाजी, कर मुकावण कोड; माणीक२ मणि मोति घणांजी, हय गय रथ अव जोड ॥ सु० ८॥ दासी२ जुजूआ देशनीजी, सरखो वेश वणाय; कोकिल२ सरखी बोलणीजी, जाणे मनरो भाव ॥ सु० ९ ॥ आभ्रण२ मुगट जडावराजी, कुंडल मोती माल; वाटकि२ नव२ घाटकीजी, हाटकना पण थाल ॥ सु० १०॥ दिवियर पाटण निपनीजी, झारी सखरे घाट; चामर२ छत्र सोह्यामणाजी, भद्रासन जल माट ॥ सु० ११ ॥ पंच रंग२ ढाल्या ढोलियाजी, पगे पुतली भाण; कोमल२ मांखण सारखी सेजमीजी, रेशम वणियो वाण ॥ सु० १२॥ पटकुल२ गाल मसुरीयाजी, उशीसां अभीराम; भल भला२ वागा आपीयाजी, दिधा वली आव गाम ॥ सु० १३ ॥ आप्या२ हय रथ हाथीयाजी, संतोष्या सहु तेम; एकसो२ अढारमी ढालजी, गुणसागर कहे एम ॥ सु० १४ ॥

॥ दोहा ॥

हवे द्रुपदी पंचालीपती, धरणीधरने भेट; आपे गजवाजी प्रमुख, दिधे जस होय नेट ॥१॥ जे पण विजा राजवी, आया हता साथ; तेने सह संतोषिया

मोकल करी निज हाथ ॥२॥ कमलापति सेना सजी, दिय दमामां चोट; राजा सहुको चालिया, कोइ नहि मन खोट ॥ ३ ॥ तिण वेला आमो फरी, आयो बहु परीवार; पांडू महिपति विनवे, सुणजो कृश्न मोरार ॥ ४ ॥ कृपा करो मुज उपरे, मानो वचन विमास; हथीणापुर पावन करो, मुझ मन पुरो आश ॥५॥ संयलि मानी कृश्नजी, प्रिती जणी ते वात; बिजे पण मलि करी, कीधो हरी संघात ॥ ६ ॥ ढाल ११९ मी ॥ ॥ देशी रसियानी ॥ कटक ते कंपीलपुरथी चालियो, मेरा बाहिर दीध सलुणी; धउस दमामा हो वाजा अति भला, द्रुपद नृप जस लीध ॥ स० १ ॥ चुलणी राणी हो कुमरी जणी कहे, बेटी सुण एक शीख स० ॥ सासु ससरानो माने कह्यो, विण कहे मजरे शिख ॥ स० चु० २ ॥ प्रिय पहिली मांचाथी उठजे, आलस नाणे अंग स० ॥ धणीप जमाडी हो तुं जमजे पछी, मकरे निच प्रसंग ॥ स० चु० ३ ॥ आंख्य विछुमां जीम अंतर कित्यो, तिम पांचे भरथार स०॥ सरीखा गणजे मत अंतर करे, तुझ सरज्या किरतार ॥ स० चु० ४ ॥ अरीहंत देवशु गुरु शेवा करे, जिन धर्म धरजे चित स०॥ मुखथी म जांखे वचन अजाणतो, जाप जपे धरी प्रित ॥ स० चु० ५ ॥ निंदाम करे हो बेटी पारकी, मकरे मन अभीमान स०॥ अवगुण ढांकी गुण प्रगट करे, तप करी मकरे निदांन ॥ स० चु० ६ ॥ समकीत सुधो मनमांही धरे, जिम पामीश शिववास स० ॥ निज परीजन शेती मिलती रहे, बोले वचन विमास ॥स० चु० ७॥ सुधा साध जणी आदर करे, देजे अढलक दान स०॥ अशन पान स्वादमखादिम भला, सुख पामी असमान ॥स० चु० ८॥ कोद्रो कांचो कम्यो आकरो. निरसलखो अन स०। ॥ फरसो रमणो वस्त्रांकी वास्योयेर,

मत देजे कोइ वन ॥स० चु० ए॥ रात उघाड़ी रह्यां जे सुखमी, थिणगो नावे काम स०॥ स्वादहिन मत देजो साधुने, जोजे गाम कुगाम ॥स० चु० १०॥ पांती भेद मकरजे जमणा समे, मरमम बोले मुल स० ॥ अंतराय मत करजे धर्मनी, राजम देखे भूल ॥स० चु० ११ ॥ मात तात निज भ्रात संभारजे, मकरे चित अंदोह स० ॥ कुशल खेमरो कागल मोकले, धरज्यो प्रिय सुमोह ॥स० चु० १२॥ रुदन करे नृप कुमरी; चालंता, आंसु लुहे मात स० ॥ बेटी गुण पेटी तुं माहरी, संभारीसदीन रात ॥स० चु० १३ ॥ मिलणो सुख विछड़णो दोहिलो, मात पिता करे विलाप स०॥ फिर मिलणो जो पुन्य घणो हुवे, तो हुणो सुख थाय ॥स० चु० १४॥ जिम तिम शिख करीमाता कहे, बेटी थाय असुर स० ॥ भाइ साथे आवे ताहरे, हथीणा पुरछे डर ॥ स० चु० १५ ॥ माताने पगे लागी डुपदी, रथे बेठी तिणवार स०॥ तिहांथी राणी आमण डमणी, आवे महील मोझार ॥स० चु० १६॥ नयन झरे जिम जल धर उमीयो, पामे रती न लगार स०॥ खिण२ मांही बेटी सांभरे, विरह बुरो संसार ॥ स० चु० १७ ॥ दाशी दास मलीने विनवे, राणी शोगनी वार स०॥ कुमरी वेगे तुम्ह घर आवशे, दिन दस जिम तिम सार ॥स० चु० १८॥ राणी गम करी मन आपणो, बइठी पण दलगीर स० ॥ शामाजी माजी कहती मुझ डुपती, मात कहे कुण विर ॥स० चु० १ए॥ हथीणापुर भणी सहु राजवी, चाल्या सन्या लेय स० ॥ पाय लागी डुपद हवे क्रश्नने कुमरीने शिख देय ॥स० चु० २०॥ पांडु महीपती सेती हली मली, सगपण राखण संच स०॥ डुपद राजा निज पुर आवीयो, मलीने पांडव पंच ॥स० चु० २१॥ रजपुर नगर सिंगार्यो चिहुं दिशे, मलीया लोक अपार स० ॥

मोकल करी निज हाथ ॥२॥ कमलापति सेना सजी, दिय ददामां चोट; राजा सहुको चालिया, कोइ नहि मन खोट ॥ ३ ॥ तिण वेला आमो फरी, आयो वहु परीवार; पांडू महिपति विनवे, सुणजो कृश्न मोरार ॥ ४ ॥ कृपा करो मुज उपरे, मानो वचन विमास; हथणापुर पावन करो, मुझ मन पुरो आश ॥५॥ संयलि मानी कृश्नजी, प्रिती जणी ते वात; विजे पण मलि करी, कीधो हरी संयात ॥ ६ ॥ ढाल ११९ मी ॥ ॥ देशी रसियानी ॥ कटक ते कंपीलपुरथी चालियो, मेरा वाहिर दीध सलुणी; धडस ददामा हो वाजा अति नजा, द्रुपद नृप जस लीध ॥ स० १ ॥ चुलणी राणी हो कुमरी जणी कहे, वेटी सुण एक शीख स० ॥ सासु ससरानो माने कह्यो, विण कहे मजरे शिख ॥ स० चु० २ ॥ प्रिय पहिली मांचाथी उठजे, आलस नाणे अंग स० ॥ धणीय जमाम्ही हो तुं जमजे पवी, मकरे निच प्रसंग ॥ स० चु० ३ ॥ आंख्य विहुमां जीम अंतर किस्यो, तिम पांचे नरथार स०॥ सरीखा गणजे मत अंतर करे, तुझ सरज्या किरतार ॥ स० चु० ४ ॥ अरीहंत देवशु गुरु शेवा करे, जिन धर्म धरजे चित स०॥ मुखथी म नांखे वचन अजाणतो, जाप जपे धरी प्रित ॥ स० चु० ५ ॥ निंदाम करे हो वेटो पारकी, मकरे मन अजोमान स०॥ अवगुण ढांकी गुण प्रगट करे, तप करी मकरे नियांन ॥ स० चु०६ ॥ समकीत सुधो मनमांही धरे, जिम पामीश शिववास स० ॥ निज परीजन शेती भिलती रहे, वोले वचन विमास ॥स० चु० ७॥ सुधा साध जणी आदर करे, देजे अदलक दान स०॥ असन पान खादमसादिम जला, सुख पामी असमान ॥स० चु० ८॥ (कोद्यो कांचो कहुयो आकरो, निरसलुसो अन स०(॥ पम्मयो रम्मयो पलुपंखी वासीयो,

॥ इति ढालसागर प्रबंधे हरिवंशनामा षष्ठोऽधिकारः समाप्तः ॥

ठनी टोलेश गोरमी, गावे मंगल च्यार ॥स० चु० २१॥ उछव मोछव विविध प्रकारशुं, जोतां अचरज कोम स०॥ अनुक्रमे आया निज महीलमां, पंडू सुतनी जोम ॥स० चु० २३॥ पंडू नुपती सहु राजा नणी, संतोखी सुखदाय स०॥ करी विविध प्रकारे पेरामणी, निज कुल शोज चमाय ॥ स० चु० २४॥ विनय करी पगे लागी डुपदी, सहुने दिधी शीख स०॥ नृपति पोता निजश स्थानके, मारग खाता इख ॥ स० चु० २५ ॥ कुंति मन हरखीत हुइ घणी, लागी वहुयर पाय स० ॥ पुत्रवंति होजे तुं वहु, ए आशीष सोहाय ॥ स० चु० २६ ॥ नीत नीत नवला रंग वधामणां, नव नव मंगल माल॰ स० ॥ गुणसागर सुरी पुन्ये लह्यो, ए गुण विस सोमी ढाल ॥ स० चु० २७ ॥
॥ चोपाइ ॥ खंम खंम रस ठे नव नवा, सुणतां मगिं साकर लवा; श्री हरी वंश चरित्र जय जयो, ढगो खंम ए पुरण थयो ॥ १ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ खंम ७ मो ॥ ॥ दोहा ॥ साधु नमुं सुर तरु समा, वंछित फल दातार; अव सप्तम अधीकारनो, नविक सुणो विस्तार ॥१॥ नमी श्री मणिचुमनि, खेचर कियो अपहार; अर्युन हुवो वाहरु, वहुनावि तिणवार ॥२॥ शूरवीर गुण आगलो, पारथ प्रबल प्रताप; देखी पांमूं प्रथविपति, विस्मय पाम्यो आप ॥ ३ ॥ धर्म नंद धरमातमा, नृप पदवि थापंत; सकल धरानि साहिवी, आपण पे पामंत ॥ ४ ॥ अंवर जिन दिनकर करी, ध्वज करी देवल जेम; युधिष्ठिर राजा करी, प्रथवी शोनी तेम ॥ ५ ॥ ढाल १२० मी ॥ ॥ देशी हमीरानी ॥ प्रथवी रसवंती खरी, तरुवर अधीक फलंतोरे; उथ घणो सुरनी तणो, माग्या घन वरसंतोरे ॥१॥ धरम राजा जग जाण ए ॥ए आंकणी॥ लान घणो व्यापारमें, चाकर वहुला आसोरे; नीक्षुकने नीक्षा घणी, न रहे कोइ निरासोरे ॥ ध० २॥ पुत्रवंती तो कामनी उहागण शोनागोरे; जोर नलाइ आदरे, घर२ दिजे तागोरे ॥ ध० ३ ॥ वेटा माने वापने, पुजे मायना पायोरे; गुरुने माने चेलणा, वरते निर तो न्यायोरे ॥ ध० ४ ॥ इति अनिति नको तिहां, अवर न कोवि परितोरे; वहु नगती सासु तणी, सोक्या मांहि प्रीतोरे ॥ध० ५॥ पाप हणावे हंसका, ऊव शिलने नंगेरे; चितह हरवे चोरटा, परीग्रह पुन्य प्रसंगेरे ॥ ध० ६ ॥ क्रोधी कापण कर्मने, मानी मोमण मोहोरे; माया शीवने साधवे, लोनी गुण संदोहोरे ॥ ध० [redacted] ॥ वृधी करवा देवले, के मुनीवर के हाथेरे; दंम देखाइ ठे सहि, दंम न लोगा साथोरे ॥ध० ८॥ गात्र पात्र ताम्रणो, अवर न ताम्रन नीमोरे; वंधन वेणी कंचुकी, अवर न वंधन पिमोरे ॥ध० ए॥ धाक चम्र करतां क्रिया, अवर न धाक प्रकारोरे; कलह तो करणी तणो, अवर नहि कलिकारोरे ॥ ध० १० ॥ सुकृतनो लंपट पणो,

अवर न लंपट कोइरे; अशुन्न तणो अणजाणावो, अवर अजाणम जोइरे ॥ ध० ११ ॥ पासो तो दिसे घर्फे, अवर न कोइ पासेरे; सुसमआरो आवियो, सर्व विधी सुखवासरे ॥ ध० १२ ॥ जीम आदे चारे चढया, हयंवर गयंवर गाजोरे; पायक परिग्रह सामटो, डर्जन पाया लाजोरे ॥ ध० १३॥ आण मनावी आपणी, अनमन मावण नामोरे; प्रथवी पांम्व रायनी, दिन२ प्रते अन्नीरामोरे ॥ ध० १४ ॥ धन कण कंचन कोसजी, हिरा लाल प्रवालोरे; मणी माणीक मोती घणा, मेल्यो माल रसालोरे ॥ ध० १५ ॥ हरि हेते विचारवे, वहिन सुन्नद्रा नामोरे; परणावी अती नेहथी, अर्युनने अन्नीरामोरे ॥ ध० १६॥ बंधु समा पुत्र समा, पायक समास काजोरे; मित्र समा न्नाइ समा, सुखमें पाले राजोरे ॥ ध० १७ ॥ विद्याधर मणीचुम्जी, पाले मित्राचारोरे; सन्ना सुधर्मी सारखी, सन्ना समरावे सारोरे ॥ ध० १८॥ मणी थंन्न सोह्यामणा, सोवन न्नांति सुचंगोरे; चंद्रोदय चतुराइए, दिसे सोह सुचंगोरे ॥ ध० १९॥ विविध प्रकारे पुतली, विविध न्नातीको कामोरे; विविध प्रकारे कोरणी, विविध न्नाति चित्रामोरे ॥ ध० २० ॥ सिंघाशण मांम्यो नलो, बेसाम्ी तिंहां रायोरे; पुजी प्रणमी न्नावशुं, खेचर वरण थायोरे ॥ध० २१॥ हरी हलधर बोलाविया, मोटा दसहि दसारोरे; डुपद प्रमुख बम्ा राजीया, आया नृप उदारोरे ॥ ध० २२ ॥ वेगा उंचे आसणे, राजा राजकुमारोरे; रुप अने प्रतरुपशुं, पामे शोन्ना अपारोरे ॥ ध० २३ ॥ एतटे तेम्ो आवीयो, डर्योधन नृपालोरे; जादव पांम्व पेखीयारे, वेगा फाक फमालोरे ॥ ध० २४ ॥ आवे वसन संबा हतो, मणी आंगणे जल जाणोरे; उंच्यो स्फाटिक उपरे, अंबरनि माते आणोरे ॥ ध० २५ ॥ नटक मारयो न्नीतस्युं, प्राते रुपामें जायोरे; करे

जुहार मुजकशु, ॥२॥ हिये न समायोरे ॥ ध० २६ ॥ दुर्योधन खिज्यो घणुं, पाण्डव कटक विचारिरे, रीस नीसारी सहु जणि, मजिया बांह पसारीरे ॥ ध० २७ ॥ उछव कीधो अति घणो, विलस्यां बहुलां वितोरे; रंग वध्यो राजा जणी, धन विन एह पवितोरे ॥ ध० २८ ॥ हरि हलधर आवे करी, साजन मांहि सनेहोरे; दुर्योधन सनमानीयो, पोहता निजश गेहोरे ॥ ध० २९ ॥ वीसोतर सोमी ढालमें, प्रिती तणो अधीकारोरे; श्री गुणसागर सुरजी, धर्म सदा जयकारोरे ॥ध० ३०॥ ॥दोहा॥ दुर्योधन कहे तातशुं, मुख मिवा चित कुम; पांडव कपटी परगमा, रण कायर परसुर ॥१॥ यादव जोर विचारवे, मनमे आणी गुमान; मुजसुह शिया हासते, साले साल समान ॥२॥ जिणशुं तेण प्रकारशुं, कोकरी दाय उपाय; नोमी उंमावुं पांडवा, तो हुं रायाराय ॥३ ॥ इम विचार करतां थका, जाइ सपझा ताम; एहवे तिहां कण आवीयो, मामो शकुनी नाम ॥४॥ ढाल १२१ मी ॥ हुं तुम साथे न बोलुं रुपजजी ते मुजने विसारीजी ॥ए देशी॥ ताम दुर्योधन राय बोलावे, मामाने हेत आणीजी मुख नीसासो मुकी जांखे, वैरी तणो बल जाणीजी ॥ १ ॥ मननो मेलो अधिक कुशेलो, कौरव कपटी पुरोजी; धन जन बाह तणे बले बलीयो, ठलवल करवा सुरोजी ॥ म० २ ॥ पांडव सज्जानी शोजा देखी, मुज हुवे दुख अपारोजी; वली पांडवने पंचाली हशीया, कियो अंध तणो कुमारोजी ॥ म० ३ ॥ शकुनी कहे पहेलुं नवी किधुं, वधती वैरी वेलजी; मुज थकी जो ठेदत एहने, तो पामत जस केलजी ॥म०४॥ हवे पांडव साथे नवी चाले, एहनो सबलो साथजी; जाइ पं मांहोमांही संचे, हेत घणो हरी नाथजी ॥म० ५ ॥ एक उपाय अछे मुज आगल, देव

पासा सुख दायजी; देश डंमावुं जीति पकटे, जुवा खलावा रायजा ॥म० ६॥ इम विच्यार करी पिताने, हरख्यो मन राजानोजी; सुकुनी नेद पासानो जाणे, माने माहरुं मानोजी ॥म० ७॥ पांमवने तुमे आंही तेमावो, विडुर मोकली तातजी; सना रचीने डत रमाकूं, चाले वन विख्यातजी ॥ म० ८ ॥ सन्ना करावी द्रव्य लगावी, शोनानो नहीं पारजी, पधरावी सिंघासण मांम्यो उत्सव विविध प्रकारजी ॥म०९॥ तेमी हरी हलधरने पांमव, तेमा दशे दसारजी; बहु सनमानी पांमव साथे, पोखे प्रेम अपारजी ॥ म० १० ॥ हुवो प्रात सन्नामां आयो, डुर्योधन भुपालजी; सत भ्रात सुनट संघाते, आयुध्य सेन्या संनालजी ॥ म० ११ ॥ पायक पोताना सघला मेल्या, योध तणे त्यां द्वारजी; आयुध कवच टोपतनु सजीया, आया सन्नामोझारजी ॥म०१२॥ गाम गामथी तुरंगम आवे, मदगल तामा तंगजी; जमीत पाखर झलके अंग मांही, नामे शिश मन रंगजी ॥म० १३॥ निषम द्रोण कर्ण डुशाशन, शकुनी सबल सुत एहजी; कृपाचार्यने अश्वस्थामा, वाहीक अति बल देहजी ॥म० १४ ॥ सन्ना मध्य नम रह्यां तरवारी, युध जाणी तिहां प्रुढजी; गमे निशाण गंनीर स्वर वाजे, जोइ विडुर थयो दग मुढजी ॥म०१५॥ धृतराष्ट्र सन्ना मध्य बेग, पाळल सहु राय राणाजी; तिणे समे पांमव पधास्या, जिम निशा प्रगटीत नाणजी ॥म० १६॥ पांमवने सर्व सन्ना देखाडी जोइ थया रलीयातजी; प्रिती करी डुर्योधने काढी, द्युत क्रिमानी वातजी ॥म० १७॥ आपणे रमीए इहां बेहु नाइ, रमत सन्नामांहि बेगजी; जिम अर्जुनने सहदेव तिहां, नकुल चिंत्या मांही पेगजी ॥म० १८॥ युधीष्ठिर कहे सुणो डुर्योधन, बेड राजवी कर्मजी; परनारी संग पशु वध करवो, ए महंत तणो नही धर्मजी ॥ म० १९ ॥ हशी बोल्यो

राय डुर्योधन, सत्य कहुं धर्मरायजी; द्युत्री तणो धम द्युत आखेटक, करतां सुखे दिन जायजी ॥ म० २० ॥ वलतु
वचन कह्युं जनुं रमशुं, कुणे न राख्या वारीजी; अर्जुननुं अभिमान न राख्युं, थइ वेगा जुहारीजी ॥ म० २१ ॥
डुर्योधन डुशाशन, शकुनी, मली कर्ण कुमती एहजी; पाम्डव प्रते वायक जांखे, सजा सुणतां तेहजी ॥ म० २२ ॥
कांइक होम्ड वदीने रमीए, तो ते उलट थायजी, जे कांइ होम्ड करो ते आलुं,इम जांखे युधीष्ठर रायजी ॥म० २३॥
प्रथम दावे शुं आपवुं, कहो युधीष्टर रायजी; सरक पलाण सहित ए घोम्डा, आपुं मुख केहेवायजी ॥ म० २४ ॥
प्रथम दाव नाख्यो राजाए, बोल्यो शकुनीआराजी; जित्यो ए डुर्योधन राणो, पांमु तणा सुत हारयाजी ॥म० २५॥
अरिने दावे जुयो खेलावे, विडुर तणो नही सारेजी; हयंवर गयंवर रहवर पुरवर, राज अने त्रिय हारेजी॥म० २६॥
राज सयत्नो करी अशेवस्य, पंचाली तेम्डावेजी; निरजय थइ जम्ड चाल्या वेगे, पंचाली मंदिर आवेजी ॥म० २७॥
परपुरुष दिठा आवतां, घरमां पेठो नारीजी; दाशीए तिहां राख्या वारी, नवी लोपी जेकारजी ॥ म० २८ ॥ फिरी
पाछा आया सुजट, स्वामी अवज्ञा नावेजी; जांखे डुर्योधन मछर धरतो, ए परोहितथी शुं थावेजी ॥म० २९॥तव
डुसासन जातुं वेगे, लाव्य नारी मुफ पासेजी; ते दिन सुतुअने विसरयोजाइ, सहु देखतां किधी हांशीजी॥म०३०॥
रोस जरयो डुशासन राणो, आवे करत आवाजजी; देखी द्रुपदी आंसु ढाले, शि रहेशे मुफ लाजजी ॥ म० ३१ ॥
जणे दाशी मोटा तुम राणा, अबलाशुं स्यो प्राणजी; मेरु किमतजे मरजादा, मानो वचन राजानजी ॥ मं० ३२ ॥
चरण प्रहार हणी दाशीने, आयो मंदिर मांहीजी; नारी नाशी जिंतर जाइ, डुंखी केम्डे थाइजी ॥म० ३३॥ रीस

करीने मारी ते नारी, लीधी झाली कंसजी; ध्याय पोकार करे विलपंती, अबला बाले वेसजी ॥ म० ३४ ॥ नाइ मारे नथी अवसर, किम आज नमोकारजी; राजा सहु मुने देखशे अंगे, किम रहेशे मुज आचारजी ॥ म० ३५॥ नारी चिंत्ये हवे किम होस्ये, हारठे मुझ कंतजी; कुण जिवता मुझने ताणे, सही थयो कलपंतजी॥म० ३६॥ गंगेवने गुरु द्रोणाचारज, बेठा सहु राजानजी; सभा विच दुर्योधन आगे, जनी राखी आणजी ॥म० ३७॥ कहे दुशासन वेसो खोले, निठकरी मेलाभीजी; धारी ते गम फरीयो पापी, खीजवशे कहे भाभीजी ॥म० ३८॥ रिसा णो दुशासन राणो, खेंचे चिर अप्राणजी; गुणसागर सो एकवीसमी ढाले, होशे सत परमाणजी ॥ म० ३९ ॥

॥ दोहा ॥ मेलो पालव कहे प्रेमदा, तव बोले इम गाज; ठंमो पटराणी पणों, पछी करजो लाज ॥१॥ तुं हशीती मुझने, आज थइ आधीन; लाज न राखुं ताहरी; इम भाखे मती हिन ॥२॥ कुबुधी वचन इम सांभली, कंत सामु जोवे नार; भीम थयो तव रातमो, वारे धर्म कुमार ॥ ३ ॥ आज जो होइ पुन्य आपणां, तो किम हारीए विर, ते माटे नवी बोलवो, राखो समता धरी धिर ॥ ४ ॥ अबला हुइ अनाथणी, ऊलट्यो दुख अगाह; ढांकी अंग तनु कंपती, नयणे निर प्रवाह ॥५॥

ढाल १२२ ॥मी शियल सरु तरुवर शेवीए ॥ए देशी॥ कुणपत राखे माहरी कोप्यो दुरीजन काल हो; आवो ध्यावो उतावला, सियल तणा रखवाल हो ॥ कु० १ ॥ परमेष्टी मन ध्यावती, जीन शासन शीर ताज हो; दुष्ठ तणे हाथेपमी, छोडावो मुझ आज हो ॥ कु० २ ॥ गंगेवने गुरु देखतां, आणी अहि जीम चेरि हो; दुरमती आइ ए सहुने, किण हिन पाछि फेरी हो ॥ कु० ३॥ पांच पति शीर माहरे, पण नवि

उठ्या कोइ हो; मानी मान महा बलि, वेगा निचुं जोइ हो ॥ कु० ४ ॥ हाक वागी पुर शेहेरमां, करे किसुं
हो; पांमव केरी प्रेमदा, छुंटे सन्नामो ठार हो ॥ कु० ५ ॥ डष्ट डुसासन खेंचियो, ड्रुपति चिर चतुर हो; आवी
छना रह्या, सानिधकारी सुर हो ॥ कु०६॥ चिर अमुलख डुसरो, ढांक्यो सती शरीर हो; ते पण खेंच्यो तिसरो,
नवरंग चिर हो ॥ कु० ७ ॥ देखो रांम कपटणी, पहिरयां ठाठां चिर हो; ल्यो उतारी वेगसुं, कहे डुसासन
हो ॥ कु० ८ ॥ इम अनुक्रमे पुरीयां, अठ्योतेर सो पर्म हो; शील प्रनावे राखीयो, सना मांहि शर्म हो ॥ कु०
स्वेत निजां रातमां, नारी कुंजरवान हो; एक२ पे रंग आगला, पुरयां श्री नगवान हो ॥ कु० १० ॥ जेजेकार
कियो, सतिय तणो सत जाण हो; डष्ट डुसासन ठांखो पड्यो, हुवो अधीक खिसाण हो ॥कु०११॥ नीसम
नुपति, नीम अरयुन बलवंत हो; आण न लोपे राजा तणी, नहि तो आणे तुम अंत हो ॥कु० १२॥ सती घ
वेनीए, एहने सीयल समर्थ हो; नारी पांमव कने मोकलो, नहिंतर थाशे अनर्थ हो ॥कु०१३॥विडर कहे में पेहुं
आचरतां परपंच हो; आगसे अनर्थ नीपजे, जो ज्यो एहना संच हो ॥ कु० १४ ॥ कौरव कामनी रूवने,
वनमो ठार हो; तो माहरुं किहुं मानजो, जो सत होय संसार हो ॥ कु० १५॥ धृष्टासर सुण आंधलो, हयमूं
आज हो; सती वीटंवी शुं कियो, खोइ सनामें लाज हो ॥ कु० १६॥ होइ ठांखो राजीयो, ढोमी ड्रुपदी नार
पंचाली जग प्रगटी, सतिय सिरोमणी सार हो ॥ कु० १७ ॥ ॥ दोहा ॥ वरस बार वनमां वसे, नष्ट
एक; डुर्जोधन कहे पांमुं सुत, वली कहुं वात विवेक ॥ १ ॥ ठतां पमे जो वरसमां, तो फरीने वनवास; बार

लगे नोगवे, एहे माहरी नाप ॥२॥ आज्ञा ते अंगी करी, द्रौपदी बांधव नेह; युधीष्टीर गजपूरे आवीयां, गुरु प्रणमि शसनेह ॥३॥ प्रेमे नमी मावापने, विगर मिते तेणीवार; युधीष्टीरे मांभी कयों, ते वात तणो विस्तार ॥ ४ ॥ ढाल मुनगी ॥ मारी मा न महा बलि, चालियां वन भ्रात हो; शिख करवा आविया, जिहां छे कुंता मात हो ॥कुं० १८ ॥ आगल आवी नामीयो, माताजीने शिश हो; आज पुत्र में सांनल्युं, उहवाणा तुम दिश हो ॥ कु० १९ ॥ हुं आवीश तुम केमले, मेंतो घमी न रहेवाय हो; पुत्र पाखे मायमी, तोले हिणि थाय हो ॥ कु० २०॥ एतले विडुर आवीया, माजी कहे एम वाण हो; राजा तुमने ए शुं थयो, हुता अधीक सयाण हो ॥ कु० २१ ॥ विडुर कहे हुं शुं करुं, मारुं कांइ न थाय हो; गंगेव द्रोण ए डुख धरे, पण उष्टने न केहवाय हो ॥ कु० २२ ॥ माजी मेलो इहां कणो, रेहशे अमची पास हो; राजा नीषम जणावीने, तुम्हे चालो वनवास हो ॥ कु० २३ ॥ शिख आपी निज नारीने, रेहेज्यो माजी पास हो; सेवी तृष्या अरु नुखमी, डुख घणो वनवास हो ॥ कु० २४॥ केम रेहेवाये मुझथी, वैरी बहुलो साथ हो; लाज न राखी माहरी, इणे ग्रहा मुझ हाथ हो ॥ कु० २५॥ वेश खोले कहे मुझने, सांनलतां तुम कंत हो; जो मुझने नवि तेमशो, तो आणीश मुझ अंत हो ॥ कु० २६॥ चाले साथे प्रेमदा, सासुने पगे लाग्य हो; माता पण साथे हुइ, नहि रेहवा मुझ लाग हो ॥ कु० २७ ॥ वमा तणे पगे लागीने, तात तणी लइ शिख हो; पांमव वनमें चालिया, धरी मन समता इख हो ॥ कु० २८ ॥ बाविसा सोमी ढालमें, कोरव कीधो कोप हो; श्री गुण पांमव नवी करे, मरजादानो लोप हो ॥ कु० २९ ॥ ॥ दोहा ॥ बिहावें अति द्रुपदी, कुर अने करमिर;

दिया उमाइ पान ज्युं, पांमव जीम समीर ॥ १ ॥ विडर वीवुध गुरु सारिखो, देइ शिख विशेप; पोंहचावी पाछो वल्यो, आंसु ढाले अशेप ॥२॥ धृष्ट ड्रमन आम्यो फरी, कंपिलपुर आणंत; खवर तदा वनवासनी, याउपति जाणंत ॥ ३ ॥ ढाल ॥ हे जाड झगमग जोति सोहावे ॥ ए देशी ॥ ते वात सुणी माय वापनेरे हां, नयण न माए निर; मे एक कुंताने पांडएरे हां, धरुं न जाए धीर; मेरे साजना सांजलजो सहु कोय ॥१॥ मोनपणो मुखे आदरिरे हां, पांमु न वोले वोल; धर्म पुत्र धीरज धरिरे हां, तव करे पइ अमोल ॥ मे० २ ॥ खेदने खरखरो मत करोरे हां, सुपुरु न राचे राज्यनेरे हां, राज्य तातजी अमे वन जाय; सत्य प्रतिज्ञां पालसुंरे हां, वधस्ये तव माहिमांय ॥ मे० ३॥ धीर्य धरिनें तातजिरे हां, आपो जाए तो जाउ; सुख दुख वन थले वेगिएरे हां, पण एक वचन मत जाउ ॥ मे० ४॥ हा ना कांइ न करी शकेरे हां, तक अम आ देश; वोल न वोला ए डखेरे हां, रोक्यो कंठ प्रदेश ॥ मे० ५ ॥ पंमु कुंतिनें अंविकारे हां, अंधाने वाला जाणिने तेह; वांधव पांचेने द्रौपदिरे हां, वने चाल्या तजी गेह ॥ मे० ६॥ ते पांचे पुरथी निसर्यारे हां, तव नगर आद आंसु जले नुए सिंचतारे हां;, केम्हे थयां लहि विखवाद ॥ मे० ७ ॥ युद्धीष्टीर मावित्रने नमिरे हां, वोले थयुं निस्तेज; जिव जते पचेंद्रि विनांरे हां, तनु नु न रहे जेम तेज मे० ८ ॥ सुपुरुपने मान धनठेरे हां, रखे धरो मन एहवा वोल; प्रतिज्ञां अम पालतांरे हां, वधशे तमारो तोल ॥ मे० ९ ॥ मातजि मोह तणे वशेरे हां, परवश थाए प्राण; खेद, धर्म सदा दिल धारयोरे हां, ते साधे अनेक उमेद ॥ मे० १०॥ अम तात ताणि तक साधयोरे हां, सेवजो गुरुनां विर पलि विर मातनंरे हां. अरिहंतनि वहियो आण ॥ मे० ११॥

पाय; आशिष देयो अमनेरे हां, जेहथी विघन पलाय ॥ मे० १२ ॥ एम आस्वाशी सर्व स्वजननेरे हां, पुरजन साहमुं जोय; कांइ करी होय अमे किलामनारे हां, ते खमजो सहु कोय ॥मे० १३॥ नींतर ते नयणे वल्यांरे हां, तव सहु पुरना लोक; पण पग नवि चाले पुर नाणिरे हां, सहुने वाध्यो शोक ॥ मे० १४॥ उदयरतन कहे सांभलोरे हां, ढाल अति रसाल; विसारया न विसरेरे हां, वाहलां कांइ काल ॥ मे० १५॥ ढाल १२३ मी ॥ वधावा नी देशी ॥ कृश्न नरेसर आइयो, कांइ आयो हो आयो बहु परिवारशुं ए; पांभव साथे बोलियो, कांइ बोल्यो हो बोल्यो सकल प्रकारशुं ए ॥१॥ कौरव कुटि काढिए, कांइ काढि हो काढि दिजे देशथी ए; राजाजीने थापिए, कांइ थापी हो थापी शुं विशेषथी ए ॥ २ ॥ पांभव बोले स्वामीजी, कांइ स्वामी हो स्वामी वनमें चालवो ए; बोल न चुक्यो आपणो, कांइ आपुण हो आपुण बोल्यो पालवो ए ॥३॥ देव प्रसादे तुम्हारमे तुम्हारे हो प्रसादे सहु पाधरु ए, होशे कारज सुंदरु; कांइ सुंदरु हो सघलुं कारज सादरु ए ॥ ४ ॥ बाइ सुभद्रा पुत्रशुं, कांइ लेइ हो पोच्या प्रभु द्वारामति ए; पंचाली पीहरीए, पीहरीए हो पीहरीए न रहि सति ए ॥ ५ ॥ साते माणस संचरे, कांइ संचरे हो दुख अने त्रस अवगुणा ए; माता पुत्र सनेहमे, कांइ नेहमे हो राची नारी अति घणी ए ॥ ६ ॥ दिवस केतलाने आंतरे, कांइ आंतरे हो, पुरोहित पाव धारीयो ए; मोकलियो कौरव तणो, कांइ कौरव हो कौरवनो हेतकारियो ए ॥ ७ ॥ जांखे देव दया करो, कांइ दया हो वनवासे मति संचरो ए; खमो अपराध अमारमो, अमारो हो मानेवो कह्यो खरो ए ॥ ८ ॥ इंद्रप्रस्था नामें नलो, पुर आव्यो हो कीधी गादी विनाति ए; बइरा तुम सुख

नोगवो, नोगवो हो मानो हमारी वीनति ए ॥ ए ॥ धोलो ऊध विचारी ए, विचारी हो आया वारिणा वति ए; लाख घरे उतारीया, उतारीया हो जाइ मति घटीया रति ए ॥ १० ॥ विडर कियो उपगार हे, उपगार हो सुरंग बणावी पम्रचमी ए; कागल मांही जणावीयो, जणाव्यो हो अरीम पती जोयुं धमी ए ॥ ११ ॥ पयशी पेट उखदायकु, उखदायक हो कंस तणी परे जोइज्यो ए; गाफील खिजे वम्रचमा, कांइ तेहथी हो हुशीयारीमें होइज्यो ए ॥१२॥ फागुण कालीचउदश, मध राते हो करशो तुम्ह सुकुहमो ए; देशी आग उतावलो, ए ब्राह्मण हो ब्राह्मण नही चुहमो ए ॥१३॥ पंच पुत्र सुमो करी, कांइ वहुशुं हो रातवसा सुख निरमली ए; आगजगी फीरी पांमव पुल्या, सावुढी हो येटा वहुशुं परजली ए ॥१४॥ नोमे जुजावल साहीयो, साही हो पुरोहित जुहरमां जालीयो ए; पांम वजी उवारीया, कांइ काकेहो एह उपद्रव्य टालीयो ए ॥१५॥ लोक मली हाहा करे, कांइ हुयो हो एह अकारज अति घणो ए; कौरव ती अति कुरलीयो, कांइ लोगामे हो दोश उतारण आपणो ए ॥१६॥ संक कौरवनी खरी कांइ पांमव हो नाठा जाइवे सही ए; गरे पमे ने आखमे, कांइ जाणे हो दिन रात जावे वही ए ॥ १७ ॥ डुम गिरीने वन नवी, विसामो हो नवी लीए शंका परहरीयो; दर्नांकुर पग विंधीए, कांइ विंधे हो कांटा खुंचे कांकरीए ॥१८ ॥ थाकी माता अति घणी, कांइ थाकी हो पंचाली पग नवी नरे ए; नकुल अने सहदेवजी, कांइ थास्या हो चालवाने आलस करे ए ॥१९॥ एक खंधोले मायमी, कांइ चोहमीहो विजे खंधोले वहु ए; वंधव दोइ वांधीया, कांइ पुठे हो समरथथी होवे सहु ए ॥२० ॥ राजा अर्जुन कर धरी, कांइ चाल्यो हो चाल्यो मारग वंकमो ए; मा

१

एस खटनीर वाहीया, कांइ जाइ हो जाइ सुखमें भीमभो ए ॥२१॥ तेवीसा सोमी ढालमें, कांइ टलीयो हो टली यो उपद्रव्य धर्मथी ए; श्री गुणसागर सुरजी, कांइ हो सेहो होशे सुख सुभ कर्मथी ए ॥२२॥ ॥दोहा॥. विषम पंथ वोली करी, पहुता निश्चल गाम; साथ सुइ सुखमें सहु, भीम चल्यो जल काम ॥१॥ शरोवर जल लेइ वल्यो, पुवे लागी ताम; तिष्ठ२ मुख भांखती, जासहीभंबा नाम ॥ २ ॥ आवीथी मारण भणी, पण पती करवा काज; विनय करी करजोमीने, आगे उभी लाज ॥३॥ भीम भणे सुण भामनी, तुमे प्रकाशो आप; राखसना मही भंवनी, बहीन अछुं सकलाप ॥४॥ तुम हणवा हुं मोकली, हुं मोही तुम देख; प्रभु हुशीयारी किजीए, राक्स जोर विशेष ॥५॥ व्याहो मुफ प्राणे सतुम, हुं तुम दाशी समान; वनवाशेखज मत करुं, जिम वाधे मुफ वान ॥ ६ ॥ वनवासे शुं व्याहवुं, भाखे भीम कुमार; आभंबर आणे अवसरे, करत न शोभ लगार ॥७॥ ढाल १२४ मी॥देशी, योगनानी वात करंता हाली चाली, राखस तो आइ गयो; लाते मारी वेनने वारे, भीम तणे मन रोस थयो ॥१॥ मांसाहारी निच आचारी, अवलाने शुं चोट करे; जो बलवंतो ढोमय मंतो, मुफ साहमा पग किंशुं न भरे ॥२॥ घीय शींचाणी आग तणीपरे, तरु उपाभी आइयो, वक्र उखामी भीम नरेशर, राक्स उपर धाइयो ॥ ३ ॥ हो तलथा बथहोत बथावथ, उपर तले आवी दोइ; जाय हभंबा कुंती शेती, कहे हणीयो तुम्ह सुत कोइ ॥४॥ खभग संबाही आया ध्याइ, राजा जमरुपी होइ; गदा उपमी हेगो पामी, मारी लीयो भीमे सोइ ॥५॥ ताम हभंबा एह कुटंबा, साथे रही साता पावे; भुली पभी पंचाली बाला, देवि तव शोधी लावे ॥६॥ तव ते थाक्या देवि हभंबा, सासु वहुने खांधे धरे;

कुंतीने राजाजी हवे, नीम हमंबा व्याह करे ॥७॥ मंदिर विविध प्रकारे वणावी, सेज तणी रचना किजे; पान फूलने तेल सुगंधा, वस्त्र अनोपम पहीरीजे ॥८॥ नीम संघाते सुखवील संता, हिमंबाने गर्भ रहे; गर्भ तणी एकांते हमंबा, सासुजी शुं वात कहे ॥ ९ ॥ शाल दाल घृत रसोइ, तिवण तो खाटा खारा; देवि हमंबा आप समारे, वेवर जेव जमे सारा ॥ १० ॥ चक्रानीध पुरी देवसर्मा घरे, पांमवजी आव्या चाली; सासु जेव तणे आवेशे, हिमंबा पिहर हाली ॥११॥ रोज सुणंता नीम जणंतो, ब्राह्मण नारीकिम रोवे; माथे हाथ लगावी गाढो, ब्राह्मण गहे वरीयो होवे ॥ १२ ॥ नांखे यक नामे एक राक्स, शिलावी कुरोवो आवे; नगर लोक जयनीत घणेरा, वचने पण अति बिहावे ॥१३॥ काउसगादिक करणी करतां, परमेष्टी मनमें धावे; राजा प्रजा एक मनानवी, उपद्रव्य करवा पावे ॥ १४॥ राक्स रोस तजीने सुधी, वात राजाशु इम नासे; एक२ नर नक्षण कारण, नीतं पहोंचावे मुज पासे ॥ १५ ॥ राजा मानी पत्री ठाणी, आज हमारोछे वारो; माता वहीनमवयर वेटी, रोवेछे ए अवधारो ॥ १६ ॥ केवल ज्ञानी वात कहीथी, पांमवथी टलशे कारो; सोतो नाया अमदीन आयो, बोले परदेशी प्यारो ॥ १७ ॥ ए सहुने रोवंता राखो, थारे वारे हुं जशुं; राक्स हणीने लोक सकलनो, हुंतो रखवालो थाशुं ॥१८ ॥ आप गयो राक्स आवासे, हरख्यो देखी छंचपणो; सयल कुटंबोक्षापी खाशुं, एहने तनुनोमांस घणो ॥१९॥ मांहो मांही मांच्यो कगमो, धग मे कारीज सारीयो; गदा प्रहारे नलवल केलवी, नीमे राक्स मारीयो ॥२०॥ पुःफ दृष्टी अंबरनी वाणी, जय जय कारते उठली, मोटो एह उपद्रव्य टलीयो, लोगानी पुगी रली ॥२१॥ जीनवयणे करतुती देखी, लोगा पांमव जा

णीया; धन्य२ माता पिता धन करणी, पांडव सुजस वखाणीया ॥२२॥ चंदन चंद जीहां२ जाए, तिहां२ शितलताइ हो; ताप हरे परकातनु केरो, एह तणी अधीकाइ हो ॥२३॥ ढाल ए चोवीसा सोमी, बक नामा राक्षस हणीयो श्री गुणसागर न रहे छानो, भीम बल जगमांही जणीयो ॥२४॥ दोहा ॥ पांडव प्रभु मन चिंतवे, प्रगट हुवा हम आज; कौरव केडे लागशे, मतको विणसे काज ॥१॥ आधी राते निकला, सुतो मुकी गाम; द्वेतवने आया वही, राखवा निज माम ॥२॥ लोक वचनथी सांभली, ए सघलो विरतंत; दुर्योधन राजा घणो, माने हर्ष अत्यंत ॥३॥ प्रियवंद नामे भलो, दुत महा वाचाल; काकेजी करुणा करी, मोकलीयो सुविशाल ॥४॥ खबर हुइछे तुम तणी, दुर्योधन नरनाथ; आवेछे तुम्ह उपरे, करणादिक बहु साथ ॥५॥ ढाल १२५ मी ॥ पंथीडो वात करे घुर छेहथीरे ॥ ए देशी ॥ द्रुपतिरे द्रुपती रीसे परजलीरे, बोले रोस अपाररे; कौरवरे कौवर केडे छांडे नहीरे, आवे पमीयो लाररे ॥द्रु० १॥ राजरे राज लीयो धन सघलोरे, लीयो महातम वीनरे; तोपणारे पुव न छंडे पापीयोरे पुनाइ हमहि नरे॥द्रु० २॥ धीग मुझरे नारीपणुं घरतुम्ह तणोरे, धीग तुम्ह खत्री नामरे; बांदीरे उपर बिबीनी परेरे, मांडेछे पलाणरे॥द्रु० ३॥ सासुरे सासु प्रत्ये वहुयर कहेरे, विर जननी ए नामरे: कांइरे कांइ धरावे हेजथीरे, जाया पुन्यनां कामरे॥द्रु० ४॥ पुरुषरे पुरुष सहे किम एवडोरे, पीसुन पराभव काजरे; मइगलरे मद मारण न विसरे, अष्टापद घन गाजरे॥द्रु० ५॥ एकजरे एकजणी नीरभय थइरे, नारी सिंहणी सोयरे; सासुरे पंचजणी निज जोबनोरे, वादी गमायो जोयरे॥द्रु० ६॥ रांकरे रांक तणी पेरे मुझनेरे, विगोवी प्रपदा मांहिरे; पांचरे पांचे उभा जोइयोरे, तरणुं न त्रुटुं प्रांहिरे

॥ढु० ७॥मारेरे अने मरे त्रिय कारणेरे, जेहने शिर एक होयरे; पुरुषरे पुरुष पंचनी पदमणीरे, विमंबी न ठगे के
॥ढु० ८॥ एहरे एह वचननी सुणी तदारे, अर्जुन नीम सहदेवरे; फूकेरे फूक दिया सलगे घणीरे, ठगीया ततखे
॥ढु० ९॥ युगतीरे युगती वचन समकावीयारे, धर्मनंद राखेवा धर्मरे; जेठरे मासतणी नदीनी परेरे, आया गाम
री मर्मरे ॥ढु० १०॥ प्रियवंदरे प्रियवंद चरतव विसर्जो, मारी मान चल्या मतिवंतरे; श्रीगीररे श्रीगंध मादन आइ
गुपतपणे गुणवंतरे ॥ढु० ११॥ इंद्ररे किल नगर अठे नज़ीरे, तिहां राखी निश्चल ध्यानरे; राजारे राजा इंद्र त
सुतरे, साथे विद्याशुं जाणरे ॥ ढु० १२ ॥ विद्यारे विद्या विधी आरावतांरे; आवी ठर्नी तामरे; नगतीरे नावे
अर्जुनजीरे, किधो विद्या प्रणामरे ॥ढु० १३॥ विद्यारे नांखे कारज शुं करुंरे, वसो मुक देहमोझाररे; कारजरे का
सकल शिधी करुंरे, कोइ आगल न लहुं हाररे ॥ ढु० १४ ॥ विद्यारे सिद्ध हुवो हरी नंदजीरे, गिरि शिखरे बे
आपरे; व्याधकरे व्याधक खेलत आहिमोरे, करतो दिठो पापरे ॥ढु० १५॥ वरज्योरे पण नटले ए पापथीरे,
करंतो गेमाररे; आवेरे दनुप संवाही साहमोरे, नाणे संकलीगाररे ॥ ढु० १६ ॥ अर्जुनरे अर्जुन सामो होवंता
धनुष ठिनाइ लीधरे; खमगेरे लमतां खमग खसोटीयारे, प्रभुसे अधकी किधरे ॥ढु० १७॥ बाथेरे बाथे पमीया रो
शुंरे, यमीया दोइ कुझाररे; हारयोरे हारयो अर्जुन आगलेरे, हुवो जस विस्ताररे ॥ढु० १८॥ कुसमरे वृष्टी थइ प्र
गपरेरे, प्रगट्यो सुरवर एकरे; माग्यरे माग्य वर मुख नांखतोरे, पुठे आणी त्रिवेकरे ॥ढु० १९॥ वरनीरे पाठे आ
ए कुणगेरे, कियो किसो जंजालरे; वैताढ्यरे वैताढ्य रथनं [illegible] रसालरे ॥ ढु० २० ॥ इंद्र

इंद्र नामे राजीयोरे, विद्युत माली लघु भ्रातरे; काढ्योरे काढ्यो देश बाहिरेरे, करतो अति उतपातरे ॥ ढु० २१ ॥ राखसरे ते तल ताल तणो बलेरे, देश उजाम्हे सोररे; नांख्योरे नांख्यो उपद्रव्य टालणोरे, ज्ञानी थारो जोररे ॥ढु० २२ ॥ मुक्योरे मुक्यो तुम्ह लेवा भणीरे, में दिठा गिरीवर श्रृंगरे; बलरे बल जोवा माया करीरे, तुम्हे हुं जित्यो जंगरे ॥ढु० २३॥ रथरे रथ बेशी प्रभु आवीयारे, राक्षस उपर सुररे; जीत्योरे जीत्यो राक्षस वाजीयारे, सुजस तणा वरतुररे ॥ढु० २४॥ इंद्ररे इंद्र सनमान लही घणोरे, प्रणम्यां माजी पायरे; चित्रांगदरे चित्रांगद मुखचरी सुणतांरे सहु मन हरखीत थायरे ॥ ढु० २५ ॥ ढालजरे ढाल पण विसासोमी भलीरे, हणीयो तें तल तालरे; श्रीगुणरे श्री गुणसागर सुरजीरे, पांमव जश विशालरे; ॥ढु० २६॥ ॥दोहा॥ माता पुत्र अने वहु, वेग सुख पावंत; कमल एक कंचन तणो, अंबरथी आवंत ॥१॥ पंचाली करमे लीयो, कमल वास निज सास; लेतां मन वाध्यो घणो, पामी अति उलास ॥२॥ भामनी भांखे भिमशुं, एहवा कमल उदार; आणी आपो मुझ भणी;नाहमलावो नार ॥३॥ ढाल १२६ मी॥ शियलशुं रंगी चुंदमी ए देशी ॥ लावोने कमल सोहामणा, कहे भीम भणी एम वाणरे; हुंश करुं तुम उपरे, मारा पेलजी जीवन प्राणरे ॥ला० १ ॥ ए कमल मुझने गमे, लावो नाथ मलावो नाररे; तुम सरिखे प्रितम छतेरे, मुझ लाखेणो अवताररे ॥ला० २॥ भामनीनो मन राखवा, उठ्यो भीम कुंवर मतिवंतोरे; पतिव्रताशुं प्रितमी, तिण बोल न फेरी वालंतोरे ॥ ला० ३ ॥ चाल्यो मारग वंकमो, कांइ उलंघी विखम नाटरे; देखी कमल वन शोभतो, आवे हुंश धरी वन घाटरे ॥ला० ४॥ लेइ कमल पाछो वल्यो, पुंठे हुवो रखोपी देवरे

बाधा राख्या आमन, कांइ छाजा न सक छवरे ॥ ज्ञा० ५ ॥ फरके नेत्र वाहीणो, माताजी मनमें उचाटरे; नीम संकट मांही पड्यो, जोता नवी आयो सुत वाटरे ॥ज्ञा० ६ ॥ उवा ताम एतावला, बंधव च्यारे आणी सनेहरे; पो होंची न सक्या तेहथी; तव बांधीया पण तेहरे ॥ज्ञा० ७॥ कुंतामाता द्रुपति, कांइ एकलमी निरधाररे;काउसग ध्यान करी रह्यो, सारी रात दियशमोझार ॥ज्ञा० ८॥ केवल उठव कारणो, सुरपति आपे तव जायरे; सति उपर सुर आवतां तव जाल रह्यो खलायरे ॥ज्ञा०९॥ ज्ञानवले तव देखीयो, कांइ सति तो रही छिदायरे;पांच पांमवने शंखचुमजी, कांइ बांधीया अति छख थायरे ॥ज्ञा० १०॥ सुरपतिए सुर मोकल्यो, सोआयो छोमावण काजरे; ते कहे लेतां कमलने,मेंबांधी पाछे आजरे ॥ज्ञा०११॥छोड्यो इंद्र आदेशथी,करी प्रिती घणी संखरायरे;कमल लेइने आवीया,कांइ प्रणम्यामाजी पायरे ॥ज्ञा०१२॥माता निमी हेजथी, कांइ चांपे हियमा साथरे;उपद्रव्य टलियो धर्मथी, हेजे मलियो सयलो साथरे ॥ ज्ञा० १३॥ छविसा सोमी ढालमें, श्री जैन तणो धर्म कीजेरे; श्री गुणसागर सुरजी, तो ततक्षण कारज सिके़रे ॥ज्ञा०१४॥

॥ दोहा ॥ वोलि गीया खट मास जब, पुनरपी आया सोय; द्वैत वने आनंदमें, वासर जाता जोइ ॥ १ ॥ खबर लइ दुर्योधन, कीधी दोम ते वार; साहण वाहण सामटे, आयो विपनमो झार॥२॥ हरी सुत चित्रांगद तणो, सरोवर छे सुविशाल; रखवाला जल रोकवे, जोर करे भुपाल ॥ ३ ॥ चित्रांगद आयो चढी, कौरव साथ विकराल; सिंचाणो जीम चरकलि, लेइ गयो ततकाल ॥४॥ बुरो वांछत पर तणो, बुरो लहे नर आप; केमे पमता पांमवा, कौरव पति संताप ॥ ५ ॥ ढाल १२७ मी ॥ जीवरे तुं शियल तणो कर संग ॥ए देशी॥ किधो लाजे आपणोजी, कौरवपति

जेम जोय; चित्रांगद लेइ गयोजी, परवश दुखियो होयरे; आ सुणजोजी, कौरवपति जेम होय ॥ १ ॥ ए आंकणी॥ हा हाकार सहुको करेजी, जोर न चाले कोइ; जेहने शीर आवी पडीजी, नीरवाहे शिर सोइरे ॥ आ० २ ॥ सापे ताक्यो भींडकोजी, मोरे ताक्यो साप; निज स्वार्थनो आंधलोजी, मारण न जाणे आपरे ॥आ० ३ ॥ बगलो नंदे हंसनेजी, मणिने नंदे काच; काम पड्याथी पारखोजी, सहुने प्यारो साचरे ॥ आ० ४॥ भीम पड्या भाइ भलाजी लोग विराणा जाण; कौरवपतिनी कामनीजी, वेगे करी विलखाणरे ॥ आ० ५ ॥ युधीष्टर नृप आगलेजी, करती अधीक विखास; गोत्र तणा गोवालियाजी, सांभल अम अरदासरे आ० ६ ॥ कुल मंडण कुल केसरीजी, जेव जुगतसुं जोय; पीडाइ भाइ घणुंजी, कवण निद तुम्ह सोयरे आ० ७ ॥ मथीयो मिली घन देवताजी, रतन किया अपहार; रुपि अगस्त पिवताजी, नाम लियो जल खाररे ॥ आ० ८ ॥ बड वानल जल बालवेजी, पाज तणो जस वाद; राम करवे सायरुजी, न तजे निज मरजादरे ॥ आ० ए ॥ गुणग्राहि तो गुण ग्रहेजी, अवगुण नाखे दुर; दांत वखाण्यां स्वावननाजी, श्री हरी होय हजुररे ॥ आ० १० ॥ राजा हरि सुत शुं कहेजी, वेगेस लावो वार; दुर्योधन छोडावयाजी, थाउ सुर अपाररे ॥ आ० ११ ॥ विनय करीने विनवेजी, अर्युन भीम कुमार; व्याधी टली वीणा छपधेजी, मौन तणो अधीकाररे ॥ आ० १२ ॥ राजा भांखे भाइयोजी, क्षत्री केरो धर्म; वहिला थाउ वाहरुजी, सचवाइ कुल कर्मरे ॥ आ० १३॥ आइशने जो इश नहिजी, चाल्यो श्री हरी नंद; चित्रांगद साथे अड्योजी, पायो सुजस आणंदरे ॥ आ० १४ ॥ छोडावी कौरवपतिजी, बेशी विमाने आय; चित्रांगद चतुराइ पणेजी, अर्जुनने

पोचायरे ॥आ० १५॥ जव आया राजा कनजा, दुर्योधन उस पाय; शिशक चाढ्या ... ी, ताम घणुं अकुलाय
रे ॥ आ० १६ ॥ न नमे किलरुनी परेजी, खेचर गरूवन साथि; पगे लगायो जोरसुंजी, परवश छठ न कांइरे ॥
आ० १७ ॥ कुशल पुछतां घोलियोजी, निज चित सरखो ताम; रिपु पिण साले नहिजी, साले तुझ प्रणामरे ॥
आ० १८ ॥ रोस न आयो पांमवाजी, ढीतलसुं स्यो लोह; संतोषी घर मोकल्याजी, छोहि न तजे शेहरे ॥ आ०
१९॥ उठ न ठंके उछलाजी, केसेहुं शीख देत; धोइ हुं सो वारकेजी, काजल होय न सेतर ॥आ० २०॥ सतावीसा
सो ढालमेंजी, नला नलपण साची; श्री गुणसागर सुर कहेजी, समयश घन मानीरे ॥ आ० २१ ॥ ॥दोहा॥
चिउरने नपिम कहे, दुर्योधन स्युं ताम; विण अर्जुन एकनां, सुजटपणानां काम ॥ १ ॥ पांमव उपगारी सहि, प्राण
दान दातार; रे कृतघन कृतघनपणो, क्युं न तजे अविच्यार ॥ २ ॥ शिख न एकहि मन वसी, सामो थयो सरोष;
उरव विविध प्रकारनां, माने नहि त्रिदोष ॥ ३ ॥ जयद्रथ राजा आवियो, नगनिपति सुविच्यार; नली फरी चल
भोजने, लेइ चाल्यो नार ॥ ४ ॥ ढाल ॥ सुमति सदा दिलमां धरो ॥ ए देशी ॥ सांजलजो वात विनोदनि,
जयदरथ राजा विख्यात शयांने; मारगे जातो तुं तख्यो, दुर्योधननो जामांत श० ॥ सांजलो वात विनोदनी ॥ १ ॥
कौशल्या पति उठने, कुंताए धरि हेत; शयाने जमाइ तुं हुं तख्यों, सघला साथ समेत ॥श० सां० २॥ अर्जुने चिघाने
वले, रसोइ निपाइ रंग श० ॥ भोजन पिरस्यां भावता, कुंताए उज्वल रंग ॥ श० सां० ३ ॥ मंजन भोजन युक्तिसुं,
उपर आपी तंबोल श० ॥ प्राहुणा जाणी प्रेमसुं, सहु करे रंग रोल ॥श० सां० ४॥ परहां परहां सहु गयां, ते लंपटे

जइ लाग श० ॥ रथमां घाली द्रौपदी, रुथमां आणी राग ॥ श० सां० ५ ॥ जयदरथ ते महा चोरटो, रथ खेमी नाठो जाय श० ॥ चाहरे ते पुंठे वेगशुं, भीम अर्जुन जब धाय ॥ श० सां० ६ ॥ कुंता कहे तब हे वत्सो, शुनहि पर्णो ए रंगे मार श० ॥ जामात छे ए माहरो, रखे मारो तुमे गार ॥ श० सां० ७ ॥ भीम अर्जुन बे भयंकरा, बहु बहु नाखता बाण श०॥ जयदरथने जइ मिल्या, तव तिहां पड्यो भंगाण ॥ श० सां० ८॥ भीमे गदाने घाते करी, तेहनो रथ कर्यो चकचुर श० ॥ काचा कुंभ तणी परे, देखी दल सहु नाठो दूर ॥ श० सां० ए ॥ अर्धचंद्र बाणे अर्जुने, ध्वजा छत्र फाडि मुंछ श०॥ जयदरथना तव छेदिया, तव भुंडो पम्यो ते तुंच ॥श० सां० १०॥ मातु वचन संभारिने जिवतो मेहल्यो जयदरथ श० ॥ तुंण हरामी जे हुए, ते स्यो साधे अर्थ ॥ श० सां० ११ ॥ उदयरतन कहे सांभलो, ए कही ढालरे रसाल श०॥ टाल्यो केहनो नवि टले, जेहने जेहवो हुए ढाल ॥श० सां० १२॥ दोहा॥ मुंडानी परे कुटियो मुछ अने शिर केस; बाणा संघाते कापिया, भांड कियो सुविशेष ॥ १ ॥ ढाल १२८ मी ॥ जलकमल छमी जागोरे बाला शांम मारो जागशे ॥ए देशी ॥ देवरुषि एक दिवस आयो, करण आति उपगाररे; पांकवाशुं प्रगट भांखे, कौरवां अभिचाररे ॥दे० १॥ चोरश पणुं नव छाजे, प्रतख्य देख्यो एहरे; कष्ट थकी छोडाइ आणे, अहो अवगुण तेहरे ॥दे० ॥२॥ आगथी उगारीया अहि, साह्य पाम्यो त्रासरे; सिंध आखी समाधी किधा, चेय पुत्र विपनाशरे ॥दे० ३॥ दुग्ध दिधो शाप मुखे, गरल हुवे जेमरे; अधमे नगार करीयो, होइ जाइ तेमरे ॥दे० ४ ॥ उतमा उपगारनी मति, कियां अपर करंतरे; कियांहिथी निच न करे, अवलो देष धरंतरे ॥ दे० ५ ॥ निंबनो तो सिंधु जाणे,

साधु जेस सनेहरे; शिंधुनो तो विंड माने, निच माणस जेहरे ॥ दे० ६ ॥ शंप ताठे सहस फणपति, जीना दोइ
हजाररे; वर्णवेजो निचनी गती, तोहि न लहे पाररे ॥ दे० ७ ॥ गज अंकुश दिपत मही, नावा निरमोजाररे; करी
तोपण निच आगे, हारीयो किरताररे ॥ दे० ८ ॥ चंडने जे करी कालम, भुलीयो जगवानरे; निचनो मुख करत
कालो, वाधतो तो वानरे ॥दे० ९॥ दखदसा थेइ अठेदावी, कहे डुवासा शापरे; लाखने रस सरकी केरे, देइ राखी
तापरे ॥दे० १०॥ व्याप विसनो वांधी मुकी, करे रही विधायरे; निचनी तो जीन परगुण, कही न सके न्यायरे ॥दे०
११॥ हेतु तो कह्यामें नव, कौरवा समजायरे; घमेतो चोपमे गंठो, लागतो न देखायरे ॥दे० १२॥ सनामांही अति
वडाही, ये प्रयाहे वयणरे; नांखे जोले स्वजन टोले, कियो अधिक कुवयनरे ॥दे० १३॥ पांमवने हणे जे नर; लहे
आधो राजरे; पुरोहित सुत ग्रह्यो विमो, करे विप्र अकाजरे ॥दे० १४॥ प्रौढ विदा नामे कृत्या, करे साधन साररे;
सबल दल बल साजी सुंदर, अठे आवण हाररे ॥ दे० १५ ॥ करी मसुरती सखी विसर्ज्यो, चितवे चित चावरे;
अति वपडुप हरण जाणो, तप तणो सुभनावरे ॥ दे० १६ ॥ काउसग करंत सघला, धरे श्री जिन ध्यानरे; सुरने
सनमुखा निश्चल, रह्या मेरु समानरे ॥दे०१७॥ वोलीया एम दिवश साते, ध्यान सुंथीरे गातरे; आठमे दिन दिशाने
मुखे, ठवीयो अति वातरे ॥ दे० १८ ॥ घणा हाथी घणा घोमा, घणा रथ घणा लोगरे; उदधीनाकलोलनी परे,
सवल दल वल योगरे ॥ दे० १९ ॥ आइया तव ध्यानमांथी, वहु सासु दोयरे; घाली रथमें लेइ चाल्या, नारी जोर
न कांइरे ॥दे० २०॥ हाटकोदर इंड नंदन, समर सुर सकाजरे; मात वठल पिसुन पिमा, उपजेठे आजरे ॥दे० २१॥

करागात घणु हणता, ॥॥ पामंतरे; ताम ते तो असुररूपी, तरश खुलामंतरे ॥के० २२॥ तिन नचन बिनारी गिरा, मह छिपानंतरे; श्राप श्रापुणा श्रायुधाशु, छलहसता श्रानंतरे ॥के० २३॥ पिसुन नाग जाइ ज्ञाग, कोन सांभो होइरे गिपन छलीयो देव छलीयो, धर्मथी जग जोइरे ॥ के० २४॥ श्रवानीसा रोभी ढालमांही, पुरोहित सुत रोसरे; श्रीगुण सागर सूरी साखी, हुओ हिया सोसरे ॥के० २५॥ ॥ दोहा ॥ तिस व्यापी श्रति श्राकरी, लोग करंता चुर; श्राया ते शरोवर चली, पिधो जल नरपुर ॥ १॥ जल पिधो नृप तालुया, तरु तले जे निश्राराम; सुरखाए धरणी पड्या, नाभी न श्रावे ताम ॥ २ ॥ ढाल १२ए मी ॥ रतनशी गुरु गुण भिरूझारे ॥ ए देशी ॥ पुंते श्रानी ढूपतीरे, मृत रुपी कंत; वेरणी श्रकुलाणी घणीरे, श्रारती श्रति व्याणंत ॥ रे० १ ॥ रे रे देन कुलक्षणारे, किरुं कुस लग्यो श्रंग; पतीशामें पाके घणुंरे, करतो रंग विरंग ॥ रे० २ ॥ एतलो श्रानी नीजकीरे, पंचालीनी पास; पुलणहारीए जेतलेरे, शोर मच्यो श्राकाश ॥ रे० ३ ॥ करती श्रामंतर घणोरे, धरति रुप कराल; रुत्या नामे ए राक्षशीरे, श्राइ गइ ततकाल ॥ रे० ४ ॥ नीजी नांखे सुणा नामनीरे, एहनो कत्या नाम; कीमे लागीए जलनेरे, तेहनो फेके वाम ॥ रे० ५ ॥ काति काढी तव कापवारे, लागी काया जाम; कामनि तो श्रति कंपतिरे, नाणी नवे श्रनीराम ॥ रे० ६॥ सरणलारो तो को नहिरे, देवी तुम्हारो कोप; तो स्या माटे इम कीजीएरे, मर्यादानो लोप ॥ रे० ७॥ मुनाने श्युं ए मारिएरे, कांइ देवि वेपोरे निमारा; एम सुणी श्रंतरे गइरे, करती बकरव छाशरे ॥ रे० ८ ॥ रापी नाति रहे रोवतिरे, जाणी मुवा नरतार; निण नरतारा नामनीरे, पामे दुख श्रपार

॥ रे० ९ ॥ आंसु लुहिए आंखनारे, नीलि नांखे सार; सुख दुख आपद संपदारे, लागी मोले लार ॥ रे० १० ॥ उगे आमंनर घणेरे, आथमता नहि वार; दो अवस्था जोगवेरे, दिन मांहि दिनकार ॥ रे० ११ ॥ सरखो न रहे सरवदारे, ग्रहण नायक चंद; एक पखवाडे वाधतो, बीजे थाइ मंद ॥रे० १२॥ लोहिरी वाधे जीम सायरांरे, तिमही घटती जाय; जेहवो माणस धज बजेरे, तेहवो सिलो थाय ॥ रे० १३ ॥ सब दिन न हुवे सारिखारे, जुगे जग ववहार; रोया राज न पामिएरे, उद्यमनो अधीकार ॥ रे० १४ ॥ मणि कालि सरीता जलेरे, सिचिश पञ देह; मुझां मीट जासे सहिरे, वेगा याशे एह ॥ रे० १५ ॥ पात्र भरी पाणी तणोरे, पदमनी पोखे प्यार; आलस मोमी उगियारे, नारी कह्यो सुविच्यार ॥ रे० १६ ॥ विसमय पाम्यो पांमवेरे, एतो अचरज कोइ; एतले प्रगट्यो देवतारे, परम महा सुख होय ॥ रे० १७ ॥ सुर नांखे स्वामी सुणोरे, हुं हरणामर देव; तुमे तप वलि तुम्ह तणेरे, आयो करवा सेव ॥ रे० १८॥ कृत्या कृत्य निवारवारे, माहारां कीधां काज; ए सघलाहि जाणजोरे, जग मोटो जीनराज ॥रे० १९॥ समय समरवो हु सहिरे, बहुली करी अरदास; आजुपण आपी घणारे, देव गयो आकाश ॥ रे० २० ॥ एगुणतिसा सोमी ढालमेरे, पाप नाश जाएय; श्री गुणसागर सुरजीरे, पांमव पुन्य प्रमाण ॥ रे० २१॥ ॥ दोहा ॥ विविध प्रकारे रसवति, अति रसवति अपार; आपण काजे निपनि, आइ गयो अणगार ॥१॥ भाव घणो आदरपणे, प्रति लाभो रुपी राय; पांच दिव सोहामणां, जयश शब्द सुणाय ॥ २ ॥ बोले सासन देवता, संवछर ए बार; पोहता वरस ए तरमो, गुपतपणानो सार ॥ ३ ॥ ढाल ॥ वली नकुल कहे सुणो वात राजाजी, गोधीक नामे तिहांजी;

थइ ग्रंथ पालक अनीराम राजाजी, रहेसुं अश्वशाला होशे जिहांजी ॥ १ ॥ नकुल बोल्यो तिहां सहदेव रा० ॥ गोविंद नामे गोवालीउजी, करशुं गोपालानुं काम; निश्चय ब्राच ए वाते निहालियोजी ॥ २ ॥ नकुल द्रोपदी कहे सुणो वात रा० ॥ हुं तिहां शरेन्धी नामे सहिजी, रहेसुं सुदेष्णा राणिने पास रा० ॥ तेहने रिझवसुं सेनामां रहीजी ॥३॥ अंगिकरि निज२ काम रा० ॥ निज२ वेषधारीनेजी, पोहोता विराट नगर नजिक श्रोताजी, परखी नहि नर नारिनेजी ॥४॥ तेतो आवी नगर समीप श्रोताजी, सब शस्त्र कोट२मां भर्याजी, तेहनो भेद न जाणे कोय श्रोताजी, कल्पांत जोए तेहनां करवांजी ॥५॥ तिहुंथी पुरमां किध प्रवेश रा० ॥ राज धारे जुआरजी, विराटे आपी बहु मान; निज२ कामे थाप्या सुभाजी ॥ ६ ॥ सर्व सुखे समाधे तेह श्रोताजी, रहेछे विराटना राजमांजी; कोइ उलखे नहि तिलमात्र श्रोताजी, ते सावधान निज२ काममांजी ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ चोरि नाम ए आपणां, मत्स्य देशमें जाय; नगरका राजा घरे, रहीयां पांडव राय ॥ १ ॥ ढाल १३० मी ॥ इणपुर कंबल कोइ न लेशी ॥ ए देशी ॥ कंक विप्रनो नाम धरावे, राजाजी अलंकार रखावे; भीम रसोइयार सोहावो, वल्लभका बिरुद कहायो ॥ १ ॥ नकुल निरोपम नाम धरावे, ग्वाल तणी भांति तोल्लुं आणी; पंचाली सेरंध्री दासी, माजी भरवा आला दासी ॥ २ ॥ नगर तणे परीसर जब आवे, पितृवनने हथीयार छिपावे; समीत तणा तरु उपर राखि, ग्वाल सकल जग वात नतामि ॥ ३ ॥ रामो पिनाणे रोइ माटी, मुंह बिनाले मारे आंटी, चतुर शिरोमणी पांचे चाला, एकांते मुकी निज माता ॥ ४ ॥ नगरामा घर पाछी आया, निज२ कामे सयल लगाया; पुछता ए उत्तर पाया, पांडव घर हम आप सवाया ॥ ५ ॥

पांमरजी तो अने गनवाशी, तेह थकी हम फिरा ठवाशी; राजा जांखे नाग्य हमारो, दरशण लाग्गो आज तुम्हारो ॥६॥ सुलमे रहिइ ए पर संपे, अने तुम्हारो राजा जंपे; प्रात समे माजीने वंदे, शीख लहि सहुइ आनंदे ॥७॥ सुदृभा नामे पटराणी, तिर घणानी बहिन कहाणी; ठिमोतर सो किचक जाइ, नृपने सालानी अधीकाइ ॥८॥ जेमज नामे डुत विकराल, डुर्योधन मेल्यो सुविशाल; पांमवानी जे खबरज लावे, लाख पसाय अनोपम पावे ॥९॥ चाल्यो डुत करीने जुहार, लावुं खबर वेगे तुमहार; गाम नगर पुर जोतो रंगे, मागे जंग ए नुपति संगे ॥१०॥ लाव्या मुज पासे लमना डुतो, शक्ति न होय तो बांधीयो पुतो; नमा२ इम भुपती जीती, लेतो दान महा बल शिती ॥ ११ ॥ मठ देश वैरामो राजा, पुरी सन्ना अधीकव राजा; बेठो नुपती परखदा पुरी, कंकाविप्रसु सन्ना सनुरी ॥१२॥ आयो जेवी तिहां कणाचाली देखी सन्ना जाकजमाली; डुतो रायने करीय जुहार, राजा पुछे कवण विच्यार ॥१३॥ सुण स्वामी हथीणापुर नुप, डुर्योधननो डुत अनुप; देश देशना जिती रांणां, आव्यो आप मनावी आणा ॥ १४ ॥ होय बलीयो कोइ मुजने साधो, नहीतर पुतलु पाइ बांधो; किचक तव मुठीए बलवाल, ठठ्यो कोप करी विकराल ॥ १५ ॥ आयो भुपती हाथी चाली, डुते फंगोल्यो पाए जाली; कंकनणे वालीयो बलवंत, खाय घणुंने ठे मयमंत ॥१६॥ स्वामी जो इहां कण आवे, देश सहुनां पुतलां ठेमावे; राजाए तव पुरुषज नेज्यो, सुतो नीम उठावेहे जो ॥१७॥ चालो स्वामी राय बोलावे, कंक विप्र तुम वात घणावे; खाइ अन खुटामा कोस, इम वात कहे तिहां जोस ॥१८॥ लेइ चाल्यो ठठ्यो जाम, धरती धणेणाचा लागी ताम; चालीआयो सनामोझार, देखी डुतने हरख्यो अपार ॥१९॥ आवी कंकपाइ

शिर नाहस्युं, पछी जोयुं जेमलश साहमुं; इहां जोध किहांथी आव्ये, स्या पुतला पग बांधी लाव्यो ॥२० ॥ इहां आइने वाकरी वाइ, नही जिवतो जाए चाइ; इम कही मांहो मांही वलग्या, लोगं सहु जुवे जइ अलगा ॥२१॥ वागे हाथ उठे पडबंदा, खडेडे मोल नासे नर वृंदा; लात प्रहारे प्रथवी पड धुजे, उडे खेह सुरज नवी सुझे ॥२२॥ उठी कचेरी राजा पण चाग्यो, पडीयो मल भुजाबल लाग्यो; एतो पांडव भीमजी दिसे, इम विच्यारचो विसवा विशे ॥ २३ ॥ जाण्यो भिम तणो जडवाय, काढ्यो मुख थकी एम वाय; भिम करंतो जाणी गाढो, भिमे पलाडी पाड्यो टाढो ॥२४॥ त्रिसा सोमी ढाले भणीयो, भिमे मल महा बल हणीयो; श्रीगुणसागर सुखदीतो, पुन्ये पांडव जगजस जित्यो ॥२५॥ दोहा॥ एक दिवश परीवारशुं, किचक नामे भुप; बेन तणे घर आवीयो, दिठो सेरंध्री रुप ॥१॥ बहीन भणी एम पुछीयो, ए कुण नारी होय; किहां थकी आवी अछे, रुपे रंभा सोय ॥२॥ जे आपण घर चालीयो, तेह तणी ए नार; रहेछे मुझ आगले, दाशीपणे सुविच्यार ॥ ३ ॥ लाज तजी निरलजपणे, बहीन भणी कहे एम; एकवार मुझ मंदिरे, मोकलज्यो धरी प्रेम ॥ ४ ॥ वात मकर ए भाइजी, करता होय अकाज; शिल न लोपे सुंदरी, एहने पती शिरताज ॥५॥ राय वेराटे इम कह्यो, ए कोइ कारण रुप; रुडी रिते राखज्यो, भलावी मुझ भुप ॥६॥ ढाल १३१ मी॥ रामचंद्रके बागमे॥ आंबो मोरी रह्योरी ॥ए देशी॥ उठी चल्यो तव राय, मनमां रिस घणेरी; तेडाव्योरे खवास; करे वात बुरेरी ॥ १ ॥ एकली देखो जोनार, केहज्यो हेत धरीरी; शुं करशे मुझ राय, पांडु लाज खरीरी ॥२॥ एक दिवश नृपनार, रती केल भणीरी; आवे वन उद्यान, साथे सखीय घणीरी ॥ ३ ॥

साथे किच कराय, आव्यो अस्व चमीरी; फरता वन आ राम, सेरंध्री छूटे पमीरी ॥ ४ ॥ सतीशुं आल
चाखो मुझ घरेरी; हुं जग मोटो राय, सहु मुझ आण धरेरी ॥५॥ आपु नवलख हार, चोकी रत्न जरीरी; करे
पटनार, तुझशुं प्रित खरीरी ॥६॥ बोली चटक लगाय, फिट कुबधी सुलवेरी; बालुं तारो राज, आठो शियल
॥७॥ आव्यो चावख लेइ, किचक कोप करीरी; वेनसु दर्शणां ताम, आवी आमी फरीरी ॥ ८ ॥ वाइए नारो
इम किम कांम करेरी; एतो निरलज दास, एहने कुण वरेरी ॥९॥ मोटी राजकुमार, परणावुं वरनारी; रहवा
हथी हव, एहनी जात न सारी ॥ १० ॥ एकवार मुझ द्वार, आवे नेह धरीरी; पुरु मन तणी खांत, न करुं
फरीरी ॥११॥ वहीन नणे सुण विर, तुं मति चिंत्या करेरी; होशे धिरे काज, जाओ आप घरेरी ॥१२॥ हरखाणो
राय, होशे काम भलेरी; हुवो विकल नरेश, लाग्यो तास पलोरी ॥ १३ ॥ एक तिसा सोमी ढाल, गुणसागर
नाशी; जेशे डख अघोर, पापी पाप प्रकाशी ॥१४॥ ॥ दोहा ॥ एक दिवश राणी रावली, निपजावी पव
गोत्रीज तणी पुजा करी, आपी सहुने मान ॥ १ ॥ पात्र कर धरी प्रेमदा, किधो सेरंध्री साद; मंदिर आपो
विरने, गोत्रज तणो प्रसाद ॥२॥ माजी किम मने मोकल्यो, शुं नथी जाणता वात. काल एणे तुम देखतां,
घणो उतपात ॥३॥ दुध देखी मंजारने, हुवे लालच जेम; न गणे लाज परनारनी, लंपट माणस तेम ॥४॥
केशे तुजने, में वारयो छे एह; नाम लीए जो ताहरुं, तो टलि आवजे गेह ॥५॥ परवश प्रेमदा शुं करे, लेइ
ते पात्र; आव्यो घर जव ढुंकडो, थरहर कंपे गात्र ॥ ६ ॥ ढाल १३२ मी ॥ श्री रामजीए नारी गमाइ,

शुध न पाइजी ॥ ए देशी ॥ पदी मनमां जोयु विमाशी, किचक कुबुधी पुरोजी; एकलमा जाता इणे मंदीर, रहे किम शियल सनुराजी ॥ डु० १ ॥ एम उपाती आवी बाला, कैया तणे आवासजी; दिधुं पात्र डरथी उन्नी, लीधुं हाथ खवासजी ॥ डु० २॥ मेली थाल वलि जव पाछी, किचक आयो पुंठजी; रे उन्नी रंभा किहां जाइस, वाणी वदे इम जुठजी ॥ डु० ३ ॥ पामी त्रास ते सभा सनमुख, नारी नाठी जायजी; आवी उन्नी राजा शरणे, कामी केडे थायजी ॥ डु० ४॥ कंक वीप्र देखंता मारी, नारी लाते तामजी; वैराटने सर्व सुभट जोतां, कीधी सभाग तमामजी ॥ डु० ५॥ नाथ प्रते इम वदे वाणी, छोडावो माहाराजजी; ए पापीडो मुझने पीडे, मुकावे मुझ लाजजी ॥ डु० ६ ॥ कंक भणे वैराट सभानी, लाज लइ मछरालजी; इमनी सुणी राय झंखाणो हाकलियो भुपालजी ॥ डु० ७॥ आज मुकुंछुं तुझने जाणी, काले तारी वातजी; आण्य वहे माहरी रायरांणा, आज घणी आख्यातजी ॥ डु० ८॥ इम कहीने वल्यो पाछो, गयो निज आवासजी; पंचाली तिहांथी आवी, मछरालीनी पासजी ॥डु० ए॥ राणी आगल किधुं सघलुं, हैयुं फाटता रोयजी; अम दश तो सहु ठजड थइ, सार न लीए कोइजी ॥ डु० १० ॥ अने कपरे आशाशना दिधी, राणीए रोती राखीजी; कहेतां माहरा दांतज घाटा, छे मुझ अंतर साखीजी ॥ डु० ११॥ ते दिन दोहीलो गयो रामाने, रात पडी जे वारजी; अवसर लेइ आवी एकाकी, विनवीयो भरतारजी ॥डु० १२॥ कैये मुझने इणीपरे भांख्यो, आणीश तारो अंतजी; आतमघात करुं ते पेहेली, तिण कारण मुझ कंतजी ॥ डु० १३॥ में विनवाया गोढ विछाइ, तुम तणा वड विरजी; ते पण सांभली हेवुं घाल्युं, करी नही मुझ भिरजी ॥डु०

... सुण आलाए एतला काज, कया जणी तुम जायजी; ... रजी
यजी ॥छु० १६॥ कंत तणे आदेशे आवी, वात न जाणे कोइजी; आपणे दोय एकांते मजशुं, करी मतो एकवा
॥छु० १७॥ मारग जातां किचक दिठी, वाली झाकझमाळीजी; सोळश्रृंगार सज्या तनुं सुंदर, पेरया दरपण जोइजी
॥छु० १८॥ दिवश रात हिंडु तुम्ह जोतां, लागी लेह तुम्हारीजी; कामातुर अकुळाणो राजा, फेरी कोट नि हालीजी
॥छु० १९॥ मुख पंचाली वायक बोली, सुणो सुनट एक वातजी; आज मनोरथ थया पुरण, किधी सार अम्हारीजी
॥छु० २०॥ हिंडोळाखाट झुके ऊंची, मणीमय मारा आवासजी; कोइ मंदिर देखाडो एकांते, तो रमीए तुम संघातजी
आसजी ॥छु० २१॥ इम संकेत करीने चाल्यो, किचकनीज आवासजी; आवज्यो रात समे तुम राणी, जीम पुगे मुज
उलासजी ॥छु० २२॥ ए बातिसासोमी ढाले, वात जणावी तासजी; भामनीए सहु वात प्रकाशी, जिम जणी
विनाशजी ॥छु० २३॥ ॥दोहा॥ जिम जणे सुण भामनी, आप सुरंगो वेश; धाशुं केयानि कामनी, कुंश धरी
सुविशेश ॥१॥ देइ आलगंन एहने, पोंचाडुं जम लोक; तो तुं मुझने जाणजो, जिम तणो घसरोक ॥२॥ आज पछी
कोइ नारीनो, नाम लिए नही तेह; खोमा मंजार तणीपरे, नमतो राखुं एह ॥३॥ ढाल १२३ मी ॥ समुद्र
विजय सुत चंदलो सांमळीयाजी ॥ए देशी॥ रात समे नफ जिमजी, मन मोहना; स्नान करी सुची देह, लालमन
मोहना; केस समार्या कामनी म०॥ घाली फुलेल सनेह ॥ला०१॥ सेंथो लाल सोहावीयो म०॥ नकवेसर रुमो नथ

ला०॥ निलवट मोती पुरियो म० ॥ सोवन चुम्बि हथ्थ ॥ ला० २ ॥ रक्त मनोहर कंचुकी म० ॥ मस्तक उढ्यो चिर ला० ॥ पग पीतांबर ढलकतो म० ॥ ऊणके नेउर गुहिर ॥ ला० ३॥ नांख्यो कंठे लहकतो म० ॥ पंचाली उरनो हार ला० ॥ हसी बोली एम भामनी म० ॥ तुम जीती जग नार ॥ ला० ४ ॥ नारी वेश भीमे करयो म० ॥ करवा किचक भंग ला० ॥ चाल्यो मध बजारथी म० ॥ लटके जोतो अंग ॥ ला० ५ ॥ आव्यो किचक मंदिरे म० ॥ दिठो अनोपम घाट ला० ॥ मोती फुंबख बांधीया म० ॥ लटके हिंडोला खाट ॥ ला० ६ ॥ असुर थाशे आवतां म० ॥ सुवुं वार लगार ला० ॥ दइ शीर भींते पोढियो म०॥ चरणे चांपी कमाड ॥ ला० ७॥ एटले किचक आवियो म०॥ पेरी तनुं शणगार ला० ॥ पेठो मंदिर एकलो म० ॥ सेवक रहियो बार ॥ ला० ८ ॥ लालच धरतो आवियो म० ॥ मोहनी मोटो बंध ला०॥ दिपक देखी पतंगीयो म० ॥ पडीयो तिम मती अंध ॥ ला० ९॥ आज सफल दिन माहरो म० ॥ करतो मन सुविचार ला० ॥ आवी आवाशे उभो रह्यो म० ॥ करस्युं कुव्यो ध्वार ॥ ला० १० ॥ बोलावी बोले नहि म० ॥ एहनुं पडी ते शीश ला० ॥ उठो २ भडे तुमे म० ॥ साद किया दश विस ॥ ला० ११ ॥ कमाड कठीन खखडावीयुं म० ॥ तव सांभल्युं शुं यार ला० चरण संकोचा आपणा म०॥ राय उघाड्यो द्वार ॥ ला० १२ ॥ पोल पेइने परवरयो म० ॥ खोलतो खुणा चार ला० ॥ खडकी मंडप भुसरी म० ॥ नवि दिठी त्यां नार ॥ ला० १३॥ एम सघले जोतां थकां म०॥ किचके दिठो सोय ला०॥ कुण कुबुधी इहां आवीयो म०॥ ए तनुं नारी न होय ॥ ला० १४॥ भीम मधुर एम बोलियो म०॥ आवो कंत सुजाण ला०॥ वार घणी मुजने थइ म॥ नाथजी जीवन

प्राण ॥ ला० १५ ॥ एम कही उठ्यो भीमनो म० ॥ किचक पामी चीस ला० ॥ हा हा हवे हुं नही करुं म०॥ मुको मुझने इश ॥ ला० १६ ॥ कर झालीने पाटक्यो म० ॥ करतो आक्रंद साद ला०॥ भीम भणे परनारसु म०॥ वली करजो उन्माद ॥ ला० १७॥ मारी कीधो कोथलो म०॥ शिर चांप्युं धड मांहि ला०॥ किचक परतक्ष पामीयो म०॥ पाप तणां फल प्रांहि ॥ ला० १८ ॥ भीमे ताम वीच्यारियो म०॥ ए नृत केली साल ला० ॥ धनुर विद्या इहां कण भणे म० ॥ देखी विशे बाल ॥ ला० १९ ॥ भारवट भार ऊंचो करी म० ॥ चांपीयो ते मांय ला० ॥ पुनरपी भीम वीचारीउं म० ॥ रखे जाणे कोइ आय ॥ ला० २० ॥ रक्त तणी रलीका जरी म० ॥ भारोट लीखीयो नाम ला०॥ राजा वात जणाववा म० ॥ त्रण अक्षर तिणी ठाम ॥ ला० २१ ॥ काम करी किचक तणो म०॥ भीम गयो निज स्थान ला०॥ सकल सबंध आवी कह्यो म० ॥ नारी जणी बहु मान ॥ ला० २२ ॥ तेत्रीसासोमी ढालमें म० ॥ श्री गुणसागर जोय ला० ॥ किचक प्रतक्ष पामीयो म० ॥ कीधाना फल सोय ॥ ला० २३ ॥ ॥ दोहा॥ राय कचारी आवियो, पुरी सभा अभीराम; किचक भाइ सहु मली, वेग करी परणाम ॥ १ ॥ राजा पुछे सादरो, तुम बंधव गुण खाण; हमणा आमो दिठा नथी, कुण कारण राजान ॥ २ ॥ अम भाइ काले चली, गया हुता कांइ वार; राते पण आव्या नथी, अम मंदिर निरधार ॥ ३ ॥ राए शेवक मुकीयां, कैया तणे दरबार; पुछे जइ शा नारीने, किहां छे तुम भरतार ॥ ४ ॥ सांझ समे शोभा धरी, तेमी शेवक साथ; गिया पुछया विण मुझने, हजी नवि आव्या नाथ ॥ ५ ॥ ॥ ढाल १३४ मी ॥ सोइ सयाणो जे अवसर साधे ॥ ए देशी ॥ किचक भाइ मली सव

आवे, राजाशुं एम वात सुणावे; हजीय न आव्या किचक राय, राजाजी मन चिंत्या थाय ॥ कि० १ ॥ शेवक तेह्नी पुछ्यो अन्नीराम, ठाकुर तुमचा गया कुण काम; नृत सणी शाला नरनाथ, तिहां सुधी हता अमे सहुसाथ ॥कि० २॥ पछी अमने शिखज आपी, आप एकीला गया थिर थापी; द्वारपाले पण एमज भांख्यो, निकलतां बार अमे नवी भांख्यो ॥कि० ३॥ राजा शोध करवा रंगे, उठ्यो सुभट लेइ बहु संगे; घर २ शेरी चोकमोझार, जोतां न लाधी शोध लगार ॥कि० ४॥ बैन सुदर्शणा वात ए जाणी, भाइ न लाधो होइ बिराणी; नृतशालाए आवे सहु साथ, पग न लाभे जोतां नरनाथ ॥ कि० ५ ॥ धरति विवर दिठो तिणे ठाम, दिसेछे इहां थयो संग्राम; भारोटे आंक दिठा अति राता, बैन भणे इहां सही मुझ भ्राता ॥कि० ६॥ मेता प्रधान तेडावी राजा, वंचवे सहि अक्षर ताजा; वांचता एम विचारे सुजाण, में मार्‍यो एम कहे कुण वाण ॥ कि० ७ ॥ एतले राय आवी एम वांच्युं, में मारयो सुख कहे तव साचुं; राणी आंखे नांखे बहु निर, तुमे मारयो दिसे मुझ विर ॥कि० ८॥ कोयेक पाप उदय थयो आज, कैया तणो एम थयो अकाज; एणे शेरेंध्री सभा मांही मारी, मृत्यु जाण्यो एम राय विच्यारी ॥कि० ९॥ वालीयो आदे मिल्या सहु लोग, भारोट अलगो कियो बल योग; काढ्यो किचक मली बहु साथ; देखी राणी भीड्यो लेइ बाथ ॥कि० १०॥ बैन भाइनो अंग निहाले, तिम २ आंखे आंसुभा ढाले; वात विविध प्रकारे दाखी, सहु मली एम रोती राखी ॥कि० ११ ॥ भाइ मीली सुविचारण किजे, सेरेंध्रिने साथे दहीजे; एह थकी किचकनो नासो, सती किहां पामे घर वासो ॥कि० १२॥ शिवका किचक काज ए किजे, केस ग्रंही सेरेंध्री लीजे; थरहर २ ध्रुजे सोइ, भिम

कहे चिंत्या नही कोइ ॥कि० १३ ॥ कुरुश करी किचक कागा, शेरंध्रीने नाखण लाग्या; जिम जुजा वले ब्रह्म ग
खाजी, किचक बंधव मास्या वाली ॥कि० १४॥ बांधव शोक करंत सरोखी, राजाए राणी संतोखी; एकाकि नाए जे
काजो, तेज्यो तो ए विनाशे राजो ॥कि० १५ ॥ कोकरमी घर वाघज पइठो, एह उखाणो परतक्ष दिठो; एतो श्रा
गिन तेरे देखाया हाथशुंरे बलाशी जाया ॥कि० १६॥ एतो कोएक उठी उपाधी, साध नही ए रोग असाधी; मुजने
ो आयो जोगवणो, कावाठे नृप पद जोगवणो ॥कि० १७॥ जुर जालमें हुंतुं पफीयो, सिंह तणी शिकारे चफीयो;
सली पेट उपाए पिफा, साप संघाते मांफी क्रिफा ॥कि० १८॥ काम पखे ए विर वोसाया, अमृत काजे महा विख
ाया; जइ तुं राख्यो चाहे जुफ़ो, तो मकर एह कदा ग्रह कुफ़ो ॥कि० १९॥ आप जलो जगनुं जलुं जावे, आप मुवा
ोम बुफ कहावे; सो हणीया तस हणता एको, करे किशी ए आणी विवेको ॥कि० २० ॥ जे दिन सो दिन आयो
हुंतुं, दिनपथे दलासा दखलुं; गंनीमानी रही जे राणी, शामाटे त्रोफी जे तांणी ॥कि० २१॥ चोत्रीसा सोमी ढाले
णीया, जिमे किचक सघला हणीया; श्री गुणसागर सुर वदीतो, शिख पसाए जगजस जित्यो ॥ कि० २२ ॥
ोहा॥ चतुर महाचर चोकशी, फिरी आया प्रभु पास; खबर न पामी पांफवा, सोच घणो चित्त तास ॥१॥ विडरने
पम तणो, वदन विलोके राय; प्रथवी सघली सोधतां, पांफव खबर न थाय ॥२॥ ढाल १३५ मी ॥ मेतार
मुनीवर धन२ तुम अवतार ॥ए देशी॥ बलवंता पांफव प्रथवी मांही प्रसीद्ध, गुणवंता पांफव प्रगट होसेसो शिद्ध
आंकणी॥ विडर अने निपम जणोजी, वाणी अधीक अनुप; पांफवनी सहनाणकाजी, सांजल कौरव जुप ॥ब०

१ ॥ इति अनिती भनीतीकाजी, रोग न अधीको शोग; पांडव छे जे देशमेजी, होशे सुखीयां लोग ॥ व० २ ॥
अरिहंता अतिशयजी साजी, दिशे ग्रंथमो फार; केत लाय अतिशय तिसाजी, पांडवना सुविचार ॥ व० ३ ॥ उत
भलो तो खरोजी, साचो ए उपमान; मछ देश महिमा घणोजी, दिन२ चडते वान ॥ व० ४ ॥ सुसरमा राजा कहे
जी, एतो सुधी वात; नगर तणी गौवालवेजी, पांडव प्रगट थात ॥ व० ५ ॥ खुणश हमारी छे खरीजी, वैराडा नृप
साथ; स्वामी काज समारताजी, सुजस दियो जग नाथ ॥ व० ६ ॥ कौरवपति सेना सजीजी, साथे सहु परिवार;
हय गय रथ पायक घणाजी, भीषमजी पण लार ॥ व० ७ ॥ घमश वागे घुघराजी, पाखर जडीया पलाण; उडी
रज घमशाणसुजी, गयण छायो वर भाण ॥ व० ८ ॥ देखी दल बल आपणोजी, मुलकाणो मन राय; कुण खत्री
मुझ आगलेजी, युधे जीवतां जाय ॥ व० ९॥ सुसर्मा दक्षण दिशेजी, जाइ लाग्यो जाम; गौ हरता ते ग्वालीयाजी,
आइ पोकार्यां ताम ॥ व० १० ॥ क्षत्री सहु चडी चालियाजी, सजी भाथा कर बाण; पांडव चार साथे हुवाजी,
वाग्या ढोल निशाण ॥ व० ११ ॥ भला२ भड पाखरयाजी, संवाह्या अति सुर; भुप हुवो गोवा हरुजी, वाजीया
रण तुर ॥ व० १२ ॥ नृप लडवे भड लडथडाजी, भाग्या जाइ दुर; उगंता रवी आगलेजी, तम जीम
नासे डर ॥ व १३॥ खीसती जाणी आपणीजी, सुसरमा कोपंत; मोटा भडने मोडवेजी, वैराडो रोपंत ॥व० १४॥
सुसर्माए बांधीयोजी, वैराडो भुपाल; जोर न चाले कोइनोजी, सोचे बालगोपाल ॥ व० १५॥ पांडव चारे धाइयाजी,
धसमता धुताल; सुसर्माखा थोकियोजी, नाठा भड ततकाल ॥ व० १६ ॥ मछ राय छोडावियोजी, भीम भुजा बल

॥ हरख धरी तेही स्थानकेजी, रात रह्यो राजान;
जोय, साथे तो थलीया चलाजी, नयशाथा शु होय ॥अ० १७ ॥ अधीकामें अधीको घणोजी, सुजस सुणी निज कान;
रुंक तणे मुख सांभलीजी, पांफवनो आख्यान ॥अ० १८॥ चाकर जेहना एहवाजी, सुर महारे सनुरः ठाकुरनो केहुवो
सत्य करीने सरदहेजी, लीधी सबही मान ॥अ० १९ ॥ श्रीगुण सागर सुरी कहेजी,
क्रियोजी, दिसे एह हजुर ॥अ० २०॥ पोतिसा सोमी ढालमेंजी, नीमे जणाव्यो आप;
न छपे तेज प्रताप ॥अ० ॥२१ ॥ ॥ दोहा ॥ प्रात हुवा कौरवपती, उत्तर दिशनी गाय; वाली चलीया वेगशुं,
ग्राज पोकारथा आय ॥१॥ राजानो सहु रावणो, राजा साथे जोय; उत्तरा कुंवर एकलो, घर रखवालो होय ॥२॥
धुंधारव श्रवणे सुणी, बोले राज कुमार; म्हारे नही कोइ सारथी, करे जणावण सार ॥३॥ महीलाने माय आगले,
गाल मारतो जाण; सेरंध्री बोली हशी, कुंवर आरती मन आण ॥४॥ ढाल १२६ मी ॥ आछी लालजी
नवर वांदवा निसरयांजी ॥ ए देशी ॥ तव सेरंध्री बाल, बोले वचन रसाल; आछे लाल॥ कुंवरने चटक लगायनेजी
॥१॥ अहो कुंवर कहुं तुज, बुध करणानि बूझ आ०॥ तो सारथीछे सोहामणोजी ॥२॥ ए नरविंदक नेस, छेसारथी
सुविशेश आ०॥ अदभुत रुप सोहामणोजी ॥३॥ हरनिंदनो रथ आप, खेमतो परम प्रताप आ० ॥ ते रथ खेमशे
ताहरोजी ॥४॥ ल्यो तुम एहने संग, होस्ये जित अनंग आ०॥ हुंश मराखीश को हुवेजी ॥ ५ ॥ हस्तां रोतां एह,
आव्यो परुणो गेह आ०॥ कुंवरे पुछयो सारथीजी ॥६॥ कहे विंदल महाराज, एतो आछो काज आ० ॥ आपणने
गोवालतांजी ॥७॥ मायने महलणी पास, पेरी बगतर तनुखास आ०॥ रणरंग रमया सज थयोजी ॥ ८ ॥ वहीन

फीरो संग्राम; हाथ जोमी उनो रह्यो, अर्युनपं अनोराम ॥१॥ खीजके ले हथीयार वर, धनुष बाण उदार; कवच
प्रमुख आयुध सहु, तुं जइ लाव्य कुमार ॥२॥ आदेश लेइ अर्युननो, आव्योपी नृप वन; अहि रुपे आयुध सवे,
दिठा तिहां नृप तन ॥३॥ मर आणी पाछो फीयों, देखी कालो नाग; अर्युनपें आवी कह्यो, कोइ न फावे लाग॥
॥ ४ ॥ ढाल १३७ मी ॥ साहिबारे मारा मेरु तणी पेरे धीर ॥ ए देशी ॥ हरीनंद आपे आयनेरे लाल, लीधा
कर हथीयार; वज्र कवच तनुथी जड्योरे ला०॥ उपर सामी उदार ॥१॥ चमी आयो लाला, पारथ प्रबल प्रताप ॥
ए आंकणी ॥ आवी रणने सनमुखेरे ला०॥ पुरयो संख जे वार; कर्ण आदे सहु राजीयारे ला०॥ चमक्या चितमो
झार ॥ च० २ ॥ नाद शंखनो सांभलिरे ला० ॥ पभणे श्री गंगेव, ए बालो रुप सोहामणोरे ला० ॥ पण अर्युन
अहमेव ॥ च० ३ ॥ कौरवपति तव कलकलारे ला०॥ अहो१ जगदिश, ले सहु मुझ उपरेरे ला०॥ एतो विसवारे
वीस ॥ च० ४ ॥ द्रोण वदे नम सांभलोरे ला०॥ हमणा होशे उतपात, इण अवसर टलवो नलोरे ला०॥ शुकन
अपशुकन थाय ॥ च० ५ ॥ सुभट दल झांखो थयोरे ला०॥ चव दिश हुवो अंधार, धरणी पम धुजे घणोरे ला० ॥
आयो अर्युन इणीवार ॥ च० ६ ॥ मुकी धण पाछा वल्यारे ला०॥ तव भांखे हरी सुत, कायर किम पाछा वलोरे
ला०॥ रे राणी जाया रजपुत ॥ च० ७॥ लज्या पामी राजीयोरे ला०॥ आवी उभारे सुर, ढायो गयण घमशाणसुंरे
ला० ॥ वाजीया रणतुर ॥ च० ८ ॥ कर्ण कहे सहु सांभलोरे ला० ॥ उख म आणशो कोय, आ रण अर्युन में
वर्योरे ला० ॥ एम कही आयोरे सोय ॥ च० ९ ॥ दल देखी कौरव तणोरे ला०॥ वैराट सुत कहे एम, तिलक सुभट

कुण एहमेरे ला०॥ कह्यो अर्युन मुक तेम ॥ च० १० ॥ क्रिपाचार्य रथ तणीरे ला०॥ निलि ध्वज अही नाण, कनक दंम ध्वज रथ नलोरे ला० ॥ ए द्रोण गुरु गुण खाण ॥ च० ११ ॥ ए दोइ मुक उपगारीयारे ला० ॥ दिधी कला असमान, ए गुरु चरण पसायथीरे ला० ॥ हुं धरुं धनुप वाण ॥ च० १२ ॥ धनुप ध्वजे द्रोण सुतजीरे ला० ॥ करे अमरसुंरे वाद, नागकेतु वर रथ नलोरे ला० ॥ दिसे डर्योधन आद ॥ च० १३ ॥ पीली पताका रथ तणीरे ला०॥ ए कर्ण अन्नीराम, एम सघला अर्युन कहेरे ला० ॥ सुनट महारथी नाम ॥ च० १४॥ वाणे अंवर ढाइयोरे ला०॥ दल पसरया चिहु दीस उर, आया कर्ण रथ सनमुखेरे ला०॥ करी आमंबर जोर ॥च०१५॥ अर्युन रथना नादथीरे ला०॥ सुनट न धरेरें धीर, सींह तणी पेरे गाजतोरे ला०॥ आवी नन्नो वम्म वीर ॥ च० १६ ॥ शस्त्र ठेदि कर्णनारे ला० ॥ कहे अर्युन तजी रीस, इण अवसर अंग रायजीरे ला० ॥ पुगी सघली जगीस ॥ च० १७॥ विंध्याचल गजानि परेरे ला० ॥ अमीया दोइ ततखेव, अचरज पामी अंवरेरे ला०॥ मलिया कौतकि देव ॥ च० १८॥ मोटा नमने मोमतोरे ला० ॥ एकलमो हरी नंद, मोढाइ धरणि विपेरे ला० ॥ पमीया कर्ण नरंद ॥ च० १९ ॥ द्रोण गुरु तव आवियारे ला० ॥ हरखाणो मन नुप, आज गुरु नले आवियारे ला० ॥ देवा शोन्न अनुप॥ च० २०॥ प्रथम वाणे हरी नंदजीरे ला०॥ किधो गुरु प्रणाम, मुकी वाण वर डसरोरे ला० ठेदे ध्वज अन्नीराम ॥ च० २१ ॥ अनर्थ जाणी आकरोरे ला०॥ प्रनु दया दिल आण, कौरवना दल उपरेरे ला० ॥ मुके मोहन वाण ॥च० २२ ॥ सेन सकल धर्णी पड्योरे ला०॥ न रही सुध लगार, वार मणाना जो घमेरे ला० तोपण न लहेरे सार ॥च० २३॥

निली ध्वज कौरव तणीरे ला० पिसे कर्ण निराज, हेजे ध्वज रत्नीयामणीरे ला०॥ तुझ जगनीनेरे काज ॥च० २४॥
निपम जय मनमां धरीरे ला०॥ कुंवर जिम शंक, सेइ ध्वज पाछो वल्योरे ला०॥ कंपे अटारीरे लंक ॥च० २५॥
कौरव राय पाछो वल्योरे ला० ॥ धरतो मन संताप, गोधन वाळी उतारोरे ला०॥ आयो प्रभुनें प्रताप ॥च० २६ ॥
सामत्रीसा सोमी ढालमेंरे ला०॥ अर्जुन वेसायोरे आप, गुणसागर पांडव तणोरे ला० ॥ चमतो तेज प्रताप ॥च०
॥२७॥ ॥दोहा॥ मछराय घर आवीयो, पामी खबर तेवार; उतरा कुमर एकलो, हुवो कौरव लार ॥ १ ॥ भुप
चढाइ कारणे, उद्यम करे अशेश; आवी ताम वधामणी; जित्यो कुमर नरेश, ॥२ ॥ कंक विप्रने रायजी, वेठा सजा
मोझार; सारी पासा खेलतां, उलटनो अधिकार ॥३॥ करत प्रशंसा पुत्रनी, कंक कहे सुविचार; रहनला जस सार
थी, जिते क्युं न कुमार ॥४॥ ढाल १२७ मी॥ इणे अवसर अपाम्हो वालीक ॥रचते वरश इग्यार ॥ए देशी॥
॥तथा छेवनी देशी ॥ एतले चली आया जगत सोहाया, हरी सुत जितर जाय; कुमर पगे लागी चलो आगी, आ
लंगे तव राय ॥१॥ मुह माथो चुंबी अंबर आंबि, वारंवार प्रशंसो; आपुणपें करतो मुख उचरतो, कुंवर कुल अव
तंशो ॥२॥ तव कुमर जासे मर्म प्रकाशे, जितो जास प्रसादी; ते तीजेवासर आप चवोधर, प्रगट कुल अवतंसो॥३॥
दिन त्रीजो पामी पांडव सामी, प्रगट थया सुख कारो; तव नाइ धोइ पावन होइ, पहेरी धोतां उदारो ॥ ४ ॥
जिनवर आराधी, सुर विधी साधी; सिंघासण वेसंतो; ते सघला विरा साहस धिरा, प्रभुना पग प्रणमंतो ॥ ५ ॥
वादजने टलवे पुजा मिलवे, सहस किरण दिनकारो; देखावे आपो प्रबल प्रतापो, जगमांही जयकारो ॥ ६ ॥ तिम

कुंती जाया तेज सवाया, आप आपणी सोह; पेखंता पेखी वात विशेखी, लोगाइह्ना पोह ॥७॥ पांमव जाणी ज णा२ आणी, नामता निज शिशो; चिरंजीवइ सो कोम वरीसो, नाट जणे आशिशो ॥८॥ तव वेगे वधावा आवे गावा, गाम तणी वर गोरी; नाचंती पात्रो सुललित गात्रो, चतुर महा चित चोरी ॥९॥ निशाणा धमुके बंद न चुके नादे अंबर गाजे; दिजे बहु दानो आति सनमानो, उछव अधीक बिराजे ॥१०॥ वयरामो राजा अधिक दवाजा, करतो आवे ताम; चरणे शिर नामी निज हेत कामी, करत घणो गुण ग्राम ॥ ११ ॥ ते निज करजोमे देवो लोमे, संपत सरीसो राजो; अभीमान न राखे फिर२ नांखे, तुम्हे सारखा हम काजो ॥१२॥ सगपण करवे आति विस्तरवे, नेह तणो अधिकारो; आतास्युं ललजी जाइ न सुलजी, लट जगनो विवहारो ॥ १३ ॥ कुंवरनी भगनी छे शुभ लगनी, शुभ लक्षण शुभकारी; अति रुप रसाली लाक झमाली, वाली छे सुविचारी ॥१४॥ अहेवनने दिजे कारज सीझे, मानो एह अरदासो; ए सरखो मेलो थाय जो भेलो, तो पहोंचे मन आशो ॥१५॥ वाहालानुं वंछिवं आपण इछिवं, काम महा अभीरामो; राजाजी मानी प्रीत प्रमाणी, पण पुछी जे सामो ॥१६॥ नृप स्याम सगुणो दिन२ डणो, तेज प्रताप प्रकासो; तव हरीसुं जाइ वात सुणाइ, हरी मानी उल्हासो ॥१७॥ भाणेजा साथे श्री जगनाथे आणी व्याह करायो; हाथीने घोमा पाट सजोमा, मणी कंचन मन भायो ॥१८॥ दिधां वर हेते ते परणे ते, वाध्या रंग सवाया; भुया शुं वंधु हरी गुण सींधु, द्वारामती चली आया ॥ १९ ॥ भोजननी भगती जण२ युगति, साचवता अति सेवो, आदर अति दिजे खिजमत कीजे, हलधरने हरि देवो ॥२०॥ यादवानि कुमरी जेहवि अमरी, ते भ्यारे

परणाया; नगर सुखवाशी लील विलासी, परम माहा सुख पाया ॥२१॥ ए ढाल सोहानी अति मन जानी, आरूतिसा सोमी वारु; श्री गुणसागर सुरी उजागर, पांम्च चरीतन पारु ॥२२॥ ॥ चोपाइ ॥ खंम्डे खंम्ड रस ने नग नगा, सुणतां मिवा साफरलगा, श्री हरिवंश चरित्र जय जयो, सातमो खंम्ड ए पुरण थयो ॥ १ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७,

॥ इति ढालसागर प्रबंधे हरिवंशनामा सप्तमोऽधिकारः समाप्तः ॥

॥खंम ८ मो॥ ॥दोहा॥ श्रुत ज्ञानी जगमें वमो, प्रणमुं नाव उदार; अव अष्टम अधीकारनो, उद्यम करुं अपार ॥१॥ कुंवर यादव पांमव तणां, मली मली मननो मेल; द्वारामती मांहे करे, नित नित नवली केल ॥ २॥ यादव बहु हित दाखवे, पांमव शुं धरी प्रित; घणा नेहे घरनी पेरे, रहे तिहां सुन रित ॥३ ॥ समुद्र विजय आदी सहु, तव मिली जादव नाथ; पांचे पांमवने कहे, वारु सुणो एक वात ॥४॥ प्रतीज्ञा पुरण थइ, पण अधुरी वात शत्रुं पराजय बहु सर्यां, बल न रह्यो तिल मात ॥५॥ हवे तो अवसर पामीने, सघलो मेली साज; ए कटक कटकी तरुपरे, ए ठेदो तुमे आज ॥६॥ पांमव प्रथवी वालवा,यादव करे विवेक; दुर्योधन राजा कन्हे,दुत मोकली सुविशेष ॥७॥ तव कौवर पति कलकले, हारी धरती फेर; किम देवाए देवजी, न्याय नजरसु हेर ॥ ८ ॥ ढाल॥ देशी त्रिपदीनी॥ तव धर्म पुत्र कहे धरीने काजे, युध हुं न करुं सहीं कुल लाजे; नार माहरो वली नाजे ॥ १॥ नुलेश काजे नाइने नेडुं, पांख पोतानी कहो केम ठेडुं; हुं नही कुलठ ॥२॥ द्रौपदीए तव किधी सांन, तिहारे निम नांगे वलवान, तुमे सांनलो राजान ॥३॥ आज लगे तो तुम कह्यो किधुं, हवे तो ते सर्व थयुं शिधु; पण पणी निर वही लिधुं ॥ ४ ॥ हवे तो अमे आप्या वाजी, दिलनी नलीपरे नांगीशुं दाफी; वमाशुं रुमीपरे बाजी ॥५॥ अव ए अवरे रह्यो न जाय, लोक मांहि पण हांशि थाए; वलतुं बल न खमाए ॥६ ॥ तुंमे तो ठो टाढा हिम, आगिना नमका सरिखुं हुं नीम; हवे नहि पालुं निम ॥७॥ युधिष्ठीर कहे तुंमे युधे सुरा, सकल पराक्रमना सदा पुरा; नहि मेहलो अधुरा ॥८॥ तोपण गुले जो समजी गुंमा, तो आपण नहि थइए जुंमा; बांधव थाए जुंमा ॥९॥ सहुनी

आए लहि अदभुत, जय नामां तव मोकल्यो डत; गजपुरे तेह पहत ॥१०॥ कश्नो डत हुं तुं राजान, सांजली सर्वे थइ सावधान; कथन सुणो धरी कान ॥११॥ तेर वरस महा डःखे गाली, पांमवे पुरी प्रतिज्ञा पाली; हवे तुमे जुड संजाली ॥१२॥ एहुनो तुमे हवे आपो राज, जेम तुमारि वाधे लाज; करो विचारी काज ॥१३॥ राज्य ना पोतो आपो पांच गाम, इंद्रप्रस्थ तिलप्रस्थ काशी अनिराम; गजपुर वारणावति नाम ॥१४॥ डत वचन डर्योधन काने सुणी, अहो मुने युधे आरोखो, वोसीत ज्युं ठखो ॥१५॥ मुछो मरमीने दंतज घरमी, आलस मोमीने अधर ते करमीत; आंख्ये आंखो तरमी ॥१६॥ हारयुं राज आवुं किम हेव; एतो मारा शत्रु स्वयमेव; सांजलो वात सत्येव ॥१७॥ आज लगे ए जीहां रह्यां जेह, प्रथवी माहरी जाणी तेह; नाग आप्यो मे एह ॥१८॥ कटक वले थाए ते करयो, युध करता मत ऊसरजो; वराए तो जइने वरजो ॥१९॥ सुए अणिए चंपाए जेती, अवनि नवि आपुं एहुने तेनी; फोगट थाशे ए फजेती ॥२०॥ एतो रुमी ढाल पुराणी, उदयरतन एम बोले वाणी; जिनवाणी नजो प्राणी ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ एम सुणी कहे डत तव, राजन मानो वयण; गोत्र विरोध नहि नलुं, जुड विचारी सयण ॥१॥ किचक वक२ किम थीर जीत्यां, हेमंबादिक हण्यां जेणे; ते नीम आगले सही, नागशो केहेशो न कह्यो केण ॥ २ ॥ ढाल ॥ ॥ रुकमणी राणी मोहलमां ॥ ए देशी ॥ डत कहे सुणो रायजी, नीम तणी नरूवाय हो राज; वज्या जाए आकाशमां, तुम सरिखा केइ राय हो राज, डत कहे सुणो रायजी ॥१॥ अर्जुन आगल नहि आशरो, तुमारो तिलमात्र हो राज; राधा वेध साध्यो जेणे, बोलो विचारी गात्र हो राज ॥डत० २॥ विद्याधर दल जीतीने,

कां थाउ अज्ञान हो राज ॥उत० ३॥ तु अपकार कर्यो,
तुमने दिधुं जिवितदान हो राज; ते माटे ते पुज्य छे, तुं मारो हितकार हो राज ॥उत० ४॥ वहनी मेघ वरसावतां, युधीष्टीर करे उपकार हो राज; धर्म पुत्र धरमातमां, तुं मारो हितकार हो राज ॥उत० ५॥ देव दाणव जेणे दम्यां, जेणे मार्यो जलधार हो राज; वालि राखेछे विरने, आज जगे निरधार हो राज ॥उत० ६॥ पावक सरिखा पांम्डवा, तुंतो घास समान कंश हो राज; आश्रवाए तेहने, तेनो जग अवतंस हो राज ॥ उत० ७॥ तव भीष्म द्रोण विदुर कहे, साची मानो ए वात हो राज; वनमाली वायु परे, प्रेरेछे वली तास हो राज ॥उत० ८॥ शिखामण ते सांभली, वली कोप्यो हो राज; मनना आमला मेलीने, मिलि वेसो सहु भ्रात हो राज ॥ उत० ९॥ तव कृश्न दुत कहे कोपिने, आव्युं विशेष हो राज; अग्नीज्वाला परे उपण्यो, धरतो दिलमां द्वेश हो राज ॥उत० १०॥ एम कही दुत आव्यो तेहने मुत हो राज; युध्धे ते सहु जाणजो, जाशे गोफण गोला सुत हो राज ॥ उत० ११ ॥ सजन सहु ढाले वही, कृश्न पासे सदेश हो राज; मांमीने सर्वे कह्यो, एके एक आशेश हो राज ॥ उत० १२ ॥ जुदे, दुर्योधन दिल मांहि हो राज; कपट राख्याथी उदय कहे, हवे ए आगले शं थाय हो राज ॥ उत० १३ ॥

॥अथ भारथना द्रुपद॥ राग वेहागमो॥ मानो वृधी हमारी हो राजा मा० पांच गाम पांम्डवुने दिजे, उर सव भोमी तुम्हारी हो राजा ॥ मा० १ ॥ कुरुदेश हस्तापुर नगरी, अंग देश पंचालो; उत्तर देश अयोध्या नगरी, दखण देश बंगालो हो राजा ॥मा० २॥ पांच भाइ पांम्डव केवराइ, अर्जुन जोर अपारो; भिमशेन ज्यारे भारथ रचशे, तारे नही उगरानो आरो हो राजा ॥मा० ३॥ केवुं होय तो हमणा किजे, तुम्हो कृश्नजी कारो; प्रथवी एक कणीको नआपुं

॥ ॥ ५.र धर्म विचारो हो राजा ॥ मा० ४ ॥ क्षत्री होय ते खांमानो गत जाणे, एतो गाय चरावनहारो; राज नीती
मांही ए शुरे जाणे, मै लुटावन हारो हो राजा ॥मा० ५॥ अथ द्वितीय पद ॥ गइ नोम तमारी हो पांमवो
ग०॥ जिणे वडी न मानी हमारी हो पांमवो ग०॥ ए टेक॥ क्षत्री होय ते वेरज खेमे, शुं करे नकी संसारी; बापु
की जातां बल जे न करे, जुगत नही पण निखारी हो पांमवो ॥ ग० १ ॥ आ अवनी मांही अमर न रेणा, कहे
धरम विचारी; गोतर गरदन अमे जो करीए, तो शोगत थाइ अमारी हो पांमवो ॥ग० २॥ छुत विद्या दलमांही
रमीयां, हारथा गरथ नमारी; आ लाखाग्रह मांही तुमनेरे वाल्या, शिरे सगाइ सधारी हो पांमवो ॥ग० ३॥ पाप
तणोरे एणे पायोरे मांमयो, पंचालीरे पोकारी; अंधनो सुत जो अवनी लेशे, तारे पोरससे गंधारी हो पांमवो ॥ग०
४ ॥ आ अवनी अंधे पम नांखुं, ठव्यो निम पोकारी; सुरनो सामी शिखज आपे, ल्यो कोरवने मारी हो
पांमवो ॥ग० ५॥ अथ त्रितीय पद॥ किधा अमने दोसारी डुर्योधन, कि०॥ अमे मागीती नोम अमारी डुर्यो
धन ॥कि० १॥ हश्नापुर एहने हेंयेरे ठगी, जाणे करशुं नोम हमारी; सो सो कौरव संघाते संहरशे, तो ठवको देशे
गंधारी डुर्योधन ॥कि० २॥ ॥दोहा॥ पामव नांखे परवमा, सांजल कृश्न नरेश, धरती लेस्यां नुज बले, नारथ
करो सुविशेश ॥१॥ पांमव पति तव चालीया, पापी प्रभु आदेश; जइने कुरुक्षेत्रमां, करवा युद्ध विशेश ॥ २ ॥
ढाल १२९ मी॥ नजो नर रांम रांम रांम॥ए देशी॥ हो राजा कियो नारथ आज, कौरव काग ठमावबा अलगा
कहे निम अरु पारथ हो राजा ॥कि० ... पभ आ देश लइ नृप आयो, कुरुक्षेत्र कली काजे; एकादश अक्षोहणी

आणी, कौरव राय विराजो हो राजा ॥कि० ३॥ एकवीस सहस आठसे ...
त्रिसतनवसहसलाख पायक; एक अक्षोहणी लिजे हो राजा ॥ कि० ३ ॥ पांडव प्रगट प्रमाण ...
क्षोहणी साची; जोमो हेते भ्रमे जाइ जुला, मांहोमांही मची हो राजा ॥कि० ४॥ गोत्र कदर्थनां जाणी जुधे, समता
वंत अपारु; चर्ण ग्रहीने शिवपद साधे, विदुर विचारी वारु हो राजा ॥ कि० ५ ॥ ॥ दोहा ॥ हवे पांडव उजम
करे, बहु करी कटकनो वंध; यादव पण सर्व सज्या, वली विराट नरींद ॥१॥ धृष्ट प्रद्युमनने सत्यकी, सौनइ द्रुपद
अभिमन्य; घटोत्कच आदे घणा, मलीया बहु राजान ॥२॥ अर्जुन आश्रीत विद्याधरा, इंद्र चुडमणी चुड; चित्रांगदने
वीयदगति, आव्या विमाना रुढ ॥३॥ अर्जुनने कर्ण बे जणा, आप आपणी सन्नाही; अन्योअन्ये पण करी, मारणानुं
उच्छाहि ॥४॥ दुरजोधन पण दुत मोकली, पक्षपाति राजान; रण काजे तेडाविया, आपी आदरमान ॥५॥ भुरिशवा
ने भगदत बे, सैल्य शकुनी कर्ण; भीष्म सोमदतने वालहुल्हीक, कृपाचार्यने द्रोण ॥ ६ ॥ सुक्ति सो वजने हला युध,
कृतवर्मा ब्रखशेन; उलुक आदे बहु आविया, निज निज लेइ सेन ॥७॥ विदुरे तो दिक्षा ग्रहि, युध समये गयो वन;
कुंताए कर्णने समझावीयो, पण न तजे ए खाधु अन ॥८॥ कर्ण कहे माता सुणो, दुर्योधन न तजाय; अंगिकृत जो
छोडीए, तो महा पातक थाय ॥ ९ ॥ तोपण कुंता तेहनो, जय वांछे सदाय; पांडवथी अधिको गणे, किहांरे नवी
हणे माय ॥१०॥ बहु सेन्यशुं परीवरयो, दुर्योधन माहाराण; कुरुक्षेत्रमां आवीयो, करी अवछीत प्रयाणं ॥ ११ ॥
सैन्य मल्युं सघलुं तिहां, अक्षोहीणी इग्यार; भिष्म कर्यो सेन्यापती, दुर्योधन तेणी वार ॥१२॥ पांडव पण आव्या

तिहां, सैन्य लेइ अक्षोहिणी सात, कुरुक्षेत्र सोहावियो, चाली सघले वात ॥१३॥ दृष्टप्रद्युम्न सेनापति, पांडवे [illegible]
धरी प्रेम; पांडवने कौरव मिल्या, रामने रावण जेम॥ १४ ॥ शाम दाम भेद मुकीने, केवल नीग्रह एक; [illegible]
रणक्षेत्रमां वढवुं एह विशेष ॥ १५ ॥ ढाल ॥ तुम हे पीतांवर पेहेरोजी मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥ [illegible]
मुहुरत निरधारीजी, राजवी रण रशीया; आयुध अरची अधीकारीजी राज, धुप दीप अक्षत फुलेजी राज; [illegible]
युध बहु मुलेजी राज ॥१॥ नीशाण तणे नीर्घोषेजी राज, जाणे ते वीर रश पोषेजी राज; अरुणोदय वेला रणे [illegible]
जी रा० ॥ रवी सरीखा थया वीर राताजी ॥रा०२॥ कोलाहल रणे उछलियोजी रा० ॥ सींहनाद मांहि जही [illegible]
डजी रा०॥ रणतुरना थया रणकाराजी रा०॥ भेरीना वाजे भणकाराजी ॥रा० ३॥ ढक्काका हुल ढणकाराजी [illegible]
डुंमरु पमरो पोकाराजी रा०॥ घण धरणी लाज राखेजी रा०॥ धीरपणुं शीर धारेजी ॥रा० ४॥ गयवर गाजे [illegible]
साजेजी रा०॥ वाजां रणना बहु वाजेजी रा०॥हयवरना जो रहे खाराजी रा०॥ चिहुदिशे रथना चित्काराजी ॥रा[illegible]॥
वली सुभट शब्द भयंकाराजी रा०॥ कोदंड तणा टणकाराजी रा०॥ गयवरनी घटा तिहां चालेजी रा०॥ पोढा प[illegible]
स्या मालेजी ॥रा० ६॥ मदझर मयंगल रोशालाजी रा०॥ सुंडीना करे उलालाजी रा०॥ ध्वज घुघरी घंट वा[illegible]
रा०॥रथ देखी रवीरथ लाजेजी ॥रा०७॥ इन जाणे आयुधशालाजी रा०॥ धणणी चातुर्घंटवालाजी रा०॥ धव२ [illegible]
चक्रधाराजी रा० ॥ प्रथवीना थाय पचकाराजी॥रा०८॥ नाना तीक्ष्ण तोखाराजी रा०॥ खेडता रथ थाए होका[illegible]
रा०॥ हयवरना थाए हिलोलाजी रा०॥ जाणे समुद्र तणा कल्लोलाजी ॥ रा०९॥ जोंये तोपगनवी मांडेजी रा०॥[illegible]

करशो गात्रनो ॥ए देशी॥ अश्वस्थामा तिहांरे उचल्यो, आव्यो पांम्हव दल मांहे; जलधरनी परे वरसतो, बाण धारा ते ताय; जोरो जोयोरे युधनो ॥१॥ पांम्हवनां दल उपरे, अस्त्र नारायणी नामे; मुक्युं महा क्रोधे करी, विश्व कंप्युं ते तामे ॥जोरो० २॥ जाणे कोलियो करशे विश्वनो,सैन्य लीधुं सर्व घेर; तेहने समर्थ नहि कोइ वारवा, जोरावर पण थया जोर ॥जोर० ३॥ तव क्रश्नने वचने पांम्हवे, आयुध मेहली डूर, विनय करि ते शपरि करे, हेजे रहि हजुर ॥जो० ४॥ नक्तिनी युक्ति तुठि तदा, शक्ति ते थइ शांत; बार पोहर युध्द ते थयुं, अनेकनो आव्यो तिहां अंत ॥ जो० ५ ॥ कर्ण सेनापति थापियो, कौरव मिलि ते ताम; रणांगण मांहि आवियां, वर्त्यो माहा संग्राम ॥जो० ६॥ तव कर्णांत ताणी कोदंम्हने, कर्णने पार्थ दोय; कल्पांत काल रवीनि पेरे, क्रोधे कोप्या कुल होय ॥ जो० ७ ॥ बले पुरा ते बिहु सहि, बाणावलि पण तुल्य; शरिपे शांमाने बे नम्हे, उजबे जेहना अतुल्य ॥जो० ८॥ नीम नुजा बलि नालीने, नांज्यो डःशासन; नुजा काढी नुज बले, वीर हरख्या धरि मन ॥जो०९॥ रविए रेहेवाणुं नहि, नाशी गयो निज गेह, रात्रि पमी तव रण तजी, थानक पोहोतां तेह ॥जो०१०॥ कर्णे प्रतिज्ञा तव करि, अर्जुनने मारुं आंज; शल्यने सा रथी थापिने, शंखनो करी अवाज ॥ जो० ११ ॥ रणांगण मांहि आवियो, गर्जना करतो घोर; दशो दिशी बहिरी करी, नय लागो चिहुं उर ॥जो०१२॥ शजल जलद घटानि पेरे,अवनि आकाश प्रयंत; तिर ते त्रिनुवने विस्तरयां, जाणे कोप्यो क्रतांत ॥जो०१३॥ पनग अस्त्र कर्णे मुक्युं, पार्थे गरुम्ह अस्त्र तांम; एम अस्त्र अनेक अफल्यां करयां, अर्जुने तेणे ठाम ॥जो०१४॥ शंखचुम्ह निशा निधे, कर्ण मारयो दिनांत;करण पड्ये कौरव तणी,नांगी सघली भ्रांत

॥जो० १५॥ आशा वलवंती जगमां लहि, तव शल्य करघा शनांनि, रणांगणमां आविया, हजु हुंशऋठे जीत्यांनि
॥जो० १६॥ शल्य ते शल्य सारिखो, वाणनो वरसतो मेह; तिहां युधीष्टिर एक थीर रह्यां, थयं युध अछेह ॥जो०
१३॥ दीशी दावानल सारिखो, सकुनी आव्यो तक जोय; उत्तर वयर संजारिने, शल्य युधीरे सोय ॥ जो० १७ ॥
शक्ति मेहलने संहारीयो, दिनांने दल मांहे; एतो ढाल रसाल ए, उदय वदे उगांहे ॥जो०१ए॥ ॥दोहा॥ शल्य पमते
महा शल्य थयो, कौरवने ते काल; लोक मांहि लाजतो, मुख ढंके मठराल ॥१॥ डुर्योधन तव नाशीने, अलोप
थयो ते आप; कोइ सरोवर मांहि जइ पमयो, अताग देखी आप ॥२॥ढाल॥ चमि आव्यो लाज प्रार्थ प्रवल प्रताप
॥ए देशी॥ धौं धौं नगारां वाजता वाहलां, चमघो डुर्योधननो सेन; वन मांहि वोली विधुवा, मुख मेहलंता फेन ॥१॥
माहरा नाथ गुमानी, कुण लेशेरे म्हारो मुजरो आजुनो; आवी मीलोरे म्हारा भुप अनी मानी ॥२॥ ए आंकणी ॥
खांते वगमो खोलतां, वाकि हां एक लाधी जाल; जल मध्ये तिहां जाणीने वा०॥ सहु वोले समकाल ॥मा० ३॥पांमव
पण पोहोतां तिहां, माहरा बंधु ठविला, कुण करशेरे जोने युध आजुनो, रणमां आवोरे महारा रणनां रंगेला ॥ ए
आंकणी॥ तुं अनीमानी राजवी वा०॥ तुं सुरा मांहि सुर माहरा०॥ तुजने न घटे नासवुं वा०॥नहि रहे नासतां नुर
॥मा०४॥कानु कुलने लाजवे वा०॥पुरुशातनु करी मलीन मा०॥पाणीमां पोढ्यो थको वा०॥ दिसेछे महादीन ॥मा०
५॥अर्जुन रुपे आथले वा०॥ कहेने किम रहेवाय मा०॥ ए शरोवरनो स्यो आशरो वा०॥ शोखास्ये जो समुद्र शोषाय
॥मा० ६॥ अथवा तुं जो उसरे वा०॥ सेनास्युं युध न थाय मा०॥ तो मन माने जेहशुं वा० ॥ ते एकशुं वढोरण

वाय ॥मा० ७॥ जेणे तेणे वाते जाणए वा०॥ माथे आव्युं वे मृत मा०॥ ते माटे दिन तातजी वा०॥ मरेतुं सुरातन सहित ॥मा० ८॥ तव तिहां डुर्योधन बोलीयो वा०॥ गदा युद्ध भीमने साथ मा० ॥ मानी सरथी नगरस्यो वा० ॥ नीसरयो कौरव नाथ ॥मा० ९॥ पांडव कौरव सहु मीली वा०॥ बेग सभा बनाय मा० ॥ भीम करयो धन वेगमे वा०॥ मारे गदाना घाय ॥मा० १०॥ मलपरे ते बे मिल्या वा०॥ पोढा पर्वत मांही मा०॥ ऊंचा निचा उछले वा०॥ धमे धमी धरती धेराए ॥मा० ११॥ रोखारुण थया रातडा वा०॥ जोया केणे न जाय मा० ॥ डुर्योधन नाठो घणुं वा०॥ प्रथवीए न मेहली पाय ॥मा० १२॥ लघु लाघवी कला लही वा०॥ छलवीण नवी छेतराय मा०॥ जंघमां गदा जोरे शुं वा०॥ भीम मारे महाकाय ॥मा० १३॥ भुंए पाडीने भीमडे वा०॥ मारी पाटुना प्रहार मा०॥ मुकुट भांगी भुको करयो वा०॥ पुरव कोप संभार ॥मा० १४॥ उदयरतन कहे सांभलो वा०॥ एतो ढाल रसाल मा०॥ विघन घणां वांका नडां वा०॥ आवी पोहोते काल ॥मा० १५॥

॥दोहा॥ संबंधी जाणी ते समय, बलभद्र बहु रिसाय पांडव सहुने अवगुणी, निसरी डुरे जाय ॥१॥ पांडव तव पुंठे गया, आगे कृष्ण करेह; बलभद्रने मनाववा, निज मने आणी नेह ॥२॥ द्दष्ठ द्युमन खेडीयो, रह्याने रणमांही; थिर करीने थापीयां, रह्यां रण अवगाही ॥३॥

ढाल ॥ शियल सुरंगी चुनडी ॥ए देशी॥ होजी डुर्योधनने ते आवी कहे, होजी कृतवर्म कृपा अश्वस्थाम; होजी अंत समये आव्या अमे, होजी तुम स्वरुप जोवाने काम ॥१॥ साहीबीया बोल२ रेजे कहो ते करुं अमे॥ए आंकणी॥ होजी तमे तो सहुने तजी, होजी सुता मरण शयाए; होजी तोपण आपो आगना, होजी ते काज करुं उछांहे ॥शा० २॥ होजी आपोजो

तुमे आगन्या, होजी तो पांमवना शिश होजी मुख आगे आणी मेहलीए; होजी एह अमारी आशीश, ॥शा० ३॥ होजी वयण सुणी वेधाक्षुया, होजी आपे थइ उजमाल; होजी वांसो थापीने मोकल्यां, होजी ऊर्योधने ततकाल ॥ शा० ४॥ होजी ते त्रिएये रणमां जई, होजी युध करीने जोर; होजी दृष्टद्युमन श्री पंमीया हणी, होजी सुन्य लही रणगोर ॥शा० ५॥ होजी पांमवनां पांच पुत्रनां, होजी माथा लेइ पंच; होजी मुह आगले आणी मेहलीयां, होजी ऊर्योधन लहि प्रपंच ॥सा० ६॥ होजी शीसु शीर नीरखी बोलियो, होजी तुमने पमो धीकार; होजी बालहत्या मुझ आपीने, होजी न्हास्यो अति पापने जार ॥ सा० ७ ॥ होजी मुखे एम कहितो थको, होजी पोहोतो ते परलोक; होजी ते पण त्रीएयें किहांइ गयां, होजी पामी आजने शोक ॥ सा० ८ ॥ होजी उदयरतन एम उचरे, होजी ढाल नली रसाल, होजी मरण अकाले तेमरे; होजी जेहने पापनो ढाल ॥ सा० ९ ॥ ॥ दोहा ॥ नक्तिनाव विनये करी, बलनद्रने बहु मान; देइ मनावी पांमवा, आव्या करी रण स्थान ॥१॥ पुत्र हएयां लेइ शोके अति, कौरवने पांमव नंद; स्वजनांदिक सहु साथनां, करि अमृत कार्य नीरानंद ॥ २ ॥ सरस्वति सरितां तटे, पांमवे मृत काज; उजवणीडं पालिया, सर्वेने शुन साज ॥ ३ ॥ इती पांमव कौरव संग्राम चरित्र संपूर्ण ॥ ढाल मुन्नगी ॥ ऊर्योधन सेनापति नीष्म; किधो बलियो जाणी, धृष्टद्युमन पांमव थीर थाप्यो; कटक तणो आगे वाणी होराजा ॥ कि० ६॥ अनेवन कुमर अधीक बलवंतो, सर्व सुनटने आगे; रण रंगे रमवा रलियायत, त्रहत बलसुं लागे हो राजा ॥कि० ७॥ नीष्मकेतु अनेवन् कपि, नीष्मश होवे; ठेदे केतु नीमनी भुपति, देव तमासो जोवे हो राजा ॥कि० ८॥ उत्तर

कुंवरने द्रुपदाइ, सब नरेसर देखी; अर्जुन कौरवना दल मांहे, भीष्म रीस विशेषी हो राजा ॥कि० ९॥ संट शीखंडी आगे राखी, इंद्र तणो सुत कोपे; भीष्म तनु तव बाणे विंध्यो, प्रभु मरजादा न लोपे हो राजा ॥कि० १०॥ तृष्यावंत नंदी सुत जाणो, अर्युन पावे पाणी; संथारो करी स्वर्ग बारमे, हुवो अमर विमानी हो राजा ॥कि० ११॥ द्रोणाचार्य सेन्या नायक, होइ रणमे आवे; आरंभी आरंभ घणेरो, करतो शंक न पावे हो राजा ॥ कि० १२ ॥ श्री भगदत हरायो अर्युन, जयदरथ अर्युन नंदो; जयदर्थ अर्युन करी प्रतिज्ञा, पाड्यो ततखीण मंद हो राजा ॥कि० १३॥ सात अक्षोहणी चउदशने दिने, खिली कौरव केरी; हिडंबा सुत हार मनावी, करणे करीय घणेरी हो राजा ॥कि० १४॥ धृष्टद्युमन आगे परपंचे, द्रोणाचार्य हार्यो; अणसण बले पंचम सुर लोके, आठो कार्य सार्यो हो राजा ॥ कि० १५ ॥ सेन्या नायक करण कियो तव, आस्या अमर कहावे; अर्युन करण सरीखे लडवे, हुंश कांइ न रहावे हो राजा ॥ कि० १६॥ भीम प्रचंड बलिने आगे, दुर्योधन बल भाग्यो; दियो परहार गदानो गाढो, आइ धरतिपर लाग्यो हो राजा ॥कि० १७॥ हार्यो कौरव पांडव जीत्या, धर्मे जय जग जाण्यो; यादवराय घणुं गह गहिया, पांडव शुं दिन पीछाण्यो हो राजा ॥कि० १८॥ राय मलि उछव कियोरे, आया गजपुर मांहि; राज लियो पुगी रलिरे, पुन्य तणो बल प्राहि हो राजा ॥कि० १९॥ धरती लीधी आपणीरे, आपदा काढि डर; सत प्रभावे पांडवारे, भोगवे सुख भरपुर हो राजा ॥कि० २०॥ ए गुण चालिसा सोमी ढालमेरे, कौरव पांडव वाद; श्री गुणसागर सुरजीरे, उपज्यो अहलाद हो राजा ॥कि० २१॥

॥दोहा॥ एक दिवस हरीनी सभा, इंद्र सभा सम जोय; वड वडा राणा राजीया, पावे शोभा सोय ॥१॥

तुमे आगन्या, होजी तो पांडवना शिश होजी मुख आगे आणी मेहलीए; होजी एह अमारी आशीश, ॥शा० २॥ होजी वांसो थापीने मोकल्यां, होजी डुर्योधने ततकाल ॥
होजी आपे थड हजमाल;

गरव करे मनमें घणुंरे, हुं मोटी संसारे जाणी, पांच पुरुषनी नार वखाणी; मद आतेहीसु अती मती, न्याए रहे रस रंगे राती ॥१॥ जी नारदजीरे, कवली तरुनी उपमारे; जाणी काल विणास, फल मुके तिम द्रुपदिरे, पर्मीयो चाहे पास, पर्मीयो चाहे पास ते एतां; मुझने तो अण आदर देतां, तो हुं जोरे विणसुं काम;एम कही रुषी चाल्यो ताम ॥ जी० २ ॥ सोल हजार ए देशमांरे, वरते हरीनी आएय; पहोचावुं तेही स्थानकेरे, जीहां न चाले हरी प्राण; जीहां न चाले हरीनो प्राण, सोधु सोजइ निश्चल ठाण; द्वीप समुद्र उलंघी जाय, नारद करवा काज अमाय ॥जी० ३ ॥ धातकी खंड भरतमेंरे, सुर कंकाह उगाह; पद्मनाभ राजा भलोरे, सात सयात्रय नाह; सात सयात्रीय केरो नाह, आपुणपे जाणे गुण गाह; नारी निरोपम शुं सुख वाशी, भोग पुरंदर लिखवी लाशी ॥जी० ४॥ नारद चाली आइयोरे, महील मांही मनरंग; राजा राणी साचवेरे, शेवा धर्मसु चंग; शेवा धर्मसु चंगपणेरे, अति आवरशुं नुप न णेरे; मुझ अंते वर सरीखो रुडो, किहां ए दिठो मती भाख्यो कुडो ॥ जी० ५ ॥ नारद भांखे रायजीरे, स्यो जुवो अहंकार; कुवा मींडक सारीखोरे, तुं दिसंत अपार; तुं दिसंत अपार नरेशर, अवर न दीठी नार अलवेशर; जीणे हि जेतो देख्यो पेख्यो, ते तोही मन वात विशेख्यो ॥ जी० ६ ॥ जंबुद्वीपे जाणीएरे, खेतर भरत सुस्थान; हथीणा पुरमे हर्षशुंरे, पांडव नारी प्रधान; पांडव नारी प्रधान कहावे, पंचाली जगमें जस पावे; तेहने पग अंगुठे आणी, लाखमें भागे नावे तुझ राणी ॥जी० ७॥ एम कही रुषीजी गयोरे, नृपने तो रढ लागी; विषया वसे आतुर थयोरे, देखणनी मती जागी; देखणनी मती जागी जाम, सुर आराधन किधी ताम; सुर भांखे सा अवर न चाहे, शुं कर

स्यो इण साथ उमाहे ॥जी० ८॥ नृपनो हव जाणी करीरे, सुर आयो त्रिय हेत; आपी नींद्रा आकरीरे, किधी अधीक अचेत; किधी अधीक अचेत जेवारे, पुरव संगीत काम समारे; राजाना मंदीरथी लीधी, पद्मनाभीने जइने दिधी ॥जी० ९॥ महील मांही अति जलोरे, वृक्ष अशोक उदार; आणी राणी द्रुपदिरे, किधो अति अवीचार; कियो अति अविचार विमासे, राजाने एम वात प्रकाशे; ए कामथी तुं जाणजे राजा, जग वाग्या अपकीरती वाजा जी० १०॥ हवे मुझने मत तेडावजेरे, एक हुंबुं तुझ आज; सती शिरोमणी ए खरीरे, धिरे करजे काज; धिरे करजे काज निवेरो, एथी मकरजे हव घणेरो, सुर गयो एम कहीने वाणी, एकतालीस सोमी ढाल कहाणी; श्री गुणसागर सुर वखाणी ॥जी० ११ ॥ ॥दोहा॥ जागी राणी द्रुपदी, जाण्यो ए अपहार; आरतीवंती अति खरी, मनशुं करे विचार ॥१ ॥ हथीणापुर किहां रहो, सासु ससरो जेह; मुझ प्रितम पांडव किहां, सुखरो कारण तेथ ॥ २ ॥ किहां ते मंदीर मालीयां, किहां रत्नाली सेज; किहां दाशी मलीयागरी, बालपणानो हेज ॥३॥ ए हिंडोलो माहेरो, पण नवी ए मुझ बाग; कोइ वैरी मुझ अपहरी, एम चिंतवे महा भाग ॥ ४ ॥ उलंघा देइ आकरा, राणी विविध प्रकार; दैवस छठो उतरे, आज अठे तुझवार ॥५॥ नृप अंते उरशुं चली, आणी जणावे आप; केलवणी करतो घणी, ताम प्रकासे पाप ॥६॥ ढाल १४२ मी ॥ अथ रागनो वाचगीत देशी वंदलीनी॥ राजा कुमरी प्रते बोले, नारी कुण तारा तोले हो; सुंदर वयण सुणो, ते नगरी मांही सारी; मृगानयणी पदमनी नारी हो ॥सुं० १॥ तुझ रुपे रंभा हारी, तुझ नयनाकी वलीहारी हो; सुं०॥ तोरी वात कही ब्रह्मचारी, रचीपची विध आप समारी हो ॥सुं०

२॥ तुझ कारण देव मनायो, त्रिजे उपवासे आयो हो सुं० ॥ तोने तिहांथी आणी, एही साची सहनाणी हो ॥सुं०
३॥ मनमे मतको मर आणो, मुझ नगरी सबलो थाणो हो सु०॥ कुण राजा रावण राणो, मुझथी को नवि संपराणो
हो ॥सुं० ४॥ हमसुं हठ छोड हठिली, राजकुमरी रंग रंगिली हो सुं० ॥ माननी मन मान निवारो, मुझ विनतडी
अवधारो हो ॥ सुं० ५॥ सहु राज तणी धणीयाणी, तुझ करी थापुं पटराणी हो सुं० ॥ मुझ घरे पेहली जे राणी,
तुझ आगल आणशे पाणी हो ॥ सुं० ६ ॥ धन्य दिन दरशण पायो, धन तुझसुं प्रेम लगायो हो सुं०॥ जिजापति
नाम धराव, गज गमनी विरह गमाड हो ॥सुं० ७॥ मुझ देखी कुमरी तुं लाजी, हवे किण वाते तुं राजी हो सुं०॥
मन गांठ छोडी कर बोलो, घुंघट पट परहो खोलो हो ॥सुं० ८॥ कुमरी राजा प्रते भासे, प्रत रावण एम विमासे
हो सुं० ॥ जे हुवे शियल अटंको, तस वाल न होवे वंको हो ॥ सुं० ९॥ ॥ दोहा ॥ काल खेपणा कारणे; देवी
करे अरदास, लागी मुवानो नहि समो, मागी लीया, खट मास ॥१॥ एतला मांहि वाहरुं, धाशे देव मोरार; नहि
तो वश हुं ताहरे, राजा आरति नीवार ॥२॥ पांडव वलने हरी तणां, रथ जल थलमे जाय; मनोरथ अनुसारथी,
किहांहि न खजाय ॥ ३ ॥ ढाल १४२ मी ॥ राम पधारीयाजी, ब्रामण केरे गेह ॥ ए देशी ॥ धन धन२ सती
जी, आपुण राखे एम; काल खेपणा करे घणीजी, नीरवाहे निज नेम ॥ध० १॥ साठ सहस्र वरसां लगेजी, सुंदरीए
तप कीध; काया करी अती दुबलीजी, प्रभु पासे व्रत लीध ॥ध० २॥ सतिया मांहि सीरोमणीजी, सत्यवंति त्रीय
देव; राजा रावण आगलेजी, राखी टेक विशेष ॥ ध० ३॥ सेवश तो अति सोहिलीजी, शिल तणो सुविचार; पण

तो परवश दोहिलोजी, राखेवो आचार ॥ध० ४॥ लेखण खटीका कामनीजी, हाथ पराइ जाय; साबत पाळी ना वहिजी, लागे वचन ए प्रांहि ॥ ध० ५॥ रागी तो रावण घणोजी, डति राणी तास; तोपण शियल नव खंभीयोजी, त्रिभोवनमे शाबास ॥ ध० ६॥ गुफा मांहि एकलीजी, राजुल राणी आप; पभतो देवर उधस्योजी, शीयल गुणे थिर थाप ॥ध० ७॥ चेम्रा नुपतानी सुताजी, संतानिक निज नार; एवंती पति ढेतर्योजी, सुजस घणो संसार ॥ध० ८॥ कष्ठ पभीया कामनीजी, न तजे नेम लगार; मोटा माणस तेहनेजी, प्रणमे प्रात अपार ॥ ध० ए ॥ दो उपवासे पारणोजी, आंबील तपसुं प्रेम; करति वरते डुपदिजी, सानीध होवे केम ॥ध० १०॥ युधीष्टर नृप जागीयोजी, देवी न दिसे ताम; अरहुं परहुं सोधी घणुंजी, सुध न लाधी जाम ॥ ध० ११ ॥ आज अम्हारा राजमांजी, कोन करे अन्याय; लोह जभ्यो शिर केहनोजी, कुलहिणी तथे जाय ॥ ध० १२ ॥ बाप कन्हे आया चलिजी, भांखी सघली वात; पाखरीया नभ मोकल्याजी, वसुधा मांही विख्यात ॥ध० १३ ॥ सुभट सहु फीरी आवीयाजी, खबर न हुइ कोइ; राजा पांमुजी खरोजी, आरतीवंतो होय ॥ध० १४॥ कुंती शुं पांकु कहेजी, द्वारामती तुं जाइ; वात जणावो मोरारनेजी, जीम ए काम सराय ॥ध० १५॥ बेंतालीसा सोमी ढालमेंजी, कुंती करवा काम; श्री गुणसागरजी कहेजी; किम भेटे नृप साम ॥ध०१६॥

॥ दोहा ॥

कुंती आभंवर घणो, बेशी वभ जगराज; आवी नगरी द्वारीकां, कारीज करवा काज ॥१॥ आप हरीसा बागमें, डत मोकल्यो एक; खबर करण भत्रीजने, प्रभु तव करे विवेक ॥२॥

ढाल ॥ १४३ मी ॥

शियल सलूणी मयणा रह्या सतीरे ॥ए देशी॥ शोभा विविध प्रकारशुरे, किधी

नगरीमें आहीरे; जण२ जयशत्रुचरेरे, वाजा वाजता उछाहीरे ॥१॥ भतीज भुवा शुं सादरोरे ॥ ए आंकणी ॥पेसारा विधी साचविरे, हय गय रथ पायक साररे; वेसी वरू गजराजीएरे, साथे सहु परीवाररे ॥भ० २॥ देतो दान महा बलिरे, हरजी हरखे आवंतरे; दरशण देखी दूरथीरे, प्रभुजी सुख पावंतरे ॥भ० ३॥ हाथीथी तव उतरीरे, प्रणमी भुवाना पावरे; भगति करी भल भावसुंरे, चित्तनो चोखो चावरे ॥ भ० ४॥ जन्म कृतारथ माहरोरे, माहरो जीव सो उल्हासरे; दिठो दरशण ताहरोरे, सुफल हुइ सव आशरे ॥ भ० ५ ॥ कंठे लगायो प्रेमसुंरे, आणी अधीक जगीशरे; फूली अंग नमावहिरे, तव भुवाजी दिए आशीषरे ॥ भ० ६ ॥ चिरंजीवे चिरनंद जेरे, चिर लगी पालजे राजरे; चिरं आश्रीत सहु लोकनारे, प्रभु पुरे वंछित काजरे ॥ भ० ७॥ भुवा भतिजो एकठारे, बेठा वरू गजरायरे; नगरिमें पाउधारीयारे, घर२ हुवो उछायरे ॥ भ० ८ ॥ भोजायुं भगति महारे, नणदिसुं नेह उदाररे; बुहतेर सहस सोहामणिरे, प्रणमे हेत अपाररे ॥भ० ९॥ हलधरने हरजी तणिरे, नारी अधीक छमेदरे; विसामणा विधी साचवीरे, टालियो सघलो खेदरे ॥ भ० १०॥ भोजन भगती करी खरीरे, हरी पुछुं आगमनी वातरे; वात सुणंता विशेषथीरे, हरी हांसो हिए न समातरे ॥भ० ११ ॥ एकीलो हुं एतलिरे, केरो थाउं रखवालरे; ए पांडव पांचे महा बलिरे, नरखाणी एकहि वालरे ॥भ० १२॥ कृश्न कहे फइ सांभलोरे, मकरो चिंता लगाररे; पतालथी पेदा करुंरे, सोपुं तुझ सुखकाररे ॥भ० १३॥ आसासना दिधी घणीरे, आपी वहुला मालरे; पोंहचावि हथीणा पुररे, शा आवी ततकालरे ॥ भ० १४ ॥ कृश्ने साद फेरावियोरे, त्रिहुं खंड खवर कढायरे; जाथी नहि इंहां द्रुपदिरे, हरी मन झांखो थायरे ॥

भ० १५॥ तेतालिसा सोमी ढालमेंरे, हरजी करवो ए कामरे; श्री गुणसागर सुरजीरे, कहे मोटानो मोटो नामरे॥भ० ॥१६॥ ॥ दोहा ॥ एतले नारद आवियो, दिधो वहु सनमान; आरति अति उतावली, पुछे श्री भगवान॥ १॥ गाम नगरपुर पाटणां, फिरता नवश देश; किहां दिठी तुमे द्रुपदि, वात कहो शुं विशेष ॥२॥ सुरकंका नगरी भली, पद्मनाभी नृप गेह; में पंचाली सारखी, दीठी पण संदेह ॥३॥ हरी भांखे नारद प्रत्ये, थारा काम मुनिंद; एम कहि उठी गयो, नीश्चे लह्यो नरंद ॥४॥ ॥ ढाल १४४ मी ॥ बावा कीशनपुरी ॥ ए देशी ॥ माधव कागल लखीयो भलो, गजपुर नगर अछे गुण निलो; पांडू भुपति पांडव नु धणी, कागल मांहि लखी हेत भणी ॥ १ ॥ मेरो भाग्य भलो मेरो भाग्य भलो ॥ ए आंकणी ॥ दुत तेडी हरी कागल नृप दियो, करी जुहार तेणे वंचो लियो; द्रुपदि खबर कहेजे सुखदाय, हथीणापुर तुं वेगे जाय ॥ मे० २ ॥ धातीक खंड इहांथी दुर, अमर कंका नगरी धनपुर; पदमनाभ नृप महील मुझार, तिहांछे द्रुपदी राज कुमार ॥ मे० ३ ॥ कहे जे किसन हुवा असवार, साथे लशकर अपरंमपार; पुरव सागर तट वैताल, तिहां चाल्या वागी करनाल ॥मे० ४॥ झाझो कटक साथे लावज्यो, अम पासे वेगा आवज्यो; दुत शिख लेइ चाल्यो गजपुरे, अनुक्रमे गयो नगरी परसरे ॥मे० ५ ॥ पंडुरायने किहो जुहार, कागद दियो हरख अपार; वांची कागद हुवो संतोष, पांडव लस्कर करी वहु जोष ॥मे० ६॥ हवे नारायण जोर मंडाण, गाम नगर करता मेलाण; अनुक्रमे दरीया कांठे गया, भली ठाम जइ डेरा दिया ॥मे० ७ ॥ पांडव आव्या मननी रली, हरी दिठा मनवांछा फली; मांहो मांही मल्या सुस नेह, जीम हरखे

पांभव सुणो, रो उना मती फुरोरे; हवे नाशी किहां जाइसो, द्वारकां तो रही डरोरे ॥पा० १३॥ एही वचन मुफ मानजो, डशमन डर नसावुंरे; पदमनाजने जीवतो, अपुगो तास बंधावुंरे ॥पा० १४ ॥ पित्ताजीसा सोमी ढालमें, सनमुख उठ्यो सोइरे; श्री गुणसागर देखजो, हवे कुण तमाशो होइरे ॥पा० १५॥ ॥दोहा॥ फुफ करण माधव चड्यो, करी आमंबर जोर; पदमनाज सेना सजी, उनो ए कणकोर ॥ १ ॥ आज अमारो जय होशे, पदमनाजनो नाश; एम कही रथ उपर चम्या, दारुक सारथी पास ॥२॥ ढाल १४८॥ मी॥ ॥ देशी कमखानी॥ धजा ... फरहरे देखी वेरीमरे, एक रथ सहस रथ आंखी दिसे; जाणे गढ जेलशे कोमी सुजट मेलस्ये, किसन लोचन अ... हुउरीसे ॥१॥ हवे गढ जेलवा चम्यो वसुदेव सुत, सुर जीम तेज दिपे सवायो; अमर कंकापुरी रतन माणक ... जय करी थिर हरी कोण आयो ॥ह० २॥ पांच पांमव तणी वात श्रवणे सुणी, रोस धरी रथ चमी कृश्न आ... डरथी अटकल्यो गाम नृप खलजल्यो, ए कुण सामत तुम सबल दावे ॥ह० ३॥ देव दिखे पम्या रथेरथ आथम... कम्ल मुख हाथशुं संखवायो; तिसरो जाग लशकर तणो घटि गयो, मिट गयो जुप वलतो न आयो ॥ ह० ४ ॥ धनुप सारंग मनरंग हरी कर धरी, पण वढण काज तिणवार नाठो; जाग त्रिजो कटक सुजट पग चालस्या, प... पग ठोमीया हुतो नाठो ॥ह० ५॥ अमर कंका जमी नगर जागज पमी, खलजल्या लोक सहु एम जांखे; भुप ... लंपटी न्याइ प्रभुता घटी, नासतां जागतां कवण राखे ॥ह० ६॥ अमरकंका जीहां कृश्न आवे तिहां, रथथी उत... कोट देखे; ढाहि ढम ढेर करी सुसहि ततखिणे, रुप नरसींहनो करी सुविशेषे॥ ह० ७॥ हवे कृश्न नरसींहनो ...

सवलो कियो, अमरकंकापुरी कोट पाड्यो; वड वडा मेहेल तो रण पड्या धडहडी, पोलनो बार हरी आप उघाड्या
॥ह० ८॥ अमरकंका धणी चित चिंता घणी, एकले कवण ए काम कियो; कटक नाशी गयो, कोट पण इण लियो
॥ह० ९॥ आप आलोच करि हियो निज ठाम करी, द्रुपदि पासे भुपाल आवे; माहरी कोटि दे राखीए आप जियो ॥ ह० ९॥ आप आलोच करि हियो निज ठाम करी, द्रुपदि पासे भुपाल आवे; माहरी
धर्मरी वेहेन मुझ रावले, सुमती दे ताहरी दाय आवे ॥ ह० १० ॥ द्रुपदि कहे सुण वाणी कल्याण मुझ, पदम तुं
रदन करे देश सारो; सार नंडारथी लाल वहु माल ले, लाग्य हरी पाय जो न्नाग्य थारो ॥ह० ११॥ दिन दिवो धरी
लेइ अंते जरी, त्रणो दांत धरी साथ मोरे; मन हठ परहरी हाथ जोडी करी, राख ले माधवा शरण तोरे ॥ह० १२॥
हुं कहुं तिम करो कृष्णथी मत डरो, चरण लागी करी एम न्नांखो; सामी नो शरण संसार तारण तरण, मुझ गुनह
माफ कर माम राखो ॥ह० १३॥ कृष्ण बोल्या तव बुटस्यो किम हवे, बहिन तें माहरी केम आणी; मारी सत खंड
नुज दंड शीर मुंड करी, करुं तेम वेल वहे जेम घाणी ॥ ह० १४॥ हवे मुझने मल्यो कोप सघलो टल्यो, जा घर ताहरे
पदम पापी; द्रुपति लेइ करी तिहां थकी संचरी, द्वारकां गमनरी वात थापी ॥ ह० १५ ॥ कृष्ण पांडव मिल्या, द्रुपदी
लेइ वल्या, ठहु रथ पाछली राते चाल्या; नाग्य मोटे कृष्णनाहि कोइ वसन, घणा पकवान लेइ साथ घाल्या ॥ ह०
१६॥ द्रुपदी शिल बले किसन शोन्नाग्य बले, पांडु सुत नाग्य बले विजय पायो; पारको वध धावली पारकी, पार
की जइ जलनीधीमें सवायो ॥ह० १७॥ ढाल बेंतालीसा सोमी सोह्यामणी, द्रुपदी शिल थकी काज सरीयां; श्री
गुणसुरी गुरु नवीकने शिखवे, शिल केडे वृत सवलाही धरीया ॥ह० १८॥ ॥दोहा॥ तिणे काले तिणे समे,

घातकी खंडमोझार; पुरव धातकी भरतमें, चंपा नगरी सार ॥१॥ नगरी वाहीर उद्यानमें, राजेश्री जैनराज; कंपी लपर मुख परषदा, वेठी अधिक सकाज ॥२॥ ढाल १४७ मी ॥ इम्र आंबा आंबलीरे ए देशी॥ जीन दर सन मन उलसेरे, आणंद अंग न माय; जीन देशना सहुको सुणेरे, सुणता आवे दाय ॥१॥ जीनेशर एम भांखे उपदेश ॥ए आंकणी॥ तिण वेला सुणी तिहांरे, शंख शब्द घननाद; चित्त चमक्यो नृप चिंतवेरे, मन उपनो विख वाद ॥ जी० २ ॥ कोइ नवो इहां उपनोरे, वासुदेव बलवंत; मुझ सरीखो जाणीएरे; जीण बले अचल चलंत ॥जी० ३॥ हरी पुछे जीनने नमीरे, शंख शब्द सबंध; जीन बोलेथें मत मरोरे, पदमनाभ प्रबंध ॥ जी० ४ ॥ एक खेत्र ए कणसमेरे, चक्री जीन बलदेव; वासुदेव पण जोमलेरे, नवी उपजे नितमेव ॥ जी० ५ ॥ पदमनाभ शुं झुझ तारे, किसन वजायो शंख; ते सांभली तुझ उपनीरे, वासुदेव निशंक ॥ जी० ६॥ कंपील वात सुणी हरखीयोरे, टाल्यो मन संदेह; जीनवादी एम विनवेरे, कश्न मिलण मुझ नेह ॥जी० ७॥ वलतुं मुनीशुं व्रत भणेरे, वासुदेव सुण वाण; हुउ न होशे हुइ नहीरे, ए तुं निश्चे जाण ॥जी० ८॥ हरीशने नवी मलेरे, जो करे कोम उपाय; देखीश ध्वज हरी रथ तणीरे, सागर तट तिहा जाय ॥जी०९॥प्रनुने मांमी गज चमीरे, कंपील चाल्यो ततकाल; सा गर विच दिठी तिसेरे, धजा पित शितलाल ॥जी० १०॥ शंख वजायो मन रलीरे, किसन सुणो अरदास; एक वार देदार दियोरे; मुझ मन पुरो आश ॥जी ११॥ हरी पण शंख वजाडतरे, शंखे शंख मिलंत; पणी जोमी अमो आवीयारे, रथ पाछा न वलंत ॥जी० १२॥ हरख धरी पाछो वल्योरे, सुर कंका भणी जाय; पद्मनाभ पण साहमोरे आवी लाग्यो पाय

॥जी० १३॥ पद्म नणी तव पुछीयोरे, किस्यो नगरी प्रकार; कुण वैरी ए तुझनेरे, संताप्यो निर धार ॥जी० १४॥ कंपील स्वामी ताहरी साहीवीरे, लेवा कारण आज; हरी आपुण आव्यो हुतोरे, में आण्यो तस वाज ॥जी० १५॥ कंपील क्रोधातुर थयोरे, सांभली एहवी वाण; आणा थकी अलगो कियोरे, पाम्यो डुख असमान ॥जी० १६॥ तेभावी तस नंदनेरे, थाप्यो नरपती पाट; राजा निज स्थानक गियोरे, टाली डुख उचाट ॥जी० १७॥ सम्ह तालीसा सोमी कहीरे, ढाल अनोपम एह; गुणसागर जीन वाणीएरे, उपजे अधीको नेह जी० १८॥ ॥ दोहा ॥ मारग जातां एम कहे, पांम्हवने हरी राय; सुस्थीक सुर भेटी करी, हुं आवीश सुखदाय ॥१॥ यान पात्र तरी जानवी, लेजो जइ विश्राम; प्रवहण पाछो मुकज्यो, मुझ कारण अभीराम ॥२॥ गंगाने त्रट आवीया, पांम्हव पंच उदार; छठी राणी डुपदी, रथ वाहन अति सार ॥३॥ नावा मोटी मनोहरु, वेठो सघलो साथ; खेम खुशल जल उतरया, चित चिंतवे नर नाथ ॥४॥ ॥ ढाल १४८ मी ॥ इण पुर कंबल कोइ न लेशी ॥ ए देशी ॥ चित चिंतवे तव नर नाथो, एक मतो छे सघलो साथो; होण हार मेट्यो नवी जाय, सघलानी मती सरखी थाय ॥१॥ कुंम्ह कुंम्हनो जुदो पाणी, तुंम्ह तुंम्हनी जुदी वाणी; मस्तके मस्तके मती छे जुइ, पण सहुनि एकज हुइ ॥२॥ सहु सयाणा सोंचो कांही, भावीनो बल मोटो प्रांही; पांम्हवजी सरीखा जो चुके, सुमति सरोवर तो कुण ढुंके ॥३॥ हांसि मिसे उपाव उठावे, सांतकर्मे वैताल जगावे; एह अजाणपणो जग मोटो, जाणी वुझी खाजे खोटो ॥४॥ नाव छिपावे एम विचारी, कितनो एक बलवंत मोरारी; हांसो काम विणा सणहारो, हांसाथी चिम्ह थाइ पीयारो ॥५॥ स्वाम तदा सुरने संतोखी,

पनोती परघल पोखी; श्री गंगा तटी चाली आया, नाव न देखे तव हरी राया ॥६॥ एक हाथे रथ खेडु
घोमा, बिजे हाथ तरे जल थोमा; पोट नविनो जोयन बासठ, ते पण जोजन देव तणो पट ॥७॥ जल अधविचे
आया जामो, थाक्या अति न तराइ तामो; चित चिंतरे ए चिंत्या थापी, पांमव तो बलवंता आपी ॥८॥ नाव
विन्या एपयरीउपाणी, हय रथने नीरवाहे राणी, एह अचंभो दिसे नारी, किम आया अरी आगें हारी ॥९॥ जाणी
हरी चिंत्याए चंप्यो, गंगादेवीनो आसण कंप्यो, गंगा देवीए दिधो थाह, हरी मन उपज्यो अधीक उछाह ॥
॥१०॥ पाणी पयरी कांठे लागे, पांमव आवी उभा आगे; श्री हरी पांमव प्रेम अपारो, अध उपजे मन मांहि
विकारो ॥११॥ छसण तो हरीनो नवि दिसे, पांमवानो तो त्रिसवा विशे; छुगमतो धोयंत कुहामा, न रहे साजो होइ
अति जामा ॥१२॥ अमृतालिसा सो ढालसुं भांखी, चंद सुरज दो दिधा साखी; श्री गुणसागर सुरी प्रकाशे, मति
छुस्या नर गाढा घासे ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ कृष्ण कहे पांमव सुणो, तुम बलवंत अपार; गंगा जल भुज बले
तरया, नारी छिया वली जार ॥१॥ जल अधविचे आवियो, हुं अति थाक्यो ताम; गंगादेवीए माहरी, सानिध करी
सकाम ॥२॥ तो हमथी बलवंत तमो, नांखे हरीस सनेह; पद्मनाभ नृप आगले, हारया एह संदेह ॥३॥ ढालनी
गाथा ॥ सरला नांखे सरली वाणी, नवि मेले कोइ डुजी आणी; आहल्या चोरयो हरी मम जार, गंगा तारयो
हर नरतार ॥१॥ ॥दोहा॥ कपट तजी पांमव भणे, थ्याणी सरलो जान; जोचा तुम बल कारणे, हमे नपावी
नाव ॥१॥ ॥ ढाल १४९ मी ॥ मारा घणुंरे पीयारा प्रभुजी ॥ ए देशी ॥ निसुणी ...
रमां

रास नराणा हो कुष्णुवा; यु पयु [illegible] तुझ आइ, बालपणेथी जेला, वसतां थइ एवडी वेला हो ॥कु० १॥ गोवरधन गीरीराज, में उपाड्यो बल काज हो कु०॥ वली बालपणे महा जाग्य, में नाथो कालंजरी नाग हो ॥कु० २॥ वली जरासंध जमाइ, हुइता पण अधीक वडाइ हो कु०॥ तप अठम करी में साध्यो, सुर आयो आप आराध्यो हो ॥ कु० ३॥ द्विज खलवणा कहाय, उलंघी जीत्यो वडराय हो कु० ॥ पदमोतर झगड्यो जेथ, तिहां हुता आपुण सहु सेथ हो ॥कु० ४॥ लडतां पदमोतर जंग, तुम जागी आव्या मुज संग हो कु०॥ देखी मुझ बल कागो, नृप पदमोतर गीयो नागो हो ॥कु० ५॥ देइ पुर तणा दरवाजा, जइ पेठो मेहेल मांही राजा हो कु०॥ पदमोतर अस्त्री रुप, तिहां आवी नम्यो ते भुप हो ॥कु० ६॥ ते बल नाव्यो तुम दाय, हजी केतो बल जोवाय हो कु० ॥ एतो आव्या पुन्य पसाय, कृष्ण जाता तुमारुं शुं जाय हो ॥कु० ७॥ तुम प्रत्ये मली तुम नार, कृष्ण वाट जुवे बत्रिस हजार हो कु०॥ आपुण सरियां काम, तारे कुण बिचारो साम हो ॥ कु० ८ ॥ पण एटली तो नवि जाणी, जे रोशे हरी पटराणी हो कु० ॥ कृष्णनी वाट विचाल, जोतां हुसे बालगोपाल हो ॥ कु० ९ ॥ जात जो गंगा मोझार, तो कुण आपत समाचार हो कु०॥ नीगुण नीठोर सुखे मीत, तुझ रुदय कठण अति धीठ हो ॥ कु० १० ॥ तुम वात सकल में लाधी, तुम पांचे वडा अपराधी हो कु०॥ हवे तजवो तुम्ह साथ, एम जांखे श्री जदुनाथ हो ॥ कु० ११ ॥ न कछु वातके काज, तुम्ह किधो अधीक अकाज हो कु०॥ तुम्ह नीस्नेहि थया आज, मुझ लेखे न किधां काज हो ॥कु० १२॥ लोह दंड उपाडीने आयो, केशवजी कोपे जरायो हो कु० ॥ ए गुण पचास सोमी ए ढाल, गुणसागर कहे सुविशाल

हो ॥ कु० १३॥ ॥ दोहा ॥ नृप नुजंगम सारिखा, जाळविया सुख होय; आसंगे असोह्यामणा, पांम्रवन
जोय ॥१॥ केशव कोपे परीयो, देखी थरहरी वाल; आम्री फिरी ऊनी रही, नांखे वचन रसाल ॥ २ ॥ ढाल
मी ॥ रायजी अमने हिड आणा राय गराशीयारे लोल ॥ ए देशी ॥ कृश्नजी तुमने कहुं करजोम के, सुण
विनतीरे लोल; प्रनुजी नहि कोइ तुमचो दोशके, निगेर थया मुक पतीरे लोल; प्रनुजी तुमशुं एवमी हाशके,
केम घटेरे लोल; प्रनुजी लख्या ढगीना लेखके, मटाम्या नवि मटेरे लोल ॥ १ ॥ प्रनुजी दोश नहि तुम
किरतार एहि गमेरे लोल; प्रनुजी ढोरु कढोरु थायके, मावितर तोहि खमेरे लोल; बंधव तुमची मोटी लाजके,
विचारीयेरे लोल; प्रनुजी विनवु गोद विढायके, रोस निवारीएरे लोल ॥२॥ प्रनुजी तुमे मोटा माहाराजके,
जाणीयेरे लो०॥ प्रनुजी पोतानो परीवारके, दिलमे आणीएरे लो०॥ प्रनुजी मोटा होय दातारके, योले मुख मं
लो० ॥ प्रनुजी मोटा न कथे आजके, करे अण दिठुंरे लो० ॥ ३ ॥ नुपती तारा पतिना बोलके, खीण२ सां
लो० ॥ नुपदी इणे कीधा जे कामके, वेरी पण नवी कररे लो०॥ नुपदी मारी एकज वातके, गदा पाढी नवी
लो० ॥ एहने वन देखामुं आजके, हरी मन रीस धरेरे लो० ॥ ४ ॥ राणी विलखाणी तेणीवारके, आंखे आंसु
लो० ॥ नाइजी एवमो मकरो रोसके, ऊनी एम टलवलेरे लो० ॥ प्रनुजी फइ कुंताजीनी लाजके, दिलमां आ
लो०॥ प्रनुजी पंमुराय मयायके, मनमां जाणविरे लो० ॥ ५ ॥ प्रनुजी गौब्राह्मण प्रतिपालके, सहु तुमने कहेरे
प्रनुजी तम्ह शरणे जे आयके, सो नर नीरवहेरे लो०॥ प्रनुजी नीगेर थया तुम आजके, किम होशे सहिरे

प्रभुजी कवण करमनी वातके, वांक केहनो नहिरे लो० ॥६॥ प्रभुजी माणस होशे एह तो, वात घणी थइरे लो०॥ प्रभुजी बांहे ग्रह्यानी लाजके, राखो हेत लइरे लो०॥ प्रभुजी करणी तणा फल एहके, तुमची बेनडिरे लो०॥ प्रभुजी पुरव भवनो पापके, तास वेला पडीरे लो० ॥ ७ ॥ प्रभुजी एवडी तुमची धातके, हवे हुं कीम सहुरे लो०॥ प्रभुजी अखंड एवातण राखके, झाझुं शुं कहुंरे लो०॥ प्रभुजी राखो एटली लाजके, गेरु करी छोडवोरे लो०॥ प्रभुजी मेलो मननी रीसके, वेला रथ जोडवोरे लो० ॥ ८ ॥ एहवा वचन सुणी यदुरायके, मनसुं विचारीयोरे लो०॥ हवे मलियो अबला अंतके, एम मन वालियोरे लो० ॥ केशव उपाडी लोह दंडके, कोप करी तिहांरे लो० ॥ पांचे रथ किया चकचुरके, पांडव जना जिहांरे लो० ॥ ९ ॥ नांखे रोस धरी हरी रायके, आण माहरी वहेरे लो० ॥ पांडव तुमचो सहु परीवारके, रेहवा नवि लहेरे लो०॥ रेहेज्यो दृष्ट थकी तुमे दुरके, पासे मति आवज्योरे लो०॥ प्रभुजी मन फाटो न संधायके, सहि एम जाणजोरे लो०॥१०॥ प्रभुजी रथ मर्दनजे ठामके, कोटो वसावीयोरे लो०॥ प्रभुजी सेन सकल तेणीवारके, सनमुख आवियोरे लो०॥ प्रभुजी द्वारापुरी सहु साथके, पोहोत्या ते सहिरे लो०॥ प्रभुजी एकसो पंचासमी ढालके, गुणसागर कहिरे लो०॥११॥ ॥दोहा॥ पांडव प्रभु सोचे घणुं, कीयो किसो कीरतार; विगडी वात विशेषथी, खीज्यो देवमोरार ॥ १ ॥ जेह तुसेहे जग तुसिये, जेह रुसे जग रोस; सोतो प्रभुजी पाडीए, तुंसाहि संतोष ॥ २ ॥ पांचे पांडव द्रुपदी, तिहांथी आया गेह; पांडुराय कुंता मलि, जाग्यो अधीक सनेह ॥३॥ विलख्यां अंगज देखने, पुछे पांडु विचार; कुंति वेगी सांभले, पासे सहु परीवार ॥ ४ ॥ ढाल १५१ मी ॥ एकली नारी साथ मारगडे नवि जावुं हो

५९ त न कीजीए ॥ ए देशी ॥ पांन्डव बोल्या बोल, माता पीताजी हो एक वचन सुणो, श्रीपति सेति प्रीत, ऊाऊरी हुती हो सुख पण हुतो घणो ॥१॥ संप्रती रुठो जाण; कहेने जइ कहीए हो देशवटो दियो; वचन कह्यां दसवीस, ते तो हम साले हो एक जाणो हियो ॥२॥ पुछे पांडु नरंद, ए किम खटपट होयें हरी शुं करी; सायर कांठे जाय, हरी पाय लागी हो ब्रना हेत धरी ॥३॥ सुस्थीत सुर आराध, श्रीपती साथे हो खट रथ लेइ ऊरी; पहुता पेले पार, जहिां कण दिसे हो अमर कंका पुरी ॥४॥ माधव कियो डुबोल, शुरु करीने हो कटक नगामीयो; किधो नरसंग रुप, गढमढ पाम्री हो पदम नसामीयो ॥५॥ द्रुपदी आणीने दिध, हुरी पगे लागी हो पदम पाछो वल्यो; रथचकी पुरण प्रित, जलधी वलंघी हो हरी सुरने मल्यो ॥६॥ अम्ह दिधो आ देश, गंगा जइने हो पार तुम्हे करो; हुं पण आइस वेग, नाइजी पांन्डव हो मन धिरज धरो ॥७॥ हम पण गंगा आय, नाव चमीने हो गंगातट जह्यो; हरीनी जोतां वाट, तरु तले वेठां हो हियमो गह गह्यो ॥ ८ ॥ एतले किसन नरेश, शिख करीने हो सुर शेती वली, आया गंगा तिर, निर निहाले हो तरणी अटकली ॥९॥ नाव न लाधी कांइ, हरी भुज बले हो गंगा वतरी; म्हे लाग्या हरी पाय, हली मलीने हो वनाहेत धरी ॥१०॥ पछी हरी बोल्या एम, गंगा तरीने हो थें किम आइया; नावा हुती अम्ह पास, तिण हम तरीया हो पांचे नाह्या ॥११॥ वली माधव बोलंत, किम ते नाणी हो सनमुख नाव मी; निज भुज तरशे केम, हरी वल जोस्यां हो अमे एम तेवमी ॥१२॥ वचन सुणी निज कान, रुस रिसाणो हो बोले आकरो; रुतघन मुंढ नीटोल, पांन्डव ते दिगा हो वचन कह्यो घुरो ॥१३॥ लाख जोयण वो मान, सागर वलंघी

हो आणी तुम वहु; मुज वल तो हिन दिठ, थें मन कुमा हो जगत जाणे सहु ॥ १४ ॥ मुख न देखामजो मुढ, एम बलंतो हो देइने हरी गया; में पण तिहांथी एथ, डमना आया हो तुम्ह दरसण थया ॥१५॥ पांकुराय सुणी वात, वलता बोले हो वुत्र थें कुरी करी; किशन किया कुण काम, माम वधारी हो तुम्हे तो एवी करी ॥ १६ ॥ मोतीने मन लाख, लाखने मुले हो मोती तो मले फरी; पण मन नाग्यो जाण, ते रंग नावे हो कोम जतन करी ॥१७॥ पांमुराय महीपती ताम, कुंती तेमीने हो वचन एसो कहे; मकरो अवर विचार, श्रीपती पासे हो जायवा मन वहे ॥ १८ ॥ कहेज्यो घरनो सुल्प, माधव लज्या हो राखो हवे माहरी; तें पुरथा मन कोम, वली हुं श्रीपती हो भुवा ताहरी ॥ १९ ॥ एम दीधी नृप शिख, कुंती चाली हो पोहता एम अनुक्रमे; द्वारामतीनो राय, माधव आवी हो जुवाने पाय नमे ॥ २० ॥ पुरुषोतम करजोम, कुंती पुछी हो केम पधारीया; कुंती नांखे एम, तेंतो रिसे हो पांमव वारीया ॥२१॥ अण खंम प्रथवी मांही, आण तुम्हारी हो सघली शिर वहे; नाइ नलपण जाण, गाम वतावो हो विरा जीहां रहे ॥२२॥ ढोरु उपरें रिस, मात पितानी हो पाणी वल रहे; वली मनावे आप, खोले बेसारी हो शिख वचन कहे ॥२३॥ जो थें करस्यो रोस, तो नाइ पांमव हो जइने किहां वसे; वली मोटो संताप, देखी डुरजन हो डुर्योधन सुत हशे ॥ २४ ॥ बाहु बल नरतने जीत, रोस धरीने हो बंधव निषेदीयो; आणी नाइ सनेह, पमता अपुगो हो तास जीती लीयो ॥२५॥ आप उजेरी रुख, कोइ न कापे हो जो फल नवी दिए; एसोहे तुम पास, डुर मकाढो हो को गुण लेइ हिए ॥ २६ ॥ रहेता पिहरनी ठेल, आशः विरानी हो जुवाने हुती घणी; थोमामां

दियो बेद, वात विचारे हो एतो आवी दणी ॥२७॥ दिन वचन सुणी एम, माथा नांखे हो जुवा डख मती धरे .
डनुं मच्छाणशो एह, पांडवथी मारे हो अधीक नको स्वरो ॥२८॥ कहेजो सुतने जाय, दक्षीण सागर हो वेल द
जीहां; तिहां रहेज्यो चित लाय, पांडु मथुरां हो नगरी वाशी तिहां ॥ २९ ॥ कहे चिरं लगी पालजो राज, मति
शेवाथी हो कारीज लारज्यो; उनोशी लागे निर, स्वाद न आवे हो मुज एम धारज्यो ॥ ३० ॥ कुंती मानी वा .
तिहां थकी आवी हो पती सुतने कह्यो; हवे कुण करे विचार, गजपुर माहो हो किम जाइ रह्यो ॥ ३१ ॥ जि
लगे पुन्य प्रकाश, तिहां लगे बंधव हो सुजन मेलावडो; गुणसागर कहे एम, जिहां लगे सुरज हो तिह लगे ताह
॥३२॥ पांडुराय मथुरां निवास, नगर वसावी हो रह्या मननी रली; सुखमें पाले राज, एकावनसोमी हो ढाल नां
नजी॥३३॥ ॥दोहा॥ श्री जीन नेम दयाजजी, अतिशयवंत अशेश,अरती असुख डख टालतां;विचरे देश विदेश,
॥१॥ नदलपुर आया सही, हरख्या लोक अपार; राजा वंदन आवीयो, साथे सहु परवार ॥ २ ॥ सोलस सुधी
श्रावीका, नाग निरोपम नाम; खट नंदनशुं आवीया, श्री जिनवंदन ताम ॥३॥ ॥ढाल १५२ मी॥ देशी
डमखमानी॥ हाथमां ते लींधी कोथलीरे लाल ॥ चाल्यो रतनपाल ॥ मननी आस्या फली ॥ए देशी॥ दे उपदेश
सोहामणोरे, ए संसार असार; सुंदर सुखकारी, धन योवन परीवार सहुरे, कोइ न आवे लार ॥ सुं० १ ॥ वसे
दृष्टांते दोहिलोरे, माणसनो जव एह सुं०॥ आलस तजो आतुर थइरे, किजे धर्म सनेह ॥सुं० २॥ श्री जीन वाणी
सांजलीरे, ते खटही सुकुमार सुं०॥ समजावे माता पितारे, लेवा संजम जार ॥ सुं० ३ ॥ बत्रीशे वर कामनीरे,

अमरीने अवतार सुं०॥ बत्रीशे कंचन तणीरे, कोमी तजी तेही वार ॥ सुं० ४ ॥ जीन मुख संजम उचरेरे, पाले सुधाचार सुं०॥ दो उपवासे पारणोरे, सदा करे सुखकार ॥सुं० ५॥ स्वामी पधारया द्वारीकांरे, वंदन श्रीहरी राय सुं०॥ आयो आमंबर घणोरे, वाणी सुणया सुख थाय ॥ सुं० ६ ॥ खट बंधवनो पारणोरे; एकण दिन सुविशेष सुं०॥ संघाम्रा त्रण जुजुवारे, पामी प्रभु आदेस ॥ सुं० ७ ॥ नगरी मांही आवीयारे, जुदा पमीयां जाम सुं०॥ एक जुगल हरी मंदीरेरे, आया तव अन्निराम ॥सुं० ७॥ दिठां राणी देवकीरे, विधी वंदन अधीकार सुं०॥ अंतरजामी आत्मारे, हेज जणावण हार ॥सुं० ए॥ लाफु तो हरी केसरीरे, वोहराव्या न्नरी थाल सुं०॥ निज हाथे उलटपणेरे आणी न्नाव रसाल ॥सुं० १०॥ जेहनो चित्त देवा तणोरे, तेहने चित्त मजोय सुं०॥ वितवंतने चित्त नहीरे, चित्तवीत पुन्ये होय ॥सुं० ११॥ चितवित दोइ संपज्यारे, पात्र पापे तो वादी सुं० ॥ पात्र वम्रो संसारमांरे, सुक्रीत सहुनि आदी ॥सुं० १२॥ पोखी न जाणे पात्रनेरे, पोखे काया जेह सुं०॥ विण शींगाही जाणीएरे, ढोर सरीखा तेह सुं०॥ १३॥ व्याजे दिया दोणो वधेरे, चतुर गुणो व्यवसाय सुं०॥ खेति सेहे सगुणो हुवेरे, दियो अनंतो थाय ॥सुं० १४॥ कुप बागने गोतणोरे, परतख देखी विचार सुं०॥ देतां दान न थाकीएरे, दान वम्रो संसार ॥सुं० १५॥ दिठां राणी देवकीरे, मोदक खरा अमोल सुं०॥ एतले बिजो आवीयोरे, संघाम्रो समतोल ॥ सुं० १६ ॥ बावन सोमी ढालमें रे, दाता करता दोय सुं०॥ श्री गुणसागर सुरजीरे, एक सरीखा होय ॥सुं० १७॥ ॥ दोहा ॥ सोइ लाफु थाल सोइ, विधी वंदन पण सोइ; सोइ न्नाव उदारशुं, प्रती लान्ना मुनी दोइ ॥१॥ दैवयोग्य एवो हुवो, त्रिजो जुगलजीवार;

श्री हरी जननीने घरे, आया सही तिणी वार ॥३॥ उही लाडु उही विधी, विहराव्या मुनी तेह;पण तो शंका उप नी, राणीने मनएह ॥२॥ ढाल १५२ मी॥ पुछी हो पुछि कोइनार ए वेशी॥ पुछे हो पुछे राणी वात, फरि फीरी हो आया तुम्ह घर माहरेजी; वारी हो वारी हु सोवार, वारी हो वारी दर्शण ताहरेजी ॥१॥ मिलीया हो मिलीया साधु अपार, न मिल्यो हो न मिल्यो योग आहारनोजी; करवी हो पिंम गवेषणा सुध, करनो हो उद्यम सुधा चार नोजी ॥२॥ मुनिवर हो मुनिवर जांखे वाण, वाणी हो वाणी अमृत सारखीजी;हमखट हो हमखट बंधव जाण; न सके हो कोइ जुदा पारखीजी ॥३॥ नदिल हो नदिलपुर अवतार, सोलसा हो सोलसा माता माहरीजी; तिसहो तिस अने दोइ नार, एति हो कोमी कनकनि परीहरीजी ॥४॥ नेट्या हो नेट्या नेमी जिणंद, जाएयो हो जाएयो जीन जग तारणोजी; लीधो हो लीधो संजम नार, किजे हो दोइ उपवासे पारणोजी ॥५॥ जोमा हो जोमातीने आज, आया हो वोहरण थारे श्राविकाजी; लालच हो लाभुनी नही कोइ, लालचि हो शीवनी पुन्य प्रनाविकाजी ॥६॥ राणी हो चितसु चिंते ताम, मुकसुं हो निमितीये एम नांखीयोजी; थारे हो थारे उतम नंद, होशे हो होशे एम कहि दाखीयो जी ॥७॥ म्हारो हो म्हारो कान नरंद, जेहवा हो तेहवा खट जाणीएजी; मुकथी हो मुकथी सोलसा सोय, मोटी हो मोटी आज वखाणीएजी ॥८॥ वंदन हो वंदन नेम जीणंद, आवी हो आवी सा उतावलीजी; देखी हो देखी तेह मुनिंद, उपजे हो उपजे अति मननी रलीजी ॥ ए ॥ सुरहि हो सुरहिनी परे जोय, हिंसे हो हिंसे हेज हिए घणोजी; नयणा हो नयणा झानी होय, उलखी हो उलखी ले जण आपणोजी ॥१०॥ ढालज हो ढालज मीठी

त्रेपन हो त्रेपनने सोमी ज्जलीजी; श्री गुण हो श्री गुणसागर सुर, माता हो माता सुत मनसा रलीजी ॥ ११ ॥

दोहा ॥ पुछे राणी देवकी, नेम जीणंदा पास; ए खट मुनीवर देखतां, माहरे मन ज्लहास ॥ १ ॥ ए ज्जव के ज्जव तणो, सगपणको व्यवहार; देव दया करी दाखवो, ज्ञान तणा ज्जंमार ॥ २ ॥ ढाल १५४ मी ॥ मेताज मुनिवर धन धन तुम्ह अवतार ॥ए देशी॥ वली जाड प्रज्जुजी ज्जांजो एह संदेह; साधु सलुणा देखताजी; ज्पनो अधीक सनेह ॥व० १॥ सांज्जल राणी देवकीजी, ज्जांखे श्री जगनाथ; ए खट नंदन ताहराजी, नीसुणो सघलो साथ ॥व० २॥ सारद नामे सारदाजी, सारद देवी होय; वम्रवखती तुज्ञ साररवीजी, नारी न वीजी कोय ॥व० ३॥ कंस कर्म आदे करीजी, संज्जलाव्यो विर तंत; हरखी राणी देवकीजी, वांदी श्री ज्जगवंत ॥व० ४॥ घर आवी एम चिंतवेजी, जाया नंदन सात; बालपणे न रमाम्हीयोजी, एकहि धीग मुज्ञ मात ॥व० ५॥ ज्जागवंती सा ज्जामनीजी, बालिक जेहने गोद; हुलरावे हयमे धरीजी, वासर जाय विनोद ॥व० ६॥ में कुण कुण पुरव ज्जवेजी, पोढा पातिक कीध, केसर वरणो नानम्होजी एहवो मुज्ञ दैवे न दीध ॥ व० ७ ॥ एम केहती धरती लीखेजी, सजल सलुणां नेण; थया अणगमता कालनेजी, वाली सखी न वेण ॥व० ८॥ अरती अज्जुर वाधी घणीजी, आहट डुहट ध्यान; पगे लागवा आवीयोजी, एटले श्री नृप कान ॥व० ९॥ ज्यार ज्यारसें मायनेजी, हरी नमे नित्य आय; एम छ मासे वांदताजी, नीज जननीना पाय ॥व० १०॥ निज परवेरां आंतरोजी, मोटा नाणे कोइ; मेह अने शशी देवताजी, सहुने सरीखां जोइ ॥व० ११॥ ज्पजणो अरती तणोजी, माता मनहि मोझार; श्री हरीजीनो आवणोजी, तिणही वार विचार

॥व० १३॥ वीनय करीने वीनवेजी, जननी श्री हरी राय; माय मया करी नांखीएजी, आरती एवडी कांइ ॥व० १३॥ अति लांबो निसासफोजी, मेलहि वोली माय; सात नंदन में जाइयाजी, तुझ सरीखा हरी राय ॥व० १४॥ खट नाथ्या सोल्ल सा घरेजी, तुंपण गोकुल मांहि; हुंश न पुगी माहरीजी, वाल रमाडण प्रांहि ॥व० १५॥ वदिनथी परवश पणोजी, वैरी केरे वास; नंदन होवे आठमोजी, तो मुझ पुरे आश ॥ व० ॥१६॥ माय मनोर्थ पुरवाजी, कान्हे किया उपवास; देवचवीने आवीयोजी, राणी उदर निवास ॥व० १७॥ जोज्यो संध्या पुननाजी, माग्या नंदन होइ चेलणा चुप कारणेजी, रोइ न लिहिए सोइ ॥व० १८॥ चोपन सोमी ढालमेंजी, माधव केरी मात; श्री गुणसागर सुरी कहेजी, सुख मांही दिन जात ॥व० १९॥ ॥दोहा॥ नविक जिव प्रतिवोधवा, जिनवर करे विहार; पाप तिमर निरघाटवा, सहस किर्ण दिनकार ॥१॥ गर्न दिवस पुरा करी, जायो सुंदर नंद; घर२ रंग वधामणां, घर२ अति आनंद ॥२॥ ढाल १५५ मी॥ नमिराय धन धन तुम अवतार ॥ ए देशी ॥ राणीजी हो जायो पुत्र रतन, जीहो कोमल जिम गजतालु; लाला०॥ नामे गंज सुकुमाल ॥रा० १॥ जीहो हरख्यो श्रीहरी राजीयो ला०॥ हरख्या दसही दसार, जीहो हरखी माता देवकी ला०॥ हरख्यो सहु परिवार ॥रा० २॥ जीहो वंदिखाना मोकलां १०॥ किधां वहु मंमाण, जीहो नगरीनी शोना घणी ला०॥ वाजे गुहिर निसाण ॥ रा० ३ ॥ जीहो यादव नारी घाटि ला०॥ आवे गावे गित, जीहो आरण कारण किजीए ला०॥ साचवीए सुन रित ॥रा० ४ ॥ जीहो दिजे म [illegible] मोटका ला०॥ [illegible] जीहो [illegible] ला०॥ [illegible] नंडार ॥रा० ५॥ जीहो वारसमो

दिन आवीयो ला०॥ नाम दियो अभिराम, जीहो चंदकला जिम वाधतो ला०॥ रुप कला गुण धाम ॥ रा० ६ ॥ जीहो खेलावणी हुलरावणी ला०॥ चुंबावणी चित लाय, जीहो न्हवरावणी पेहरावणी ला०॥ आंगी अंग लगाय ॥ रा० ७॥ जीहो आंखलमी अंजावणी ला०॥ जीहो भाले करावण चंद, जीहो गालाटीकी सामली ला०॥ आलंगन आनंद ॥रा० ८॥ जीहो पगमंडण ग्रहि आंगुली ला०॥ ठमुक ठमुकती चाल, जींहो बोलण भाषा तोतली ला० ॥ रिझावणी अति ख्याल ॥रा० ९॥ जीहो रोटी दहिय जिमावणी ला० ॥ खिला बाल विनोद, जीहो सबहीपरे माय देवकी ला०॥ पावे अधिक प्रमोद ॥रा० १०॥ जीहो पढयो गुण्यो मति आगलो ला०॥ यडुपति जिवन जोय, जीहो प्यारो प्राण थकी खरो ला०॥ माताजीने सोइ ॥ रा० ११ ॥ जीहो एतले नेम समोसरया ला०॥ वंदन देवमोरार, जीहो लघु भाइ आगे करी ला०॥ परीवरीयो परिवार ॥रा० १२॥ जीहो सोमल ब्राह्मणनि सुता ला०॥ परणावणने काज, जीहो मुकि मंदिर आपणे ला०॥ जइ वांदे जिनराज ॥रा० १३॥ जीहो पुजी प्रणमी सांभलेला०॥ वेठि प्रपदा वार, जीहो श्री जिनवाणी विस्तरी ला०॥ भविकजना सुख कार ॥रा० १४॥ जीहो पंचावन सोमि ढालमें ला० ॥ कुंवर गज सुख माल, जीहो श्री गुणसागर सुरजी ला०॥ धर्म सुणे सुविसाल ॥रा० १५॥ ॥दोहा॥ उपदेसे श्री नेमीजिन, जिवा जिव विचार; दान शियल तप भावनां, श्री जिन धर्म उदार ॥१॥ भव भय हरणी भावना, बार तणो विस्तार; विविरा शुं विवरी कहे, त्रिभुवन तारण हार ॥ २ ॥ ढाल १५६ मी ॥ ए जग थिर नहीं ॥ए देशी॥ जे दिन जायलेरे, फिरी नावेले तेह; चेत२ नर चेतिए हो, कर२ धर्म सनेह ॥जे० १॥ अथ अनित

७७॥

नावना ॥ ए ससार असार विच्यारो, पंखी तरुवर वासो; हाट मिला वाजागर केरो, पसरे प्रगट तमासो; तिरथ
मेलो जेहवो तेहवो, जग व्यवहार विमासो ॥जे० २॥ अभ्र पटल जिम उपजे विणसे, तनु धन योवन जाणो; गगन
नगर सरीखो साचो, पदमनी प्रेम प्रमाणो; साजन साथ सरिस सुहावो, विद्युतवान वखाणो ॥जे० ३॥ १॥ अथ शरण
नावना ॥ मृग शावक वन मांही फरतो, करतो केली विचारो; सिंघसुरी देखी सुविसेखी, जे चलियो निरधारो; काल
तणी असवारी होता, कोइ न राखण हारो ॥जे० ४॥ २॥ अथ संसार नावना॥ चउगति फेरी करीय घणेरी, अ
मर थयो ए प्राणी; नरगातिरी अवतार अनंता, पाप तणी अहि नाणी; नरनवे धन२ रामा रामा, विजी वात न जाणी
॥जे० ५॥ ३॥ ॥अथ एकत्व नावना॥ जिहां तिहां नर आप एकिलो, फिरे रमतो सोइ; परनवे जातां जोइ पनो
ता, साथे नावे कोइ; कां धन कां धणियाणी धराति, धर्म सखाइत होइ ॥जे० ६॥ ४ ॥ ॥अथ अनत्व नावना ॥
जिव सचेतन देहि अचेतन, एक कहो किम होवे; उशिव वंठे उनव उठे, उजागे उसोवे; आतम देहि विचारे युदि
सोइ अथ मल धोवे ॥जे० ७॥ ५॥ ॥अथ अशुचि नावना ॥ काय अशुचि अनेक प्रकारे, धोया सुधि न पावे;
वसहि द्वार श्रवे निसवासर, ते किम सोचल हावे; साते धाते पुरित ए तनुं, वाहिर सोह देखावे ॥ जे० ८॥ ६॥
॥अथ आश्रव नावना॥ श्रवण नयणने घाण घणी परे, रसना फरस कहि जे; हरिण पतंग नमरने मछा, मयंगल
मरण लहि जे; एक२ इंद्रिय कारणेए तो, पंचे क्युंनकशीजे ॥जे० ९॥ ७॥ ॥अथ संवर नावना ॥ आश्रव
रोक्या होवे संवर, संवरथी फल मोटो; व्यापारी व्यापार करतां, जाणी न खाइ खोटो; समझ २रे, जिव सलुणा

॥१७

दुख घणो सुख थोडो ॥जे० १०॥ ८॥ ॥अथ निर्जरा भावना॥ उदय उदिरण दुनी प्रकारे, कर्म निर्जरा कहिए श्री जिन सासन छांडो अनेरां, एतो मर्म न लहीए; तप जप दुःकर करणीने बले, निश्चल होइने रहिए ॥जे० ११॥ ए॥ अथ लोक भावना ॥ चउद राज तिम उंचो निचो, लोक प्रमाण विचारो; सात पांचने एक राजवर, चउमपणे अवधारो; किन न किणहि कोइ न करेगो, जीमछे तिम निरधारो ॥जे० १२॥१०॥ ॥अथ बोध भावना॥ थावरथी ए त्रसपणो दुर्लभ, त्रसथी इंद्रीपुरा; पांचे इंद्रिमें माणसनी गती, आर्य खेत्र सनुरा; साधु योग संजमनो धरवो जोतो पुन्य अंकुरा ॥जे० १३॥ ११॥ ॥अथ धर्म भावना ॥ धर्म विन्यासब धंधो दिसे, कांइ हाथ न लागे; धर्म विन्या रुलीयो भवदमें, रे मन मुरख आगे; वित्यो काल अनंतो सोवत; अवहि क्युं नवि जागे ॥जे० १४॥ आगे जिव अनंत विगुतो, पडीया घन प्रमादे; विखया वाह्या न रह्या साह्या, माची रह्या उनमादे; पण परमारथ एह न जाण्यो, तरवो गुरु प्रसादे ॥जे० १५॥ १२॥ एकसो छपनमी ढाले, श्रीमुख जिन उपदेशा; भविकजना मन मान्या कानी, किधा क्रोध किलेसा; श्री गुणसागर सुरी सोहावे, समताभाव विशेशा ॥ जे० १६ ॥ दोहा ॥ जिन वाणी श्रवणे सुणी, गज सुकुमाल कुमार; विषयाथी विरम्यो खरो, मन शुं करे विचार ॥ १ ॥ विषया विषहीथी बुरी, विषीया नाम कुनाम; विषया वाह्या मानवी, दो भवगमें निकाम ॥२॥ आग अने विषया कही, एक सरीखा जोय; सलगीने बाहिर पडी, हाथ न आवे सोइ ॥३॥ धुरही दाबी राखीए, न लहे अति विस्तार; ए निश्चय मनमां धर्यो, व्याह तणो परीहार ॥४॥ ढाल १५७ मी॥ कांनजी मेलोने कांवलीरे ॥ ए देशी ॥ प्रभु प्रणामी घरे

आवीयोरे, माताजीनी पास; अनुमतीने व्रतावलोरे, संजमसु उल्हास ॥१॥ माता अनुमत दिजीएरे, लेशुं संजम
नार; जइ जोउं व्रतावलोरे, मुकी मनोहरनार ॥ मा० २ ॥ मुर्गणी मा देवकीरे, वात सुणंता ताम; जाया तुं मुज
वाल्होरे, प्राण थकी अभिराम ॥ मा० ३ ॥ उरलभ उंवर फूलजीउंरे, सांभलयो जग मांही; तो तो देखवो किहांरे,
तिम तुम दरसण प्राही ॥ मा० ४ ॥ पांन फूलनो जीव तुंरे, कोमल केली समान; लहुडने अति लाभीलोरे,
लाज न लिलां थांन ॥ मा० ५ ॥ चारीत्र कोगेठे खरोरे, जिन वचने विख्यात; मिण तणे दांते करीरे, लोह चणा
न चवात ॥मा० ६॥ वाय भरेवो कोथलोरे, चालवो खांडा धार; सायर तरवो भुज बलेरे, दुःकर संजम भार ॥मा०
७॥ धुरी होइ व्रतावलोरे, डांभी घर व्यापार; पछी परीसह उपज्योरे, ढिला पमेही अपार ॥ मा० ८ ॥ लुदलजावे
जातीनोरे, दोमें एक नहोय; ना घर ना संजमपणोरे, वादी गमे भव दोइ ॥ मा० ९ ॥ कुमर कहे माजी सुणोरे,
रागीनो ए माग; जाणेवो जुगतो सहिरे, पण जुदो वेराग ॥ मा० १० ॥ जे वंछक एह लोकनारे, नवि वंछक
परलोक; ते कायरने दोहिलोरे, जालवणो जगी जोग ॥ मा० ११ ॥ सुरवीरने साहसीरे, त्रिकरण सुधा जास;
तेहने तो सहु पाधरोरे, कांइ न दोहिलो तास ॥ मा० १२ ॥ योवनने धन कारीमोरे, अने कारमी देह;
साणपणानो नाम एरे, संजम साथे सनेह ॥ मा० १३ ॥ धनीजवीसंजोगथीरे, त्रपती न पावे जीव; संतो
खी सुखीया महारे, समतावंत सदिव ॥ मा० १४ ॥ समझावी संजम लिभेरे, नेमी जीनेशर हाथ; ध्यान
धर्‍यो समसानमेरे; उज्ज दिल जगनाथ ॥ मा० १५ ॥ सोमल ससरो आवियोरे शिर माटीनी पाल;

अंगारा लेइ खेरनारे, धंग धगता ततकाल ॥ मा० १६ ॥ मेलि मस्तके चालीयोरे, साधु न चुक्यो ध्यान; चमते परीणामें लह्योरे, केवल पद निरवाण ॥ मा० १७ ॥ खटमासी रजनी थइरे, सुत विरहे विक राल; प्राति पधारी प्रभु कन्हेरे, देखण गज सुकमाल ॥ मा० १८ ॥ वाडा उपर हिसतिरे, सुरहि आवे जेम; सुत मुख निरखण सांभलिरे, माता आवी तेम ॥मा० १९॥ अकुलाणी अणदेखवेरे, पुछ्या त्रिभोवन स्वाम; नंद हुओ आनंदमेरे, पोंहोंचा अविचल ठाम ॥मा० २०॥ फरसी छेदी माली जीउरे, ढली पमी सामाय; रोवे गोरी गहवरीरे, हरी हलधर डुख थाय ॥मा० २१॥ हरी पुछ्यो जीनवर कह्योरे, धसकि छटशे प्राण; बंधव हता ते जाणवो रे, स्वामी कह्या सहि नाण ॥मा० २२॥ सेरी वाटे आवतांरे, सोग धरी हरीराय; सोमलसां साहीमें मुउरे, किधांना फल पाय ॥ मा० २३ ॥ उत्कृष्टा पातिक जे करेरे, उत्कृष्टी हि वार; पापे पचे घणुं आपणोरे, नाहि संदेह लगार ॥ मा० २४॥ जे हुवा त्रिभोवनपतिरे, तेहनो सोग न कोय; कीधी हरी समझावणिरे, नेमी जिणंदा जोय ॥ मा० २५॥ सतावन सोमी ए ढालमेंरे, मुगती गया सुकुमाल; श्री गुणसागर सुरजीरे, अणमुं चरण त्रीकाल ॥मा० २६॥

॥ दोहा ॥ श्री हलधर हरीशुं कहे, पुन्य घटंतो आप; दिसेछे तेहि कारणे, उपज्यो ए संताप ॥ १ ॥ मोटाना तो कुंकरा, आसंगे नहि कोइ; भाइ हण्यो सुकुमालसो, वडो अचंभो जोइ ॥ २ ॥ ढाल १५८ मी ॥ कपुर होवे अति उजलोरे॥ ए देशी ॥ श्री बलदेव विनो करीरे, पुछ्या नेमी जीनेस; होतार्थ जे गलोरे, सुख डुख हरख किलेस ... करी स्वामी करो प्रसाद. जे उगे ते आथमेरे, कोइ नाहि विखवाद ॥ म० २ ॥ ए नगरी ए साहिबीरे.

आवीयोरे, माताजीनी पास; अनुमतीने उतावलोरे, ...सु उल्हास ॥१॥ माता अनुमत दिजीएरे, लेशुं संजम नार; जइ जोउं उतावलोरे, मुकी मनोहरनार ॥ मा० २ ॥ मुर्छाणी मा देवकीरे, वात सुणंता ताम; जाया तुं मुज वाल्होरे, प्राण थकी अभिराम ॥ मा० ३ ॥ उत्तम भंवर फूलजीउंरे, सांभलवो जग मांही; तो तो देखेवो किहांरे, तिम तुम दरसण श्राही ॥ मा० ४ ॥ पांन फूलनो जीव तुंरे, कोमल केली समान; जहुउने अति लाभीलोरे, लाभ न लिलां थांन ॥ मा० ५ ॥ चारीत्र कोगेठे खरोरे, जिन वचने विख्यात; मिण तणे दांते करीरे, लोह चणा न चवात ॥मा० ६॥ याय भरेवो कोथलोरे, चालवो खांमा धार; सायर तरवो भुज बलेरे, दुःकर संजम भार ॥मा० ७॥ धुरी होइ उतावलोरे, गंभी घर व्यापार; पठी परीसह उपज्योरे, ढिला पमेही अपार ॥ मा० ८ ॥ छुदलजावे जातीनोरे, दोमें एक नहोय; ना घर ना संजमपणोरे, वादी गमे भव दोइ ॥ मा० ९ ॥ कुमर कहे माजी सुणोरे, रागीनो ए माग; जाणेवो जुगतो सहिरे, पण जुदो वैराग ॥ मा० १० ॥ जे वंछक एह लोकनारे, नावि वंछक परलोक; ते कायरने दोहिलोरे, जालवणो जगी जोग ॥ मा० ११ ॥ सुखीग्ने साहसीरे, त्रिकरण सुधा जास; तेहने तो सहु पाधरोरे, कांइ न दोहिलो तास ॥ मा० १२ ॥ योवनने धन कारीमोरे, अने कारमी देह; साणपणानो नाम एरे, संजम साथे सनेह ॥ मा० १३ ॥ धनजिवीसंजोगथीरे, त्रपती न पावे जीव; संतो खी सुखीया महारे, समतावंत सदिव ॥ मा० १४ ॥ समझावी संजम लिभरे, नेमी जीनेशर हाथ; ध्यान धर्यो समसानमेरे; छत्र दिन जगनाथ ॥ मा० १५ ॥ सोमल ... आवियोरे, शिर माटीनी पाल; ॥१

सुवमागीरंद ॥ १ ॥ पण न चले नवी तव्यता, एहनो जोर अपार; संब प्रमुख अति सामटा, खेलण चल्या कुमार ॥ २ ॥ ढाल १५ए मी ॥ हवे राणि पदमावतिरे हां ॥ ए देशी ॥ आवि मदिरा वासनारे हां, हरख्या कुंवर जाम; नावि वलवंति, सघला आव्या आसनारे हां; खाधी मदिरा ताम ॥ ना० १ ॥ छाक चढ्यो उयलां घणोरे हां, घुमता चालंत ॥ ना० दिगो दिपायण जतिरे हां, तव अमरष पालंत ॥ ना० २ ॥ संब कहे सहु सांनलोरे हां, एहनो किजे नास ॥ ना० ॥ नगर अने घर यादवांरे हां, एहथी छे विपनास ॥ ना० ३ ॥ लात धमुका लाकमीरे हां, गाढो कुट्यो तेह ॥ ना० मुवो जांणि मुकियोरे हां, दियो संधुकण एह ॥ ना० ४ ॥ कुमर साप मसावियोरे हां, सूरि माढमें बाल ॥ ना० ॥ लग्नवार ते वर हुवेरे हां, आइ मील्यो ततकाल ॥ ना० ५ ॥ प्रति केसव शकरेरे हां, पावे सही वीपनास ॥ ना० ॥ सीतापती नल पांमवारे हां, नोगावियो वनवास ॥ ना० ६ ॥ दूःसासन खेंच्या खरांरे हां, पंचालिना चीर ॥ ना० ॥ जुजा उपामी नीमजीरे हां, हणीया सोइविर ॥ ना० ७ ॥ किचकतणा कुसीलथीरे हां, बंधव सताहि संहार ॥ ना० ॥ सयण सयाणो स्युं करेरे हां, नाविनो अधिकार ॥ ना० ८ ॥ रिसवसे तिहां तापसेरे हां, किधो इम नियाण ॥ ना० दूखदाइ द्वारामतिरे हां, होज्यो तपहि प्रमाण ॥ ना० ए॥ वात सुणी उतावलांरे हां, हरी हलधर आवंत ना० ॥ विविध प्रकारे खामणारे हां, पगे लागी खामंत ॥ ना० १०॥ ए मुरख मुफ नंदनेरे हां, खिजाव्या तुम्ह आज ना०॥ क्षमा करो रुषीरायजीरे हां, तुम्हने सघली लाज ॥ ना० ११ ॥ चंदन कंचन सेलमीरे हां, अगर रसोइ वंस ना० ॥ संताप्या ए अति घणांरे हां, रंचन राखे मंस ॥

ए श्री कृष्ण नरेस; कब लगी रेहस्ये एहवोरे, यादव जोर विशेष ॥ म० ३ ॥ नेमी कहे सहु सांभलोरे, जुवो जग
ववहार; मिलतां दिन लागे घणारे, विछडता नही वार ॥म० ४॥ रंग कुसंभ पतगनोरे, दिसे अधीक सुचंग; दीवस
दसाने आंतरेरे, सो फीर थाइ विरंग ॥म० ५॥ तन धन योवन गारवोरे, परीअणने परीवार; च्यार दिवसनो चह
चहोरे, पाछे विरस अपार ॥ म० ६॥ द्वारामति नगरी तणोरे, मदिरा हेते विणास; वारसमे वरसें होसेरे, करस्ये ए
श्री व्यास ॥म० ७॥ निज खामे श्री हरी तणोरे, जरत कुमरने हाथ; वन कोसवे निश्चे गुरे, मरण कह्यो जगनाथ
॥म० ८॥ एह सुणंता वातडीरे, खलभलीया सहु कोय; यारती उपजे अति घणोरे, हरी हलरने जोय ॥म० ए ॥
नाइ सुतने सुंदरीरे, अवर अनेरा कोइ; दिख्या लिए सादरीरे, श्रीहरी अनुमति होइ ॥ म० १० ॥ केता एक दि
हा थहिरे, केता नगरी मोझार; आया हरी निज मंदिरेरे, उपकर्मा अधिकार ॥ म० ११ ॥ मदीरा नगरी वाहिरेरे,
कीधी सघली जाम; दिपायन तप आकरोरे, तपवा लाग्यो ताम ॥म० १२॥ जरत कुमर उदाशीलरे, वनही मांही
वसंत; पामो पथर उपरेरे, पाढो करी घसंत ॥म० १३॥ खिस्यो प्राणि तव आगलोरे, पाणी मांही पमंत; गलीयो
मोटे माछलेरे, पमीयो जाले तुरंत ॥म० १४॥ उदरथी कियो टूकडोरे, तिर तणे आकार; निकलीयो ते तिरशुंरे,
घायो हरीण गेमार ॥ म० १५ ॥ हरीण गयो वनमें चलीरे, मार्यो जरत कुमार; तरकस मांहि राखीयोरे, सोइ
तिर ते वार ॥ म० १६ ॥ अगवन सोमी ढालमेंरे, साचा श्री जिन बोल; श्री गुणसागर सुरजीरे; अनित्य समा
नेर मोल ॥ म० १७ ॥ ॥ दोहा ॥ चंद चले सुर्य चले, चले सोइ निरंद; शेष चले सायर चले चले

॥ इति ढालसागर प्रबंधे हरिवंशनामा अष्टमोऽधिकारः समाप्तः ॥

जा० १२ ॥ व्यास कहे हरीजी सुणोरे हां, जुगी थव मनोहार जा० ॥ फरय। नियाणो आकरोरे हां, ते न मीटे
किरतार ॥ जा० १३॥ तुम्ह दो बंधव बाहिरोरे हां, अपर न छोफूं कोइ जा०॥ संजमधारी उगरेरे हां, तुंगरसे गृहि
होइ ॥ज० १४॥ तव घर आयो आपणोरे हां, माधव महीमावंत जा० ॥ क्षायक समकित नो धणीरे हां, निश्चेवंत
अनंत ॥जा० १५॥ व्यासे नियाणो बांधीयोरे हां, द्वारामती डुख हेत जा०॥ उपज्यो अग्नी कुमार मेरे हां, आणी
मिल्यो संकेत ॥ जा० १६ ॥ ए गुण सातीसो ढालमेरे हां, लिजे संजम जार जा०॥ श्री गुणसागरशुंर वधेरे
हां, सांधानो परीवार ॥ जा १७ ॥ गाथा ॥ चोपाइ ॥ खंम खंम रस छे नव नवा, सुणता मिवा साकर लवा,
श्री हरीवंश चरित्र जय जयो, आठमो खंम ए पुरण थयो ॥ १ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

केलवणीनी कोम ॥१॥ जीसथी तिम धसकी पमी, न रही सुध लगार; वांहे धरी वेगी करी, करी२ अति उपचार ॥ २ ॥ ढाल १६१ मी ॥ सोदागर लाल चलण न देशा ॥ ए देशी ॥ प्यारे हमारे लाल एसी न कीजे, तुम विण आठे लाल कहो किस किजे प्या०॥ छातिया मेरी लाल तिखी कांति, कालज कापे लाल अति अकुलाती ॥प्या० १॥ तुम विरहेरे लाल वितक विते, फीर क्युं चाहुं लाल वेदि न छिते प्या०॥ दुख छतिया मेरे लाल आगज छवि, तनुं जालेरे लाल न समझे झुठी प्या०॥ छतियामें लाल दुख न समावे, दाडिम ज्युंरे लाल फाटी आवे ॥ प्या० २॥ तुम्ह वीरहेरे लाल वितक विते, फीर किउं चाहुं लाल उदि न छिते प्या०॥ दुखहुं तेरे लाल जेते न्यारे, तुम्ह आइरे लाल नवि विसारे ॥प्या० ३॥ च्यारे दिनाकी लाल करीय उजवाली, पुनरपी थाइ लाल रजनी काली प्या०॥ दइय मनाइ लाल ए दिन लोझे, कहा करो हो लाल तोझा तोझे ॥ प्या० ४॥ वेटा केरी लाल आस्या एति, कहिय न जाइ लाल अंबर जेति प्या०॥ देश प्रदेशा लाल सुखनीरे साइ, माताने हुवे लाल सुतथी वधाइ ॥प्या० ५॥ सुंदर जाइ लाल सुंदर जायो, नेह वसेरे लाल ज्युं घर आयो प्या०॥ सुंदर जाइ लाल खरीय सपुति, सींहणी ज्युंरे लाल सुखभर सुती ॥प्या० ६॥ उंची लेइरे लाल आभे अधाइ, निचि किएरे लाल जात वधाइ प्या०॥ दुख न सहाइ लाल कहि जे कासुं, सोका वासो लाल होसे हांसुं ॥प्या० ७॥ लाल नगीनो लाल तुं मुझ किको, तुझ विण लागे लाल ए सहु फिको प्या०॥ रोवंत अति हे लाल रुखमणी राणी, भर२ आवे लाल नयणों पाणी ॥प्या० ८॥ मदन ‹हे लाल सायन रोजे, जेम दिन आयो लाल कियुं सोपे सोजे प्या०॥ मोहन किजे लाल सोहन साच्यो, संग अनेके

॥खंड ए मो॥ ॥दोहा॥ मन वचन क्रमणा सुधशुं, नेमी नमुं सुखकार; अव नवमा अधिकारनो, नवीक, सुणो सुविचार ॥१॥ कामदेव एम चिंतवे, सारी जे निज काज; संसारीक सुख जोगव्यां, साधी जे शिवराज ॥२॥

॥ढाल १६० मी॥ श्री रामजीए नार गमाइ हो ॥ए देशी॥ अनुमती मागे हो, विनो करी पगे लागे; मदन वज्रो हरी आगे, मोह निंदथी जागे ॥अ० १॥ अनुमती नाम सुणंता मुरछया, हरी हलधरशुं देवा हो; वज्र पात सम वात विचारी, धरणी पड्या ततखेवा हो ॥अ० २॥ संजम स्योने स्यो तुं कुंवर, किजे जोग विलास हो; विणहि धाम्हे जे विख खाइ, ते तो पावे हास हो ॥अ० ३॥ कुंवर कहे जिन वचने शंका, मुझने कांइ नावे हो; द्वार थकी निज मंदीर लाग्यो, काढण कोइ न पावे हो ॥अ० ४॥ पंमीत मुरख बुढा बाला, कायर सुरा जोइ हो; राजा राणी रावसुत आगे, रहेण न पावे कोइ हो ॥अ० ५॥ आदीनाथ आदी चोवीसे, जिनवरचक्री बारे हो; केसव भुग गण हरने हलधर, ए सहुए यम सारे हो ॥अ० ६॥ मातपीताने बंधव बेटा, वार अनंता पाया हो; परजव जातां कोइ पनोता; मुझने आमा नायाहो ॥अ० ७॥ जुल्योतूं तो अतिहीं भुल्यो, अव जुल्यो नवी जाइ हो; अणजाण्या विप पाथो केवल, जाण्या विप न खवाइ हो ॥अ० ८॥ जगत तणी स्थिती क्षणीक देखी, थयो हुं नववैरागी; द्यो अनुमति तोली चंदिक्षा जिन वचने रढ लागी हो ॥अ० ९॥ समझाव्यो वाधाने बुढो, समझाव्यो निज तातो हो; चारीत्रने उमाह्यो अधीको, अव गमे नहि वातो हो ॥अ० १०॥ सागी अने एकसोमी ढाले, हरीनो लहि आदेसो हो; श्री गुणसागर सुरी पयंपे, वाध्यो नाव विशेसो हो ॥अ० ११॥ ॥दोहा॥ मातासुं विनति घणी, काम करे करजोड; संजम लेवा मेलवे,

देखजी; वरशी तप तरु गली चाटंतो, राचो रुप विशेषजी ॥ बो० ८ ॥ भरत सुंदरी साथे मोह्यो, दिख्या लेण न दिधजी; साठ सहस वरसां तप तपवे, काया खिणी किधजी ॥ बो० ९ ॥ प्रजापति नृप कियो किरावर, ते तो न करे कोइजी; दस कंधर दस माथाशोति, लंका सरीखी खोइजी ॥ बो० १० ॥ रामचंद्र शिताने काजे, किधो किम विलापजी; पवन जय पदमनीने लीधे, देह तजे तो आपजी ॥ बो० ११ ॥ सातनुं नंदन आरतीवंतो, भिखस पुरी आशजी; करम तां कुतिने कारण, पांडव हुअ उदाशजी ॥ बो० १२ ॥ देव हमारे सुसरे सुंदरी, सासु काजे किलेसजी; अष्टादश अक्षोहणीशुं, मारयो वमो नरेशजी ॥ बो० १३॥ पांडव हरीपर खंड शिधाव्या, पंचालीने कामजी; नाम कहुं केतां जग जोतां, पार न पावे स्वामजी ॥बो० १४॥ भैरव झंपा कमलनी पुजा, करवत कासि मांहिजी; पंचागनी साधे सीर उंधे, धुअ घुटे आंहिजी ॥ बो० १५ ॥ एहवि कलपना करीने कामी, वंछे नारी भोगजी; नाह पामीनें परहरीए, किए दीठो परलोकजी ॥बो० १६॥ काम कहे कामनी तुमे सांभलो, भोग भोगवी भरपुरजी; योगीयोग युगती जालवतां, हुवा मोक्ष हजुरजी ॥बो० १७॥ तुम वाट पाडी मुगत पंथनी, जाणी श्री जीनरायजी; सहस बाणुं तजे समकाले, तो वैरागी थायजी ॥ बो० १८ ॥ चारीत्र कठिण होवे कंता, करवो केसां लोचजी; परघर आसा धरवि नीतकि, भीक्षाकेरो सोचजी ॥बो० १९॥ उन्हो पांणी आठण वांणी, पियो कहो किम ...यजी; अणुंवाणा पाइ चालेवुं, फीरी पछतावो थायजी ॥ बो० २० ॥ नाहविन्यां नारी नीरधारी, निपटनी कामी ...ी; अंगुठाविण आंगुलीया जीम; नारी निहाली जोयजी ॥बो० २१॥ सासरडे सखसाता न लहे, न लहे पियर

किम ढाजे, सर्व घन ज्युंरे लाल फोगट गाजे प्या० ॥ लाल प्राणी नाच्यो ॥ प्या० ए ॥ अथांर मलार लाल फल किम ढाजे, सर्व घन ज्युंरे लाल फोगट गाजे प्या० ॥ उत्कष्टीरे लाल किजे करणी, तो तो जन्म जरारे लाल पुंठे लागी, कियुं तुटिजे लाल तेहथी नागी ॥ प्या० १०॥ सिध थइने लाल त्रिज्ञोवन जोसुं ॥ प्या० मीटेरे लाल यमकि मरणी प्या० ॥ अजर अमर लाल अब हम होसुं, एकसव सोमी लाल ढास सोहावी, ११॥ देव युगति लाल कहि समजावी, काम कुमरे लाल माय मनावी प्या०॥ कहे गुणासुरी लाल नावि मन नावी ॥प्या० १२॥ ॥दोहा॥ मातानी अनुमित लइ, अंते पुरमां जाय; समजावे अंते वरी, वाणी वदे सुखदाय ॥१॥ प्रीतीवंत नीसुणो प्रिया, हमे ग्रहां वांदिप; पाछे रुमा चालजो, एह हमारी शिख ॥२॥ ढाल १६२ मी ॥ वीसजणा शुं वाद न कीजे ॥ ए देशी ॥ बोले राणी अति वीलखाणी, नाखे नयणे पाणीजी; आरीतिवंत आतुर सयली, नांखे गवर वाणीजी ॥बो० १॥ प्रीतम प्रेम विहुणी वाणी, किम नांपोछो आजजी, चारित्रनी चतुराइ छांमो, तुम्हने करवो राजजी ॥ बो० २॥ तुम्ह प्रभु इंद्र तणे अवतारे, हम इंद्राणी रुपजी; जिजे लाहो नरजव केरो, सांजल जादव नुपजी ॥ बो० ३ ॥ नारीने कारण नर जग में, कष्ट करतां कोमजी; एक मना ढना नृप आगे, सेव करे करजोमजी, ॥ बो० ४ ॥ अधीक जयंकर सागर लंघे, अटविमें पथ संतजी; रोल महा संग्रामे सुरा, आतुर थइ धसंतजी ॥ बो० ५ ॥ अहिला रुपे इंद्र विगुतो, ए प्रगटो अवदातजी, एक लाख हजारा केइ; न सरयुं साधी लांचजी ॥ बो० ६ ॥ पारासर सरीखां पातरीयो, पातरीयो श्री व्यासजी, सतकी वेसा शुं पातरीयो, पांम्यो प्रांण विणासजी ॥ बो० ७ ॥ ब्रह्मा पुत्रि शुं पातरीयो, तापस तरुणी

॥ सं० ८ ॥ एम सुणंता आया, जीनराज समीपे सोहाया; तव श्री मुखे संजम पाया हो ॥ सं० ९ ॥ सांब कुमर वर वैरागी, वृत साथे महा लव लागी; ए मदनतणी परे त्यागी हो ॥ सं० १० अते उरए विधि किजे, पिउ साथे संजम लिजे, राजेमती पासे रहीजे हो ॥सं० ११॥ भानु कुमरे पण लिधो, चारीत्र साथे चित्त दिधो; तिनो पण कारज सिधो हो ॥ सं० १२ ॥ रुखमणी आदे पटनारी, ए आठे सुविचारी; चारीत्र लिधो सुखकारी हो ॥ सं० १३॥ मदन महा मुनिराया; परमारथ शुं चित लाया; ए साध सकलहि सुखदाया हो ॥सं० १४॥ त्रेसठ अने सोमी ढाले, मुनी चोखुं चारीत्र पाले, गुणसागर कुल अजुवाले हो ॥ सं० १५॥ ॥दोहा॥ हरी हलधर जीनने नमी, आंसु ढाले अपार; मन मेली कुंवर कन्हे, घर आया तेहिवार ॥ १ ॥ मेहेल मांहि नवि सुंदरी, सभा मांहि सुकुमार; अण देख्या हरी जाणीयो, सुनो सहु संसार ॥ २ ॥ ढाल १६४ मी ॥ राम रसे राची घणुं ॥ ए देशी ॥ श्री हरीजी आलेंगे नहि, ते वात न जाइ कहि हो ॥ श्री० १॥ रोमरं सं राचियो, रुखमणी केरो राग हो; खांचि काढयो उखहि, नहि उपधनो लाग हो ॥ श्री० २॥ सुना मंदीर मालिया, सुनी घर पटसाल हो; सुनी सेज भरामणी, विण रुखमणी सुकुमाल हो ॥श्री० ३॥ खाट हिंचोले हिंचता, हरीनो हियो भराय हो; उंचो नीचो देखहि पतिव्रता नहि पाय हो ॥ श्री० ४॥ भोजन तो भावे नहि, नहीं पाणी प्यास हो; आख्या न लागे सोवतां; लांबा लिए निसास हो ॥ श्री० ५॥ जो कदाचित दैवथी, पलक मझांति जोय हो; सुपने रुखमणी स्युं खरी, वात करे हरि सोय हो ॥ श्री० ६ ॥ जाग्याथी कांइ नहीं, आरतिवंत मोरार हो; आव्य निरासी निंद्रभी, फीरी ज्युं देखुं नार हो ॥ श्री० ७॥ उठत

लाले आए नाच्यो ॥ प्या० ए ॥ अथीर मेलोरे लाल कहो किम छाजे, सर्द घन ज्यरे लाल फोगट गाजे प्या० ॥
मानजी; धणी गया धणियापो तुटे, घर आंगण मसाणजी ॥वो० २२॥ बेटा पोता जनक जमाइ, गांठे ऊाऊा दाम
अनवेसर अलगाथी कहिए, तोपण नाम कु नामजी ॥ वो० २३ ॥ धन२ दवदंति सतवंति, धन२ पांमव नार
आपदमांहि साग आहारी, हुइ खिजमतदारजी ॥ वो० २४ ॥ नारीने पियु साथे जजो, कां घर कां वनवास
पतिवृता वृत साचो ते, सुखदुख सरीखो जासजी ॥ वो० २५ ॥ पेछनीलारे संजमलेसा, साधे सानिज काज
महल मुगतमें सामी सरसी, करीसां अविचल राजजी ॥वो० २६॥ वासाठने एकसोमी ढाले, हरख्या काम कु
रजी; श्री गुणसागर नीजपद थाप्यो, श्री अनीरुध कुमारजी ॥वो० २७॥ ॥ दोहा ॥ उछव मांम्यो अतिघ
संजमनो मंमाण; धन विलसे मन मोकले, साजनमल्यां सुजाण ॥ १ ॥ जुपतने जुपतिनी सुता, मीत्रोने परीव
संजम लेवा चालियो, श्री परजुंन कुमार ॥ २ ॥ ढाल १६३ मी ॥ दधीसुत विनतमी सुणाजो ॥ ए देशी
संजम लेवा संचरीयो, समतारससुं चित जरीयो; प्रजु परीवारे परवरीयो हो ॥ सं० १ ॥ हाथी उपर आरोहे,
छत्र मह्या मनमोहे; चामरकि सोजा सोहे हो ॥सं० २॥ तव वाजा वाजे वारु, तव नाचे पात्र उदारु; तव दीजे द
अपारु हो ॥सं० ३॥ हरी हलधर साथे आवे, लोगानो पार नवि पावे; पुरमांहि होइ सिधावे हो ॥सं०४॥ माधव
सरीखो तातो, रुखमणीजी सरीखि मातो; एह अचंजानि वातो हो ॥ सं० ५ ॥ आपण पेतो प्रजुताइ, एस
वाते वमाइ; ठांमी जे ए ठकुराइ हो ॥ सं० ६ ॥ विवी विवी अति बुढी, साचि पति तणी तो कुढी;
तजाइ मनकि गुढी हो ॥ सं० ७ ॥ खेचरनी धरती सांधी, जुचरनि प्रजुता लाधी; प्रजु चाहे सीव आराधी

सतीजी ॥ ए देशी ॥ सांब प्रज्ञुन मुणंद, चारित्र पाळे निरमलोजी; प्रणमे पाय नरंद, आराधे मार्ग नलोजी ॥१॥ जंगम थावर जीव, आप समानां राखइंजी; जाणी दोष अपार, मृषा नाख न नांखीएजी ॥ २ ॥ स्वामी जीव जीन देव, गुरु अदता न आदरेजी; वामी विसुध विशेष, सुधो सीयल समाचरेजी ॥ ३ ॥ अंतर बाहिर नेद, परीग्रह सहु परीहरेजी; रात्री नोजन त्याग, खट काया रक्षा करेजी ॥४॥ जित्या विषय विकार, पांच इंडीना पांमूवाजी; निरलोनी अणगार, आतमराम रमाम्रवाजी ॥५॥ आणी क्षमा गुण सार, पम्रीलेहण नल नावशुंजी; करण विसुध विहार, चतुर महा चित चावशुंजी ॥ ६ ॥ संजम सुध विसुध, मन वचन काय करी जिएजी; शिता दिकनी पिम्र, विविध प्रकारे सही जीएजी ॥७॥ मर्णा तिक उपसर्ग, आया अहिया सिजीएजी; आदि थकी ए टक, पाळा पावन दिजीएजी ॥८॥ साधु गुणे शिरदार, दुःकर तप करणी करेजी; पामी लवधी अपार, सुर थइने संचरेजी ॥९॥ एकांतरथी मांम्री, मासा आया उल्हशीजी; उत्कृष्ठा तप किध, कंचन जिम काया कशीजी ॥१० ॥ पंच वि-गयनो त्याग, अरस विरस अन लिजीएजी; समता साथे सनेह, कदही क्रोध न किजीएजी ॥ ११ ॥ वर्षा काल विषेश, तरु मुले वासो रहेजी; मांसमसा शुं द्वेष, नाणे निश्चलता रहेजी ॥१२॥ शियाले अति टाढ, टाढे काया थर हरेजी; शितल वाजे वाय, वाए शिलक विस्तरेजी ॥१३॥ ग्रीषमकाले जोय, लुकलवाजे आकरीजी; गिरी शिर धरीयो ध्यान, तदाशीलावेअनुसरीजी ॥१४॥ सुता कुसमरी सेज, इहां कांकरामें संथरीएजी; चालंता चढी गजराज इहां अणवाणे पाळ धारीएजी ॥१५॥ करतां सोल शणगार, इहां उढण जिर्ण पछेवम्रीजी; चुवा चंदन वास, इहां

वेसत चालतां, सहस रुखमणी होय हो; आख्या आंगे रुखमणी, सुख पामे अवलोय हो ॥ श्री० ८ ॥ आरा
सयन विलोकतां, वेदन तो असमान हो; साजनिया साले नहि, साले एअहि ठाण हो ॥श्री० ९॥ अवरां पार
नहीं, रुखमणीको सु विलास हो; आंवलिया नवि पुगहिं, आंवा केरी आस हो ॥श्री० १०॥ सिता विछोहो राम
नयण श्रावण मेह हो; ऊमझमी वरसे सही, नारी नीरोपम नेह हो ॥श्री० ११ ॥ हुं कुण तुं कुण एम कह
लखमणजी शुं राम हो; झूरीश पंजर हुवा, मुद्राकंकण नाम हो ॥श्री० १२॥ अवरां साथे न एहवो, जेहवो आ
सुं चाव हो; मलावानि कोपरी, वैद कियो उपाव हो ॥ श्री० १३॥ रुप नहि कांइ एहवो, कला एहवि नांहि ह
मटका मोटा मोहवा, नारी न अवरां मांहि हो ॥श्री० १४॥ अक्कर चारु रुखमणी, हीए वसी हरीराय हो; वास
तो निंदे नहि, रयणी छमासी थाय हो ॥ श्री० १५॥ मदन कुमरनि मुरति, जोवतां जग मांहि हो; सारीखी अ
देखवे, पुरुषोतम डख प्राहि हो ॥ श्री० १६ ॥ हेलविया हीरा तणां, फरकेश हाथ हो; रुखमणीश मदनने, संत
जगनाथ हो ॥श्री० १७॥ चोसठने सोमी ढालमें, ढलंनो अधीकार हो; श्री गुणसागर वखाणीयो, प्रेम परम र
सार हो ॥श्री० १८॥ ॥दोहा॥ सांब अने परयुनने, अधीको धर्म सनेह; तप जप किजे एकठा, सो सीजे नी
देह ॥१॥ चारित्र पाले नीरमलो, ते मोटा मुनिराय; सुमति गुपति खप करे, जीती विषय कषाय ॥२॥ एषणा सु
आहारनि, करे गवेखणा शुध; सुधाचारी साधुनो, मारग ए अविरुध ॥३॥ सतावीसे गुण धरे, साधु तणा सुखका
मुनिवर महियल संचरे, नेमीनाथनिलार ॥ ४ ॥ ढाल १६ ॥ श्री ॥ ...रु पाय, गुणरे गासुं राजेम

ता०॥ डर गयां जे मानवी, आणी कियां हजुर हो ॥ ता० वा० ४ ॥ गढमढ पोल पगारशुं, मंदिर महील उदार हो ता०॥ राज भुवन सुविशेशथी, बलता न लागे वार हो ॥ता० वा० ५॥ बाल हत्या ने गो हत्या, ब्रह्महत्याने नार हो ता० ॥ चार हत्या चंडालनी, किधी कोडी प्रकार हो ॥ ता० वा० ६ ॥ पार नही पसुपंखीया, पदमनी करे पोकार हो ता० ॥ अरे अदेखा पापीया, करे किसुं कीरतार हो ॥ ता० वा० ७ ॥ ढोरु गोरु आपणां, ढाती आगे राख हो ता० ॥ बलती बाला बलबले, दिन महा अति भांख हो ॥ता० वा० ८ ॥ मांहो मांहि आफले, सहि न जाइ झाल हो ता० ॥ निकलवा पावे नहि, विलवे बाल गोपाल हो ॥ ता० वा० ए ॥ नारी भांखे नाहसुं, सघला साथे तोम हो ता॥ जोडीथी मुझथी खरी, अबकां जाउ गेम हो ॥ ता वा० १० ॥ बालक बलतां विनवे, माताजीसुं एम हो ता०॥ जवराअग्नीथी राखिया, आज न राखे केम हो ॥ ता वा० ११ ॥ सेवकसुं स्वामी कहे, नित्यहि रेहेतां पास हो ता०॥ ताप न देता लागवा, अबकां जाउं नास हो ॥ता० वा० १२॥ आ रेणीथी आ णीयो, आंडो घोडो घाली हो ता०॥ अब मुझ मुकि भाइजी, कां जाउं मुह टालि हो ॥ता० वा० १३॥ मीत्र मनोहर माहरा, मतिसागर तुझ नाम हो ता०॥ एह उपद्रव्य जो टले, तो तुझ नाम सकाम हो ॥ता० वा० १४ ॥ कंथने देखी कामनी, कामनिया पण कंथहो ता०॥ जे जीमथा ते तिम बल्यां, अइ अइ भगवंत हो ॥ ता० वा० १५ ॥ बहुंतेरकुल२ कोडीनो, नगरी मांहि निवास हो ता०॥ साठि कहि पुर बाहिरी, ए सहु लह्यो विनास हो ॥ ता० वा० १६ ॥ ढाल ॥ नगरी बलति देखिनेरे, घणु हुवा दलगीर; हयडु आग्युं फाटवारे भाइ, नयणे वलुटा निररे;

मलसु मेली देहमीजी ॥१६॥ पामे था जग त्रास, इहां सांती होइ चाले सराजी; आलस नहीं लगार, साधु क-
रिया सुं सादराजी ॥१७॥ परी साह वावीस, सुरापणथी जितीयाजी; हिंसादिक अढार, पाप सहु अलगा कियांजी
॥१८॥ तेज तपत दिनकार, चंद जिम चढती कलाजी; सायर जेम गंभीर, गुण आचारे आगलाजी ॥१९॥ पमीया
द्वादश अंग, नवीक नरां प्रति बुझवेजी; जावे जावना वार, आपे आपो सुझवेजी ॥ २० ॥ आया गढ गिरनार,
कर्म सबल दल नाशीयोजी; पांम्या केवल ज्ञांन, लोक लोक प्रकाशीयोजी ॥२१॥ ज्यारा प्रकारां देव, खेचर जुचर
आवीयाजी; यादव यादव राय, मुनी दरशण सुख पावीयाजी ॥ २२ ॥ करि केवल उछाह, रुपमुख देशनां सांज-
लेजी; जिवा जिव विचार, संशय जवरुनां टलेजी ॥२३॥ मालव देशे स्वाम, साथे सहु स्युं चालीयाजी; निस्तारा
बहु लोक, पाप परानवना टालीयाजी ॥२४॥ पांसठ सोमी ए ढाल, वैरागी सुखीया सहुजी; पनणे श्री गुणसुर, रागी
दुख पावे बहुजी ॥२५॥ ॥दोहा॥ द्वारामतीनो देखीयो, ते श्रीपायण देव; तप बले पोहची न वीशके, पण न
तजे अहमेव ॥१॥ नावीनो बल आवीयो, काल विनाश जेवार; लोक पम्या परमादमें, स्यडा हार विहार ॥२॥
॥ढाल १६६ मी॥ साहिब बाहु जिणेशर विनवुं ॥ए देशी॥ तापस ठल पाम्यो ते देवता, ठलका पात अपार हो;
हो तापस किधी वाय विकुवणा, आणी पुरीमोझार हो ॥१॥ तापस बाले नगरी द्वारीका, द्विपाय न आति क्रोध
हो; ता०॥ रिस वसे नर आंधलो, नवी पामे प्रतिबोध हो ॥ ता० बा० २ ॥ काठ घणाने तृण घणा, जुहरनो सम
दाव हो ता०॥ आणी मेल्यो एकठो, पामीने प्रस्ताव हो ॥ता० बा० ३॥ हाहाकार हुवो घणो, आरम्भ नेरू जुरहो

ता०॥ छूट गयां जे मानवी, आणी कियां हजुर हो ॥ ता० बा० ४ ॥ गढमढ पोल पगारशुं, मंदिर महील उदार हो ता०॥ राज भुवन सुविशेशथी, बलता न लागे वार हो ॥ता० बा० ५॥ बाल हत्या ने गो हत्या, ब्रह्महत्याने नार हो ता० ॥ चार हत्या चंमालनी, किधी कोमी प्रकार हो ॥ ता० बा० ६ ॥ पार नहीं पसुपंखीया, गदमनी करे पोकार हो ता० ॥ अरे अदेखा पापीया, करे किसुं कीरतार हो ॥ ता० बा० ७ ॥ ढोरु गोरु आपणां, बाली आगे राख हो ता० ॥ बलती बाला बलबले, दिन मद्दा अति नांख हो ॥ता० बा० ८ ॥ मांहो मांहि आफले, सहि न जाइ झाल हो ता० ॥ निकलवा पावे नहि, बिलवे बाल गोपाल हो ॥ ता० बा० ९ ॥ नारी नांखे नाहसुं, सयला साथे तोफ हो ता॥ जोमोथी मुकथी खरी, अबकां जाल शोफ हो ॥ ता बा० १० ॥ बालक बलतां विनवे, माताजीसुं एम हो ता०॥ जवराअग्नीथी राखिया, आज न राखे केम हो ॥ ता बा० ११ ॥ सेवकसुं स्वामी कहे, नित्यहि रेहेतां पास हो ता०॥ ताप न देता आगवा, अबकां जाले नास हो ॥ता० बा० १२॥ आ रेणीथी आ णीयो, आमो वोस्रो घाली हो ता०॥ अब मुझ मुकि जाइजी, कां जाले मुझ दालि हो ॥ता० बा० १३॥ मीत्र मनोहर माहरा, मतिसागर तुझ नाम हो ता०॥ एह उपद्रव्य जो टले, तो तुझ नाम सकाम हो ॥ता० बा० १४ ॥ कंथने देखी कामनी, कामनिया पण कंथहो ता०॥ जे जीनया ते तिम बल्यां, अड अड भगवंत हो ॥ता० बा० १५ ॥ बहुंतेरकुल२ कोमीनो, नगरी मांहि निवास हो ता०॥ साठि कहि पुर बाहिरी, ए सहु लह्यो विनास हो ॥ ता० बा० १६ ॥ ढाल ॥ नगरी बलति देखिनेरे, थणु हुवा दलगीरः हयकु आग्युं फाटवारे चाइ, नयणे चवुटा निररे;

माधव एम बोले ॥ १ ॥ बंधव बेहुं तिहांमलांरे, वात करे कुरणा ए; डख साले डुवारकां तणुंरे जाइ, कथु कांइ न जायरे ॥मा० २॥ किहां डुवारकांनि साहिवीरे, कीहां गजदलनो गव; सजन मेलावो किहां गयोरे जाइ, खिणमें हुवां घनधांटरे ॥मा० ३॥ माधव कहे सूणो बंधवारे, जाग्यां पूर्वेलां पाप; अगनी चउदसें परजलीरे जाइ, काढो मायनें बापरे ॥मा० ४॥ मातपिता कहे सुणो दांवरारे, न फरे नेमनी वांण; जोए संथारो आदरोरे, तजी अनने पानरे ॥ मा० ५ ॥ रथ जोमी रीपज आंणीनेरे, लागी चोदसे लाह; आपण बहुजण ताणीएरे जाइ, बलथ लेवा कोण जायरे ॥मा० ६॥ रथे जुता वे बंधवारे, अगनीं विचे पामी वाट; देवतातो कोप्या सहिरे जाइ, तुदीने पमीयो माढरे ॥ मा० ७ ॥ रथ घोमाने वेलु वलेरे, वेतालीस२ लाख; अमतालिसक्रोम पाला बलेरे जाइ, खणमांहि होइ गइ खाखरे ॥ मा० ८ ॥ हरी जांखे बलदेवनेरे, धिग२ जीवत मोय; नगरी बले मुज देखतारे, मारु जोर न चाले कोयरे ॥ मा० ९ ॥ बलती नगरी देखीनेरे, हुं राखि न सकुं एम; इंद्र धनुप श्रमे धारीयोरे जाइ, ते बल नांगो केमरे ॥मा० १०॥ जेणीदसे आपणे जोवतारे, सेवक सेस श्रनेक; हाथ जोमी रहेतां खमांरे, जाइ आज न दीसे एकरे ॥मा० ११॥ वादल विजतणी परेरे, रीध विल लाइ सोय; एणी वेलामां आपणुंरे, सगुं न दीसे कोयरे ॥ मा० १२ ॥ मोटा२ राजवीरे, सरणे रहेतां आय; उलटो सरणो ताकीयोरे, जाइ वेरण वेला पायरे ॥ मा० १३ ॥ हरीं जांखे बलदेवनेरे, सांजलो बंधव वात; धराति आपणसुं फीर गइरे, जाइ कोइ डुसमने बतायरे ॥ मा० १४ ॥ माधव वचन सांजलीरे, हलधर बोले एम; पांमव फरी कुंता तणांरे. जाइ चालो तेनं गामरे ॥ मा० १५ ॥

|| ढाल मुलगी || हरी माताने रोहिणी, श्री वसुदेव तिवार हो ता० || अणसणने वले पामीने, देव तणो अवतार हो ||ता० वा० १७|| सोल सहस हरीनी त्रीया, अणसण वले सुर लोइ हो ता०|| पोहति यादवनी त्रिया, अवर अनेरी जोय हो ||ता०वा० १८|| नेमीनाथनो शीपलुं,करतो एम पोकार हो; ता०|| नंदन श्री वसुदेवनो, देवालियो उबार हो || ता० वा० १९ || श्री हरी हलधर निकल्या, उन्हा वाहिर जाय हो ता०|| बलती देखी द्वारिकां, डुख हिए न समाय हो || ता० वा० २०|| श्री हलधर हरीसुं कहे, आपा अलगी वात हो ता०|| नगरी अवर वसा वसां, सांभल सुंदर भ्रात हो || ता० वा० २१ || सगो सगानी जम्ह अछे, सगो सगा आधार हो ता० || प्रभुजी पांमव संभारीया, आपदने अधीकार हो ||ता० वा० २२|| पांडु मथुरांने चल्यां, केवल बंधव दोय हो ता०|| पाणीहि पावा न्नणी, साथ न त्रिजो कोइ हो ||ता० वा० २३|| न हय न गय वाहणी, पाला पुलाया सोइ हो ता०|| अंतर नयणे नीरखज्यो, दिन पलटे इम होइहो || ता० वा० २४ || गर्व मकरजो लाछिनो, कोइ एक लगार हो ता०|| जो न हुइ नीज कंतनी, बिजा कवण विचार हो ||ता० वा० २५|| लछि आवंती जाणि, जातां जाय विगोय हो ता०|| एतो पम्हछो आशनो, द्वारामति पति जोय हो ||ता० वा० २६|| फिटरे लछी कुलछणी, छटकी देखायो छेह हो ता० || दैन्य कराव्यो हरी कियो, निगुणी सरसो नेह हो ||ता० वा० २७|| निजबल परबल पाधरो, दिन पाधरो जेवार हो ता०|| दिन वांके वांकु सहु, घणुं किस्युं वितार हो ||ता० वा० २८|| हरी हलधर तनुबल घणा, सुर वलनो नवी पार हो ता०|| एकही आम्हो नावीयो, मेटण व्यास किकार हो || ता० वा० २९ || खट मासा लगी द्वारीकां

सा ॥ वली बुझाणी जाण हो ता०॥ सायर जल विटी वल्यो, पुरवले परीमाण हो ॥ता० वा० ३०॥ ढाल० सामा ढालमें
८७॥ लठि न चाले लार हो ता०॥ श्री गुणसागर सरजी, पुन्य वम्यो संसार हो ॥ता० वा० ३१॥ ॥दोहा॥ कर्मे इंद्र
विगोइयो, कर्मे चड्र कलंक; कर्मे मोटा राजवी, वनमें भम्या निशंक ॥१॥ सतवंति आदे सति, कर्मे करी सदोश,
कर्मागर नवि तुटिया, हरीहर ब्रह्मा सरोस ॥२॥ ढाल १६७ मी ॥ माहाविदेह खेत्र सुहामणो ॥ ए देशी ॥
कीधा कर्म न तुटिए, राय रंक सम न्याय लालरे; हरी हलधर दोइ चालिया, पांडव मथुरां जाय लालरे ॥कि० १॥
हस्ती कल्पनामे सहि. आयो पुर अजीराम ला०॥ दोइ बंधव तिहां वागमें, तरु तले ले विसराम ॥ला० कि० २॥
साजन जन लोगां तणो, हरीने बहुलो डख ला०॥ एताहिमे आकरि, आवी लागी त्रुख ॥ ला० कि० ३ ॥ त्रुंभी
त्रुख अनागणी, वाल्हा खाइ तारुं नाम ला०॥ आप जणावण आकाति, न गणे गाम कुगांम ॥ ला० कि० ४ ॥
हलधरसु हरजी कहे, ए वैरीनों वास ला०॥ नृपठे दंत भरामणो, मति आणो विसवास ॥ ला०कि० ५॥ ल्यो मुफ
करनी मुंद्रमी, वेची सारो काम ला०॥ लावो खावा सुखमी, वाकी लावो दाम ॥ला० कि० ६॥ हलधर पुरी मांहे
चल्यो, कबोइनी पास ला०॥ नामांकित सामुद्रमी, जोइ वांचे वल्हास ॥ला० कि० ७॥ वात जणावी रायने, राजा
दलवल साज ला०॥ घेरी लीधो सांकमे, नाद कियो वलराज ॥ला० कि० ८॥ नाद सुणी हरी धाइयो, मारे लात
कमाम ला०॥ इमीने अनगां पड्या, आणी जिती राम ॥ ला० कि० ९ ॥ मांग जजी पण खोखरी, तोपण हांमी
योग ला०॥ राजा धशी पगे लागीयो, पगे लागे सहु लोग ॥ला० कि० १०॥ पुनरपी आया वागमें, [illegible] नृप

स्वाम ला०॥ आरोगी ते सुखमी, चाल्या आगे ताम ॥ला० कि० ११॥ वंन कोसंबे पोहोंचीया, त्रष्या व्यापी अप्रार ला०॥ सुतो हरी तरु गंयम्ही, पुगी वेला वार ॥ला० कि० १२॥ हलधर जल लेवा गयो, आयो जरत कुमार ला०॥ सो सर तिहां सांधीयो, जांणी हरण तेवार ॥ला० कि० १३॥ विंधाणो पग बांणशुं, धिग२ करतो सोय ला० ॥जरत कुमर हरी आगले, आवी उभो होय ॥ला० कि० १४॥ हरी भांखे सुण भाइला, तुझने कोइ न दोश ला०॥ जारेजा उतावलो, हलधर करशे रोस ॥ ला० कि० १५ ॥ सहनाणीने आपीयो, कोस्तुभ रत्न प्रधांन ला० ॥ लेइ चाल्यो एतले, गया हरीनां प्राण ॥ ला० कि० १६ ॥ गशठ सोमी ढालमें, कृश्न तणो निरवाण ला० ॥ श्री गुण सांगर सुरजी, प्रवचन वचन प्रमांण ॥ला० कि० १७॥ ढाल गर्व न करजोरे गात्रनो, आखर एह असाररे; राखु केहनुरे नही रहे, कर्म न फरे करताररे ॥गर्व० १॥ सम्रण पम्रण विद्वंसण, जेहवो माटीनुं चंम्ररे; क्षिणमां वाजे ते खोखरुं, ते किम रहे अखंम्ररे ॥ग० २॥ मोहने पुठीने जे जिमे, पान खाय चूंटी चूंटी वींटरे; ते मोह बंधाणा झाडुए, कागम्रा चरकता वींटरे ॥ ग० ३ ॥ मोह मरम्रीने मोजो करे, कामनीसुं करे गाजे केलरे; ते जइ सुए सम सानमां, मोह ममताने मेलरे ॥ ग० ४॥ हस हस बोलतां हेजमां, नरनारी लाख कोम्रिरे; ते जइ सुइ मसाणमां, धणकण कंचन छोम्रिरे ॥ग० ५॥ कोम्र उपाय जो किजीए, तो पणी नावि रहेने वार; सजन मली सहु तेहने, करे अगननी भेटिरे ॥ ग० ६॥ कृश्न सरिखो जुठ राजीठ, बलभद्र सरिखो जो वीररे; जंगल मांहे जुठ तेहने, ताकी मारशे तीररे ॥ग० ७॥ बत्रीस सहस अंते पुरी, गोवालीणी सोल हजाररे; तरसे तडफे ते त्रीकमो, नही को पाणी

पानाररे ॥ग० ८॥ कोम सजा करे धरी, गिरधारी धरुं नामरे; वेग न थाय ते वले, जुउ कर्मनां कर्मनां कामरे ॥ग०
ए॥ जणतां केणे नवि जाणीउ, मरतां नहीं को रोनाररे; महा अटवी माहे एकलो, पमो करे पोकाररे ॥ ग० १०॥
ठत्रिलो ठत्र धरावतो, फेरवतो चारे दिश फोजरे; वनमां वासुदेव जिहां वसा, वसे जिहां वनचर रोजरे ॥ ग० ११ ॥
गजे वेसी जेह गाजता, थती जिहां नगारानी गेररे; धुश्रम होला तीहां धुधवे, सावज करे ठेसोररे ॥ ग० १२॥ जरा
कुमार तां जंगल वसे, ते खेलेठे सकाररे; हरी पगे पदम ते हेरीउं, मृगनी भ्रांते तेण ठाररे ॥ग० १३॥ तीर मास्यो
तेणे ताणीने, पग तले वजपुररे; पग जेदीने ते नीसरो, तीर पमो जइ डररे ॥ग० १४॥ श्राप वले तव ठगी कहे, रे
रेहुंतुं कभरे; वाणे केणे मुझने विंधीउ, एहवो कोण ठे पापीठरे ॥ग०१५॥ शब्द ते क्रश्नो सांजली, वृक्ष तले जरा
कुंमाररे, कहे वसुदेव पुत्रलु, रहुंहुं श्रारण मुझाररे ॥ग० १६॥ कृश्न रखोपाने कारणे, वरस थया मुझने वाररे; पणिमें
न वींवुं कोय मानवी, श्राज लगे नीरधाररे ॥ ग० १७॥ इष्ट कर्म तणे उदे, इहां श्राव्या तुमे श्राजरे; मुझने हत्यारे
श्रापवा, वली लगाम्वा लाजरे ॥ग० १८॥ कृस कहे उरो श्राव बंधवा, जेण कारण तुं सेवेठे वंनरे; ते हुं कृश्न तें मारी
उ, न मटे श्री नेमनां वचनरे ॥ग० १ए॥ ए नीसाणी पांमवाने श्रापजो, तुं इहांथी जारे वेगरे; नहीं तो वलनद्र मारशे,
उपजशे ठदवेगरे ॥ग० २०॥ श्रा समे किम जाउ वेगलो, जोरे मोकलेठे मोराररे; फरी फरी पाठो जोतो थको, वरसतो
श्रांसु जलधाररे॥ग०२१॥ इष्ट श्रगोचर ते थयो,ए ढाल श्रति रसालरे;उदयरत्न कहे एटली थइ,सहुको सुणजो वजमालरे
॥ग० २२॥दोहा॥ जरत कुमर वेगे करी, पांमव मथुरां जाय; जल लेइ हरी पासतो, हलधर श्राव्यो श्राय ॥१॥ ववो

॥२॥ ॥ ढाल १६० मी॥ गोरांजी प्रभु पाणी पियो, देव न बोले जाम; रिसाणो प्रभु जाणीयो, हलधर बोले ताम ॥१॥ ॥ ढाल १६८ मी॥ गोरांजी थें मुने गोरे न राख्यो ॥ ए देशी ॥ उठो प्रभुजी पिवो पांणी, अणमलतां एती वार लगांणी; तुं मुझ बंधव प्राण पियारो, नाइजी मानो बोल हमारो ॥उ० १॥ हुंतो शेवक आदि तुमारो, गोकुलमां तुं फिरत कुमारो; ते दिनथी तुं प्रितम प्यारो, हुं न रहु तुमथी खिण न्यारो ॥उ० २॥ पुर्व नवंतर नेह घणेरो, गंगदतने ललीतांग नलेरो; चारीत्र पाली देव विमानी, पुनरपी आपूण प्रितथ पाणी ॥उ० ३॥ एति तो प्रभु कदही न कीधि, हम तुम्ह एकलास प्रसिधी; वासर जाणी आज अपूठो, कहेरे बंधव तुं पण रूठो ॥उ० ४॥ दुख नरी आंख्या आंसु ढाले, उंचो निचो खरोही निहाले; कोइ नही जे रोतों राखे, रान रोज मली एही साखे ॥उ० ५॥ खांधे धरी चाल्या बलदेवा, खटमास लगी करतां शेवा; सुर दृष्टांत अनेक बतावी, दाघ दियो हलधर समझावी ॥उ० ६॥ चारण रुखी समझावे आयो जिननो प्रेर्यो बली मन नायो; संजम लेइ पाले निरतो, विषय कषाय थकी मन विरतो ॥उ० ७॥ रुखमणी आदि आवे देषि, इग्यारे अंग पढीशुं विशेखी; वरस विस व्रत पाली सारी, मास सलेखणा मोक्ष सिधारी ॥ उ० ८ ॥ संब अने परयुन मुनिसां, चारीत पाली सोल वरीसा; शेत्रुंजे संथारो साधी, मोटा मोटी पदवी लाधी ॥ उ० ए ॥ साढ़े त्रिकोटी कुमर कहियां, मदन सामने साथे लहिया; ते सघलाए शिव गती पांमी, नाथ निरंजन अंतरजांमी ॥उ० १०॥ अनी कयसादिक ते खट बंधु, क्रियावंत महा गुणासिंधु; विमल पणे विमलाचल आवी, अमल विमल गति उत्तम पावि ॥उ० ११ ॥ यादवने यादवनी नारी, मोक्ष गया बहु कर्म निवारी; नामशुं गोत सदा सुखदाइ,

त्रिवाँधि त्रिकाल नमुं चित लाइ ॥ज० १२॥ अमसठ अने सोमी ढाल कहावे, श्रीबलदेव महाव्रत पाले; श्रीगुणसागर सुरी सोहावे, हर्ष धरी रुपीनां गुण गावे ॥ज० १३॥ ॥दोहा॥ श्रीबलदेव महामुनी, द्विविध शिख संयूत; पंमित राज शिरोमणी, समदम गुण संपुत ॥१॥ तुंगीयागीरी शिखरे, ध्यांन तणो अधिकार; भिक्षा लेवा पुरीजणी, आवे श्रीअणगार ॥२॥ ढाल १६ए मी॥ ॥फुमखमानी देशी॥ भिक्षा लेवा पुरजणी हो, आवे श्रीअणगार; रुमा साधु नमो, इर्या मारग साधतां हो; गयंवरनी गति सार, रुमा साधु नमो ॥१॥ कुवाकांठे कामनी हो, सातपांचनी जोम रु०॥ काढे पाणी हेजशुं हो, खांचे होमाहोम ॥रु० २॥ रुपे मोही भामनीहो, गाफील थइ ते वार रु० ॥ फांसो देइ सुतने गले हो, न लहे सुधी लगार ॥रु० ३॥ श्री रुपीजी चित्त चिंतवे हो, रुप नहि ए फंद रु०॥ मान निया मन मोहानि हो, पाछा फीरयारे मुणंद ॥रु० ४॥ एको गहिल गेमारमी हो, राचे रुप रसाल रु० ॥ सब वीधी सुंदर नारिना हो, होसे कवण हवाल ॥ रु० ५ ॥ चंद समावे तापने हो, ए जग प्रगटि रीत रु०॥ लहे ताप जग चवथी हो, एतो अति विपरीत ॥रु० ६ ॥ सुर कह्यो उद्योतमे हो, जोरे करे अंधार रु० ॥ सुर नहि ए साचलो हो, राहु तणो अवतार ॥ रु० ७ ॥ नाव करीछे निरमे हो, पावण परले पार रु०॥ जो वोले जलधारमे हो, तो कुण राखणहार ॥रु० ८० अजरामर कारी कह्यो हो, आगा अमृत पान रु०॥ कुण वमतणा वाधवो हो, करता जगनो जान ॥रु० ए॥ दिठे दरसण साधुने हो, संजम गुणनो पोख रु०॥ जोरे असंम उपजे हो, तो ए मोटो दोप ॥ रु० १० ॥ जाणी लाज विशेषथी हो, साह करे व्यापार रु० ॥ ओटे लेति रचे नहि हो, पावे नाम गेमार ॥ रु० ११ ॥

आज पछी वस्ती विषे हो, मेनावेवो एह रु०॥ किधो निश्चे आकरो हो, जंगल साथे नेह ॥रु० १२॥ दुःकर तप करणी करे हो, समता रुपी होइ रु०॥ वनमांहि आहाराने हो, करे गवेषणा सोइ ॥रु० १३॥ मास षमण करतां भला हो, साधि महा सुखकार रु०॥ पांच खमण पण एटला हो, चो चोमासी सार ॥रु० १४॥ पुठि अपुठि राखके हो, बेसे ध्यान अनुप रु०॥ मतिको देखे खेचरी हो, मोहे माहरे रुप ॥रु० १५॥ अमृतवाणी वीशेषथी हो, विधीसुं दीए उपदेस रु०॥ वाघसींघ प्रतिबोधीया हो, हींसा तजेरे असेस ॥रु० १६॥ हिरण एक हरख्यो खरो हो, सेवा करे सुजाण रु०॥ साथे फरे जीम चेलणा हो, पाम्यो पुन्य प्रमाण ॥ रु० १७॥ एक दिवस रथ कारने हो, जाणी भोजन योग रु०॥ साधु पधारया वोरवा हो, मलीयो सुभ संजोग ॥रु० १८॥ वोहोरावे रथकारजी हो, वोहोरे श्री रुषीराय रु०॥ भावना भावे हिरणलो हो, घणी पोहोति आय ॥ रु० १९॥ तुटि साख्या तरुतणि हो, चंपाणा ते तिन रु० ॥ स्वर्ग पंचमें देवता हो, सुर सुखमें लयलिन ॥रु० २०॥ ए गुण तेरसोमी ढालमे हों, राम रुपी निरवांण रु०॥ श्री गुणसागर सुरजी हो, किजे संघ कल्याण ॥रु० २१॥ दोहा राम रुषी सुरगति लहि, तप तणो परकार; दान गुणे रथकारजी, मृगलो वछो विचार ॥ १ ॥ ढाल १७ मी ॥ आजतो आणंद वधामणा, दिठा रुषभ जीणंद ॥ ए देशी ॥ साधु कहे भवि सांभलो, एहनो एह विचार; दान सीयल तपने विषे, भावननों अधीकार ॥ १ ॥ जगमें मोटो भावनां, भावो हृदय मोझार; भाव थकी भवनीधीतरे, पामे भवनो पार ॥ ज० २ ॥ लुणविन्या जीम रसवती, भोजनविण तंबोल; दानविना कमला जीसी, साचविना जीम बोल ॥ज० ३॥ कंथविना जेम कामनी, सीलविना

सणगार, पुत्रवीना घर आंगणो; रायविना दरवार ॥ ज० ४ ॥ करणी तिमवण नावनां, न लहे सोन लगार; नार
थकि नारे धनो, नाव वमो संसार ॥ज० ५॥ दांन नाम धनथी हुवे, शिलरो केवो चित; तप करी काया सोसवि
नावे न लागे चित ॥ज० ६ ॥ श्री मरुदेवि स्वांमिनी, आदिनाथनी मात; नाव वले नवजल तरी, ए प्रगट्यो अव
दात ॥ज० ७॥ श्री नरते सर नावनां, नावे ते केवल लाध; तिमही आठ पटोधरां, नावन जोर अगाध ॥ ज०
८ ॥ पुत्र एलाची जोइज्यो, किण विध सारया काज; एम दृष्टांत अनेकजी, परतष्य दिसे आज ॥ ज० ए ॥ इथ
जामण नावना, कांजी क्षुद्र प्रणाम; नावनाठे नव नासनी, लान घणो विण दाम ॥ज० १०॥ शितेर सोमी ढालमें
नाव कियो शिरदार; श्री गुणसागर न्यायए, हिरण लह्यो पद सार ॥ज० ११॥ . ॥ दोहा ॥ जरत कुमर जाइ
कह्यो, जुवा नाइयां साथ; विहंसण द्वारामति, काल कियो जगनाथ ॥१॥ ए आनणी हरी कंठनो, आप्योठे धरी
नेह; जुवाजी हवे आजथी, आसम करशो एह ॥ २ ॥ ढाल १७१ मी ॥ नायकनी ॥ नाग्य प्रवल नृप चंद-
नोरे ॥ए देशी॥ कुंति कालज कापीयोरे, धरणी पमी ततकालरे माय; उख नरती अति रोवतिरे, विलवेसा अस-
रालरे माय ॥कु० १॥ हाहा ए स्युं निपनुरे, अणाचिंतव्युं वली आमरे माय; नाइ नामे घणुं पामतारे, शितलता
अलिरांमरे माय ॥कु० २॥ हरी हलधरनी सुरतिरे, मुरती अवर न कोयरे माय; मरदा नामरदां सिरेरे, एह अव-
स्था होयरे माय ॥कु० ३॥ इंद्रपुरी द्वारामतिरे, सघलाही जगनो साररे माय; कनकमय सुर निरमइरे, जली वली
हुइ ढाररे माय ॥कु० ४॥ गुण संनारो एहनारे, निरमल गंगा निररे माय; हम्कुवण लागी हियरे

नार; करसणनी आजीवकाजी, आपदनारे जंमार ॥सा० २॥ सुरतिने१ सातनुं२ जाणीइजी, देवने३
...वाण; नामे सुनद्रक ५ पांचमोजी, प्रितातणो मंमाण ॥सा० ३॥ श्री जसोधर गुरु पापतीजी, लीधो संजम
...गोर; सुमति गुपति व्रत पालतांजी, महियल करेरे विहार ॥सा० ४॥ तप जप करणि आगलाजी, आगला गुणेरे
आचार; सास्त्र कला करी आगलाजी, आगला धर्म वीचार ॥सा० ५॥ सुरति करयो कनकावलिजी, रतनावलिय
विसेष; सातनुं सुरी मुगतावलिजी, सुमति तणो तप देष ॥सा० ६॥ सिंहनि केमी न साचव्योजी, आंबेल तप व्र-
धमान; साधु सुनद्रनो जाणवोजी, ए तप पंच प्रधान ॥सा० ७॥ मास सलेहण विधी करीजी, स्वर्ग अनुतर पाम;
एतुम्ह आविने उपनाजी, पंचहि पांमव नाम ॥सा० ८॥ एम सूणि व्रत आदरयोजी, परीक्षतने देइ राज; पंच मुनी-
सर मोटकाजी, सारे२ आपणां काज ॥सा० ए॥ मात कुंताने डुपदिजी, चारीत्र लियो तेहीवार; कर्मपक्षे तिम
धर्मनेजी, पक्ष तजी नहि लार ॥सा० १०॥ तुंहूंतेर सोमी ए ढालमेजी, पांमवनोरे वैराग; श्री गुणसागर साधसेजी,
मुनिवर मोक्षनो माग ॥सा० ११॥ ॥दोहा॥ जगजीवन जगवछ्लु, जगतपति जगप्रतिपाल; विचरेछे महिमंम-
ले, श्री जिन नेम दयाल ॥१॥ नेम दयाले देवता, सुरीपुरी उद्यान; रेवतकाचल मस्तके, हार मनाइ जाण ॥२॥
जरासंधना युधमें, जरा व्यापना काल; दल रोकी सहु राषिया, नुप अपुगे वाल ॥३॥ दहनकाले द्वारामति, जोजीन
होतो मांहि; तो द्विपायन द्वारिकां, बालि न सकतो प्रांहि ॥४॥ गुण अनंत नगवंतना, कहिता न आवे अंत; ग-
गनमवे कुण आंगुला, गाढो विद्यावंत ॥५॥ ढाल १७४ मी ॥ धन धन सीयल सीरोमणी ॥ए देशी ॥धन२

हनुमता विर श्रायो ॥ए देशी॥ समजो हो तुम्हे नवी प्राणी, ए जगत विणां शिजाणी; श्री जिन
धर्म श्राराधो, समताए शिवही साधो ॥स० १॥ त्रिवीध वातां वैरागो, जोग नयंकर नागो; जोगे जुल्या जे जोला,
नटके जिम गिरी टोला ॥स० २॥ दिसे कारमी काया, बांधी रही श्रति माया; पहीरण खाण श्रणुरी, रोग विथा
करी पुरी ॥ स० ३ ॥ चिंहुं गती मांहे नर गाढो, रुलतान विहुज ताढो; श्राज लगी श्रंत नवी श्रावे, दरसणथी
दोजत पावे ॥ स० ४ ॥ त्रिकर्ण सुध राखी जे, करणीना फल चाखी जे; श्रागमदानो परीहारो, करतां नवनो
पारो ॥स० ५॥ इंडी जीतेवा कागा, इंडीयानां फल धागा; नरग नीगोदमें पमीया, काल घणो रुमवमीया ॥स० ६॥
विकथा चारु निवारी, पाम्या प्रजुता नारी; विकथा वाहीमो करमी, सघलाए नांखे सरमी ॥ स० ७ ॥ विस नवी
जथा विगुता, हिंमेठे एहां हुता; साता साते फरशीजे, तजीया शिव दरशीजे ॥ स० ८ ॥ पाप श्रढारे परीहरीए,
श्रपजमथी श्रति मरीए; विन डखी उधरीए, पुन्ये करी घर नरीए ॥ स० ९ ॥ श्री गुरुराया ए वाणी, श्रमृतपान
समाणी; समता केरी सहनाणी, पांमव पांचा सोहाणी ॥स० १०॥ चुतेरा सोमी ढाले, पांमव पाप पखाले; सुरि
गुणसागरजी साचो, श्री जिनमत हिरो जाचो ॥स० ११॥ ॥ दोहा ॥ सदगुरु केरी देशनां, डध सरीखी जाण;
घुंटश पिथी पांमवा, पुठे जोमी पाण ॥१॥ पूर्वनवंतरनी वली, नांखो श्री गुरुराज; नवसायरने तारवा, तुम्ह वम
सफरी जीहांज ॥२॥ ढाल १०३ मी ॥ विरे वखाणी राणि चेलणाजी ॥ ए देशी ॥ साधु कहे नृप सांजलो
जी, पुर्व नवंतर वात; पांचहि तुम परजव तणाजी, धुरथी सुणो श्रवदात ॥सा० १॥

पंच सहोदर सार; करसणनी आजीवकाजी, आपदनारे भंमार ॥सा० २॥ सुरतिने१ सातनुं२ जाणीइजी, देवने३ सुमति सुजाण; नामे सुनद्रक ५ पांचमोजी, प्रितातणो मंमाण ॥सा० ३॥ श्री जसोधर गुरु पापतीजी, लीधो संजम नार; सुमति गुपति व्रत पालतांजी, महियल करेरे विहार ॥सा० ४॥ तप जप करणि आगलाजी, आगला गुणेरे आचार; सास्त्र कला करी आगलाजी, आगला धर्म वीचार ॥सा० ५॥ सुरति करथो कनकावलिजी, रतनावलिय विसेप; सातनुं सुरी मुगतावलिजी, सुमति तणो तप देष ॥सा० ६॥ सिंहनि केमी न साचव्योजी, आंबेल तप वृ-धमान; साधु सुनद्रनो जाणवोजी, ए तप पंच प्रधान ॥सा० ७॥ मास सलेहणा विधी करीजी, स्वर्ग अनुतर पाम; एतुम्ह आंविने जपनाजी, पंचहि पांमव नाम ॥सा० ८॥ एम सूणि व्रत आदरयोजी, परीक्षतने देइ राज; पंच मुनी-सर मोटकाजी, सारे२ आपणां काज ॥सा० ए॥ मात कुंताने डुपदिजी, चारीत्र लियो तेहीवार; कर्मपक्षे तिम धर्मनेजी, पक्ष तजी नहि लार ॥सा० १०॥ तुंहूंतेर सोमी ए ढालमेजी, पांमवनोरे वैराग; श्री गुणसागर साधसेजी, मुनिवर मोक्षनो माग ॥सा० ११॥ ॥दोहा॥ जगजीवन जगवछलु, जगतपति जगप्रतिपाल; विचरेछे महिमंम-ले, श्री जिन नेम दयाल ॥१॥ नेम दयाले देवता, सुरीपुरी उद्यान; रेवतकाचल मस्तके, हार मनाइ जाण ॥२॥ जरासंधना युधमें, जरा व्यापना काल; दल रोकी सहु राषिया, नुप अपुगो वाल॥३॥ दहनकाले द्वारामति, जोजीन होतो मांहि; तो द्विपायन द्वारिकां, बालि न सकतो प्रांहि ॥४॥ गुण अनंत भगवंतना, कहिता न आवे अंत; ग-गनमवे कुण आंगना गाढो विद्यावंत ॥५॥ ढाल १७४ मी ॥ धन धन सीयल सीरोमणी ॥ए देशी ॥धन२

अ

म जीनेसरु, धन२ यादव वंस उदारतो; पुरुष रतन जाहां उपना, तेतो त्रीभुवननां शीणगारतो ॥ध० १॥

णा प्रभु तारीयां, तारी२ राजेमति वर नारतो, पहिली मुगते मोकली; जाणुं२ राखे ठाम समारतो ॥ध० २॥

नोती पालवी, गाढि२हे कावी जगमें जोयतो, राजुल साथे नेमजी; नेहा नेहे हेनिवाहि सोइतो ॥ध० ३॥ कां

नव कां सुरनवे, कांरे मनोहर मुगति मोझारतो; सरसी राखी स्वामीजी, अलगी न करी एक लीगारतो ॥ध०

प्रारज देश अनारजे, विचरां हे स्वामी करत विहारतो; प्रतिबोध्यां नाविजन घणां, केइ समकित केइ वृत धार

ध० ५॥ जाणी समो निरवाणनो, स्वामी आव्या हे गढ गीरनारतो; दिधी वेली देशनां, जीव घणांना काम सम

॥ध० ६॥ पंच सया पट तिसस्युं, संथारो हे किधो सुविसालतो; शोग धरंता सामटा, आया इंद्र हे चलि तत

तो ॥ध० ७॥ स्वामी पधारया शीवपुरी, जनम जरानो हे प्रभु आएयो अंततो; ज्ञानादिक वर आवस्युं, सीधरू

सोहे नगवंततो ॥ ध० ८ ॥ संसकार काया नणि, चंदन कावे हे किधोठे तामतो; माढा लीधी सुरपतिए, सु

हे पुजण अनीरामतो ॥ ध० ९ ॥ द्वीप गया नंदिस्वरे, आठ दिवस हे उवव अधीकार तो; हरी पोहता

स्थानके, समरता हे श्री जीन गुण सारतो ॥ ध० १०॥ श्री गरिनारे जीन तणा, दिप्या नाण हे अने नीरव

कल्याणीक तिने नंसां, ते माटे हे ए स्थानक प्रधानतो ॥ध० ११॥ नेम जीणंद आणंदमें, जय२ हे जीनवर ज

तो; रंग विनोद वधामणां, पुरवज्योहे श्री संघजगीसतो ॥ध० १२॥ चिमोतेर सोमी ढालमें, नांख्यो नांख्यो

ने मोटीको, गणसागरहे सुरी साधु सुजाणतो ॥ध० १३॥ ॥ दोहा ॥ पांम

महामुनी, बवी कुंता माय; पंचाली ए सातांहं, तप करी सोसे काय ॥१॥ गुण आचारे आगलां, दुःकर दुःकर कार;
चरम शरीरी प्राणीयां, पुनरपी नही अवतार ॥२॥ ढाल १७५ मी॥ ते मुनी वंदो ते मुनी वंदो ॥ ए देशी ॥
आणी अमा पांमव पंचसुहा वंदा, सुहा वंदारे सुहा वंदा; महामुनी सर कहां वंदा, धन आंगणे जिहां आवंदा,
एहां मोती थाल वधा वंदा ॥मु० १॥ गांम नगर पुर पाटण विचरे, भवी नरांमन भावंदा; ज्ञांन ध्यांन शुं तत्व
पिछानी, एकांतम समझा वंदा ॥ मु० २ ॥ राग द्वेष दो डर निवारी, त्रिकर्णा सुध करा वंदा; च्यार कषाय तजण
चतुराइ, इंद्री पांच दमा वंदा ॥ मु० ३ ॥ पिहरीया खट काया केरा, भय साते नवी आणंदा; मद आठे परीहरी
नव विध, सियल सदा सुष जाणंदा ॥मु० ४॥ दसही प्रकारे धर्म धरंदा, इग्यारे अंग पठा वंदा; बारे भिक्षु प्रतीमा
पाले, क्रिया तेर तजा वंदा ॥ मु० ५ ॥ चउदे भेदे जिव विचारी, कोमा कारज सारंदा; जंगम तिर्थ जिवन जगनां,
आप तरे परतारंदा ॥मु० ६॥ हती कल्पपुर वनमें आया, वहीरण साधु खंदा वंदा; मोक्ष कल्यांणीक नेम तणो
सुणी, शेत्रुंजे सिधा वंदा ॥मु० ७॥ अढार हजार मुनी परीवारे, संथारो गहा वंदा; माताजीशुं पांचे पांमव, केवल
मोक्ष लहा वंदा ॥ मु० ८ ॥ अवर मुनीवर केइ मुगति, केइ स्वर्ग वसा वंदा; शेष कर्म बाकी सोधनने, सुर सुखनो
चित लावंदा ॥मु० ९॥ पंचाली पंचम सुर लोके, भवही मांही रहा वंदा; अणगमतो आहार दियाथी, अज हुपार
न पावंदा ॥ मु० १० ॥ नारद रुपी विथी वात करीने, निश्चल मन फरसा वंदा; पाप पखाली अणसण पाली, सिव
गतिनु दरसा वंदा ॥मु० ११॥ पंच्योतेर सोमी ढाले, पांमव शिव पद पावंदा; श्री गुणसागर सुरी उजागर, नागर

गुरु गुण गावंदा ॥मु० १२॥ ॥दोहा॥ संघ चतुरविध तिर्थमें, शांतिनाथ दातार; धुलनइ आचारमें, मंत्रमें न-
वकार ॥१॥ मणीमां मणी चिंतामणी, ग्रह गणमें दिनकार; श्री गौतम गुरु गणहरा, तरुमें सुरतरु सार ॥२॥ सुर
मांहि जिम सुरपती, नरमें नरपती जेम; वंसामें हरी वंसजी, विश्व वदीतो तेम ॥ ३ ॥ ढाल १०६ मी ॥ श्रेणीक
रायहुंरे अनाथी निग्रंथ ॥ए देशी॥ ॥ मैं गायो श्रीहरी वंश उदार, सरीयारे मनवंछित काज मैं० ॥ पामी परसंसा
खरी, अधिकाइरे उपनी आज ॥मैं०१॥वारे दसमा जिन तणे, वंस ए उतपन;मैं० विस्तरी साखा घणी, कांइ हुयारे
बहु पुरुष रतन ॥मैं० २॥ अपर नाम सोहामणो, नृप यदुथी जोय;मैं० राय जादव राजीया, कांइ पुहवीरेपर सिधा
सोय ॥मैं० ३॥ विसमो बावीसमो, ए वंशे जिणंद;मैं०उपजीया आणंद, कांइ आयारे तिहां चोसठ इंद्र ॥मैं०४॥
क्रश्नने बलदेवजी, वंसमें अवतंस;मैं०वासी नगरी द्वारीकां, कांइ किधोरे अरि कुल विध्वंस ॥ मैं० ५ ॥ मात पइयाइ
भाइ भला,धर्म नंदने जिम;मैं०सक सुतशोभा धरी,कांइ पोढीरे पौरखनो शिम॥मैं०६॥ सांब अने परजुननां,बल तणो
नही पार;मैं०एकएकाथी वधां,कांइअगणीतरे हरी वंशकुमार॥मैं०७॥ इंद्रनगरी द्वारीकां,द्वारीकां पण सोइ;मैं०उपमा
सरखी सही, कांइ अंतररे नदिसे कोइ ॥मैं० ८॥ नित हरख विनोदमें, नित हरख विलास;मैं०द्वारीकां नगरी तणो
कांइ नित्य कोरे वायतोरे वास ॥ मैं० ए ॥ नित्य सुत जनमोछवुं, नित्य सुत निसाल; मैं०नित्य सुत परणेतना,
कांइ करीएरे घरघर कल्याण॥मैं०१०॥ खेल खेलनां खरा, घुघरा घमकार;मैं०धोक धपमप मादला, कांइ वाजेरे वाजींत्र
अपार ॥ मैं० ११ ॥ किजीए जीन सेवनां साध भगती अपार;मैं०भली भावे भावनां, कांइ भावियारे जन भाव

उदार ॥ मेंο १२॥ प्रघल भाव प्रभावनां, परम पुन्य प्रकाश;मेंο श्रीफलां श्री कारणी, कांइ पुगिरे पुगी मन आश॥ मेंο १३॥ नारी निकी शोभती, पहेरीयां पटकोल;मेंο तनु सोल शृंणगार करी, कांइ बोलेरे मुख मीठा बोल ॥मेंο १४॥ रंगरोल कचोलभा, थाले मोती सार;मेंο करे सुगुरु वधामणा, कांइ वरतेरे जीनमत नीवार॥ मेंο १५ ॥ आज अबे दिवालिका, नारी झाक झमाल;मेंο आज परव पजुसणां, कांइ किजेरे उछव सुविसाल ॥ मेंο १६ ॥ मीले साहमी सामटा, साहमीणी सुविचार;मेंο धवल मंगल ज्यारसुं, कांइ जण जणरे जयश्कार॥मेंο १७॥ गछ स्वगछ परिमांण स्युं, विजयवंत विशेष;मेंο श्री विजय गछ राजीया, कांइ दिपेरे गुरु धर्म नरेश॥ मेंο १८॥ विजयरुषी विद्याबली, धर्म दास मुनिश;मेंο क्षिमासागर खेमजी, कांइ जेहनिरे जगमांहि जगिश ॥मेंο १९॥ पद्मसागर सुरंजी, सुजसश नरपुर; मेंο पाय प्रणमी प्रभु तणां कांइ पभणेरे गुणसागर सुर ॥मंο २०॥ सवंत सोल बहुंतेरे, मास श्रावण शुध; तिज सोम सुसुरतां, कांइ वासररे वारु अविरुध ॥ मेंο २१॥ कुर्कटस्वर नगरमें, पास स्वांमी पसाय; संघने उछकपणे कांइ, रचियोरे में चरीत सुभाय ॥ मेंο २२॥ ढालसागर नाम ए, श्री हरिवंसनो विस्तार; सुधभावे सांभले, कांइ पामेरे सुख संपति सार ॥ मेंο २३॥ एकसो बुंतेर ए, ढालनो सो भाग; आदे तो आशावरी, कांइ अंतेरे धनासी राग ॥ मेंο २४॥ जब लग गीरी मेरुजी, सकल गीरीवर इस; तब लगे हरीवंश ए, कांइ थाज्योरे थीर विश्वाविस ॥मेंο २५॥

॥ कलस ॥ हरीवंस गायो सुजस पायो, ज्ञांन बुधी प्रकाशनो; पाप त्रागे गयो नागे, पुन्य आयो आशनो ॥१॥ कर्ण पुत्र कलत्र कमला, पढत सुणात सोह्यामणो, पुज्य श्री गुणासुरी जंपे, संघ रंग वधामणो ॥ २ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ शार्दूल विक्रीडित वृत्तम् ॥

श्रीमत्साधु शिरोमणे र्बुधजना लंकार [illegible] ।
युक्तस्यापि च सप्तविंशति गुणै र्नैर्ग्रंथ्य [illegible]
साहाय्यान्मुनि दीपचंद्र सुगुरोः सद्बोधि [illegible] ।
प्रांगध्याय च ढालसागर इति ग्रंथोय [illegible] ॥